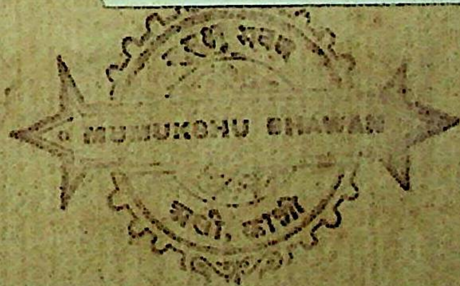

MUMUKSHU BHAWAN



महाभारत भाषा

शल्य और गदापर्व

जिसमें शल्यके सेनापतित्व में कौरवों का पाण्डवों से युद्ध और भीमसेन के हाथ से जंघा टूटने पर दुर्योधन का मरण वर्णित है।

भार्गवश्रेष्ठ मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., की आज्ञा से पण्डित कालीचरण गौड़ ने संस्कृत से अनुवाद किया।

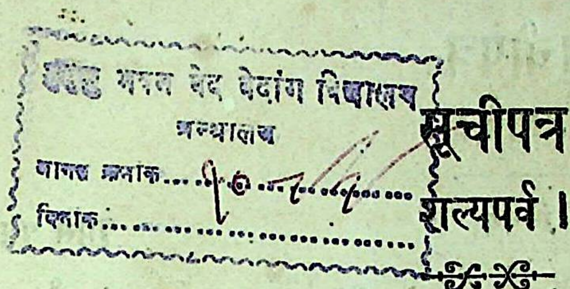
तीसरी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा।

सन् १९१५ ई०।





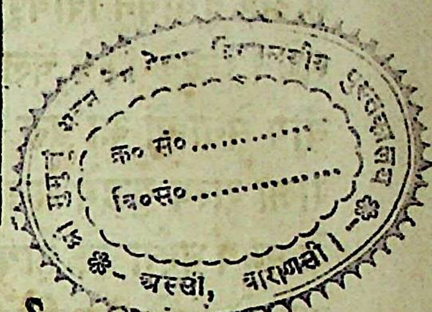
सूचीपत्र

शल्यपर्व ।

सूचीपत्र
गदापर्व ।







श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ॥

महाभारतभाषा शल्यपर्व ।

मङ्गलाचरणम् ।

श्लोक ॥ नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् । गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ या भाति वीणामिव वादयन्ती महाकवीनां वदनारविन्दे । सा शारदा शारदचन्द्रबिम्बाध्येयप्रभा नः प्रतिभां व्यनक्तु २ पाण्डवानां यशोवर्ष्म सकृष्णमपि निर्मलम् । व्यधायि भारतं येन तं वन्दे बादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यते भूतलमद्य येन । तं शारदालब्धवरप्रसादं वन्दे गुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः । कथानुगं मञ्जुलशल्यपर्वभाषानुवादं विदधाति सम्यक् ५ ॥

पहिला अध्याय ।

श्रीनारायणजी को, नरोत्तम नर को और सरस्वती देवी को नमस्कार करके (जयनाम) इतिहासको वर्णन करते हैं १ जनमेजय बोले, कि हे ब्राह्मण ! इस प्रकार अर्जुनके हाथसे युद्धमें कर्णके गिराये जानेपर थोड़ेसे बचेहुए कौरवों ने क्या किया १ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! मैं यह सुनना चाहताहूं कि कौरव दुर्योधन ने अपनी सेनाको साहस से रहित देखकर समयके अनुसार पाण्डवों के साथ कौनसा कर्म किया ? आप इसको वर्णन कीजिये क्योंकि मैं अपने प्राचीन वृद्धों के चरित्रोंके सुनने से तृप्त नहीं होता हूं २-३ वैशम्पायन बोले कि हे राजन् ! फिर कर्णके मरने पर धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन बड़े शोकसमुद्रमें डूबकर सब प्रकारसे दुःखीहो ४ बारम्बार 'हाय कर्ण हाय कर्ण' इस प्रकार शोचता हुआ मरनेसे बचे हुए राजाओं समेत बड़े दुःखसे अपने डेरेको आया ५ सूतपुत्र कर्णके मरण को स्मरण कर शास्त्रनिश्चित हेतुओं द्वारा राजाओं से समझाये जाने पर भी दुर्योधनने सुख नहीं पाया ६ वह राजा दैवइच्छा को बलवान् मानकर युद्धके

निमित्त निश्चय करके फिर युद्ध करनेके लिये निकला ७ हे राजन्! वह राजाओं में श्रेष्ठ दुर्योधन विधिपूर्वक शल्य को सेनापति करके मरनेसे बचे हुए राजाओं समेत युद्धके लिये चला ८ हे भरतर्षभ ! इसके अनन्तर कौरवीय और पाण्डवीय सेनाओं का युद्ध देवासुर युद्धके समान महाकठिन हुआ ९ महाराज ! राजा शल्य युद्धमें सेनाका नाश करके अपनी सेनाके मर जानेके पीछे मध्याह्न के समय धर्मराजके हाथसे मारा गया १० इसके पीछे जिनके बान्धव मारे गये थे उन लोगोंको युद्धभूमिसे हटाकर, शत्रुओंके भयसे राजा दुर्योधन, बड़े गम्भीर तड़ागमें प्रवेश करगया ११ वह उस दिन तीसरे पहर महारथियोंसे घेरे गये ह्रद से बुलाया जाकर बड़े वेगपूर्वक भीमसेनके हाथसे गिराया गया १२ हे राजेन्द्र ! उस बड़े धनुषधारीके मरने पर बचेहुए महारथियों ने रात्रिके समय पाञ्चालदेशी सेनाके लोगोंको मारा १३ उसके पीछे दुःख और शोचसे संयुक्त सञ्जय प्रातःकाल अपने डेरेसे चलकर महादुःखितचित्त होकर पुरमें आया १४ वह सूत सञ्जय पुरमें प्रवेश करके महाक्लेशितमन, अपनी भुजाओंको ऊपर किये कांपता हुआ राजमन्दिर में आया १५ हे नरोत्तम ! वह अत्यन्त दुःखी 'हाय राजा हाय राजा' कहता हुआ रोदन करने लगा ! बड़े कष्टकी बात है, कि उस महात्माके मरनेसे हमारा नाश होगया १६ आश्चर्य है, काल बड़ाही बली है । उसी प्रकार उसकी गति भी टेढ़ी है । हाय ! इन्द्रके समान महापराक्रमी सब शूरवीर पाण्डवों के हाथ से मारे गये १७ हे राजाओंमें श्रेष्ठ जनमेजय ! वे सब मनुष्योंके समूह नगरमें सञ्जयको देखते ही सभी ओर बड़े दुःखोंसे संयुक्तहुए १८ हे नरोत्तम! कुमार,बालकों तक से अत्यन्त व्याकुल वह सारा नगर चारों ओर से ऊंचे स्वरोंसे 'हाय राजा हाय राजा' इस प्रकार पुकारता हुआ रोदन करने लगा । इसके पीछे राजाको मरा हुआ सुनकर सबने महापीड़ाके शब्द किये । उस समय वहां हमने उन स्त्री पुरुषोंको भी दौड़ते हुए देखा जो कि नाशमानचित्त, उन्मत्त और शोक से महापीड़ामान थे । इस प्रकार महाव्याकुलमन उस सूतने राजमन्दिर में प्रवेश कर, राजाओं में श्रेष्ठ, ज्ञानरूपी नेत्र रखनेवाले, निष्पाप, चारों ओर से पुत्र बन्धुओं समेत, गान्धारी-विदुर और अन्य इष्ट मित्र एवं जातिवालों से घिरे हुए कर्णके मरने के विषय में उसी प्रयोजन के ध्यान में महाराज धृतराष्ट्र को मग्न देखा । हे जनमेजय ! वह दुःखीचित्त सूत अश्रुधाराओं से युक्त गद्गद वाणीसे रोताहुआ राजा धृतराष्ट्रसे बोला, कि हे नरोत्तम ! मैं सञ्जय हूं; हे भरतर्षभ ! तुमको नमस्कार

है १६–२५ मद्र देशका राजा शल्य मारा गया, उसी प्रकार सौबलका पुत्र शकुनी भी मारा गया। हे पुरुषोत्तम! दृढ़ पराक्रमी कैतव्य, उलूक, शकुनी समेत सब काम्बोजदेशी और संसप्तक मारे गये। म्लेच्छ पहाड़ी और यवन मारे गये २६–२७ महाराज, राजा धृतराष्ट्र! सब पूर्वीय, दक्षिणीय, उत्तरीय और पश्चिमीय राजा लोग मारे गये २८ इनके सिवाय राजकुमारों समेत सब राजा मारे गये और राजा दुर्योधन भी उसी प्रकारसे मारे गये जैसी कि पाण्डव भीमसेनने सभामें प्रतिज्ञा की थी २६ महाराज! वे टूटी जंघासे धूलमें पड़े सोते हैं। धृष्टद्युम्न और अपराजित शिखण्डी भी मारा गया ३० इसी प्रकार नरोत्तम उत्तमौजा, युधामन्यु, प्रभद्रक और पाञ्चालदेशी एवं चँदेरीदेशी क्षत्रिय मारे गये ३१ हे भरतवंशिन्! आपके सब पुत्र और द्रौपदी के बेटे मारे गये। कर्णका पुत्र बड़ा शूरवीर वृषसेन भी मारा गया ३२ सब मनुष्य मारे गये; हाथियोंका नाश हुआ; रथसवार और घोड़े युद्धमें गिर पड़े ३३ हे समर्थ! परस्पर सम्मुख होकर आपके बेटे पाण्डवों के और कौरवोंके कुछ ही डेरे बाकी रहे ३४ यह संसार बहुधा कालसे मोहित स्त्रियोंका शेष रखनेवाला हुआ। पाण्डवोंकी ओर सात और आपकी ओर के तीन मनुष्य शेष रह गये हैं ३५ अर्थात् पांचों भाई पाण्डव, वासुदेवजी और सात्यकी, एवं आपकी ओर विजयी लोगों में श्रेष्ठ कृपाचार्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा शेष रहे हैं ३६ हे राजाओं में श्रेष्ठ, धृतराष्ट्र महाराज! इकट्ठी होनेवाली आपकी सब अक्षौहिणियों में आपके यही तीन रथी जीते हैं ३७ हे भरतर्षभ, धृतराष्ट्र महाराज! यही केवल बचे हैं और सब नाश होगये। हे भरतवंशिन्! निश्चय करके शत्रुतापूर्वक दुर्योधनको आगे करके सब जगत् कालसे मारा गया ३८ वैशम्पायन बोले कि, महाराज! राजा धृतराष्ट्र इस कठिन और महादुःखदायी वचनको सुनकर अचेत हो पृथ्वीपर गिरपड़े ३६ राजा धृतराष्ट्र के पृथ्वी में गिरने पर शोक और दुःखसे पीड़ित बड़े यशस्वी विदुरजी भी गिर पड़े ४० हे राजेन्द्र! गान्धारी आदि सब कौरवों की स्त्रियां भी उन कठोर वचनोंको सुनकर अकस्मात् पृथ्वी पर गिरपड़ीं ४१ तब राजमण्डल निरर्थक वचनोंसे युक्त अचेत होकर पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि बड़े वस्त्रपर खींचा हुआ चित्र होता है ४२ उसके पीछे पुत्रके दुःखसे राजा धृतराष्ट्रने बड़े दुःखपूर्वक धीरे धीरे प्राणोंको प्राप्त किया ४३ फिर सचेत होकर कँपते हुए महादुःखी राजाने सब दिशाओं को देखकर विदुरजी से कहा,

कि ४४ हे बुद्धिमान्, बड़े ज्ञानी, भरतर्षभ, विदुरजी! सबपुत्रोंसे विहीन मुझ अनाथ के तुम्हीं गति हो ४५ इस प्रकार कहकर फिर अचेत हो गिर पड़े। इस रीति से पड़े हुए धृतराष्ट्रको देखकर ४६ जो कोई उनके बान्धव थे, उन्होंने उनको शीतल जलोंसे सींचा और व्यजनों से हवा भी की। बड़ी देर में राजाको चेत हुआ ४७ हे राजन्! मटकेमें डाले हुए सर्पकी नाईं श्वास लेते और पुत्र के शोकसे पीड़ित मौन राजाने ध्यान किया ४८ वहां राजाको दुःखी देखकर सञ्जय भी रोया, इसी प्रकार यशस्विनी गान्धारी और अन्य सब स्त्रियां भी रोदन करने लगीं ४९ इसके पीछे बारम्बार मोहित राजा धृतराष्ट्र बड़ी देरके पीछे विदुरजी से बोले, कि ५० सब स्त्रियां, यशस्विनी गान्धारी और मेरे सब सुहृद यहां से चलेजायँ। मेरा चित्त अत्यन्त मूर्च्छित होता है ५१ हे भरतर्षभ! उस बात को सुनकर विदुरजीने उन बारम्बार कम्पायमान स्त्रियोंको बड़ी धीरजसे बिदा किया ५२ जब सब स्त्रियां उस स्थानसे निकल गईं और सब सुहृद भी राजाको देख कर चले गये ५३ तब सञ्जयने राजाको सचेततायुक्त महादुःखी और रोते हुए देखा ५४ बारम्बार श्वास लेनेवाले महाराजको विदुरजीने हाथ जोड़ कर मधुर वाणी से विश्वास कराया ५५॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिधृतराष्ट्रप्रमोहोनाम प्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय।

वैशम्पायन बोले, कि महाराज! स्त्रियोंके बिदा करदेने पर अम्बिकाके पुत्र धृतराष्ट्रने विलाप कर महादुःख पाया १ महाराज! बारम्बार अपने हाथोंको कँपाते हुए धृतराष्ट्रने उष्ण श्वासाएँ लेकर बहुत चिन्तायुक्त हो कहा, कि २ हे सूत! यह महादुःख और दुःखका स्थान है जो मैं तुझसे पाण्डवोंको कुशलपूर्वक अविनाशी सुनताहूँ ३ निश्चयही मेरा हृदय वज्रके समान कठोर है जो पुत्रोंको मरा हुआ सुनकर हजारों टुकड़े नहीं होंताहै ४ हे सञ्जय! उनकी बालक्रीड़ा और अवस्थाको शोचकर, और अब बेटों को मृतक सुनकर मेरा चित्त अत्यन्त फटता है ५ यद्यपि अन्धेपन से मुझे उनके रूपका दर्शन नहीं होता था तथापि पुत्रतासे उत्पन्न हुई प्रीति सदैव उनपर नियत थी ६ हे निष्पाप! मैं उनको बाल्यावस्था के व्यतीत करनेवाले और तरुण सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होता था ७ अब उन पुत्रोंके दुःखसमुद्रमें डूबा हुआ मैं उन बड़े तेजस्वियोंको

ऐश्वर्य से रहित और मरा हुआ सुनकर कहीं शान्ति नहीं पाता हूं ८ हे राजेन्द्र, पुत्र ! अब मुझ अनाथके सम्मुख आओ, हे महाबाहो ! मैं तुमसे रहित होकर किस गतिको पाऊँगा ९ हे तात ! तुम किस प्रकार मिलेहुए राजाओं को छोड़ प्राकृत नीच मन्त्री रखनेवाले राजाके समान मृतक होकर पृथ्वी पर सोते हो १० हे वीर, महाराज ! तुम जातिवाले और सुहृदजनों की गति होकर मुझ वृद्ध अन्धे को त्यागकर कहां जाओगे ११ राजन् ! तुम्हारी वह कृपा, प्रीति और शिष्टाचार क्या हुआ ? हाय ! युद्धोंमें अजेय होकर तुम पाण्डवों के हाथ से कैसे मारे गये १२ समय पर उठकर बारम्बार मुझसे कौन कहेगा कि हे तात, हे लोकनाथ १३ प्रीति से आर्द्रनेत्र होकर तुम कण्ठ से मिलकर मुझ को शिक्षा करो । हे कौरव ! वह शुभ वचन मुझसे कहो १४ हे पुत्र ! मैंने निश्चय तेरे इस वचनको सुना, कि यह बहुत पृथ्वी जैसे मेरी है, वैसे कुन्ती के पुत्रकी नहीं है १५ भगदत्त, कृपाचार्य, शल्य, अवन्तिदेशका राजा, जयद्रथ, शल, सोमदत्त, बाह्लीक १६ अश्वत्थामा, कृतवर्मा, महाबली मगधका राजा, बृहद्बल, काशी का राजा, सौबलका पुत्र राजा शकुनी १७ हज़ारों म्लेच्छ देवताओं समेत शक, सुदक्षिण, काम्बोज, राजा त्रिगर्त १८ भीष्म पितामह, भारद्वाज द्रोणाचार्य, गौतम कृपाचार्य, पराक्रमी श्रुतायु, अच्युतायु, शतायु १९ जल-सन्ध, आर्ष्यशृंगी, अलायुध राक्षस, महाबाहु अलंबुष, महारथी सुबाहु २० हे राजर्षे ! यह सब राजा और बहुतसे अन्य राजा सब बड़े युद्धमें प्राणों की ममता छोड़ मेरे निमित्त तैयार हैं २१ उन्हींके मध्य में नियत और भाइयों से संयुक्त होकर मैं युद्धमें सब पाण्डव और पाञ्चालोंसे युद्ध करूंगा २२ हे राजाओंमें श्रेष्ठ ! मैं युद्धमें चन्देरी देशी राजा, द्रौपदीके पुत्र, सात्यकी, कुन्तभोज और घटोत्कच राक्षसके साथ युद्ध करूंगा । महाराज ! मैं क्रोधयुक्त अकेला भी युद्ध में सम्मुख दौड़नेवाले इन पाण्डवोंके हटाने में समर्थ हूं २३—२४ फिर पाण्डवोंके साथ शत्रुता करनेवाले सब वीरलोग साथ होकर क्यों न समर्थ होंगे ? हे राजेन्द्र ! अथवा ये सबलोग पाण्डवोंके आगे पीछेवाले शूरवीरोंसे लड़ेंगे २५ और उनको युद्ध में मारेंगे । मेरा साथी अकेला कर्ण ही पाण्डवोंको मारेगा २६ इसके पीछे राजा लोग मेरी आज्ञामें नियत होंगे और उनका स्वामी और रक्षक वासुदेव २७ तो शस्त्रोंको धारण ही नहीं करेगा । उसने मुझसे यह प्रतिज्ञा करली है । हे सूत ! मैंने बहुधा अपने सम्मुख कहे हुए उसके वचनको सुना २८ कि युद्ध में शक्तिसे

पाण्डवों को मृतक देखता हूं । उन्हींके मध्यमें युद्धके उपाय करनेवाले मेरे पुत्र उस वायुके पुत्र भीमसेनके हाथसे युद्धमें अधिकतर मरते हैं २६ इसमें प्रारब्धके सिवाय दूसरी बात क्या है ? जिस स्थान पर लोकनाथ प्रतापवान् भीष्मजी ३० शिखण्डीको सम्मुख पाकर ऐसे मारे गये जैसे कि शृगालोंको पाकर महामृगेन्द्र (सिंह) मारा जाताहै, जिस स्थानपर सब अस्त्र शस्त्रों में कुशल ब्राह्मण द्रोणाचार्य पाण्डवों के हाथसे मारे गयेवहां प्रारब्ध से दूसरी कौन बात है ? इस युद्धमें भूरिश्रवा, सोमदत्त ३१–३२ और महाराज बाह्लीक मारे गये, हाथियों के युद्धमें कुशल भगदत्त मारा गया, इसमें प्रारब्धके सिवाय कौनसी बात है ३३ और जयद्रथ मारा गया अथवा सुदक्षिण पौरव जलसन्ध मारा गया, वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्या है ३४ श्रुतायु, अच्युतायु मारे गये और सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ महाबली पाण्ड्य युद्धमें पाण्डवोंके हाथसे मारा गया, वहांप्रारब्ध से दूसरी बात क्या है? जिस स्थानपर महाबली बृहद्बल, मागध ३५–३६ और धनुषधारियों में ध्वजारूप पराक्रमी उग्रायुध, दोनों अवन्तिदेश के राजा और राजा त्रिगर्त मारे गये ३७ और बहुतसे संसप्तक मारे गये, वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्या है ? राजा अलंबुष, अलायुध राक्षस ३८ और आर्ष्यशृङ्गी राक्षस मारा गया, वहां प्रारब्धसे दूसरी बात क्या है ? जिस स्थानमें युद्धदुर्मद गोपाल और नारायण नाम शूरवीर मारे गये ३६ और हज़ारों म्लेच्छ मारे गये, वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्या है? जिस स्थानपर सौबलका पुत्र महाबली वीर शकुनी, कैतव्य ४० सेना समेत मारागया, वहां प्रारब्धसे दूसरी बात क्याहै ? हे सूत, सञ्जय ! जिस स्थान पर शूर महात्मा और सब अस्त्र शस्त्रों में कुशल ४१ महेन्द्रके समान पराक्रमी नाना प्रकार के देशोंके स्वामी बहुत से क्षत्रिय ४२ युद्धमें मारे गये, वहां प्रारब्ध के सिवाय दूसरी बात क्या है ? मेरे महाबली पुत्र और पौत्र ४३ समान अवस्थाके भाई मारे गये, वहां दूसरी बात क्या है ? निश्चयही प्रारब्ध को साथ लेकर मनुष्य उत्पन्न होता है । जो प्रारब्धवान् है, वही सुख पाता है ४४ हे सञ्जय ! अपने प्रारब्ध और पुत्रों से रहित शत्रुओं की अधीनता में वर्तमान बृद्ध मैं अब कैसे रहूंगा? हेसमर्थ! यहां वनवास के सिवाय दूसरी बात श्रेष्ठ नहीं मानताहूं ४५ सौ पुत्रों और अपनी जातिवालों से रहित मैं, जातिवालोंके नाश होने पर वनको जाऊंगा । वनमें जानेके सिवाय कोई दूसरी बात मेरे कल्याणकी नहीं है ४६ हे सञ्जय ! मैं परकैंचपक्षीके समान इस दशा का पानेवाला हूं । हाय !

युद्धमें दुर्योधन, शल्य ४७ महाबली दुश्शासन, शल और बलवान् विकर्ण मारा गया। अब मैं उस भीमसेन के कठोर शब्दों को कैसे सुनूंगा ४८ जिस अकेले ने युद्धमें मेरे सब पुत्रों को मारा। दुर्योधनके मरनेसे दुःखी और शोचसे अत्यन्त सन्तप्त होकर मैं उस बारम्बार वार्तालाप करनेवाले भीमसेनके कठोर वचनोंको नहीं सुनूंगा ४९-५० वैशम्पायन बोले, कि बान्धवों के मारे जाने के शोक से तपे हुए और पुत्रोंके शोकमें डूबे हुए, बारम्बार अचेत ५१ अम्बिकाके पुत्र, भरतर्षभ, पूर्ण दुःखी, धृतराष्ट्रने बड़े शोकसे देरतक विलापकर लम्बी श्वासा ली और अपने पराजय को शोच करके गोकनके पुत्र सूत सञ्जयसे मुख्य वृत्तान्त पूछा ५२-५३ धृतराष्ट्र ने पूछा, कि मेरे पुत्रोंने भीष्म और द्रोणाचार्यको मृतक एवं सेनाके स्वामी कर्णको गिराया हुआ सुनकर किसको सेनापति किया ५४ मेरे पुत्रोंने जिस जिसको स्वामी और सेनापति बनाया, पाण्डवों ने थोड़े ही समयमें उसे मार डाला ५५ युद्ध के मस्तक पर वर्तमान भीष्मजी तुम्हारे देखते हुए मारे गये और द्रोणाचार्य भी सबके देखते मारे गये ५६ ऐसेही राजाओं समेत तुम सबके देखते सूतका पुत्र प्रतापी कर्ण अर्जुन के हाथसे मारा गया ५७ मुझे प्रथमही महात्मा विदुरजीने समझाया था कि दुर्योधनके अपराधसे यह सब सृष्टि नष्ट होगी ५८ पर कोई अज्ञानी बहुत विचारकर अच्छी रीति से ध्यान नहीं करते हैं। यह कच्चा विचार मुझ अज्ञानीका ही है कि वह वचन वैसा ही होगया ५९ सब धर्मों के जाननेवाले उन विदुरजी ने जो कुछ कहा था, वह सत्य कहा हुआ वचन उसी प्रकारसे प्रत्यक्ष हुआ ६० दैवसे हतचित्त मैंने पूर्वसमय में जो उनके वचन नहीं माने, उसी अन्याय का यह फल हुआ। हे सञ्जय ! अब फिर कहो, कि ६१ कर्णके गिरने पर सेनाओंका मुख्य (सेनापति) कौन हुआ और कौनसा रथी अर्जुन एवं वासुदेवजी के सम्मुख गया ६२ रण में युद्धाभिकांक्षी शल्यके दाहिने चक्र को किसने रक्षित किया और किसने उस वीर के वाम चक्रकी रक्षा की और किसने पीछे से रक्षा की ६३ हे सञ्जय ! तुम लोगोंके एकत्र स्थित होनेपर महाबली शल्य और मेरा पुत्र युद्धमें पाण्डवों के हाथसे कैसे मारा गया ६४ भरतवंशियों के उस सब बड़े नाशको मुख्यता से कहो। युद्ध में मेरा पुत्र दुर्योधन किस प्रकार मारा गया ६५ और सब पाञ्चाल, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी अपने पीछे चलनेवालों समेत तथा द्रौपदी के पांचों पुत्र किस भाँति मारे गये ६६ और यह बतलाओ, कि सब पाण्डव, दोनों

यादव, कृपाचार्य, कृतवर्मा और भरद्वाज का पौत्र अश्वत्थामा ये सभी युद्ध से किस प्रकार बचे ६७ इसके पीछे जिस प्रकार जो युद्ध जैसा हुआ, उस सबको मैं सुना चाहता हूं, हे सञ्जय ! तुम वर्णन करनेमें बड़े कुशल हो ६८ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिधृतराष्ट्रविलापोनाम द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ।

सञ्जय बोले, कि राजन् ! सावधान होकर सुनिये, जिस प्रकार कि परस्पर सम्मुख होकर कौरव और पाण्डवोंकी सेनाका नाश हुआ है । महात्मा पाण्डव अर्जुनके हाथसे कर्णके मरने, बारम्बार बुलाई हुई सेनाके भागने और युद्ध-भूमिमें मनुष्यों के शरीर तथा उत्तम हाथियोंके घोर नाश होने पर १--२पाण्डवों ने सिंहनाद किया । हे राजन् ! उस सिंहनाद से उत्पन्न होनेवाला भय आपके पुत्रों में प्रवेश कर गया ३ कर्णके मरने पर आपके किसी शूरवीरकी बुद्धि सेना की चढ़ाई और पराक्रम करनेमें समर्थ नहीं हुई ४ अथाह समुद्रमें नौकाके टूटने पर विना नौकाके व्यापारी लोग जिस प्रकार भयभीत होते हैं उसी प्रकार अर्जुन के हाथसे द्वीपरूप कर्णके मारे जानेपर युद्धरूपी अपार समुद्रमें पार जानेके वे अभिलाषी हुए ५ हे राजन् ! कर्ण के मरने पर भयभीत और बाणों से घायल सिंहसे पीड़ित मृगोंके समान, टूटे सींगवाले बैलोंके सदृश और टूटी डाढ़ वाले सर्प के तुल्य एवं अर्जुनसे पराजित होकर नाथके चाहनेवाले अनाथ हमलोग सायंकालके समय अपने डेरेको चले आये ६-७ हे राजन् ! सूतपुत्र के मरनेपर तीक्ष्ण धारवाले बाणों से टूटे अंग, पराजित आपके पुत्र भय करके भागे जिनके कि बहुतसे वीर मारे गये थे ८ शस्त्र और बलसे रहित भयसे भागे हुए अचेत और परस्पर प्रहार करनेवाले भयसे दिशाओं को देखनेवाले वे सब ९ यह जान कर गिर पड़े और मरणप्राय होगये कि अर्जुन और भीमसेन मेरे ही सम्मुख आते हैं १० किसी महारथी ने तेज घोड़ों पर और कितनोंही ने हाथियों पर सवार होकर भयसे पदातियों को त्यागकिया ११ हाथियोंसे रथ टूटे, घुड़-सवार बड़े रथों से मारे गये और कठिन भागनेवाले घोड़ोंके समूहों से पदातियों के झुण्ड मारे गये । सर्प और चोरोंसे व्याप्त वनमें, साथियोंसे बिछुड़े हुए मनुष्य की जो दशा होती है, सूतपुत्र के मरने पर आपके पुत्र भी उसी दशा को प्राप्त हुए १२-१३ तब मृतक सवारोंवाले, टूटी सूँड और भयसे पीड़ित अन्यान्य

हाथियोंनेभी सब लोक को अर्जुनरूप देखा १४ दुर्योधन उन सब भागनेवाले और भीमसेनके भयसे पीड़ित सेनाके मनुष्योंको देखकर हाय हाय करते हुए अपने सारथी से बोले, कि १५ हाथमें धनुष रखनेवाले और सेनाके जघन स्थान पर वर्तमान मुझको अर्जुन उल्लंघन नहीं करेगा। तू घोड़ोंको शीघ्र चलायमान कर १६ कुन्तीका बेटा अर्जुन युद्धभूमिमें मुझ लड़नेवालेके उल्लंघन करने को ऐसे उत्साह नहीं करेगा जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्यादाको नहीं उल्लंघन करता १७ अब गोविन्द समेत अर्जुन, भागे हुए भीमसेन और शेष बचे हुए शत्रुओंको मारकर मैं कर्ण से उऋण होऊंगा १८ सारथीने कौरवराजके शूर और उत्तम पुरुषोंके योग्य उन वचनोंको सुनकर घोड़ों को बड़े धीरेपने से चलाया १९ हे श्रेष्ठ! हाथी, घोड़े और रथसे विहीन पचीस हज़ार पदाती बड़े धीरे धीरे चले २० जब अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन और धृष्टद्युम्नने चार अंग रखनेवाली सेना समेत उन्हें चारों ओरसे घेरकर बाणोंसे मारा २१ तब वे सब उस भीमसेन और धृष्टद्युम्नसे युद्ध करने लगे। वहां प्रतिपक्षियोंने भीमसेन और धृष्टद्युम्नके नाम लिये। उस समय भीमसेन उन युद्धभूमि में नियत वीरों से युद्ध करने लगा अर्थात् हाथमें गदा रखनेवाला वह भीमसेन शीघ्रही रथ से उतर कर भुजबल में आश्रित, धर्म से सम्बन्धरखनेवाला, युद्ध करनेवाला, रथसवार कुन्तीका पुत्र भीमसेन पृथ्वीपर नियत हुए उन शूरवीरोंसे नहीं लड़ा २२-२४ दण्डधारी यमराज के समान भीमसेन ने सुवर्ण से मढ़ी हुई बड़ी गदा लेकर आपके सब शूरवीरों को मारा २५ जीवन त्यागनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त सब पदाती बान्धव भीमसेनकी ओर ऐसे दौड़े जैसे कि पतंगे अग्निकी ओर दौड़ते हैं २६ तब वे सब युद्ध में दुर्मद महाक्रोधयुक्त भीमसेनको पाकर अकस्मात् ऐसे नष्ट हुए जैसे कि काल को देखकर सब जीवों के समूह नाशको प्राप्त होते हैं २७ भीमसेन ने खड्ग और गदा लेकर बाज पक्षीके समान अच्छी रीतिसे भ्रमण करते हुए आपके पचीस हज़ार शूरवीरोंको मार डाला २८ सच्चा पराक्रमी महाबली भीमसेन उस पदाती सेना को मारकर और धृष्टद्युम्न को आगे करके फिर नियत हुआ २९ पराक्रमी अर्जुन रथकी सेनाके सम्मुख हुआ और मारनेके अभिलाषी बड़े पराक्रमी, प्रसन्नचित्त नकुल और सहदेव महारथी सात्यकी समेत शकुनी के सम्मुख गये। वे उसके बहुत घोड़ोंको तीक्ष्ण बाणोंसे मारकर शीघ्र ही उसके सम्मुख दौड़े, वहां बड़ा युद्ध हुआ।

हे राजन् ! इसके पीछे अर्जुन ने रथकी सेनाको मँझाया ३०-३२ और तीनों लोकोंमें विख्यात गाण्डीवधनुषको टंकारा । सारथि श्रीकृष्ण, श्वेत घोड़े जुते हुए रथ ३३ और शूरवीर अर्जुनको देखकर रथ और घोड़ोंसे रहित, बाणोंसे रोके हुए आपके पचीस हज़ार शूरवीर पदातियों ने अर्जुनको घेर लिया । पाञ्चालों का महारथी, बड़ा धनुषधारी, शत्रुओं के समूह का मारनेवाला, यशस्वी, राजा पाञ्चाल का बेटा श्रीमान् धृष्टद्युम्न उस पदाती सेनाको मार भीमसेन को आगे करके थोड़ी ही देर में सम्मुख वर्तमान हुआ । कपोत वर्ण घोड़े और कोवि-दार के चिह्न की ध्वजा धारण करनेवाले धृष्टद्युम्न को देखकर आपके शूरवीर भयसे भागे और यशवान् नकुल, सहदेव और सात्यकी उस शीघ्र अस्त्र चलानेवाले गान्धार के राजा पर चढ़ाई करके ३४-३८ थोड़ी ही देरमें सम्मुख दिखाई पड़े । हे श्रेष्ठ ! चेकितान, शिखण्डी और द्रौपदी के पुत्रों ने आपकी बड़ी सेनाको मारकर फिर शंख बजाये । वे लोग आपके सब शूरवीरों को भागे हुए और मुख फेरते देखकर ३९-४० मार-काट करते हुए चारों ओर को ऐसे दौड़े जैसे कि बहुतसे बैल एक बैलको जीतकर दौड़ते हैं । हे राजन् ! बलवान् पाण्डव अर्जुन आपके पुत्रकी उस बची हुई सेना को देखकर ४१ क्रोधयुक्त हुआ । उसके पीछे उसने अकस्मात् उसको बाणों से आच्छादित करदिया ४२ फिर उठी हुई धूलसे कुछ दिखाई नहीं पड़ा । लोकके अन्धकार-रूप और पृथ्वी के बाणरूप ४३ होजाने पर आपके शूरवीर भयभीत होकर सब दिशाओं में भागे । हे राजन् ! सेनाओं के छिन्न भिन्न होने पर चारों ओर से अपने शत्रुओं के सम्मुख जाकर भरतर्षभ दुर्योधन ने सब पाण्डवों को युद्ध के निमित्त ऐसे बुलाया जैसे कि पूर्व समय में राजा बलि ने देवताओं को बुलाया था । नाना प्रकार के शस्त्र चलानेवाले, क्रोधयुक्त, बारम्बार घुड़कने वाले वे लोग सब साथ होकर इस सम्मुख गर्जनेवाले के साम्हने हुए । भयसे उत्पन्न व्याकुलतासे पृथक् दुर्योधनने भी उन शत्रुओंको बाणोंसे हटाया ४४-४७ वहां पर हमने आपके पुत्रके अपूर्व पराक्रम और वीरत्व को देखा कि सब पाण्डव उसके सम्मुख ठहरनेमें समर्थ नहीं हुए ४८ दुर्योधनने बहुत दूर न पहुँचनेवाली और भागने की इच्छा करनेवाली अपनी सेनाको देखा ४९ हे राजेन्द्र ! इसके पीछे आपका बेटा बड़ी बुद्धिमानी से सबको प्रसन्न करता हुआ उन शूरवीरों को नियत कर बोला, कि ५० मैं पृथ्वी और पर्वतों में कोई ऐसा स्थान अथवा देश

नहीं देखता हूं जहा जानेसे तुम लोगोंको पाण्डव न मारसकें। फिर भागने से तुम्हारा क्या प्रयोजन है ५१ पाण्डवों की सेना थोड़ी है और श्रीकृष्ण तथा अर्जुन अत्यन्त घायल हैं। जो यहां हम सब नियत्त होजायँ तो इस समय अवश्य ही हमारी पूर्ण विजय होजाय ५२ पाप करनेवाले ये पाण्डव तुम सब हटनेवाले और छिन्न भिन्न होनेवालों का पीछा करके मारेंगे। युद्धमें हमारा मरना शुभदायक है क्योंकि क्षत्रियधर्म से लड़नेवालेका युद्धमें मरना सुखकर है। मरा हुआ दुःखको नहीं जानता है और मरकर अत्यन्त सुख भोगता है ५३-५४ हे क्षत्रियो! सुनो, जितने कि तुम यहां इकट्ठे हो, सभी क्रोधयुक्त शत्रु भीमसेन के अधीन होगे। भागने से अधिक क्षत्रियका पापकर्म और नहीं है एवं धर्मयुद्ध से श्रेष्ठ स्वर्गमार्ग नहीं है ५५-५६ युद्धकर्ता थोड़े ही समय में प्राप्त होनेवाले लोकोंको शीघ्र भोगता है। महारथी क्षत्रिय लोग दुर्योधन राजाके वचनों की प्रशंसाकर ५७ फिर भी पराजयको न सहनेवाले पराक्रममें प्रवृत्त होकर पाण्डवोंके सम्मुख वर्तमान हुए ५८ उसके पीछे फिर आपके युद्धकर्ता और दूसरे प्रतिपक्षी लोगों का बड़ा भयकारी देवासुरों के युद्ध के समान युद्ध जारी हुआ ५९ महाराज! आपके पुत्र दुर्योधन सब सेनासमेत उन पाण्डवों के सम्मुख दौड़े, जिनके अग्रवर्ती युधिष्ठिर थे ६० ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिकौरवसैन्यापयानंनाम तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय।

हे भरतवंशिन्! गिरे हुए रथों के नीड़, महात्माओं के रथ, युद्ध में मरे हुए हाथी और पत्तियों को देखकर १ रुद्रजी के विहार क्रीड़ास्थान के समान बड़ी भयानक युद्धभूमिको या अपकीर्ति को पानेवाले सैकड़ों हजारों राजाओंको २ और अर्जुनके पराक्रम को देखकर, आपके बेटेके मुख फेरने, शोक से आहत चित्त होने, सेनाओंके अत्यन्त व्याकुल होने ३ तथा उसके दुःखपर ध्यान करने से एवं मथी हुई सेनाओं के कठिन शब्दको सुनकर ४ और युद्धमें राजाओं की पहिंचानों के चिह्नों को टूटे हुए देखकर आयु, शील और स्वभावसे युक्त, कृपासे पूर्ण, वार्तालापमें कुशल, तेजस्वी गुरु कृपाचार्यजी ५ राजा के पास जाकर बड़े क्रोधित हो दुर्योधनसे बोले, कि हे भरतर्षभ! जो मैं तुमसे कहता हूं, उसे समझो। महाराज! उसे सुनकर जो तुम्हें अच्छा लगे, सो करना ६-७

हे राजेन्द्र! निश्चय ही धर्मयुद्ध से अधिक कोई कल्याण करनेवाला मार्ग नहीं है। हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ! उत्तम क्षत्रिय लोग भी उसी मार्ग में नियत होकर लड़ते हैं ८ बेटा, भाई, पिता, भानजा, मामा, नातेदार, भाई, बन्धु के साथ लड़नेके योग्य हैं ९ मरने में श्रेष्ठ धर्म है और भागना महाअधर्म है; इसी हेतुसे जीवनकी इच्छा रखनेवाले क्षत्रियोंने इस भयकारी घोर जीविकाको प्राप्त किया है १० में तुमसे कुछ वृद्धि करनेवाली बात कहता हूं, कि भीष्म, द्रोणाचार्य, महारथी कर्ण ११ जयद्रथ, आपके बहुतसे भाइयों और आपके बेटे लक्ष्मण के मरने पर हम लोग किस बचे हुए की प्रधानता में रहें १२ हम जिनके ऊपर भार रखकर राज्य में अपना प्रबन्ध जारी करते थे, उन शूरवीरों ने शरीर त्यागकर ब्रह्मज्ञानियों की गति पाई १३ हम उन प्रशंसनीय महारथियों के विना बहुत से राजाओं को गिराकर दुःखी रहेंगे १४ श्रीकृष्ण को प्रधान रखनेवाले महाबाहु अर्जुन का साम्हना देवताओं से भी दुःख से होने योग्य है और सब जीवधारियों से तो वह अजेय है १५ इन्द्रधनुष और वज्ररूप इन्द्रध्वजाके समान ऊंची वानरध्वजा को पाकर वह बड़ी सेना कम्पायमान हुई १६ भीमसेनके सिंहनाद, पाञ्चजन्य शङ्खके शब्द और गाण्डीवधनुष के शब्दों से हमारे चित्त व्याकुल होते हैं १७ बड़ी बिजलीके समान चक्षुके प्रकाशको चुराता, घूमता और आलातचक्र के समान घूमता हुआ गाण्डीवधनुष दिखाई पड़ा १८ सुवर्णजटित बड़ा धनुष दिशाओंमें चलायमान ऐसे दिखाई पड़ा जैसे कि बादलों में बिजली दिखाई देती है १९ श्वेत चन्द्रमा के समान प्रकाशमान तेज घोड़े आकाशको पान करते रथ में संयुक्त हैं २० श्रीकृष्णजी की सवारी से युक्त सुवर्णजटित अङ्गवाले घोड़े युद्ध में उसी प्रकार अर्जुनको ले चलते हैं, जैसे कि वायुसे युक्त बादल २१ हे राजन्! अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ अर्जुन ने युद्धभूमि में उस आपकी सेनाको ऐसे भस्म कर दिया जैसे कि प्रबल अग्नि बड़े घने शुष्क वनको भस्म करदेता है २२ हमने चार दांतोंवाले हाथी और सेनाओंके भँभानेवाले महेन्द्र के समान प्रकाशमान अर्जुन को देखा २३ कमल के वनको छिन्न भिन्न कर देनेवाले हाथी के समान आपकी सेनाके छिन्न भिन्न करनेवाले और राजाओंको भयभीत करनेवाले अर्जुन को देखो २४ जैसे कि मृगोंके समूहोंको सिंह भयभीत करता है वैसेही धनुषके शब्द से डरानेवाले पाण्डव अर्जुनको फिर देखो २५ संसारके बड़े धनुषधारियों में श्रेष्ठ कवचधारी

श्रीकृष्ण और अर्जुन लोकमें शोभायमान हुए २६ हे भरतवंशिन्! अब युद्धमें चारों ओरके मरनेवालों के महाघोर युद्धों के सत्रह दिन व्यतीत हुए २७ आपकी सब सेनाएँ चारों ओरसे ऐसे पृथक् पृथक् होगई जैसे कि वायु से शरद ऋतुके बादलोंके समूह पृथक् पृथक् होजाते हैं २८ महाराज! अर्जुन ने आपकी सेनाको ऐसे अत्यन्त कम्पायमान किया जैसे कि समुद्र में वायु से घूमनेवाली और चारों ओर से डूबनेवाली नौका होती है। तेरा सेनापति कर्ण कहां गया और पीछे चलनेवालों समेत द्रोणाचार्य कहां गये? मैं कहां और तेरा शरीर कहां, कृतवर्मा कहां २९--३० और भाइयों समेत तेरा भाई दुश्शासन कहां है? बाणोंके लक्ष्योंमें वर्तमान जयद्रथको देखकर ३१ उसी प्रकार नाते-रिश्तेदार, भाई, साथी और मामा आदिकों को देखकर किसकी वर्तमानता करें? सबके देखते पराक्रम से सब लोकको मस्तक पर उल्लंघन कर ३२ राजा जयद्रथको मारा फिर और किस बचेहुए की वर्तमानता करें? यहां ऐसा कौनसा मनुष्य है, जो पाण्डव अर्जुनको विजय कर सक्ता है ३३ उस महात्माके अस्त्र बड़े दिव्य और नाना प्रकारके हैं। गाण्डीवधनुष का शब्द हमारे बल पराक्रमों को हरता है ३४ मारे गये प्रधानकी यह सेना उसी प्रकार की है, जैसे कि चन्द्रमा से रहित रात्रि अशोभित होती है। जैसे हाथीसे तोड़ेहुए वृक्षोंवाली नदी होती है वैसेही यह सेना भी महाव्याकुल हुई ३५ जिसका प्रधान मारा गया है, उस सेनामें महाबाहु अर्जुन स्वेच्छाचारी होकर ऐसे घूमेगा जैसे कि सूखे वनमें प्रज्वलित अग्नि घूमता है ३६ सात्यकी और भीमसेन का वेग सब पर्वतों को तोड़कर समुद्रों को भी शुष्क करसकता है ३७ हे राजन्! भीमसेन ने सभाके मध्यमें जो जो वचन कहे थे वे सब सत्य किये और आगे भी करेगा ३८ कर्ण के सम्मुख नियत होने पर गाण्डीवधनुषधारी से अलंकृत और रक्षित वह पाण्डवीय सेना कठिनाई से सम्मुखता के योग्य और रक्षित हुई। तुमने भी वे कर्म किये, जो कि साधुओं में नीच कर्म गिने जाते हैं और वे सब कर्म तुमने निर्हेतुक किये, इसीसे उनका फल तुमको प्राप्त हुआ है ३९--४० हे भरतर्षभ! तुमने उपायों से सब पृथ्वी को विजय किया। हे तात! वह सब पृथ्वी और तुम्हारा शरीर सन्देहोंमें प्रवृत्त है ४१ हे दुर्योधन! आत्माकी रक्षा करो, आत्मा ही सबका पात्र है। हे तात! पात्रके खण्डित होनेपर उसमें की सब वस्तुएँ इधर उधर दशों दिशाओं में बह जाती हैं ४२ विनाश पानेवाले सीधे मनुष्य

से सन्धि कर लेना योग्य है और वृद्धियुक्त से युद्ध करना योग्य है, यह बृहस्पतिजी की नीति है ४३ हे समर्थ ! हम अपने बल पराक्रममें पाण्डवोंसे न्यून हैं, इस लिये यहां अब पाण्डवों से सन्धि करना ही मैं उचित मानता हूं ४४ जो कल्याणको नहीं जानता है और कल्याणका अपमान करता है वह शीघ्रही राज्य से क्षीण और रहित होकर कल्याणको नहीं पाता ४५ जो हम राजा को झुककर राज्य पाजावें, तो हमारा कल्याण हो। हे राजन् ! अज्ञानता से पराजय पाना उचित नहीं है ४६ राजा धृतराष्ट्र और गोविन्दजी के वचनोंसे दयालु राजा युधिष्ठिर तुमको राज्यसे संयुक्त करेगा ४७ इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजी अजेय राजा युधिष्ठिर और अर्जुन तथा भीमसेन से जो कुछ कहेंगे वे सब उनकी बातको निस्सन्देह मानेंगे ४८ और श्रीकृष्णजी कौरव धृतराष्ट्रकी बात को उल्लंघन नहीं करेंगे। पाण्डव भी श्रीकृष्णजी के वचनको उल्लंघन नहीं करेंगे, यह मैं निश्चय मानता हूं ४९ मैं पाण्डवों के साथ तुम्हारी सन्धि को शुभ, कल्याणकारी मानता हूं, शत्रुता नहीं मानता हूं। मैं अशूरता और प्राणों की रक्षा के अर्थ तुमसे नहीं कहता हूं। मैं केवल तुम्हारे कल्याण के अर्थ उपकारी वचन कहता हूं; नहीं तो युद्धभूमि में पड़े पड़े तुम मेरे वचनोंको स्मरण करोगे। इस प्रकारवे वृद्ध शारद्वत कृपाचार्यजी यह विलाप करके लम्बी और उष्ण श्वासाओं को छोड़ते हुए महाअचेत होगये ५०-५१ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय।

सञ्जय बोले, कि हे राजन् ! यशस्वी गौतम कृपाचार्य के इन वचनों को सुनकर राजा दुर्योधनभी लम्बी और उष्ण श्वासाएँ लेकर मौन होगया १ वह शत्रुओंका तपानेवाला महासाहसी दुर्योधन एक मुहूर्त ध्यान करके शारद्वत कृपाचार्य से बोला २ कि शुभचिन्तकों के कहने योग्य सब बातें मैंने सुनी हैं। उन सब कहनेवाले शुभचिन्तकोंने भी प्राणोंको त्यागकर आपके साथ युद्ध किया ३ महातेजस्वी महारथी पाण्डवोंके साथ लड़नेवाले और सेनाओं के मँझानेवाले तुमको सबलोकों ने देखा ४ मुझे जो आप शुभचिन्तकों ने ऐसे वचन सुनाये हैं ये सब मुझे ऐसे प्रसन्न नहीं करते हैं, जैसे कि मरने के इच्छावानको ओषधियां प्रसन्न नहीं करतीं ५ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ महाबाहो !

सहेतुक हितकारी वचनोंसे मुझे प्रसन्नता नहीं होती है। वह बड़ा धनाढ्य राजा युधिष्ठिर पाशों के द्यूतमें हमसे पराजित हुआ है और राज्यसे भी रहित किया गया है। वह हमारे ऊपर कैसे विश्वास करेगा ६-७ वह हमारे वचनों पर कैसे श्रद्धा करेगा ? इसी प्रकार दूत होकर आनेवाले और पाण्डवों की वृद्धिमें प्रीति करनेवाले इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजी भी ठगे गये, उस कर्मको आपने नहीं विचारा। हे ब्राह्मण ! वह किस प्रकारसे मेरे वचनों को अंगीकार करेगा ? जो द्रौपदी ने सभाके मध्यमें विलाप किया है, उसको और उस प्रकारके राज्यहरणको श्रीकृष्णजी कभी नहीं सहेंगे ८-१० पूर्वसमय में हमने सुना है, कि श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों एकप्राण और मित्र हैं। प्रभो ! अब मैं उसको प्रत्यक्ष देखता हूं ११ केशवजी अपने भानजेको मृतक सुनकर दुःख में हैं। हम उसके अपराधी हैं। वे हमारे निमित्त ऐसा कैसे करेंगे ? अर्जुनभी अभिमन्यु का नाश होनेसे आनन्द नहीं पाता है । वह प्रार्थना करनेपर भी मेरी वृद्धिका उपाय कैसे करेगा १२-१३ मँझला पाण्डव महाबली भीमसेन बड़ा तीव्र है। उसने उग्र प्रतिज्ञा की है, वह अवश्य शत्रुता करेगा, कभी शान्ति न पावेगा १४ वे खड्ग और कवचधारी नकुल और सहदेव दोनों वीर शत्रुता करनेवाले, अश्विनीकुमारों के समान हैं १५ धृष्टद्युम्न वा शिखण्डी मेरे साथ शत्रुता करनेवाले हैं। हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ! वे दोनों मेरी वृद्धिमें कैसे उपाय करसकते हैं १६ दुश्शासनने सबलोगों के देखते हुए एक वस्त्र रखनेवाली रजस्वला द्रौपदी को जो भरी सभा में दुःखी किया था १७ उसको पाण्डव अबतक स्मरण कर दुःखी होते हैं। वे शत्रुओंके तपानेवाले पाण्डव युद्धसे हटाने के योग्य नहीं हैं १८ जब द्रौपदीको दुःख दिया गया था, तब से उस महादुःखी कृष्णा द्रौपदीने मेरे नाश और अपने सुहृदोंके प्रयोजनकी सिद्धिके निमित्त बड़ा तप किया है १९ और तबतक सदैव पृथ्वी पर शयन करती रहेगी जब तक कि शत्रु का अन्त न होगा । वासुदेवजीकी सगी बहिन अपनी प्रधानता और अहंकारको त्यागकर २० और द्रौपदी सदैव दासीरूप होकर सेवा करती है। ये भी अच्छी रीतिसे क्रोधमें भरे हुए हैं, किसी भी प्रकारसे शान्ति नहीं पासकते २१ अभिमन्युके नाश होनेसे वह युधिष्ठिर किस प्रकार मेरे साथ सन्धि करने को योग्य होगा ? प्रकट है, कि मैं इस सागराम्बरा पृथ्वी को भोगकर २२ फिर पाण्डवोंकी कृपा पाकर इसे किस प्रकारसे भोगूंगा ? सूर्यके

समान सब राजाओंके ऊपर प्रकाशमान होकर, अब मैं किस रीतिसे राज्यको करूंगा २३ फिर मैं दासके समान होकर युधिष्ठिरके पीछे पीछे कैसे चलूंगा ? अपने आप बड़े बड़े भोगोंको भोगकर और देनेके योग्य अनेक दानोंको देकर २४ किस प्रकार से नीचोंके साथ नीच जीविका से अपना निर्वाह करूंगा ? मैं आपके वचनोंकी निन्दा नहीं करता । आपने मधुर, स्वच्छ और प्रियकर वचन कहे हैं २५ मैं किसी दशामें भी समय के अनुसार सन्धिको श्रेष्ठ नहीं मानता हूं । हे शत्रुओं के तपानेवाले ! मैं युद्धमें अच्छी नीतिको देखता हूं २६ यह समय युद्ध करनेका है, नपुंसक बनने का नहीं । मैंने अनेक यज्ञोंसे पूजन किये और ब्राह्मणों को दक्षिणाएँ दीं २७सब अभीष्ट प्राप्त किये, वेदों को श्रवण किया, शत्रुओं के मस्तक पर रहा और दासोंका पोषण करके मैंने दुखियों को भी दुःखोंसे छुड़ाया २८ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ ! मैं पाण्डवोंसे ऐसा कहनेका उत्साह नहीं करता हूं । दूसरों के देशों को मैंने विजय किया, अपने देशका पोषण किया २९ नाना प्रकार के भोग भोगे और धर्म, अर्थ, काम-इन तीनों वर्गोंका भी मैंने सेवन किया । क्षत्रियधर्म, और पितृलोग इन दोनोंके ऋणों से भी अऋणता प्राप्त की ३० इस लोकमें सुख अविनाशी नहीं है, राज्यका भी यही हाल है । यहां तो केवल कीर्तिही प्राप्त करनेके योग्य है परन्तु वह युद्धसे प्राप्त होती है, अन्य किसी प्रकारसे नहीं ३१ घरमें क्षत्रिय की मृत्यु निन्दाके योग्य है । घरमें शय्या पर मरना महाअधर्म है ३२ जो मनुष्य वनमें अथवा युद्धमें शरीर को त्यागता है, वह यज्ञोंके फलोंको पाकर बड़ी वृद्धताको पाता है ३३ जो वृद्धावस्थासे युक्त रोगी मनुष्य दुःखकी बातोंको करता और रोता हुआ, रुदन करनेवाले जातिवालों में मरता है, वह पुरुष नहीं है ३४ मैं अभी नाना प्रकारके भोगों को त्यागकर शुभ युद्धसे परम गति पानेवाले पुरुषों के लोकोंको और इन्द्रकी सालोक्यताको पाऊंगा अर्थात् सदैव इन्द्रके ही पास रहूंगा । निश्चय ही शूरवीर, श्रेष्ठ चलन युद्ध में मुख न फेरनेवाले, बुद्धिमान्, सत्यसंकल्प, सब यज्ञोंके करनेवाले और शस्त्ररूपी यज्ञस्नानसे पवित्र पुरुषों का निवास स्वर्गमें है । निश्चित बात है, कि युद्धमें अप्सराओं के समूह आनन्दपूर्वक दीखते हैं ३५-३७ और यह भी निश्चय है, कि पितृलोग उन देवताओंकी सभामें पूजित, अप्सराओंसे व्याप्त, उन स्वर्गमें आनन्द करनेवालोंको देखते हैं । देवताओं के द्वारा चलाया हुआ मार्ग दूसरोंसे अधिक कर्म

करनेवाले शूरोंसेभी प्राप्त किया गया है। हम उस मार्ग में चढ़ना चाहते हैं ३८-३९ वृद्ध भीष्मपितामह, वृद्ध बुद्धिमान् द्रोणाचार्य, जयद्रथ, कर्ण और दुश्शासनने भी उसी मार्ग को प्राप्त किया ४० इस मेरे प्रयोजन के लिये उपाय करनेवाले जो शूरवीर राजा लोग मारे गये, वे सब रुधिरमें लिप्त बाणों से विदीर्ण अंग पृथ्वी पर सोते हैं ४१ उत्तम अस्त्रों के ज्ञाता महाशूर, वेदोक्त रीतिसे यज्ञ करनेवाले न्यायके अनुसार युद्ध में प्राणों को त्यागकर इन्द्रभवन में नियत हैं ४२ चढ़ाई करनेवाले, बड़े वेगवान् और इस लोक में सद्गतिको पानेवाले उन लोगों से यह दुष्प्राप्य मार्ग रचा गया है जो कि फिर कठिनता से प्राप्त होगा ४३ जो शूर मेरे निमित्त मारे गये, उनके कर्म को स्मरण करता और उनके ऋणोंसे उऋण होने के निमित्त मैं राज्य में अपना चित्त नहीं करता हूं ४४ समान अवस्थावाले भाई और पिता पितामहादिकों को गिराकर जो अपने जीवनकी रक्षा करूंगा, तो निश्चयही सब संसार मेरी निन्दा करेगा ४५ पाण्डवको झुककर मित्र, शुभचिन्तक और बान्धवों से रहित मुझ राजा को वह राज्य कैसा होगा ४६ मैं इस प्रकार से, इस संसार का नाश करके उत्तम युद्ध के द्वारा स्वर्ग पाऊंगा, यह विपरीत नहीं है ४७ इस प्रकार उसके वचन सुनकर उसकी प्रशंसा करते हुए सब क्षत्रिय लोग राजा से बोले, कि धन्य है धन्य है ४८ वे सब पराजयके न शोचनेवाले, पराक्रम करने में प्रवृत्तचित्त, युद्धकरने का निश्चय करके बड़े साहसी हुए ४९ इसके पीछे युद्धको स्वीकार करनेवाले सब कौरवों ने सवारियों को विश्वास देकर कुछ कम दो योजन पर जाकर नियत हो ५० चारों ओर से प्रकाशमान वृक्षों से रहित पवित्र हिमाचल पर्वत के सुन्दर शुभ शिखर पर अरुणवर्णा सरस्वती में स्नान किया और उसके जलको भी पान किया ५१ तब फिर आपके पुत्रके द्वारा साहस रखनेवाले वे सब शूरवीर कालकी प्रेरणा से परस्पर चित्तको स्थिर करके वहांसे लौटआये ५२॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि पञ्चमोऽध्यायः ५॥

छठा अध्याय।

सञ्जय बोले, कि महाराज! इसके पीछे उस हिमालयके शिखरपर युद्धको उत्तम माननेवाले सब शूरवीर इकट्ठे हुए १ महारथी शल्य, चित्रसेन, शकुनी, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, यादव कृतवर्मा, पराक्रमी सुषेण, अरिष्टसेन, धृतसेन

और जयत्सेन नामके वे राजा लोग रात्रि में रहे। इसके पीछे २-३ युद्ध में वीर कर्ण के मारे जाने पर विजय से शोभित, पाण्डवों से भयभीत आपके पुत्रों ने विना हिमाचल पर्वतके आनन्द नहीं पाया ४ हे राजन्! वहां युद्ध में उपाय करनेवाले वे लोग एक साथही शल्य के सम्मुख विधिपूर्वक प्रशंसा करते हुए राजासे बोले ५ कि आप अभी अपना सेनापति नियत करके शत्रुओं से लड़नेके योग्य हो। ऐसा सेनापति नियुक्त करिये जिससे कि हम युद्ध में रक्षित होकर शत्रुओंको जीतें ६ तब तो दुर्योधन उत्तम रथमें बैठकर अश्वत्थामाजी से बोले, कि जो संग्रामों में सब प्रकारके युद्धों के चमत्कारों का जानकार, युद्ध में कालके समान ७ अंगोंसे उत्तम, गुप्त शिरवाला, कंबुग्रीव, प्रियभाषी, प्रसन्नचित्त, कमलके समान नेत्र, व्याघ्रके समान मुख, मेरु पर्वतके समान गौरवता ८ स्कन्ध, गति और शब्दसे नन्दीगणके समान हृष्टपुष्ट शिलष्ट, आयतभुज और बहुत बड़े सघन वक्षस्स्थलवाला हो ९ जो तीव्रता और बलमें वायु और गरुड़के समान, तेजमें सूर्य और बुद्धिमें शुक्रजीके समान १० कान्ति, रूप और मुख-इन तीनों ऐश्वर्यों से चन्द्रमाके सदृश, सुनहरे कमलसमूहों के समान स्वच्छ अंगके जोड़ ११ गोल टांग कमर और जंघावाला, सुन्दर चरण, उँगली और नख रखनेवाला हो, ईश्वर ने बारम्बार गुणों का स्मरण करके उपाय से जिसे उत्पन्न किया हो १२ और जो अन्य सब लक्षणों से युक्त, सावधान, वेदोंका समुद्र, वेगों से शत्रुओंको विजय करनेवाला और बलपराक्रमके द्वारा शत्रुओं से अजेय हो १३ जो दश अंग और चार चरण रखनेवाले बाण और अस्त्रोंको मूलसमेत जानता हो और जिसने इतिहास तथा अंगों समेत चारोंवेदों को अच्छी रीतिसे पढ़ा हो १४ बड़ा तेजस्वी, उपायके द्वारा उग्र तपोंसे शिवजीकी आराधनाकर योनिसे जन्म न लेनेवाले द्रोणाचार्य से अयोनिज स्त्री में उत्पन्न हुए १५ उस अनुपम कर्म और रूपसे पृथ्वी पर असादृश्य, सब विद्याओंमें पूर्ण, गुणोंके समुद्र, शत्रुओं के विजय करनेवाले १६ अश्वत्थामाजीके पास आपका पुत्र जाकर बड़ी शीघ्रतासे बोला, कि हम साथ हों, किसको अग्रगामी कर पाण्डवोंको विजय करें १७ आप गुरुजीके पुत्रहैं। इस हेतु आपकीही आज्ञा से इसका निर्णय होना चाहिये कि मेरा सेनापति कौन हो १८ अश्वत्थामाजी बोले, कि कुल, तेज, बल, यश, लक्ष्मी और सब गुणों से पूर्ण यह शल्य हमारा सेनापति हो १९ उपकारका ज्ञाता, बड़ी सेनाका स्वामी, महाबाहु दूसरे स्वामि-

कार्त्तिकके समान शल्य अपने निजभानजोंको त्यागकरके हमारे पास आया २०
हे उत्तम राजा लोगो ! शल्य राजाको अपना सेनापति बनाकर हम शत्रुओंके
विजय करने में ऐसे समर्थ होंगे जैसे कि स्वामिकार्त्तिक को सेनापति बनाकर
देवता विजयी हुए २१ अश्वत्थामाके इन वचनों को सुनकर सब महारथी
राजा शल्यको घेर चारों ओर खड़े होकर विजय के शब्द करने लगे २२ युद्धमें
सबने बुद्धि से उत्तम निवासस्थान पाया। इसके पीछे दुर्योधन उस रथसवार
युद्धमें द्रोणाचार्य और भीष्मके समान शल्यको २३ हाथ जोड़कर बोला; कि
हे मित्रोंके प्यारे ! अब मित्रोंका वह समय वर्तमान है २४ जिसमें कि बुद्धि-
मान् लोग अपने मित्र और शत्रुओंकी परीक्षा लेते हैं। हे शूर ! आप हमारी
सेनाके मुखपर सेनापति हूजिये २५ जिससे कि हमलोग युद्ध करनेवाले पाण्डवों
को सम्मुख पाकर जीतें। आपके युद्ध करनेपर निर्बुद्धि पाण्डव अपने मन्त्री
और पाञ्चालों समेत उपायोंसे रहित होंगे २६ शल्य ने कहा, कि हे राजन् ! जो
तुम मुझको मानते हो, तो हे कौरवराज ! मैं इसको करूंगा क्योंकि मेरे तन,
धन, प्राण और राज्य सब तुम्हारे हितके निमित्तहैं २७ दुर्योधन ने कहा, कि
मामाजी ! मैं आप श्रेष्ठ पुरुषको सेनापति बनाना चाहता हूं सो आप युद्धमें
हमारी ऐसी रक्षा करो जैसे कि स्वामिकार्त्तिक ने युद्धमें देवताओंकी रक्षा की
थी २८ हे राजेन्द्र ! ऐसे अभिषिक्त होजाओ जैसे कि देवताओं के सेनापति
अग्निरूप शिवजीके पुत्र स्वामिकार्त्तिक ने अभिषेचन पाया था और शत्रुओं
को ऐसे मारो जैसे कि महेन्द्र दानवों को मारते हैं २९ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिदुर्योधनवाक्यनाम षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय।

सञ्जय बोले, कि हे राजन् ! तब प्रतापी राजा मद्रने राजा दुर्योधनके वचन
सुनकर कहा, कि १ हे महाबाहो, राजा दुर्योधन ! सुनो । जिन रथसवार
श्रीकृष्ण और अर्जुनको तू रथियों में श्रेष्ठ मानता है २ ये दोनों भुजबलमें
किसी प्रकारसे भी मेरे समान नहींहैं। क्रोधयुक्त होकर मैं युद्ध में सन्नद्ध हो रण
के मुख पर देवता, असुर और मनुष्यों समेत सब पृथ्वीके मनुष्यों से युद्ध
करसक्ताहूं; फिर पाण्डवों से कैसे नहीं लड़सक्ता ? युद्धमें सम्मुख आनेवाले
पाण्डव और सोमकोंको मैं विजय करूंगा ३-४ निस्सन्देह मैं तुम्हारा सेनापति

होकर ऐसे व्यूहको रचूंगा जिसको कि प्रतिपक्षी तर नहीं सके ५ हे दुर्योधन! मैं निस्सन्देह सत्य सत्य कहता हूं। इसके अनन्तर हे भरतर्षभ, राजा धृतराष्ट्र! उस प्रसन्नरूप दुर्योधनने शास्त्रोक्त विधि से शीघ्रही मद्रके भूपति का सेनामें अभिषेक कराया ६-७ अभिषेक करने पर बड़े सिंहनाद हुए और आपकी सेनामें बाजे बजे ८ मद्रदेशी महारथी शूरवीर लोग बहुत प्रसन्न हुए। युद्धको शोभा देनेवाले राजा शल्य की प्रशंसा की ९ कि हे राजन्! तुम्हारी विजय हो और तुम सम्मुख आनेवाले शत्रुओं को मारो। महाबली धृतराष्ट्र के पुत्र आपके भुजबल को पाकर १० शत्रुओं से रहित हो इस पृथ्वीपर राज्य करें। निश्चय ही तुम युद्ध में देवता, असुर और मनुष्यों को जीतनेमें समर्थ हो ११ फिर यहां मरण धर्मवाले सोमक और सृञ्जय लोग क्या पदार्थ हैं? इस प्रकार प्रशंसित होकर मद्रदेशके स्वामी राजा शल्य बहुत प्रसन्न हुए १२ शल्य ने कहा, कि राजन्! अब मैं युद्ध में पाण्डवों समेत सब पाञ्चालोंको मारूंगा अथवा मरकर स्वर्गको जाऊंगा १३ अब लोग निर्भयके समान मुझे घूमतेहुए देखें। सब पाण्डव, सात्यकी समेत वासुदेवजी १४ पाञ्चालदेशी, चन्देरीदेशी, द्रौपदी के सब पुत्र, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सब प्रभद्रक भी १५ मेरे पराक्रमको और धनुषके बड़े बलको देखें और युद्धमें मेरे भुजबलकी हस्तलाघवता तथा अस्त्र-बलको देखें १६ अब सिद्धचारणों समेत सब पाण्डव देखें, कि मेरी भुजाओंमें कितना बल है और अस्त्रोंमें मेरी कितनी विज्ञता है १७ अब पाण्डवोंके महारथी मेरे पराक्रमको देखकर और सम्मुख आकर नाना प्रकारके कर्म करें १८ हे समर्थ, कौरव! अब मैं युद्धमें द्रोणाचार्य, भीष्म और कर्णको उल्लंघन कर पाण्डवोंकी सेनाओंको चारों ओरसे भगाऊंगा और तेरे हितके लिये युद्धभूमि में लड़ता हुआ घूमूंगा १९ सञ्जय बोले, कि हे बड़ाई देनेवाले, भरतर्षभ! उस समय शल्यके सेनापति होने पर आपकी सेनामें किसीने भी कर्णके दुःखको नहीं माना २० सेनाके लोग बहुत प्रसन्न हुए और पाण्डवोंको राजा मद्रके अधीन माना २१ फिर आपकी सेना बड़ी प्रसन्न होकर उस रात्रिमें सुखसे सोकर सावधान हुई २२ राजा युधिष्ठिर सेनाके उस शब्दको सुनकर सब क्षत्रियोंके समक्ष श्रीकृष्णजी से बोले, कि २३ हे माधवजी! दुर्योधन ने बड़े धनुषधारी, सब सेनामें पूजित, मद्रके राजा शल्यको अपना सेनापति कियाहै २४ हे माधव! इस पर विचार कर जो उचित हो, सो कीजिये। आप हमारे स्वामी और रक्षक हैं, इससे जैसा

योग्य हो, वैसा बड़ी शीघ्रतासे करना योग्य है २५ महाराज! इस पर वासुदेव जी राजा युधिष्ठिर से बोले, कि मैं शल्यको मुख्यता समेत जानता हूं २६ वह अधिकृतम पराक्रमी, महात्मा, बड़ा तेजस्वी, अभ्यस्त, अपूर्व युद्धकर्ता और हस्तलाघवता से संयुक्त है २७ भीष्म, द्रोणाचार्य और कर्ण युद्ध में जैसे थे, मेरे मतसे राजा मद्र भी उनके समान अथवा उनसे भी अधिक है २८ हे राजा युधिष्ठिर! मैं सोचकर भी उस युद्धभूमिमें लड़नेवाले शूरवीर शल्यके समान किसी को भी उससे लड़ने योग्य नहीं पाता हूं २९ क्योंकि शल्य बलमें इन शिखण्डी, अर्जुन, भीमसेन, सात्यकी और धृष्टद्युम्न से कहीं अधिक है ३० महाराज! सिंह और हाथी के समान पराक्रमी निर्भय राजा मद्र समय पर ऐसे घूमेगा जैसे कि क्रोधयुक्त काल संसारकी सृष्टिमें घूमता है ३१ हे पुरुषोत्तम! अब मैं युद्धमें शार्दूलके समान पराक्रमी तुम्हारे सिवाय उसकी सम्मुखता करनेवाला और किसीको नहीं देखता हूं ३२ हे कौरवनन्दन! देवताओं समेत इस सम्पूर्ण सृष्टिमें तुमसे बढ़कर दूसरा पुरुष नहीं है, जो युद्धमें क्रोधयुक्त हुए राजा मद्र को मारे ३३ इससे युद्धभूमिमें प्रतिदिन युद्ध करनेवाले और तुम्हारी सेनाके छिन्न भिन्न करनेवाले शल्यको युद्धमें ऐसे मारो जैसे कि इन्द्रने शम्बरको माराथा ३४ यहवीर अजेयहै औरदुर्योधन से प्रशंसासहित प्रतिष्ठा पानेवाला है। युद्धमें राजा मद्रके मरनेपर ही तुम्हारी विजय है ३५ हे पाण्डव! उसके मरनेपर दुर्योधन की समस्त बड़ी सेना मृतक सी है। अब तुम मेरी बात मानकर ३६ युद्धमें महारथी शल्यके सम्मुख जाओ। हे महाबाहो! इसको ऐसे मारो जैसे कि इन्द्र ने नमुचिको मारा था ३७ इसे अपना मामा जानकर दया न करना। तुम क्षत्रियधर्मको आगे करके राजा मद्र को मारो ३८ कर्णरूप पाताल से उत्पन्न होनेवाले, भीष्म और द्रोणाचार्यरूपी समुद्रको तरकर सेनासमूह समेत गोपदके समान स्रोतरूपी इस शल्यको पाकर इसमें मत डूबो ३९ अपने तपके बलको और क्षत्रियपनके बलको दिखलाकर इस महारथीको मारो ४० यह कहकर सायंकाल के समय पाण्डवोंसे पूजित शत्रुओंके वीरोंके मारनेवाले केशवजी अपने डेरे को गये ४१ उनके चले जाने पर धर्मराज युधिष्ठिर सब भाई, पाञ्चाल और सेनाके लोगोंको बिदा करके ४२ निरोग हाथीके समान उस रात्रि में सोये और कर्णके मरनेसे बड़े प्रसन्नचित्त वे सब पाण्डव और पाञ्चाल भी आनन्दसे सोये ४३ हे श्रेष्ठ! सूतपुत्रके मरने पर पाण्डवोंकी सेना के बड़े बड़े धनुषधारी

और महारथी विजय को पाकर तापसे रहितहो अत्यन्त प्रसन्न हुए ४४-४५ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिशल्यसेनापतिनाम सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय।

सञ्जय बोले, कि फिर रात्रिके बीतनेपर दुर्योधन ने आपके सब शूरवीरों से कहा, कि हे महारथियो! सन्नद्ध होकर अलंकृत होजाओ। राजा के विचार को जानकर वह सेना अलंकृत हुई और शीघ्र ही रथोंको जोड़जोड़कर उसी प्रकारसे शूरवीर लोग चारों ओर से दौड़े १-२ हाथी अलंकृत कर पंक्तियां सन्नद्ध हुईं, बाजोंके शब्द हुए ३ हे भरतवंशिन्! इसके पीछे युद्धके निमित्त शूरवीर सेना के लोगोंकी वार्तालाप करती हुई बची हुई सब सेना ४ मृत्युको लौटाकर दृष्टि पड़ी। महारथी लोग मद्रके राजा शल्यको सेनापति कर ५ और सब सेनाको विभाग करके अनेक भागोंसे युक्त हुए। वह सेना भी आकर नियत हुई। इसके पीछे कृपाचार्य,कृतवर्मा, अश्वत्थामा, शल्य,शकुनि और अन्यान्य शेष राजाओं ने अपनी अपनी सब सेनाओं समेत इकट्ठे होकर आपके पुत्रसे मिल सलाह की ६-७ कि किसी दशामें भी एक मनुष्यको पाण्डवों के साथ युद्ध न करना चाहिये। जो पाण्डवों के साथ अकेला युद्ध करे अथवा जो अकेले लड़नेवाले को त्यागे ८ वह पातक और उपपातक नाम पांच पापोंसे संयुक्त हो। परस्पर रक्षा कर और साथ रहकर हमलोगों को लड़ना चाहिये ६ वहां वे सब महारथी इस प्रकार नियम करके और राजा मद्रको आगे कर शीघ्रही शत्रुओं के सम्मुख गये १० हे राजन्! इसी प्रकार सब पाण्डवभी अपनी समस्त सेनाको अलंकृत कर बड़े युद्ध में युद्धाभिलाषी होकर चारों ओर से कौरवों के सम्मुख गये ११ हे भरतर्षभ! वह सेना,जिसमें रथ और हाथी चढ़ाई करनेवाले थे-व्याकुल समुद्र के समान शब्दायमान,समुद्र के रूप हुई १२ धृतराष्ट्र बोले,कि मैंने द्रोणाचार्य, भीष्म और कर्णका गिराया जाना सुना। अब तुम शल्य और मेरे पुत्रका गिराया जाना बतलाओ १३ हे सञ्जय! युद्ध में शल्य किस प्रकार धर्मराजके हाथसे मारा गया १४ सञ्जय ने कहा, कि राजन्! उस युद्ध में जो घोड़े, हाथी आदिके शरीरोंके नाश हुए, उनको सावधान होकर सुनो १५ भीष्म, द्रोणाचार्य और कर्ण के गिराये जाने पर आपके पुत्रोंको बड़ी प्रबल आशा हुई थी कि १६ शल्य सब पाण्डवों को युद्धमें मारेगा। हे श्रेष्ठ, भरतर्षभ! उस आशाको

हृदयमें धरकर बड़े विश्वास से युक्त १७ और युद्धमें महारथी राजा मद्रके आश्रित होकर आपके पुत्र ने अपनेको सनाथ माना १८ जब कर्ण के मरने पर पाण्डवोंने सिंहनाद किये, तब धृतराष्ट्र के पुत्रोंको महाभय उत्पन्न हुआ १९ महाराज! उस समय प्रतापी राजा मद्रने उनको विश्वास युक्त करके और सब सामान से अलंकृत सर्वतोभद्रनाम व्यूहको रचा २० प्रतापवान् महारथी शल्य अत्यन्त उत्तम सिन्धुदेशी घोड़ों से युक्त उत्तम रथ पर सवार होकर रत्नों से जटित बड़े भारके सहनेवाले महावेगवान् धनुषको चलायमान करते हुए पाण्डवों के सम्मुख गये महाराज! वहां जाकर उनके रथके नियत सारथी ने उस रथ समेत सिन्धुदेशी घोड़ों को शोभायमान किया २१-२२ हे राजन्! उस रथपर सवार शत्रुओं को पीड़ा देनेवाले शूरवीर राजा शल्य आपके पुत्रों के भयको दूर करते हुए युद्धभूमिमें पहुँचे २३ उस युद्ध में शस्त्रोंसे युक्त कवचधारी राजा शल्य मद्रदेशी वीर और कठिनता से विजय होनेवाले कर्ण के पुत्रोंसमेत व्यूह का मुख हुआ २४ उत्तम कौरवोंसे रक्षित होकर वह दुर्योधन सेना के मध्य में नियत हुआ और त्रिगर्तदेशियों से वेष्टित कृतवर्मा वाम भाग पर नियत हुआ २५ शक और यवनों समेत कृपाचार्य दक्षिण भागमें नियत हुए। काम्बोजदेशियोंको साथ लेकर अश्वत्थामा पीछे की ओर हुए २६ और घोड़ों की बड़ी सेनासे युक्त महारथी शकुनी तथा कैतव्य सब सेना समेत चले २७ तब वे बड़े धनुषधारी निर्दोष पाण्डव अलंकृत सेना को तीन भागों में कर आपकी सेना के सम्मुख दौड़े २८ महारथी धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सात्यकी ये सभी बड़ी शीघ्रता से शल्य की सेना के सम्मुख दौड़े २९ हे भरतर्षभ! अपनी सेना से युक्त मारने का अभिलाषी राजा युधिष्ठिर शल्यके सम्मुख दौड़ा ३० और शत्रुओं का मारनेवाला अर्जुन वेग से बड़े धनुषधारी कृतवर्मा और संसप्तकों के समूहों के सम्मुख गया ३१ हे राजेन्द्र! युद्धमें शत्रुओं के मारने के इच्छावान् महारथी सोमकनाम क्षत्रिय और भीमसेन कृपाचार्य के सम्मुख गये ३२ और सेनासमेत नकुल तथा सहदेव युद्धमें उन ससैन्य महारथी शकुनि और उलूकके सम्मुख नियतहुए ३३ इसी भाँति नाना प्रकार के शस्त्र हाथ में रखनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त आपके हजारों शूरवीर युद्ध में पाण्डवों के सम्मुख हुए ३४ धृतराष्ट्र बोले, कि युद्ध में महारथी महाधनुषधारी भीष्म, द्रोणाचार्य और कर्ण के मरने एवं कौरवीय तथा पाण्डवीय

सेना में थोड़े लोग रहनेपर ३५ और पाण्डवों के अत्यन्त क्रोध से चढ़ाई करनेपर हमारे मित्र और दूसरों की सेना कितनी बाक़ी रही ३६ संजय बोले, कि हे राजन्! हम और हमारे प्रतिपक्षी युद्ध के निमित्त जिसप्रकार सम्मुख हुए और युद्ध से जितनी सेना बाक़ी रही, उसको मुझ से सुनिये ३७ हे भरतर्षभ! ग्यारह हज़ार रथ, दश हज़ार सातसौ हाथी और पूरे दोहज़ार घोड़े शेष थे। आपकी सेना बारहकोटि पदातियों समेत शेष रही। छः हज़ार रथ, छः हज़ार हाथी, दशहज़ार घोड़े और दो करोड़ पदाती पाण्डवोंकी सेना में बाक़ी रहे। हे भरतवंशिन्! ये सब मिलकर युद्धके निमित्त आये ३८-४१ हे राजेन्द्र! इसप्रकार राजामद्रके मनमें नियत, विजयके लोभी, क्रोधयुक्त हमलोग सेनाओं को बाँटकर पाण्डवों के सम्मुख गये ४२ इसीप्रकार विजयसे शोभा पानेवाले शूर पाण्डव और यशस्वी नरोत्तम पाञ्चाल सम्मुख आये ४३ महाराज! इस प्रकार परस्पर विजयाभिलाषी नरोत्तम लोग प्रातःकालकी सन्ध्या के समय सम्मुख हुए ४४ इसके पीछे परस्पर मारनेवाले पाण्डव और आपके पुत्रोंका युद्ध महाघोररूप होकर भयानक हुआ ४५॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वण्यष्टमोऽध्यायः ८॥

नवां अध्याय।

हे राजन्! फिर कौरवोंका युद्ध जो सृञ्जयोंके साथ हुआ, वह घोर भयका बढ़ानेवाला देवासुर युद्धके समान था। चढ़ाई करनेवाले हज़ारों मनुष्य, रथ, घोड़ोंके समूह, अश्वसवार और घोड़े परस्पर में भिड़े १-२ भयानकरूप हाथियों के भागने के ऐसे शब्द सुने गये जैसे कि समय पर आकाशमें बादलों के शब्द होते हैं ३ हाथियोंसे घायल कितनेही रथसवार रथों समेत गिरपड़े और युद्धमें मतवाले हाथियोंसे भगाये हुए वीर भागे ४ हे भरतवंशिन्! वहां शिक्षा पानेवाले रथसवारोंने घोड़ों के समूहों को और चरणरक्षकों को बाणोंसे परलोक में भेजा ५ इसी प्रकार युद्धमें घूमनेवाले शिक्षित अश्वसवारों ने महारथियों को प्रास, शक्ति और दुधारे खड्गोंसे मारा। कितने ही धनुषधारियों ने महारथियों को घेरकर, बहुतोंने एकको पाकर, यमलोकमें भेजा और रथियों में श्रेष्ठ दूसरे महारथियों ने हाथीको घेरकर मारा ६-७ महाराज! इसी प्रकार मौके से लड़नेवाले महारथी को और बहुत बाणोंसे लड़नेवाले

क्रोधयुक्त रथी को हाथियोंने चारों ओर से घेरकर मारा । हे भरतवंशिन् ! हाथी ने हाथीको सम्मुख होकर मारा और रथीने रथी को ८-९ शक्ति, तोमर और नाराचों से मारा । रथ, हाथी और घोड़े पदातियोंको मर्दन करते १० बड़ी व्याकुलता उत्पन्न करते हुए युद्धमें दिखाई पड़े और चामरोंसे शोभित घोड़े पृथ्वीको पान करते चारोंओर को ऐसे दौड़े ११ मानों हिमालयके शिखरपर हंस दौड़ते हों । हे राजन् ! उन घोड़ों के खुरोंसे चिह्नित पृथ्वी १२ ऐसे शोभायमान हुई जैसे कि स्त्री हाथों के नखोंसे विदीर्ण होती है । घोड़ोंकी टापों के शब्द, रथनेमियों के शब्द १३ पत्तियों, हाथियों, बाजों और शंखों का १४ पृथ्वी में ऐसा शब्द हुआ जैसा परस्पर टकरानेवाली वायु के पृथ्वी पर गिरने से होताहै उस समय शब्द करनेवाले धनुष, प्रकाशित खड्ग और कवचों के प्रकाशों से कुछ नहीं जाना गया । गजराजकी सूंड़के समान टूटी हुई भुजाएँ व्याकुल और अधिक चेष्टा करती हुई भयानक वेग करती थीं । महाराज ! पृथ्वी पर गिरते हुए शिरों के ऐसे शब्द सुने गये जैसे कि तालवृक्षों से गिरते हुए फलोंके शब्द होते हैं । रुधिर से लिप्त पड़ेहुए शिरों से पृथ्वी ऐसे प्रकाशमान हुई १५-१८ जैसे कि समयपर सुनहरे कमलों से शोभित होती है । हे राजन् ! फैले हुए नेत्र उन निर्जीव और अत्यन्त घायल नरोंसे १९ युक्त हो वह पृथ्वी ऐसे शोभायमान हुई जैसे कि कमलोंसे होती है । चन्दनसे लिप्त बहुमूल्य रत्नमय केयूर रखनेवाली २० पड़ीहुई भुजाओंसे पृथ्वी ऐसे प्रकाशित हुई जैसे कि इन्द्रकी ध्वजाओं से बड़े युद्धमें काटीहुई महाराजाओं की जंघाओं से होती है । हाथीकी सूंड़के समान दूसरी जंघाओंसे वह युद्धभूमि व्याप्त हो गई । सैकड़ों धड़ोंसे आच्छादित छत्र चामरों से व्याकुल २१-२२ वह सेनारूप वन ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि फूलोंसे वन होताहै । महाराज ! वहां निर्भयके समान घूमनेवाले रुधिरसे लिप्त शूरवीर ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि प्रफुल्लित किंशुकके वृक्ष होते हैं । बाण और तोमरों से पीड़ावान् हाथी भी जहां तहां टूटे हुए बादलोंके समान गिरते हुए दीख पड़े और महात्माओं के हाथसे घायल हुई वह हाथियों की सेना २३-२५ सब दिशाओं में ऐसे छिन्न भिन्न होगई जैसे कि वायु से बादल छिन्न भिन्न होते हैं । हे समर्थ ! वे बादलरूपी हाथी चारों ओर से ऐसे गिरपड़े जैसे कि प्रलयकाल में वज्रसे टूटे हुए पहाड़ गिरते हैं । सवारों समेत पृथ्वीपर पड़े हुए घोड़ों के समूह जहां तहां पर्वत

के समान दिखाई दिये। फिर युद्धभूमि में परलोक की ओर बहनेवाली नदी उत्पन्न हुई २६-२८ जिसमें रुधिर जल, रथ भँवर, ध्वजा वृक्ष, हाड़ कंकड़, भुजा नक्र, धनुष झिरने, हाथी पर्वत, घोड़े पाषाण २९ बसा कीच, छत्र हंस और गदा उडुपक्षी है। वह नदी कवच और पगड़ियोंसे पूर्ण, पताकारूपी सुन्दर वृक्ष रखनेवाली ३० रथके पहिये रूप चक्रावली से पूर्ण, त्रिवेणुरूप दण्डक से संयुक्त शूरों को प्रसन्न करनेवाली और भयभीतों को भय बढ़ानेवाली ३१ कौरव और सृञ्जयोंसे व्याकुल महारुद्र नदी जारी हुई। परिघरूप भुजा रखनेवाले वे शूरलोग पितृलोक के निमित्त बहनेवाली उस बड़ी भयानक नदी को सवारीरूप नौकाओं के द्वारा तरे। हे राजन्! इस प्रकार उस अमर्यादारूप युद्धके जारी होने पर ३२-३३ जो कि पूर्व समय के देवासुर युद्धके समान था। घोर चतुरंगिणी सेनाके नाश होनेपर जहां तहां अन्य बान्धवों ने पुकारा ३४ पुकारनेवाले उन बान्धवोंके कारण भयसे पीड़ित दूसरे शूरवीर नियत हुए। इस प्रकार उस अमर्याद भयानक युद्धके होनेपर ३५ अर्जुन और भीमसेन ने शत्रुओं को अचेत किया तब वह आपकी बड़ी सेना महाघायल होकर ३६ जहां तहां ऐसी अचेत हुई जैसे कि नशे में स्त्री अचेत होजाती है। वहां भीमसेन और अर्जुन ने उस सेनाको अचेत कर ३७ शङ्खोंको बजाकर सिंहनाद किये। फिर बड़े शब्दको सुनतेही धृष्टद्युम्न और शिखण्डी ३८ धर्मराजको आगे कर राजामद्रके सम्मुख गये। हे राजन्! तब वहां हमने एक भयानकरूप आश्चर्य देखा ३९ जो शल्य से भिड़ेहुए शूरभागी होकर युद्ध करने लगे। फिर वेगवान्, अस्त्रज्ञ, युद्धदुर्मद, शीघ्रता से युक्त, आपकी सेनाको जीतनेके अभिलाषी नकुल और सहदेव सम्मुख गये। हे भरतर्षभ! इसके पीछे विजयसे शोभित पाण्डवों के बाणोंसे अत्यन्त घायल वह आपकी सेना लौटी। उस घायल सेनाने आपके पुत्रोंके देखते हुए दिशाओं को सेवन किया। वह सब सेना बाणोंकी वर्षासे अत्यन्त संयुक्त थी। हे राजन्! तब आपके शूरवीर हाहाकार करनेलगे ४०-४३ और युद्धमें परस्पर विजयाभिलाषी महात्मा पाण्डवों समेत क्षत्रियों के ठहर, ठहर शब्द हुए ४४ इसके पीछे पाण्डवोंके हाथसे पराजित आपकी सेनाके घोड़े, हाथियोंको शीघ्र चलानेवाले युद्धमें अपने प्यारे पुत्र, भाई, पिता, बाबा, शूरवीर मामा, भानजे आदि नातेदारोंको छोड़कर चारों ओरसे चलदिये ४५-४७॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि नवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय ।

सञ्जय बोले कि प्रतापी राजामद्र उस पराजित सेनाको देखकर अपने सारथीसे बोले कि मनके समान इन शीघ्रगामी घोड़ों को शीघ्रतासे चलाओ। यह पाण्डुका पुत्र राजा युधिष्ठिर श्वेत शोभायमान छत्र को धारण किये शोभित है १–२ वहां जल्दीसे मुझे पहुँचाकर मेरे बलको देख। अब युद्ध में पाण्डव लोग मेरे आगे नियत होनेको समर्थ नहीं हैं ३ इसप्रकारके वचन सुनकर राजा मद्रका सारथी उसी ओर चला जहांपर कि सत्यसंकल्प धर्मराज राजा युधिष्ठिर थे ४ वह पाण्डवों की सेना अकस्मात् चढ़ाई करनेवाली हुई और अकेले शल्यनेही युद्ध में उन सबको ऐसे रोका जैसे कि उठे हुए समुद्रको मर्यादा रोकती है ५ हे श्रेष्ठ! तब पाण्डवोंकी सेनाका समूह शल्यको पाकर युद्ध में ऐसे स्थित हुआ जैसे कि पर्वत को पाकर समुद्रका वेग होताहै ६ युद्धके निमित्त समरभूमि में नियत राजामद्रको देख मृत्युको पीछे कर सब कौरव लौटे ७ भाग की हुई उन अलंकृत सनाओं के लौटने पर रुधिररूप जल रखनेवाला महारौद्र युद्ध प्रारम्भ हुआ ८ युद्धमें दुर्मद नकुल ने चित्रसेनको सम्मुख पाया। उन दोनों अपूर्व धनुषधारियोंने परस्पर सम्मुख होकर ९ युद्धमें बाणरूपी जलसे परस्पर ऐसे सींचा जैसे कि दक्षिण और उत्तरसे उठेहुए बरसनेवाले दो बादल होतेहैं १० वहां हमने पाण्डवोंके अथवा अन्य लोगोंके अन्तरको नहीं देखा। वे दोनों अस्त्रज्ञ बलवान् रथचर्या (मारकों) में सावधान ११ परस्पर मारने में उपाय करनेवाले, छिद्रोंके अन्वेषणमें प्रवृत्त थे। महाराज! फिर चित्रसेनने पीले रङ्गके तेज भल्लसे १२ नकुलके बड़े धनुषको मूठके स्थान पर काटा। भय की व्याकुलता विहीनहो इसने उस टूटे धनुषवालेको सुनहरी पुंख और तेजधार के १३ तीन बाणों से ललाटपर घायल किया। उसके घोड़ों को भी तीक्ष्ण बाणों से मार डाला १४ इसी प्रकार ध्वजा और सारथी कोभी तीन तीन बाणों से गिराया। हे राजन्! वह नकुल शत्रु की भुजासे छूटे हुए ललाटपर लगे तीन बाणों से १५ तीन शिखरवाले पर्वत के समान शोभित हुआ। रथसे विहीन होकर टूटे धनुषवाला वीर नकुल ढाल तलवार लेकर १६ रथ से ऐसे उतरा जैसे कि पर्वत के शिखर से केसरी (सिंह) उतरता है। उसने उस पदाती के ऊपर बाणों की वर्षा की १७ तेज पराक्रमी नकुलने भी बल से उस बाणवृष्टि को

निष्फल किया। फिर अपूर्व शूरवीर थकावट को जीतनेवाला महाबाहु नकुल चित्रसेन के रथको पाकर १८ सब सेना के देखते हुए उसपर जा चढ़ा। वहां जाकर उसने सुन्दर मुख, बड़े नेत्र, कुण्डल और मुकुटधारी १६ चित्रसेनके शिरको उसके शरीर से जुदा किया। वह सूर्य के समान महातेजस्वी रथके बैठने के स्थानपर गिर पड़ा २० वहां महारथियों ने मरे हुए चित्रसेन को देखकर धन्य धन्य शब्दों से प्रशंसा की और बड़े सिंहनाद किये २१ कर्ण के पुत्र महारथी सुषेण और सत्सेन मरे हुए अपने भाई को देखकर नाना प्रकार के बाणोंको छोड़ते २२ शीघ्रही रथियों में श्रेष्ठ पाण्डव नकुलको मारने के अभिलाषी होकर सम्मुख ऐसे दौड़े जैसे कि महावनमें हाथी के मारने के अभिलाषी दो व्याघ्र दौड़ते हैं २३ वे दोनों बाणसमूहों को अच्छी रीति से छोड़ते इस महारथी के ऊपर ऐसी वर्षा करने लगे जैसे कि दो बादल जल बरसाते हैं २४ सब ओर बाणों से घायल, अत्यन्त प्रसन्न, पराक्रमी नकुल दूसरा धनुष लेकर और रथपर चढ़ २५ क्रोधयुक्त काल के समान युद्ध में नियत हुए। हे राजन्! उन दोनों भाइयों ने टेढ़े पर्ववाले बाणों से २६ उसके रथको खण्ड खण्ड करना प्रारम्भ किया। तब नकुलने हँसकर अपने तीक्ष्ण धार के चार बाणों से २७ सत्सेन के चारों घोड़ों को मारा। फिर सुनहले पुंख तीक्ष्ण धार नाराचको धनुष पर चढ़ाकर २८ सत्सेन के धनुषको भी काटा। इसके पश्चात् दूसरे रथमें सवार हो दूसरे धनुष को लेकर २६ सत्सेन और सुषेण नकुल के सम्मुख दौड़े। महाराज! भय की व्याकुलता से निडर प्रतापी नकुल ने युद्ध के मुखपर दो दो बाणों से उन दोनों को छेदा। क्रोधयुक्त हँसते हुए महारथी सुषेणने अपने क्षुरप्रसे नकुल के बड़े धनुषको काटा ३०-३१ तब क्रोध से मूर्च्छित नकुल ने दूसरा धनुष लेकर पांच बाणों से सुषेण को छेदा, एक बाण से ध्वजा काटी ३२ और बड़े वेगसे सत्सेन के धनुष तथा हस्तत्राण कोभी काटा। इससे लोगों ने बड़ा उच्चशब्द किया ३३ तब शत्रु के मारनेवाले और भारके साधनेवाले दूसरे धनुष को लेकर बाणों की वर्षासे उसने नकुलको सब ओरसे आच्छादित करदिया ३४ शत्रुहन्ता नकुल ने उन बाणों को हटाकर सत्सेन और सुषेणको दो दो बाणोंसे छेदा ३५ हे राजन्! उन दोनों ने भी अपने जुदे जुदे बाणों से उसे छेदा और उसके सारथी को तीक्ष्णबाणों से घायल किया ३६ फिर हस्तलाघवी प्रतापी सत्सेन ने नकुलके धनुष और रथके

ईशादण्ड को बाणोंसे काटा ३७ उस रथपर स्थित अतिरथी ने रथशक्ति उठाकर युद्ध में सत्सेन के ऊपर छोड़ी जो कि सुनहरे दण्ड, स्वच्छ धार तेल से मलीहुई, बड़ी निर्मल, ओठोंकी चाटनेवाली और बड़ी विषैली नागकन्या के समानथी ३८-३९ हे राजन्! उस शक्ति ने सत्सेन के हृदय के सौ खण्ड कर दिये तब वह अचेत और निर्जीव होकर रथसे पृथ्वीपर गिरपड़ा ४० क्रोधसे मूर्च्छित सुषेण अपने इस भाईको भी मराहुआ देखकर पदाती नकुलपर तीक्ष्ण बाणों की वर्षा करनेलगा ४१ वह कर्णका पुत्र चार बाणोंसे चारों घोड़ों को, पांच बाणोंसे ध्वजाको काटकर और तीन बाणों से सारथीको मारकर गर्जा ४२ फिर युद्ध में पिता को चाहता हुआ सुतसोम उसके पास गया। हे भरतर्षभ! नकुल सुतसोम के रथपर सवार होकर ४३ ऐसे शोभित हुआ जैसे कि पर्वत पर स्थित केसरी (सिंह) होता है। उसने दूसरा धनुष लेकर सुषेण से अच्छा युद्ध किया ४४ उन दोनों महारथियों ने परस्पर सम्मुख हो बाणों की वर्षा से परस्पर मारने में उपाय किये ४५ इसके पीछे क्रोधित सुषेण ने पाण्डव और सुतसोम को तीन तीन बाणों से छाती और भुजाओं में घायल किया ४६ इसके पीछे शत्रुहन्ता क्रोधयुक्त वेगवान् नकुलने बाणोंसे उसकी दिशाओं को ढककर ४७ तीक्ष्ण नोक सुन्दर बेतवाला वेगवान् अर्द्धचन्द्र नाम बाण युद्ध में कर्ण के पुत्र पर फेका ४८ सब सेनाके लोगोंके देखते उस बाणही से उसके शिरको काटडाला, यह आश्चर्यसा हुआ ४९ महात्मा नकुल के हाथसे माराहुआ वह वीर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि नदीके तटका भारी वृक्ष नदी के वेगसे गिर पड़ता है ५० हे भरतर्षभ! आपकी सेना कर्णके पुत्रोंके मरण और नकुल के पराक्रमको देख भयभीत होकर भागी ५१ उस समय शत्रुओं के जीतनेवाले प्रतापी, शूर, सेनापति, राजामद्र ने युद्धमें उस सेनाको रक्षित किया ५२ उस सेनाको नियत कर निर्भय हो धनुषके भयानक शब्द और बड़े सिंहनाद किये ५३ हे राजन्! युद्ध में दृढ़ धनुषधारी से रक्षित और पीड़ा से रहित वे लोग शत्रुओंके सम्मुख गये ५४ युद्धाभिलाषी, बड़े साहसी, शूरवीर उस बड़े धनुषधारी राजाको मध्यवर्ती करके उसके चारोंओर नियत हुए ५५ सात्यकी, पाण्डव भीमसेन, नकुल और सहदेव ने लज्जावान् शत्रुओं के विजय करनेवाले युधिष्ठिरको आगे करके ५६ और चारों ओरसे अपने मध्यवर्ती कर सिंहनाद किये। और बारम्बार बाणोंके उग्र शब्द तथा नानाप्रकारके सिंहनाद

किये ५७ इसी प्रकार अत्यन्त क्रोधयुक्त आपके शूरवीरों ने बड़े वेगसे राजा मद्र को अपने मध्यवर्ती कर फिर युद्ध करना स्वीकार किया ५८ मृत्युको पीछे कर आपके शूरवीर और प्रतिपक्षियों के वे युद्ध हुए जो कि भयभीतोंको डरानेवाले थे ५९ हे राजन्! जैसे पूर्व समय में देवासुरसंग्राम हुआ था, उसी प्रकार इन निर्भय लोगोंके युद्ध यमराजके देशको बढ़ानेवाले हुए ६० हे राजन्! इसके पीछे वानरध्वजाधारी पाण्डुनन्दन अर्जुन युद्धमें संसप्तकोंको मारकर उस कौरवी सेनाके सम्मुख गया ६१ उसीप्रकार सब पाण्डव, जिनमें अग्रगामी धृष्टद्युम्न था, तीक्ष्णबाण छोड़तेहुए उस सेनाके सम्मुख गये ६२ पाण्डवों से घिरे हुए उन लोगों को ऐसा बड़ा मोह उत्पन्न हुआ कि सब सेना ने दिशा और विदिशाओं को नहीं पहिंचाना ६३ पाण्डवोंसे चलाये गये पैने बाणोंसे पूर्ण बहुत शूर मृतकोंवाली चारोंओर से चलायमान ६४ वह पराजित कौरवी सेना महारथी पाण्डवों के हाथ से मारी गई। हे राजन्! इसी प्रकार आपके पुत्रों के बाणों से पाण्डवों की सेनाएं भी युद्ध में मारी गईं। वे दोनों सेनाएं अत्यन्त पीड़ित और घायल होकर ऐसी व्याकुल हुईं जैसे कि वर्षाऋतु में दो नदियां व्याकुल होती हैं। हे राजेन्द्र! इसके पीछे उस प्रकार के बड़े युद्ध में आपके पुत्र और पाण्डवों में बड़ा भय उत्पन्न हुआ ६५–६७॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि संकुलयुद्धे दशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय।

सञ्जय बोले कि उस समय परस्पर युद्ध करनेवाली वे दोनों सेनाएं ऐसी छिन्न भिन्न और व्याकुल होगईं जैसे कि वर्षा ऋतु में दो नदियां होती हैं १ हे राजन्! उस बड़े युद्ध में शूरवीरों के भागने, हाथियों के चिंघाड़ने, पुकारने, गर्जने, पदातियों के भागने २–३ कई प्रकार से घोड़ोंके भागने, सब जीवों के भयकारी बड़े नाशके होने ४ और युद्ध में मतवाले पुरुषों के प्रसन्न करनेवाले, भयभीतोंके भय बढ़ानेवाले रथ और हाथियोंसे युक्त नानाप्रकारके भिड़ने, परस्पर मारने के अभिलाषी शूरवीरों के सेना में प्रवेश करने और बड़े घोर जीव नाशरूपी द्यूतके होने पर पाण्डवों ने यमराज के देशके बढ़ानेवाले घोररूप युद्ध में तीक्ष्ण बाणों से आपकी सेना को छिन्न भिन्न करदिया ५–७ आपके वीरों ने भी पाण्डवोंकी सेनाके लोगों को मारा। भयभीतों के भयके उत्पन्न

करनेवाले उस युद्ध में ८ सूर्योदय के पीछे, दिनके प्रथमभाग में महात्मा से रक्षित लक्ष्य भेदनेवाले प्रतिपक्षी ९ मृत्युको पीछे कर आपकी सेना से युद्ध करने लगे। उन बलवान्, अहंकारी, लक्ष्यभेदी और प्रहार करनेवाले पाण्डवों से १० कौरवी सेना ऐसे पीड़ित हुई जैसे कि अग्निसे व्याकुल मृगी और कीच में फँसी निर्बल गौ पीड़ित होती है। उस प्रकारसे पीड़ित सेना को देखकर ११ उनके छुटाने का अभिलाषी राजा शल्य पाण्डवीय सेना के सम्मुख गया। अत्यन्त क्रोधयुक्त राजामद्र उत्तम धनुष लेकर १२ युद्ध में मारने के अभिलाषी हो पाण्डवोंके सम्मुख गये। महाराज ! युद्ध की विजयसे शोभायमान पाण्डवों ने भी १३ राजा मद्रको पैने बाणों से घायल किया। इसके पीछे बड़े पराक्रमी राजामद्र ने सैकड़ों बाणों से उस सेनाको धर्मराज के देखते हुए पीड़ित किया। हे राजन् ! इसके अनन्तर अनेक अशुभ लक्षणों के चिह्न प्रकट हुए। पर्वतों समेत शब्द करनेवाली पृथ्वी भी कम्पायमान हुई। चारों ओर से फटनेवाली, दण्ड और शूल रखनेवाली प्रकाशित उल्का १४-१६ सूर्यमण्डल को भेदकर स्वर्ग से पृथ्वीपर गिरी। हे राजन् ! बहुधा मृग, भैंसे और पक्षियोंने भी आपकी सेनाको दहिना किया; शुक्र और मंगल बुधसे संयुक्त हुए १७-१८ ये शकुन पाण्डवोंके पीछे और अन्य राजाओंके आगे हुए। नेत्रोंको घायल कर बरसनेवाली ज्वाला शस्त्रोंकी नोकों पर प्रकट हुई। काक और उलूक ध्वजा और शिरों पर बैठगये। सेनाके समूहों में घूमनेवालोंका भयङ्कर युद्ध हुआ १९-२० इसके पीछे कौरव सब सेनाओं पर चढ़ाई करके पाण्डवों की सेनाके सम्मुख गये २१ प्रसन्नचित्त शल्य बाणोंकी वर्षा कर कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरपर वर्षा करने लगे २२ बड़े पराक्रमी ने सुनहरी पुंखवाले, तीक्ष्ण धार के दश दश बाणों से भीमसेन और द्रुपदके पुत्रोंसमेत नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न, सात्यकी और शिखण्डी को भी घायल किया २३-२४ इसके पीछे ऐसी बाणों की वर्षा की जैसे कि वर्षा ऋतुमें इन्द्र करताहै। हे राजन् ! इसके पीछे हजारों सोमक और प्रभद्रक नाम क्षत्रिय २५ शल्यके बाणों से गिरते हुए ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि भौंरों के झुंड और टीड़ियोंके समूह दीखते हैं २६ और शल्यके बाण उसी प्रकार गिरे जैसे कि बादलों से बिजली गिरतीहै हाथी, घोड़े, पत्ति, रथी सब २७ शल्यके बाणोंसे महाव्याकुल घूमते और शब्दोंको करते गिर पड़े। राजा मद्र क्रोध और शूरतामें पूर्ण हो २८ कालसृष्टि में अन्त के समान गर्जे। बादल के समान

शब्दायमान, बड़े बलवान् राजा मद्रने युद्धमें शत्रुओंको अच्छी रीतिसे आच्छादित किया २६ शल्यके हाथसे घायल पाण्डवी सेना कुन्ती के पुत्र अजातशत्रु युधिष्ठिरकी ओर दौड़ी ३० इसके पीछे पराक्रमी शल्य ने तीक्ष्ण बाणों से उस सेनाको युद्धमें मर्दनकर बाणों की वर्षा से युधिष्ठिर को पीड़ित किया ३१ क्रोधयुक्त राजा युधिष्ठिर ने पत्ति और घोड़ों समेत उस आते हुए शल्यको तीक्ष्ण बाणों से ऐसे रोका जैसे कि अंकुशों से मतवाले हाथीको रोकते हैं। शल्यने विषैले सर्पके समान घोर बाण उसके ऊपर छोड़ा ३२ वह बाण महात्मा युधिष्ठिर को छेदकर बड़ी तीव्रता से पृथ्वी पर गिरा । तब क्रोधयुक्त भीमसेन ने शल्यको पांच बाणों से ३३ सहदेव ने पांचसे और नकुल ने दश बाणों से घायल किया। द्रौपदी के पुत्र उस शत्रुओंके मारनेवाले शल्य पर ३४ बाणों की ऐसी वर्षा करने लगे जैसे कि बादल पर्वत पर करते हैं। चारों ओर पाण्डवों के हाथसे पीड़ित शल्यको देखकर ३५ अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्मा और कृपाचार्य सम्मुख दौड़े। बड़ा पराक्रमी उलूक और सौबलका पुत्र शकुनी ये सब सम्मुख गये ३६ फिर युद्धमें महाबली अश्वत्थामा और आपके सब पुत्रों ने मिलकर शल्यकी रक्षा की ३७ कृतवर्मा ने शिलीमुख नाम तीन बाणों से भीमसेन को छेदकर बाणों की घोर वृष्टि से उस क्रोधरूपको रोका ३८ इसके पीछे बाणोंकी वर्षा से धृष्टद्युम्नको पीड़ित किया। फिर शकुनी द्रौपदी के पुत्रों के और अश्वत्थामा नकुल-सहदेवके सम्मुख गया ३९ युद्धकर्ताओंमें श्रेष्ठ, तेजस्वी, पराक्रमी दुर्योधनने युद्धमें अर्जुन और केशवजी के सम्मुख जाकर बाणोंसे घायल किया ४० हे राजन्! इस प्रकार जहां तहां आपके शूरवीरों के सैकड़ों द्वन्द्वयुद्ध शत्रुओं के साथ बड़े भयङ्कर और अपूर्व हुए ४१ भोजवंशी कृतवर्मा ने युद्धमें भीमसेनके रीछ वर्ण घोड़ोंको मारा। मृतक घोड़ेवाले भीमसेनने रथकी बैठकसे उतरकर ४२ हाथमें कालदण्डके समान गदा लेकर युद्ध किया । राजा मद्र ने सहदेव के सम्मुख घोड़ों को मारा ४३ फिर सहदेव ने शल्यके पुत्रको खड्गसे मार और कृपाचार्य धृष्टद्युम्न से युद्ध करने लगे ४४ भय की व्याकुलता से रहित उपाय करनेवाले आचार्य के पुत्र, गुरूजी उस भ्रान्ति से रहित उपाय करनेवाले धृष्टद्युम्नसे अच्छे प्रकारसे लड़े। न्यून क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने मन्द मुसकानके साथ द्रौपदी के प्रत्येक शूरवीर पुत्र को दश दश बाणों से घायल किया। इसके पीछे भीमसेन के घोड़ों को मारा ४५-४६

मृतक घोड़ेवाले बड़े पराक्रमी भीमसेनने शीघ्र ही रथ से उतरकर कालदण्ड के समान गदा उठाकर ४७ कृतवर्मा के रथ और घोड़ों को चूर्ण किया। कृतवर्मा उस रथ से कूदकर हटगया ४८ हे राजन्! फिर सोमक और पाण्डवों को मारते अत्यन्त क्रोधयुक्त शल्यने भी तीक्ष्ण बाणोंसे युधिष्ठिरको पीड़ित किया ४९ क्रोधसे दांतों को पीसकर पराक्रमी भीमसेन ने युद्ध में उसके नाश के निमित्त अवकाश देख गदाको लिया ५० जो कि यमराज के दण्डरूप, कालरात्रि के समान ऊंची; हाथी, घोड़े और मनुष्यों के प्राण की नाश करनेवाली, सुवर्ण के वस्त्रोंसे मढ़ीहुई ज्वलित उल्काके समान ५१ शैक्यमें रहनेवाली सर्पिणी के समान बड़ी उग्र; वज्रके समान, लोहमयी, चन्दन और अगर से लिप्त, स्वेच्छाचारिणी तरुणी के समान, वसा रुधिरसे लिप्त, अङ्ग विश्ववती देवी की जिह्वाके समान, सैकड़ों सुन्दर घण्टों के समान शब्दायमान, इन्द्रवज्रके समान, कांचली से छूटे विषधर सर्पके समान, हाथीके मदों से सम्बन्ध रखनेवाली, शत्रुओं की सेनाओं को भयभीत करनेवाली, अपनी सेनाओं को प्रसन्न करनेवाली, त्रिलोक में विख्यात, पर्वतोंके शिखरोंकी तोड़नेवालीथी ५२–५४ जैसे कि बलवान् भीमसेन ने कैलासभवन में शिवजी के मित्र ५५ अत्यन्त क्रोधयुक्त कुबेर को बुलाया और मन्दिरके लिये मायारूप अहंकारी गुह्यकों को गन्धमादन पर्वतपर मारा। द्रौपदी के हितमें नियत होकर भीमसेन ने ऐसा पराक्रम किया ५६–५७ वह महाबाहु वज्रमणि और रत्नों से जटित, अष्टकोण रखनेवाली, वज्र के समान बड़ीभारी गदा को उठाकर युद्ध में शल्य के सम्मुख गया ५८ उस युद्धकुशल ने इस भयकारी शब्दवाली गदासे शल्यके चित्तके समान शीघ्रगामी चारों घोड़ोंको मारा ५९ तब युद्ध में क्रोधयुक्त गर्जते हुए वीर शल्यने भीमसेनकी बड़ी छातीपर तोमर मारा। वह उसके कवच को काटकर गिरपड़ा ६० फिर भयकी व्याकुलता से रहित भीमसेन ने वही तोमर उठाकर राजा मद्र के सारथीकी छातीपर छेदा। वह टूटे कवचवाला चित्त से भयभीत रुधिरको वमन करता हुआ ६१ महादुःखी होकर समक्षमेंही गिरपड़ा। राजा मद्र हटगया, आश्चर्यचित्त स्थिरबुद्धिवाले राजा शल्यने कर्मका बदला प्रति कर्म देख गदा लेकर शत्रुको देखा ६२ उसके पीछे प्रसन्नचित्त पाण्डवोंने युद्धमें साधारण कर्मवाले भीमसेन के उस कर्म की प्रशंसा की ६३॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिसंकुलयुद्धे एकादशोऽध्यायः ११॥

बारहवां अध्याय ।

सञ्जय बोले कि हे राजन् ! तब शल्य सारथीको गिराहुआ देखकर तीव्रतासे केवल लोहमयी गदा लेकर पर्वतके समान निश्चय हो नियत हुए १ भीमसेन तीव्रतासे बड़ी गदा लेकर उस प्रकाशित कालाग्निके समान, पाशधारी यमराज, शिखरधारी कैलास, वज्रधारी इन्द्र २ शूलधारी रुद्र और वनके मतवाले हाथीके समान शल्यके सम्मुख आ टूटा ३ अब शंखादि हज़ारों बाजोंके कठिन शब्द और शूरों की प्रसन्नता बढ़ानेवाले सिंहनाद हुए ४ सब ओरसे उस रणभूमिके बड़े हाथीरूप भीमसेन और शल्यको देखकर आपके तथा पाण्डवों के शूरवीरों ने धन्य धन्य शब्द किया ५ युद्ध में शल्य और यदुनन्दन बलदेवजी के सिवाय दूसरा मनुष्य भीमसेन के वेगके सहने में समर्थ नहीं होसकता है ६ उसी प्रकार युद्धमें भीमसेन के सिवाय दूसरा शूरवीर महात्मा शल्यकी गदाका वेग सहने का उत्साह नहीं करसकता ७ वे वृषभके तुल्य चेष्टा करनेवाले गर्जनशील गदाधारी शल्य और भीमसेन मण्डलों को घूमे ८ मण्डल घूमने के मार्ग और गदाके प्रहारों में उन पुरुषोत्तमों का युद्ध समान हुआ ९ शल्यकी घुमाई हुई वह गदा तपाये हुए सुवर्ण की बनी हुई, प्रज्वलित अग्निके समान, उज्ज्वल वस्त्रोंसे भय बढ़ानेवाली हुई १० इसी प्रकार मण्डलों में मार्गों के घूमनेवाले महात्मा भीमसेन की गदा बिजली बादल के समान शोभायमान हुई ११ हे राजन् ! राजा मद्रकी गदासे घायल आकाशचारी के समान भीमसेनकी गदाने अग्निकी ज्वालाएं छोड़ीं १२ इसी प्रकार भीमसेनकी गदासे घायल शल्यकी गदा अंगारों की वर्षा करनेवाली हुई, वह आश्चर्यसा हुआ १३ जैसे दो बड़े हाथी दांतों से और बड़े बैल सींगोंसे प्रहार करें, वैसेही उन दोनोंने परस्पर गदाओं से प्रहार किया । फिर वे क्षणमात्रमेंही रुधिर से लिप्तशरीर, गदासे घायल अंग ऐसे देखने योग्य हुएजैसे कि किंशुक के दो वृक्ष होते हैं १४-१५ शल्य की गदा से वाम और दक्षिण ओर से घायल वह पर्वत के समान भीमसेन कम्पित नहीं हुआ १६ उसी प्रकार भीमसेन की वेगयुक्त गदासे बारम्बार घायल शल्यभी ऐसे पीड़ित नहीं हुए जैसे कि हाथी से घायल पर्वत पीड़ावान् नहीं होता १७ उन दोनों पुरुषोत्तमों की गदाओं के आघातित वज्र के समान शब्द दशों दिशाओं में सुनेगये १८

ऊंची गदा करनेवाले बड़े पराक्रमी वे दोनों लौटकर फिर मार्गों में नियत हो मण्डलों को घूमे १६ इसके पीछे आठ चरण पास जाकर और गदाको उठाकर बुद्धिसे बाहर कर्म करनेवाले उन दोनों की चढ़ाइयां लोहके दण्डोंसे हुईं २० वे दोनों बड़े कुशल अभ्यासी, विजय के चाहनेवाले दोनों मण्डलों को घूमे, उस समय दोनों ने अपने अपने मुख्य कर्म दिखाये २१ फिर उन्होंने शिखरधारी पर्वतों के समान घोर गदाओं को उठाकर परस्पर ऐसे घायल किया जैसे कि भूकम्प में दो पर्वत परस्पर टकराते हैं २२ दोनों वीर परस्पर क्रोधयुक्त गदाओं से अत्यन्त घायल इन्द्रध्वजा के समान एकसाथ ही गिरपड़े २३ तब दोनों सेनाओं के वीरलोग हाहाकार करनेलगे । मर्मस्थलों में अत्यन्त घायल दोनों अचेत होगये २४ इसके पीछे पराक्रमी कृपाचार्य राजा मद्रको अपने रथपर बैठा कर युद्धभूमि से दूर लेगये २५ भीमसेनने नशा करनेवाले के समान एक निमिष मेंही सचेत हो हाथमें गदा लेकर राजा मद्रको बुलाया २६ इसके पीछे नाना प्रकार के शस्त्रों से संयुक्त आपके शूरवीरों ने अनेक बाजों समेत पाण्डवीय सेना से युद्ध किया २७ महाराज ! इसके अनन्तर वे शूरवीर, जिनका अग्रवर्ती दुर्योधनथा, दोनों भुजा और शस्त्रों को ऊंचा करके बड़े शब्दों समेत सम्मुख गये २८ फिर पाण्डुनन्दन उस सेना को सम्मुख देख सिंहनादों समेत दुर्योधनादिकके सम्मुख हुए २९ हे भरतर्षभ ! आपके पुत्रने शीघ्रही उन आने वालों के मध्यमें चेकितानको प्राससे हृदयपर बहुत घायल किया ३० आपके पुत्रद्वारा घायल, रुधिरसे लिप्त वह चेकितान अचेत होकर रथ में बैठने के स्थानपर गिर पड़ा ३१ पाण्डवों के महारथियों ने चेकितानको घायल और अचेत देख बारी बारी से बाणोंकी वर्षा की ३२ महाराज ! विजय से शोभायमान और चारों ओर से दर्शनीय पाण्डवलोग आपकी सेनामें घूमने लगे ३३ बड़े पराक्रमी कृपाचार्य, कृतवर्मा और शकुनी ने, जिनमें अग्रवर्ती राजा मद्र था, धर्मराज से युद्ध किया ३४ हे राजन् ! आपके पुत्रकी प्रेरणासे उन तीन हज़ार रथियोंने, जिनके अग्रवर्ती अश्वत्थामा थे, अर्जुनसे युद्ध किया ३५ विजयमें संकल्प करनेवाले और युद्धमें जीवन को त्यागनेवाले आपके शूरवीरों ने सेना में ऐसे प्रवेश किया जैसे कि हंस बड़े सरोवर में प्रवेश करते हैं ३६ परस्पर मारने के अभिलाषी उन वीरों का महाघोर युद्ध हुआ जो परस्पर मारने की अभिलाषा से युक्त और अन्योन्य में प्रीति बढ़ानेवाला था ३७-३८

उस वीरोंके नाशकारी युद्धके होनेपर हवासे उड़ीहुई घोर धूलि पृथ्वीसे उठी ३९ पाण्डवों के कहने और नामों के सुननेसे हमने परस्परमें उनको जाना जो निर्भयके समान युद्ध करते थे ४० हे पुरुषोत्तम! वह धूलि रुधिर से शान्त होगई। उस अँधेरेके दूर होनेपर दिशाएं विदित हुईं। इसप्रकार भयभीतोंको भयदायक ४१ घोर युद्ध में आपके और प्रतिपक्षियोंके शूरवीरों मेंसे किसीने मुख नहीं मोड़ा ४२ युद्धभूमिमें शुभयुद्धसे विजय और स्वर्ग के चाहनेवाले लोगोंने ब्रह्मलोक के अभिलाषी हो चढ़ाई की ४३ तब स्वामी के कार्य में निश्चय करनेवाले और स्वर्ग में प्रवृत्तचित्त शूरवीर स्वामी के अन्नोदकसे मुक्त होने के लिये युद्ध करने लगे ४४ महारथी लोग नाना प्रकारके शस्त्र छोड़ कर परस्पर सम्मुख गर्जते हुये युद्धमें प्रवृत्तहो प्रहार करने लगे ४५ उस समय दोनों दलों में 'मारो, छेदो, पकड़ो, प्रहार करो' यही शब्द सुने गये ४६ महाराज! इसके पीछे मारने के अभिलाषी शल्य ने महारथी धर्मराज युधिष्ठिर को पैने बाणों से घायल किया ४७ फिर मर्मके जानकार हँसतेहुए युधिष्ठिरने मर्मों को लक्ष्यकर चौदह नाराच मारे ४८ क्रोधयुक्त राजा मद्रने कंकपक्षवाले बहुत बाणों से युधिष्ठिरको ढककर घायल किया ४९ महाराज! फिर सब सेनाके देखते, टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे भी युधिष्ठिरको घायल किया ५० क्रोधयुक्त यशस्वी धर्मराजनेभी तीक्ष्ण धार के कंक और मोरपक्षसे जड़े हुए बाणोंसे राजा मद्रको घायल किया ५१ इसको घायलकर चन्द्रसेन को सत्तर बाणोंसे सारथीको नव बाणोंसे और द्रुमसेनको चौंसठ बाणोंसे घायल किया ५२ हे राजन्! महात्मा पाण्डव के हाथ से, चक्र के रक्षक के मरने पर शल्य ने पचीस चन्देरीदेशियों को मारा ५३ रणभूमिमें पचीस बाणोंसे सात्यकी को, सात बाणोंसे भीमसेनको और सौ बाणोंसे नकुल तथा सहदेवको घायल किया ५४ इस प्रकार घूमनेवाले के ऊपर क्षत्रियोंके नाश करनेवाले पाण्डवने विषैले सर्पके समान बाण फेंके ५५ कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने इस सम्मुख वर्तमानकी ध्वजा रथके युद्ध द्वारा जुदा करदी ५६ हँसतेहुए पाण्डव ने इस प्रकार से उसकी ध्वजा काट डाली और हमने पर्वतके टूटे शिखरके समान उसे गिरती हुई देखी ५७ मद्र का राजा गिरी हुई ध्वजा और सामने युधिष्ठिरको देखकर अत्यन्त क्रोधित हो बाणों की वर्षा करने लगा ५८ क्षत्रियों में श्रेष्ठ, बड़ा साहसी शल्य बरसनेवाले बादलों के समान क्षत्रियों पर बाणों की वर्षा करने लगा ५९ उसने सात्यकी, भीम-

सेन, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव को पांच पांच बाणों से छेदकर युधिष्ठिर को पीड़ित किया ६० इसके पीछे युधिष्ठिर की छाती पर उठेहुए मेघजालके समान फैलेहुए बाणजाल देखेगये ६१ युद्धमें क्रोधयुक्त महारथी शल्यने गुप्तग्रन्थिवाले बाणों से उसकी दिशा विदिशाएं ढकदीं ६२ बाणजालों से पीड़ित राजा युधिष्ठिर पराक्रमसे ऐसे रहित होगया जैसे कि इन्द्रके हाथसे जृम्भअसुर हुआथा ६३॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिसंकुलयुद्धोनाम द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय।

सञ्जय बोले कि हे श्रेष्ठ! राजा मद्रके हाथसे धर्मराजके पीड़ित होनेपर सात्यकी, भीमसेन और नकुलने १ शल्यको रथों से घेरकर युद्धमें पीड़ावान् किया। अनेक महारथियों के हाथसे उस अकेले को पीड़ित देखकर २ बड़ा धन्यवाद का शब्द उत्पन्न हुआ और सिद्धलोग बहुत प्रसन्न हुए। मिले हुए मुनियोंने भी आश्चर्य माना ३ भीमसेन ने पराक्रम में भालुरूप शल्यको युद्ध में एक बाण से घायलकर सात बाणोंसे छेदा ४ फिर धर्मपुत्रकी इच्छासे सात्यकी सौ बाणों से राजा मद्रको ढकके सिंहनादकर गर्जा ५ नकुल ने पांच बाणों से और सहदेव ने सात बाणों से उसको छेदकर शीघ्रही उसे पांच बाणों से और छेदा ६ उन महारथियोंसे पीड़ित, युद्ध में उपाय करनेवाले शूर शल्यने वेगनाशक और भारको धारण करनेवाले घोर बाण निकाल कर ७ सात्यकी को पचीस बाणों से, भीमसेन को तिहत्तर बाणों से और नकुल को सात बाणोंसे घायल किया। इसके पीछे ८ शल्यने धनुर्धारी सहदेव के धनुष को विशिख नाम बाणसमेत भल्लसे काटकर, इक्कीस बाणोंसे छेदा ९ तब सहदेवने दूसरा धनुष तैयार करके बड़े तेजस्वी मामाको सर्पके समान विषैले और अग्निके समान प्रज्वलित पांच बाणों से घायल किया। फिर अत्यन्त क्रोधयुक्तने टेढ़े पर्व के बाणसे उसके सारथीको १०-११ अत्यन्त छेदा और उसे भी तीन बाणोंसे घायल किया। भीमसेन ने सत्तर बाणों से, सात्यकी ने नव बाणोंसे १२ और धर्मराज ने साठ बाणोंसे शल्यको अङ्गोंपर घायल किया। महाराज! फिर उन महारथियों के हाथसे घायल होकर शल्यने १३ अपने अङ्गोंसे ऐसे रुधिर गिराया जैसे कि पर्वत धातुओं को गिराता है। तब उसने पांच पांच बाणों से उन सब बड़े बड़े धनुर्धारियों को १४ वेगसे छेदा। हे श्रेष्ठ!

यह आश्चर्यसा हुआ फिर उस महारथी ने दूसरे भल्ल से धर्मपुत्र का धनुष काटा १५ तब धर्मपुत्र ने भी दूसरा धनुष लेकर शल्यको घोड़े, सारथी, ध्वजा और रथ समेत ढक दिया। धर्मपुत्र के शायकों से ढके हुए शल्यने १६-१७ तेज धारके दश बाणों से युधिष्ठिरको छेदा। बाणोंसे धर्मपुत्रके पीड़ित होनेपर क्रोधयुक्त सात्यकी ने १८ मद्रदेशियोंके राजाको बाणसमूहों से हटाया। उसने भी क्षुरप्रसे सात्यकी के बड़े धनुषको काटा १९ और उन भीमसेनादिकों को तीन तीन बाणों से पीड़ित किया। महाराज! सत्यपराक्रमी क्रोधयुक्त सात्यकी ने सुनहले दण्डवाला बहुमूल्य तोमर उसपर चलाया २० फिर भीमसेनने ज्वलित सर्प के समान नाराच, नकुलने शक्ति और सहदेव ने शुभ गदा चलाई २१ युद्धमें शल्यके मारने के अभिलाषी धर्मराजने शतघ्नीको चलाया। पांचोंके हाथसे छोड़े और आते हुए अस्त्रसमूहोंको २२ राजा मद्रने रोका। उन्होंने सात्यकी के चलाये हुए तोमरको भल्लसे काटा २३ हस्तलाघवी, प्रतापी शल्यने भीमसेनके चलाये हुए सुवर्ण से अलंकृत बाण के भी दो टुकड़े करदिये २४ और नकुलकी चलाई हुई महाभयकारी शक्ति तथा सहदेवकी फेंकी हुई गदाको बाणों के समूहों से काटा। हे भरतवंशिन्! और दो बाणों से राजाकी उस शतघ्नीको काटा २५ एवं सब पाण्डवोंके देखते वह सिंहनादोंसे गर्जा। सात्यकी नें युद्ध में शत्रुकी विजयको नहीं सहा २६ तब क्रोधसे मूर्च्छित सात्यकी ने दूसरा धनुष लेकर दो बाणोंसे शल्यको घायल कर तीन बाणोंसे सारथीको घायल किया २७ इसके पीछे क्रोधसे भरे शल्यने उन सबको दश बाणों से ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि अंकुशोंसे बड़े बड़े हाथियों को करते हैं। शत्रुओं के मारनेवाले वे महारथी युद्ध में राजा मद्र से रोके जाकर २८ उसके सम्मुख ठहरने में समर्थ नहीं हुए। इसके पीछे राजा दुर्योधन ने शल्यका पराक्रम देख कर २९ पाण्डव, पाञ्चाल और सृञ्जयों को मृतकरूप माना। हे राजन्! फिर प्रतापी महाबाहु भीमसेनने ३० चित्त से जीवनको त्याग कर राजा मद्रसे युद्ध किया और बड़े पराक्रमी नकुल, सहदेव तथा सात्यकी ने ३१ शल्यको घेरकर चारों ओर बाणोंसे आच्छादित करदिया। फिर पाण्डवों के बड़े धनुर्धर महारथियों से ३२ घिरेहुए प्रतापवान् राजा मद्र ने सबसे युद्ध किया। हे राजन्! धर्मपुत्र युधिष्ठिरने बड़े युद्ध में अपने क्षुरप्र से ३३ उस राजा मद्रके चक्ररक्षकको शीघ्रतासे मारा। फिर उस शूर महारथी चक्ररक्षकके मारे जानेपर ३४ बड़े बल-

वान् राजा मद्रने बाणों से सेनाके सब लोगों को ढक दिया । इसके पीछे धर्म-
राज युधिष्ठिरने युद्ध में सेनाके लोगों को बाणों से ढकेहुए देखकर ३५ चिन्ता
की कि माधवजीका यह वचन कैसे सत्य हो ३६ कि " हे पाण्डवों के
बड़े भाई ! युद्ध में क्रोधयुक्त राजा शल्य तेरी सेनाका नाश नहीं करेगा ।"
इसके अनन्तर चारों ओर से पीड़ित करते हुए पाण्डवों ने रथ, हाथी और
घोड़ों समेत जाकर ३७ राजा मद्रको प्राप्त किया । राजाने नाना प्रकार के
शस्त्रों सहित उठी हुई बाणवर्षा को ३८ युद्धमें ऐसे छिन्नभिन्न किया जैसे कि
वायु बड़े बड़े बादलों को अलग अलग करदेता है । आकाश में शल्यजनित
सुनहले पुंखों की बाणवृष्टि को शलभ के समूहों के समान देखा । युद्धके मुख
पर राजा मद्रके चलाये हुए ३९–४०वे बाण उड़ते हुए पक्षियोंके समूहोंके स-
मान दिखाई पड़े । हे राजन् ! शल्यके छोड़ेहुए सुवर्ण से अलंकृत बाणोंसे ४१
आकाश अत्यन्त व्याप्त होगया । वहां पाण्डवों का और हमारा कोई शूरवीर
दृष्टि नहीं पड़ा ४२ उस बड़े युद्धमें बलवान् राजा मद्रकी हस्तलघुता और बाणों
की वर्षासे घोर अन्धकार होनेपर ४३ और समुद्ररूप पाण्डवोंकी सेनाको छिन्न
भिन्न कीहुई देखकर देवता, गन्धर्व और दानवोंने बड़ा आश्चर्य किया ४४
हे श्रेष्ठ ! फिर वह शल्य सब ओरसे उन लोगोंको युक्तिपूर्वक बाणों से पीड़ित
कर धर्मराजको आच्छादित करके सिंहके समान बारंबार गर्जा ४५ तब युद्धमें
उसके बाणोंसे ढकेहुए पाण्डवोंके महारथी उस महारथी के सम्मुख जाने में
समर्थ नहीं हुए ४६ भीमसेनादिक रथियोंने, जिनके अगुआ धर्मराज थे, युद्ध
को शोभा देनेवाले शूरवीर शल्यको रण में त्याग नहीं किया ४७ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिशल्ययुद्धे त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ।

सञ्जय बोले कि युद्ध में अश्वत्थामा और उसके आगे पीछेवाले त्रिगर्त-
देशीय शूर महारथियोंके बाणोंसे छिदेहुए अर्जुनने १ युद्धमें तीन शिलीमुख
बाणोंसे अश्वत्थामाको घायल किया; उसी प्रकार अन्य शूरवीरोंको भी अर्जुन
ने दो दो बाणों से छेदा २ महाराज ! फिर उसने बाणों की वर्षा आरम्भ कर
दी । हे भरतर्षभ ! बाणोंसे विदीर्ण आपके उन शूरवीरोंने ३ जो तेज बाणों से
पीड़ित थे, अर्जुनको पाकर त्याग नहीं किया । उन महारथियोंने, जिनके

अगुआ अश्वत्थामा थे, रथोंके समूहों से ४ अर्जुन को घेरकर युद्ध किया। हे राजन्! उनके छोड़ेहुए सुवर्णसे अलंकृत बाणों ने ५ वेगसे अर्जुन के रथके बैठने के स्थानको भरदिया। उसी प्रकार सब धनुर्धारियों में श्रेष्ठ बड़े धनुर्धर श्रीकृष्ण और अर्जुनको ६ बाणोंसे घायल देख युद्धमें दुर्मद शूरवीर प्रसन्न हुए। हे समर्थ! तब कूबर, रथचक्र, रथ, योक्तर, युग, अनुकर्ष ये सब रथके अंग बाण रूप होगये ७ हे राजन्! पूर्वसमयमें वहां आपके शूरवीरों ने अर्जुनकी जैसी दशा की, वैसी पूर्वसमय में देखी सुनी न गई थी ८ वह रथ पुंखयुक्त तीक्ष्ण बाणों से सभी ओर ऐसा दिखाई देता था जैसे कि पृथ्वीपर सैकड़ों उल्काओंसे प्रकाशमान विमान होता है ९ महाराज! फिर अर्जुनने गुप्तग्रन्थिवाले बाणोंसे उसकी सेनाको ऐसे ढकदिया जैसे बादल वर्षासे पर्वत को ढकता है १० युद्ध में उन बाणोंसे, जिनपर कि अर्जुनका नाम चिह्नित था, घायल और उस प्रकारके अर्जुनको देखते हुए उन लोगोंने लोकको अर्जुनरूप माना ११ उस अर्जुनरूपी अग्नि ने, जिसकी क्रोधरूपी ज्वालासे उत्पन्न होनेवाले बाण हवा और धनुष के बड़े शब्द थे, शीघ्रही सेनारूपी इन्धन को भस्म किया १२ हे भरतवंशिन्, महाबाहु, धृतराष्ट्र! अर्जुनके रथमार्गों में पृथ्वी पर गिरते हुए चक्र, रथ, युग, तूणीर, रथोंसमेत पताका, ध्वजा १३ ईशा, अनुकर्ष, त्रिवेणु, अक्ष, योक्तर, सब प्रकार के चाबुक १४ कुण्डल और वेष्टनधारी गिरे हुए शिर, भुजाएं, कन्धे १५ व्यजनोंसमेत छत्र और मुकुटोंके ढेर चारों ओर दिखाई पड़े १६ हे राजन्! क्रोधयुक्त अर्जुनके रथमार्ग में पृथ्वी दुर्गम्य और मांस-रुधिरकी कीच रखनेवाली होगई १७ हे भरतर्षभ! रणभूमिमें रुद्रजी के क्रीड़ास्थल के समान वह भयभीतों का भय बढ़ानेवाला और शूरवीरोंकी प्रसन्नता बढ़ानेवाला हुआ १८ फिर शत्रुओंको तप्त करनेवाला अर्जुन युद्धमें दो हज़ार कवचधारी रथियोंको मारकर निर्धूम अग्निके समान प्रकाशमान हुआ १९ हे राजन्! जैसे प्रलयकालमें भगवान् अग्नि सब जड़ चैतन्योंको भस्म कर निर्धूम दिखाई देते हैं, वैसेही कुन्तीका पुत्र अर्जुन दिखाई पड़ा २० अश्वत्थामाने युद्ध में अर्जुन का पराक्रम देखकर बड़ी पताकावाले रथसमेत उसको रोका २१ तब परस्पर मारने के अभिलाषी धनुर्धारियों में श्रेष्ठ दोनों पुरुषोत्तम परस्पर सम्मुख हुए २२ महाराज! उन दोनोंकी बाणवृष्टि ऐसी बड़ी डरावनी हुई जैसे कि वर्षाऋतुमें बरसनेवाले दो बादलों की होती है २३ तब परस्पर ईर्षा करनेवाले

उन दोनों ने गुप्तग्रन्थिवाले बाणों से परस्पर ऐसे घायल किया जैसे कि सींगोंसे दो बैल परस्पर घायल करते हैं २४ महाराज ! उन दोनों का युद्ध देर तक सीधा हुआ। इसके पीछे वहां शस्त्रोंका घोर संघट्टन हुआ २५ तब अश्वत्थामा ने सुनहले पुंख और सुन्दर बेतवाले बारह बाणों से अर्जुन को और दश बाणों से वासुदेवजी को घायल किया २६ महारथी अर्जुन ने बहुत हँसकर गाण्डीव धनुष को टंकारा और उस बड़े युद्धमें एक मुहूर्त गुरुका पुत्र मानकर २७ उसे घोड़े, सारथी और ध्वजासे रहित कर दिया। इसके पीछे मृदुतापूर्वक तीन शायकों से उसको घायल भी किया २८ तब मृतक घोड़े वाले रथपर नियत मन्द मुसकान करते हुए अश्वत्थामाने परिघाके समान मूशल अर्जुनके ऊपर फेंका २९ शत्रुओं के मारनेवाले वीर अर्जुनने स्वर्णमय वस्त्रसे अलंकृत अकस्मात् आतेहुए उस मूशलके सात खण्ड किये ३० अश्वत्थामाने मूशलको टूटा हुआ देखकर बड़े क्रोधसे हिमालयके शिखरकी समान महाघोर परिघको हाथमें लिया ३१ युद्धमें सावधान अश्वत्थामाने उसको अर्जुनके ऊपर फेंका। पाण्डुनन्दन अर्जुनने उस कालरूप क्रोधभरे परिघको देखकर शीघ्र ही पांच उत्तम बाणोंसे टुकड़े टुकड़े कर दिया ३२ हे भरतर्षभ ! बड़े युद्धमें अर्जुनके बाणोंसे टूटा परिघ पृथ्वीके महाराजाओं के चित्तोंको विदीर्ण कर पृथ्वी में ही गिर पड़ा ३३ फिर अर्जुनने अन्य तीन बाणोंसे अश्वत्थामाको घायल किया; तब बलवान् अर्जुनके हाथसे अत्यन्त घायल बड़े पराक्रमी ३४ अश्वत्थामाजी अपनी वीरतामें नियतहुए। महारथी भारद्वाज अश्वत्थामाने सुरथ नाम क्षत्रियको ३५ सब क्षत्रियोंके देखते बाणोंके समूहोंसे ढकदिया। अनन्तर पाञ्चालोंका महारथी सुरथ रणभूमिमें बादलके समान शब्दायमान रथकी सवारी से अश्वत्थामाके सम्मुख हुआ। सब भारके सहने वाले उत्तम दृढ़ धनुषको खींचतेहुए ३६-३७ उसने अग्नि और सर्पके समान बाणोंसे उसे ढकदिया। आते हुए महारथी सुरथको क्रोधयुक्त देखकर ३८ अश्वत्थामाने दण्डसे घायल सर्पके समान युद्धमें क्रोध किया। होठोंको चाटते हुए अश्वत्थामाने भृकुटीको तीन स्थानों में टेढ़ी कर ३९ बड़े क्रोधसे उस वीर सुरथको देखकर धनुषकी प्रत्यञ्चाको चढ़ा, यमदण्डके समान प्रकाशित तीक्ष्ण नाराचको छोड़ा ४० इन्द्रवज्रके समान छोड़ा हुआ वह नाराच उसके हृदयको तोड़, पृथ्वी को चीरकर बड़े वेगसे प्रवेश करगया ४१ इसके पीछे

नाराच से विदीर्ण वह वीर पृथ्वीपर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि वज्रसे फटनेवाले पहाड़का शिखर गिरता है ४२ उस वीरके मरने पर रथियों में श्रेष्ठ प्रतापी अश्वत्थामा शीघ्र ही उसी रथपर सवारहुए । महाराज ! युद्धदुर्मद महाअलंकृत युद्धमें संसप्तकों समेत अश्वत्थामा ने फिर अर्जुन से युद्ध किया ४३-४४ वहां मध्याह्न में एकका बहुतों के साथ ऐसा बड़ा युद्ध हुआ जो यमराज के देशका बढ़ानेवाला था ४५ वहां हमने उनके पराक्रमको देखकर बड़ा आश्चर्य किया कि अकेला अर्जुन एक साथ बहुतसे वीरोंसे लड़ा ४६ एक का अनेकोंके साथ ऐसा बड़ा युद्ध हुआ जैसा कि पूर्व समयमें इन्द्रका दैत्यों की बड़ी सेनाके साथ हुआ था ४७ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि संकुलयुद्धोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ।

सञ्जय बोले कि महाराज ! दुर्योधन और धृष्टद्युम्नने भी बड़ा युद्ध किया । वह युद्धभी बाण और शक्तियों से व्याप्त था १ महाराज ! उन दोनों की बाणधाराएं ऐसे प्रकट हुईं जैसे कि समयपर चारों ओर से बादलों की जलधारा होती है २ राजा दुर्योधनने शीघ्रगामी पांच बाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायल करके उग्र बाण रखनेवाले द्रोणाचार्य के हन्ता धृष्टद्युम्नको सात बाणोंसे छेदा ३ तब बलवान् दृढ़ पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने युद्धमें दुर्योधन को सत्तर विशिखोंसे पीड़ित किया ४ हे भरतर्षभ ! उसके सगे भाइयों ने राजाको पीड़ित देखकर बड़ी सेनासमेत घेर लिया ५ उस समय सबओर उन अतिरथियों से घिरा हुआ वह शूर युद्धमें अस्त्रोंकी तीव्रता दिखाता हुआ अच्छे प्रकार से भ्रमण करने लगा ६ प्रभद्रक नाम क्षत्रियों से संयुक्त शिखण्डी ने धनुषधारी महारथी कृपाचार्य और कृतवर्मासे युद्ध किया ७ प्राणोंके द्यूतरूपी युद्धमें उन प्राण त्यागनेवालों का घोर महायुद्ध हुआ ८ फिर दिशाओंमें बाण बरसाते हुए शल्यने सात्यकी और भीमसेन समेत पाण्डवों को पीड़ित किया ९ हे राजेन्द्र ! इसी प्रकार अश्विनीकुमारोंके समान पराक्रमी नकुल और सहदेवसेभी बल, पराक्रम और अस्त्रोंके सामर्थ्यके द्वारा युद्ध किया १० उस बड़े युद्धमें किसी महारथीने शल्यके शायकोंसे घायल पाण्डवोंका रक्षक नहीं पाया ११ उसके पीछे धर्मराज के अत्यन्त पीड़ित होने पर माद्रीनन्दन शूर नकुल तीव्रतासे मामाजी के

सम्मुख गया १२ शत्रुओंके मारनेवाले, मन्द मुसकान करते नकुल ने युद्धमें इस शल्यको ढककर उन बड़े उग्र दश बाणोंसे छातीपर घायल किया जो लोहे के कारीगरके हाथसे साफ़ किये गये, सुनहले पुंखके, तेज धार और धनुषरूपी यंत्रसे फेके गयेथे १३-१४ उस महात्मा भानजेके हाथसे पीड़ित शल्यने टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे नकुलको पीड़ित किया १५ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर, भीमसेन, सात्यकी और माद्रीनन्दन सहदेव—ये सभी राजा मद्रके सम्मुख गये १६ दिशाओंको रथों के शब्दों से पूर्ण करते और पृथ्वीको कँपाते, शीघ्र आतेहुए उन वीरों को १७ युद्धमें शत्रुविजयी सेनापति शल्यने रोका। तीनि बाणोंसे युधिष्ठिरको, पांचसे भीमसेनको १८ सौबाणों से सात्यकीको और तीनबाणोंसे सहदेवको छेदा । हे श्रेष्ठ ! फिर राजा मद्रने महात्मा नकुल के धनुष बाण को १९ क्षुरप्रसे काटा । तब शल्य के शायकों से कटा हुआ वह धनुष गिर पड़ा २० महारथी नकुलने दूसरा धनुष लेकर शीघ्र ही राजा मद्र के रथको बाणोंसे भरदिया २१ हे श्रेष्ठ ! फिर युधिष्ठिर और सहदेव ने दश दश बाणोंसे इस मद्रके राजाको छाती पर घायल किया २२ और भीमसेन ने राजा मद्रके सम्मुख जाकर कंकपक्षयुक्त साठ बाणों से और सात्यकी ने दश बाणों से उसे घायल किया २३ क्रोधयुक्त राजा मद्र ने भी सात्यकी को टेढ़े पर्ववाले नौ और सत्तर बाणों से घायल कर २४ इसके धनुषको भी बाण समेत मूठके स्थानपर काटकर चारों घोड़ों को कालके वश किया २५ महारथी राजा मद्र ने सात्यकी को विरथ देख कर सौ विशिखों से चारों ओर से घायल किया २६ हे कौरव ! फिर उसने क्रोध पूर्णहो माद्रीके दोनों पुत्र, भीमसेन और युधिष्ठिरको दश दश बाणों से घायल किया २७ वहां हमने राजा मद्रके अपूर्व पराक्रमको देखा कि सब पाण्डव मिलकर भी उसके साथ युद्धमें सम्मुख नहीं हुए २८ सत्य पराक्रमी, बलवान् सात्यकी दूसरे रथ पर सवार होकर राजा मद्रके आधीन और पीड़ित पाण्डवों को देख २९ तीव्रता से शल्यके सम्मुख गया। युद्धको शोभा देनेवाला शल्य रथकी सवारी से उस आतेहुए रथीके सम्मुख ऐसे गया ३० जैसे कि मतवाला हाथी मत्त गज के सम्मुख होता है । शूर सात्यकी का और राजा मद्रका ऐसा कठिन युद्ध हुआ ३१ जैसा कि पूर्व समयमें शम्बर और देवराजका हुआ था ३२ सात्यकीने राजा मद्रको सम्मुख देखकर दश बाणों से घायल कर तिष्ठ तिष्ठ शब्द किया ३३ उस महात्मा के हाथ से कठिन घायल राजा मद्रने

अपूर्व पुंखवाले तीक्ष्ण बाणों से सात्यकी को घायल किया ३४ बड़े धनुषधारी पाण्डव, सृञ्जय और यादव रथों की सवारी में मामाको मारने की इच्छा से शीघ्र सम्मुख गये ३५ उसके पीछे सिंहके समान गर्जनेवाले शूरवीरों का महाकठिन युद्ध हुआ जिसमें रुधिररूपी जल था ३६ महाराज ! युद्ध में मांस के अभिलाषी सिंहों के समान गर्जनेवाले उन वीरों की परस्पर चढ़ाई बहुत अच्छी हुई ३७ उनके हज़ारों बाणसमूहों से पृथ्वी आच्छादित होगई और अकस्मात् अन्तरिक्षभी बाणरूप होगया ३८ वहां चारों ओर से अनेक प्रकार के बाणों का अन्धकार छा जाने पर महात्माओं के छोड़े हुए बाणों से बादलों की सी छाया उत्पन्न होगई ३९ हे राजन् ! वहां सुनहले पुंखवाले, प्रकाशमान, कांचली से छूटे सर्पों के समान छोड़े हुए बाणों से दिशाएं शोभित हुईं ४० शत्रुओं के मारनेवाले शल्यने बड़ा अपूर्व कर्म किया । उस शूरवीर ने अकेलेही युद्ध में बहुतों के साथ लड़ाई की ४१ राजा मद्रकी भुजासे छोड़े हुए कंक और मोर के परों से जटित गिरते हुए घोर बाणों से पृथ्वी आच्छादित होगई ४२ वहां बड़े युद्ध में शल्य के घूमते हुए रथको इस प्रकार का देखा जैसा कि पूर्व समय में असुरों के नाशमें इन्द्रका रथ हुआ था ४३ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि संकुलयुद्धेपञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ।

सञ्जय बोले कि हे समर्थ ! इसके पीछे आपकी सेनाके लोग, जिनका अगुआ राजा मद्र था, बड़ी तीव्रता से फिर पाण्डवों के सम्मुख गये १ युद्ध में मतवाले और पीड़ामान दौड़ते हुए आपके उन सब शूरवीरों ने अधिकता से क्षणभर में ही पाण्डवों को छिन्नभिन्न कर दिया २ कौरवोंसे घायल पाण्डव, श्रीकृष्ण और अर्जुन के देखते भीमसेन से रोकेहुएभी युद्ध में नियत नहीं हुए ३ तब क्रोधयुक्त अर्जुनने कृपाचार्य और कृतवर्मा को उनके साथियों समेत बाणसमूहों से ढक दिया ४ सहदेव ने शकुनी को उसकी सेना समेत हटाया, नकुलने एक भागमें नियत होकर राजा मद्रको देखा ५ द्रौपदी के पुत्रों ने भी अनेक राजाओं को रोका; पाञ्चालदेशी शिखण्डी ने अश्वत्थामा को रोका ६ और गदाधारी भीमसेन ने राजा दुर्योधनको रोका और कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर ने सेनासमेत शल्यको रोका ७ तदनन्तर युद्ध से न लौटनेवाले आपके शूरवीर

और प्रतिपक्षियोंके शूरवीरोंका युद्ध जहां तहां बहुत कठिन हुआ ८ हमने युद्ध में शल्यका बहुत बड़ा कर्म देखा। उसने अकेलेही पाण्डवोंकी सब सेनाओंसे युद्ध किया ९ शल्य उस युद्धमें युधिष्ठिर के समक्ष ऐसा दिखाई पड़ा जैसे कि चन्द्रमाके सम्मुख शनैश्चर नक्षत्र १० फिर विषैले सर्पके समान बाणोंसे राजाको पीड़ित करके भीमसेनके सम्मुख दौड़ा और बाणोंकी वर्षासे उसे ढकदिया ११ आपकी और दूसरों की सेनाओं ने उसके हस्तलाघव और अस्त्रज्ञताकी प्रशंसा की १२ फिर शल्यके हाथसे पीड़ित अत्यन्त घायल पाण्डव युधिष्ठिरको पुकारते हुए युद्धको छोड़ भागे १३ राजा मद्रके हाथसे सेनाओंके घायल होनेपर धर्मराज युधिष्ठिर क्रोध के वशीभूत हुए १४ इसके पीछे विजय या पराजयके निर्णयका निश्चय करनेवाले युधिष्ठिरने वीरताके आवेशमें राजा मद्रको पीड़ित किया १५ सब भाई और माधव श्रीकृष्णजीको बुलाकर उन्होंने कहा कि भीष्म, द्रोणाचार्य और कर्ण आदिक कौरवोंके निमित्त उपाय करनेवाले अन्यान्य राजालोग युद्धमें मारे गये। आपलोग भाग और उत्साहसे पराक्रम करनेवाले हैं १६–१७ यह महारथी अकेला शल्य मेरे भाग का शेष है। मैं अब युद्धके द्वारा राजा मद्रको जीतने की आशा करता हूं १८ अब जो मेरी इच्छा है, वह सब आप से कहता हूं। माद्रीके पुत्र शूर नकुल और सहदेव मेरे चक्रके रक्षक हों १९ जोकि युद्धमें इन्द्रसेभी अजेय होकर वीरों के अङ्गीकृत हैं। अच्छा हो, इस युद्धमें क्षत्रियधर्म को आगे करनेवाले २० प्रतिष्ठाके योग्य, सत्यसंकल्प नकुल और सहदेव मेरे निमित्त मामा से युद्ध करें। शल्य युद्ध में या तो मुझको मारेगा या मैं उसको मारूंगा; तुम्हार कल्याण हो २१ हे लोकवीर, राजालोगो! तुम मेरे इस सत्य सत्य वचनको जानो। मैं क्षत्रियधर्म से मामाके साथ लड़ूंगा २२ मैं विजय या पराजय का निश्चय करके लड़ूंगा। अब मेरे सब शस्त्र और सामानों को २३ रथ जोड़नेवाले मनुष्य बहुत शीघ्रता से शास्त्रके अनुसार रथपर रक्खें। सात्यकी दक्षिणचक्रकी और धृष्टद्युम्न उत्तरचक्र की रक्षा करें। मेरे पृष्ठका रक्षक पाण्डव अर्जुन हो और शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बलवान् भीमसेन अग्रवर्ती हो २४–२५ इस प्रकार मैं भीमसेनके कारण युद्ध में अधिक बलवान् हूंगा। इन बातों को सुनकर राजाके हित चाहनेवाले सब लोगोंने उसी प्रकार किया २६ इसके पीछे सेना में बड़ी प्रसन्नता उत्पन्न हुई, विशेष करके पाञ्चाल, सोमक और मत्स्यदेशी लोगोंको बहुत प्रसन्नता हुई २७ जब राजा

युधिष्ठिर प्रतिज्ञा कर शल्यके सम्मुख गये तब पाञ्चालों ने सैकड़ों शंखों और उत्तम भेरियोंको बजाया २८ और सिंहनादोंको किया एवं क्रोधयुक्त होकर राजा मद्र के सम्मुख दौड़े २९ फिर श्रेष्ठ कौरव प्रसन्नतासे उत्पन्न बड़े शब्दवाले हाथियों के घंटे, शंखोंके शब्द और ३० तूरी बाजेके बड़े शब्दसे पृथ्वीको शब्दायमान करते सम्मुखहुए। उस समय आपके पुत्र और पराक्रमी राजा मद्रने उन सब पाण्डवोंको ऐसे रोका ३१ जैसे कि अस्ताचल और उदयाचल पर्वत बड़े बड़े बादलों को रोकते हैं। फिर युद्धमें प्रशंसनीय शल्य बाणोंकी वर्षा से शत्रुओं के विजय करनेवाले धर्मराजपर ऐसे वर्षा करने लगा जैसे कि इन्द्र जल बरसाता है। उसी प्रकार बड़े साहसी कौरवराजने भी द्रोणाचार्य की नाना शिक्षाएं दिखलाते हुए बाण बरसाये। वह बाणवृष्टि अपूर्व, तीक्ष्ण और मनोहर थी ३२-३४ युद्धमें घूमतेहुए उसके छिद्रको किसी ने नहीं देखा। उन दोनोंने नाना प्रकार के बाणोंसे परस्पर ऐसे घायल किया ३५ जैसे कि युद्ध में पराक्रम करनेवाले मांसके अभिलाषी दो शार्दूल होते हैं। उस युद्धमें कुशल आपके पुत्र से भीमसेन लड़ा ३६ धृष्टद्युम्न, सात्यकी, पाण्डव नकुल और सहदेवने शकुनी आदिक वीरों को चारों ओर से रोका ३७ हे राजन्! आपकी कुमन्त्रता होने से आपके विजयाभिलाषी पुत्र और प्रतिपक्षियों का युद्ध फिर जारी हुआ ३८ दुर्योधन ने टेढ़े पर्ववाले बाणसे सूर्यके समान प्रकाशमान, सुवर्णसे अलंकृत भीमसेन की ध्वजा ३९ काटी। हे बड़ाई देनेवाले! भीमसेनकी वह ध्वजा युद्धभूमि में गिरपड़ी जोकि क्षुद्रघंटिकाओंके बड़ेजालसे सुंदर दर्शन और चित्तरोचक थी ४० फिर राजाने रत्नोंसे जटित, गजराजकी सूंड़के समान उसके धनुषको तीक्ष्ण धारवाले क्षुरप्रसे काटा ४१ उस टूटे धनुषवाले तेजस्वी पराक्रमी ने रथशक्तिसे आपके पुत्रको छाती पर छेदा, तब वह रथमें बैठने के स्थानपर गिरपड़ा। उसके अचेत होनेपर भीमसेनने क्षुरप्रसे उसके सारथीका शिर काटा ४२-४३ हे भरतवंशिन्, राजा धृतराष्ट्र! तब उसके वे घोड़े, जिनका कि सारथी मारा गया था, रथको लेकर दिशाओंमें भागे। इससे बड़ा हाहाकार हुआ ४४ आपके पुत्रके चाहनेवाले बड़े बलवान् अश्वत्थामा, कृपाचार्य और कृतवर्मा, ये सभी रक्षाके निमित्त उसकी ओर दौड़े ४५ उस सेना के सञ्चालित होनेपर उसके आगे पीछेवाले लोग भयभीत हुए, तब गाण्डीव धनुषधारी ने धनुष को टंकारकर उन्हें बाण मारे ४६ फिर क्रोधयुक्त राजा

युधिष्ठिर चित्तके समान शीघ्रगामी अपने श्वेतवर्ण के घोड़ों को चलाते हुए राजा मद्रके सम्मुख दौड़े ४७ वहां हमने धर्मराज युधिष्ठिरमें अपूर्व चमत्कार देखा कि प्रथम मृदु और जितेन्द्रिय होकर फिर कठिन हुए ४८ और फैले नेत्र, क्रोध से कम्पायमान होकर उन्होंने पैने भल्लोंसे लाखों शूरवीरों को मारा ४९ हे राजन्! वह बड़ा पाण्डव जिस सेना के सम्मुख गया उसे बाणों से ऐसा गिराया जैसे कि उत्तम वज्रोंसे पर्वतों को गिराते हैं ५० अकेले पराक्रमीने घोड़े, सारथी, ध्वजा और रथसमेत बहुतसे रथसवारों को गिराकर, ऐसी क्रीड़ा की जैसे वायु बादलोंको गिराकर क्रीड़ा करता है ५१ उसने युद्ध में अश्वसवार, घोड़े और पत्तियों को ऐसे हज़ारों प्रकारसे नाश किया जैसे कि क्रोधरूप रुद्रजी पशुओंका नाश करते हैं ५२ और चारों ओर बाणोंकी वर्षासे रणभूमि को निर्जन कर राजा मद्रके सम्मुख जाकर तिष्ठ तिष्ठ शब्द किया ५३ आपके सब शूरवीर भयकारी कर्मकर्ता युधिष्ठिर के उस कर्म को देख भयभीत हुए। शल्य के सम्मुख होने पर ५४ वे दोनों अत्यन्त क्रोधयुक्त हो, शङ्खोंको बजाकर परस्पर बुलाते और घुड़कतेहुए सम्मुख हुए ५५ शल्यने बाणोंकी वर्षासे युधिष्ठिरको पीड़ित किया और कुन्तीके पुत्रने भी बाणवर्षा से राजा शल्यको ढकदिया ५६ राजा शल्य और युधिष्ठिर दोनों वीर बाणोंसे छिदेहुए, रुधिर पूर्ण शरीर दिखाई पड़े ५७ वनमें प्रफुल्लित शाल्मली और किंशुकनाम वृक्षों के समान दोनों शोभित हुए। उन दोनों को प्राणोंके द्यूतसे दुर्मद प्रकाशमान ५८ देखकर सब सेनाके लोगोंने विजयका निश्चय नहीं किया। वे यह संकल्प-विकल्प करने लगे कि अब न जाने पाण्डव शल्यको मारकर पृथ्वीको भोगेगा या पाण्डव को मारकर शल्य इस पृथ्वी को स्वयं भोगेगा ५९ अथवा यह सब पृथ्वी दुर्योधनको देदेगा। हे भरतर्षभ! वहां शूरवीरोंको कुछ भी निश्चय नहीं हुआ ६० युद्ध करनेवाले धर्मराज के सब शकुनादिक दहिने हुए, इसके पीछे शल्यने युधिष्ठिरपर सौ बाण छोड़े ६१ और उनके धनुषको पैने क्षुरसे काटा। उन्होंने दूसरा धनुष लेकर शल्यको तीनसौ बाणोंसे छेदा ६२ और क्षुरसेही उसका धनुष काटा। फिर टेढ़े पर्वके बाणोंसे उसके चारों घोड़ोंको मारा ६३ और दो तीक्ष्ण बाणोंसे दोनों आगे पीछेवालों समेत सारथी को मारा। प्रकाशित, पीले तीक्ष्ण धार बाण ६४ और भल्लसे उसकी ध्वजा काटी। हे शत्रुओं के जीतनेवाले! इसके अनन्तर दुर्योधन की सेना छिन्न भिन्न

होगई ६५ अश्वत्थामा उस दशामें शल्यकी ओर दौड़े और उन्हें अपने रथपर बिठलाकर शीघ्रता से चल दिये ६६ वे दोनों एक मुहूर्त चलकर युधिष्ठिरके गर्जने पर ठहरे। राजा शल्य यथाविधि अलंकृत, बड़े बादलके समान शब्दायमान, बड़े बड़े अस्त्र, शस्त्र, यन्त्रों से पूर्ण और शत्रुओं को रोमांच करनेवाले दूसरे रथपर सवार हुए ६७-६८॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि षोड़शोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय।

सञ्जय बोले कि पराक्रमी राजा शल्य वेगवान् दूसरा धनुष लेकर युधिष्ठिर को छेदते हुए सिंह के समान गर्जे १ फिर बड़े साहसी क्षत्रियों में श्रेष्ठ शल्य वर्षाके बादलोंके समान क्षत्रियों पर वर्षा करने लगे २ सात्यकी को दश बाणों से, भीमसेन और सहदेव को तीन तीन बाणों से छेदकर उन्होंने युधिष्ठिर को पीड़ित किया ३ विशिख बाणों से उन बड़े धनुषधारियों को घोड़े, रथ और कूबरों समेत ऐसे पीड़ित किया जैसे कि उल्काओंसे हाथियों को पीड़ित करते हैं ४ रथियों में श्रेष्ठ शल्य ने हाथी, हाथीसवार, घोड़े, घुड़सवार और रथों समेत रथसवारों को मारा ५ तीव्रता से शस्त्र और ध्वजाएं काट। पृथ्वी को शूरवीरों से ऐसे आच्छादित कर दिया जैसे कि यज्ञ की वेदीको कुशाओं से आच्छादित करते हैं ६ अत्यन्त क्रोधयुक्त पाण्डव, पाञ्चाल और सोमकों ने काल के समान सेनाके मारनेवाले शल्यको चारों ओर से घेर लिया ७ तब पुरुषोत्तम नकुल, सहदेव, सात्यकी और भीमसेन ने विकट बलवान् राजा युधिष्ठिर से भिड़ेहुए समर्थ शल्य को परस्पर बुलाया ८ शूरवीरों में श्रेष्ठ, नरवीर, महाराज शल्यको शूरोंने युद्धमें घेरकर पैने बाणोंसे घायल किया ९ भीमसेन, नकुल, सहदेव और सात्यकी से भलीभांति रक्षित धर्मपुत्र युधिष्ठिर ने वेगवान् बाणों से राजा मद्र को छाती में घायल किया १० अच्छे अलंकृत, आपके बड़े उत्तम रथियों के समूहोंने युद्ध में राजा मद्रको बाणों से पीड़ित देखकर दुर्योधन के मतसे शल्यको आगे से बीच में कर लिया ११ इसके पीछे राजा मद्रने युधिष्ठिर को शीघ्रतापूर्वक सात बाणों से घायल किया। महाराज! महात्मा युधिष्ठिर ने भी तुमुल युद्ध में नौ पृषत्क बाणों से उसे घायल किया १२ युद्ध में महारथी युधिष्ठिर और शल्य ने कानतक खींचकर छोड़े हुए और तेल से

साफ़ किये हुए बाणों से परस्पर ढकदिया १३ परस्पर अवकाश ढूंढ़नेवाले, बड़े बलवान्, निर्भय महारथी, राजाओं में श्रेष्ठ दोनों शीघ्रही बाणों से परस्पर घायल हुए १४ परस्पर बाणसमूहों समेत धनुष खींचनेवाले महात्मा राजा शल्य और युधिष्ठिर की प्रत्यंचा के, महेन्द्रके वज्र की नाईं, बड़े शब्द हुए १५ महावन में मांसाभिलाषी व्याघ्रों के बच्चों के समान दोनों घूमे और दोनोंने बड़े हाथियों के समान परस्पर घायल किया १६ महात्मा राजा मद्रने भयानक पराक्रमी राजा युधिष्ठिर को रोककर सूर्याग्नि के समान प्रकाशित बाणों से उस फुर्तीले वीरको हृदयपर घायल किया १७ हे राजन्! अत्यंत घायल युधिष्ठिर ने भी अच्छे प्रकार चलाये हुए बाण से राजामद्र को घायलकर बहुत आनन्द पाया १८ तब इन्द्रके समान प्रभाववाले क्रोधसे रक्तनेत्र महाराज शल्य ने एक मुहूर्त में ही सचेत होकर सौ बाणों से पाण्डव को घायल किया १६ शीघ्रता करते हुए महात्मा धर्मपुत्र ने क्रोधयुक्त होकर नौ पृषत्क बाणोंसे शल्य की छाती और सुवर्ण का कवच छेदकर दूसरे छः पृषत्कों से घायल किया २० बड़े प्रसन्न राजा मद्रने धनुष खींचकर पृषत्क छोड़े और कौरवों में श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर के धनुष को दो बाणोंसे काटा २१ महात्मा राजा युधिष्ठिरने भी दूसरा भयानक नवीन धनुष लेकर तीक्ष्ण नोकके बाणोंसे शल्यको चारों ओर से ऐसे घायल किया जैसे कि महेन्द्र ने नमुचि असुर को घायल किया था २२ महात्मा शल्य ने नौ पृषत्कों से भीमसेन और राजा युधिष्ठिर के सुन्दर स्वर्णमय कवचों को काटकर, दोनों की भुजाओं को घायल किया २३ फिर सूर्याग्नि के समान प्रकाशित क्षुरसे राजाका धनुष तोड़ा। कृपाचार्य ने छः बाणों से सारथी को मारा, तो वह सम्मुख गिर पड़ा २४ राजा मद्र ने भी चारों ओर से युधिष्ठिर के चारों घोड़ों को मारकर धर्मराज के शूरवीरों का बड़ा विनाश किया २५ राजा की यह दशा होनेपर महात्मा भीमसेन ने शीघ्रही तीव्रगामी बाण से राजा मद्रका धनुष काटकर दो बाणों से उसे कठिन घायल किया २६ फिर उपाय द्वारा दूसरे बाणसे उसके सारथी का शिर काट, महाक्रोधित होकर उसने शीघ्र ही चारों घोड़ों को भी मारा २७ धनुषधारियों में श्रेष्ठ भीमसेन ने युद्ध में उस अकेले घूमनेवाले, बड़े वेगवान् को सौ बाणों से घायल किया २८ इसीप्रकार माद्री के पुत्र सहदेव ने भी भीमसेन के शायकों से शल्यको मोहित देख बाणों से उसका कवच काटा। भीमसेन और सहदेव के हाथसे टूटे कवचवाला महात्मा राजा मद्र

हजार नक्षत्र रखनेवाली ढाल २९ और खड्ग लेकर रथसे कूद कुन्ती के पुत्रके सम्मुख दौड़ा। वह भयङ्कर पराक्रमी नकुलके रथका ईशादंड काटकर युधिष्ठिर के सम्मुख दौड़ा ३० तब धृष्टद्युम्न, द्रौपदी के पुत्र, शिखण्डी और सात्यकी भी अकस्मात् उस क्रोधयुक्त, उछलते और कालके समान आते हुए राजा शल्यके सम्मुख हुए ३१ अत्यन्त प्रसन्न और गर्जते हुए महात्मा भीमसेन ने नौ पृषत्कों से उसकी अनुपम ढालको और आपकी सेना में गर्जकर उसने खड्ग की मूठको काटा ३२ पाण्डवों के अत्यन्त उत्तम और प्रसन्नचित्त रथसमूहों ने भीमसेन का वह कर्म देखकर बड़े आश्चर्यित हो शब्द किये और चन्द्रमाके समान प्रकाशित शंख बजाये ३३ उस भयकारी शब्दसे आपकी अजेय सेना के समूह व्याकुल, रुधिर से लथपथ और अचेत होकर नष्ट हुए ३४ भीमसेन के अधिनायकत्वमें पाण्डवों के श्रेष्ठ शूरवीरों से घायल राजा मद्र अकस्मात् तीव्रतासे युधिष्ठिरके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि मृगके पकड़ने को सिंह जाता है ३५ मरे घोड़े और सारथीवाले क्रोधसे ज्वलित रूप, अग्निके समान प्रकाशित धर्मराजने बलसे सम्मुख दौड़नेवाले शल्यको देख ३६ शीघ्र ही गोविन्द जीका वचन सोचकर शल्यके मारनेका विचार किया। मृतक घोड़े और सारथीवाले रथपर बैठे हुए धर्मराजने शक्ति की इच्छा की ३७ उस स्थानपर भी धर्मात्मा युधिष्ठिरने महात्मा शल्यका कर्म देख और शेष बचे हुए अपने ही भागको विचारकर शल्य के मारने में ऐसा चित्त किया जैसा कि श्रीकृष्णजी ने कहाथा ३८ धर्मराज ने मणि और सुवर्ण से जटित दण्डयुक्त, सुवर्ण के समान प्रकाशित शक्ति को ले अकस्मात् प्रकाशित नेत्र खोलकर क्रोधसे पूर्ण हो राजा मद्र को देखा ३९ हे राजन्! यही मुझे बड़ा आश्चर्य है कि पवित्रात्मा और पापों से रहित, नरदेव राजा युधिष्ठिरसे देखा हुआ शल्य बिलकुल भस्म नहीं हुआ ४० कौरवों में अत्यन्त श्रेष्ठ, महात्मा युधिष्ठिर ने उस सुन्दर, उग्र दण्डवाली, मणियों से जटित, अग्निरूप, अत्यन्त प्रकाशित शक्तिको बड़े वेगसे राजा मद्रके ऊपर फेंका ४१ सब एकत्रित कौरवों ने उस प्रकाशित और स्फुलिंगसंयुक्त अकस्मात् बड़े वेगसे गिरती हुई शक्तिको ऐसे देखा जैसे कि प्रलयकाल के समय आकाश में बड़ी उल्काओं को देखते हैं ४२ धर्मराज ने पाशधारी कालरात्रि के समान, यमराजकी उग्र धात्री के समान, ब्रह्मदण्डकी सूरत, सफल, पाण्डवों से उपायपूर्वक सुगंध, माला, आसन, भोजन और पानों से

पूजित, संवर्तक अग्निके समान ज्वलित रूप, अथर्वाङ्गिरसी उग्रकृत्याके समान, शिवजीके लिये त्वष्टा देवताकी बनाई हुई, शत्रुओंके प्राण और शरीरोंकी भक्षण करनेवाली और हठपूर्वक पृथ्वी अन्तरिक्ष आदिक और जलमें रहनेवाले जीवों के मारने में समर्थ, घंटा पताका मणि और वज्रकी माला रखनेवाली, वैडूर्य से जटित, स्वर्णमयी, दण्डधारी बड़े नियम और उपायोंसे त्वष्टा देवताकी बनाई हुई, ब्राह्मणों से शत्रुता करनेवालों की नाश करनेवाली, उस वेगवती शक्तिको बल और बड़े उपाय से घोर मन्त्रोंद्वारा संयुक्तकर राजा मद्रके मारनेके निमित्त उत्तम रीतिसे छोड़ा ४३-४७ शिवजी ने अन्धकको नाश करनेवाला बाण जिस प्रकार छोड़ा था; उसी प्रकार क्रोधसे नाचते हुए युधिष्ठिरने 'हे पापिन्! मारा है' यह कहते हुए बहुत दृढ़, सुन्दर हाथवाली भुजा फैलाकर शक्ति को छोड़ा ४८ युधिष्ठिरके सामर्थ्यसे छोड़ी हुई, अपूर्व पराक्रम और घृतकी धारासे अच्छे प्रकार होमी हुई अग्नि के समान, उस सुन्दर शक्तिको पकड़नें के निमित्त शल्य सम्मुख गर्जा ४९ वह निर्लेप शक्ति उसके सब मर्मस्थलों समेत उज्ज्वल, बड़ी छातीको फाड़कर राजाके विशाल यशको विख्यात करती हुई पृथ्वी और जलमें प्रवेश करगई ५० तब मद्रपति शल्य नाक, आंख, कान और मुखसे निकलनेवाले और घावों से बहनेवाले रुधिरसे लिप्ताङ्ग होकर स्वामिकार्त्तिक के हाथसे घायल क्रौंचनाम बड़े पर्वत के समान हुआ ५१ युधिष्ठिर की शक्ति से टूटे मर्मस्थलवाले, ऐरावत की सूरत के शल्य भुजाएं फैलाकर रथसे पृथ्वी पर ऐसे गिरे जैसे कि वज्रसे ताड़ित पर्वतका शिखर गिरता है ५२ राजा शल्य धर्मराज के सम्मुख भुजाएं पसारकर इन्द्रकी ध्वजा के समान ऊंचे पृथ्वी पर गिरपड़े ५३ सब अंगोंसे घायल, रुधिरसे भरे हुए नरोत्तम शल्य प्रीतिसे सम्मुख जानेवाले के समान पृथ्वी पर गिरपड़े ५४ वे प्रभु अपनी प्यारी स्त्री के समान पृथ्वी को बहुत कालतक भोगकर गिरते हुए दिखे ५५ सब अंगों से प्यारी स्त्री के साथ छातीसे मिलकर सोनेवाले के समान धर्मात्मा धर्मपुत्रके हाथ से धर्मरूपी युद्धमें मरनेपर ऐसे शान्त हुए ५६ जैसे यज्ञमें अच्छे प्रकार होमे हुए स्विष्टसे अग्नि देवता होते हैं। शक्ति से विदीर्ण-हृदय, टूटे शस्त्र और ध्वजावाले मृतक राजा मद्रको इस दशामें भी शोभा ने न छोड़ा। इसके पीछे युधिष्ठिरने इन्द्रधनुषके समान प्रकाशित धनुष लेकर ५७-५८ युद्धमें शत्रुओं को ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे गरुड़ सर्पोंको करते हैं और

पैने भल्लों से शत्रुओं को क्षणभर में ही नाश कर दिया ५६ पाण्डवों के बाणों से ढके हुए, आपकी सेनाके लोग आंख मूंदे शस्त्रों को चलाते हुए परस्पर कठिन मर्दित हुए ६० और शरीरों से रुधिर गिराते हुए शस्त्र और जीवनसे जुदे हुए। शल्य के गिरनेपर राजा मद्रका छोटा तरुण भाई ६१ सब गुणों में भाई के समान रथी, पाण्डव युधिष्ठिर के सम्मुख गया। शीघ्रता करनेवाले उस नरोत्तमने बहुत नाराचों से घायलकिया ६२ जब वह युद्धमें दुर्मद, मृतक भाईका बदला लेनेका अभिलाषी हुआ तब शीघ्रता करनेवाले धर्मराजने छः बाणों से उसे घायल किया ६३ बाणोंसे ही उसके धनुष और ध्वजा को काट-कर प्रकाशमान अत्यन्त दृढ़ और तीक्ष्ण ६४ भल्लसे उसके शिरको काटा। रथसे गिरता हुआ वह कुण्डलधारी शिर ऐसे दिखाई पड़ा ६५ जैसे कि शुभ कर्मोंका फल नष्ट होने पर मनुष्य स्वर्गसे च्युत होता है ६६ उसके रुधिर से लिप्त शरीरको देखकर सेना छिन्न भिन्न होगई। उस अपूर्व कवचधारी शल्यके छोटे भाईके मरनेपर ६७ हाहाकार करनेवाले कौरव भागे। शल्यके छोटे भाई को मरा हुआ देखकर जीवन के त्यागनेवाले आपके शूरवीर धूलिसे लिपटे पाण्डव युधिष्ठिरके भय से भयभीत होगये। हे भरतर्षभ ! शिनीका पौत्र सात्यकी बाणों से ढकता हुआ छिन्न भिन्न होनेवाले कौरवों के सम्मुख हुआ ६८—६९ शीघ्रता करनेवाले कृतवर्माने निर्भय बड़े धनुषधारी, सहने के अयोग्य, कठि-नतासे साम्हना करने योग्य आते हुए सात्यकी को रोका ७० वे दोनों महात्मा अजेय सिंहोंके समान, बलसे मतवाले यादव कृतवर्मा और सात्यकी सम्मुख हुए ७१ सूर्यके समान तेजस्वी वे दोनों शुद्ध प्रकाशवान् बाणोंसे परस्पर ऐसे ढकनेवाले हुए जैसे कि सूर्य की किरणों से ढक जाते हैं ७२ हमनें उन दोनों उत्तम यादवोंके धनुष, मार्ग और बलसे उठे हुए आकाश-स्थित बाणोंको शीघ्रगामी पक्षियों के समान देखा ७३ कृतवर्मा ने दश बाणों से सात्यकी को और तीन बाणोंसे उसके घोड़ोंको घायलकर टेढ़े पर्ववाले एक बाण से उसका धनुष काटा ७४ सात्यकी ने टूटा हुआ उत्तम धनुष डालकर ७५ तीव्रता से दूसरा दृढ़ धनुष लिया। सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी ने ७६ दश बाणोंसे कृतवर्मा को छाती में घायल किया फिर रथयुग और ईशादण्डको श्रेष्ठ भल्लसे काटकर ७७ शीघ्र ही उसके घोड़े, सारथी और पीछे चलनेवाले को मारा। तब पराक्रमी शारद्वत कृपाचार्य उसे विरथ देख ७८ शीघ्रता से अपने

रथपर चढ़ाकर दूर लेगये । हे राजन् ! राजा मद्रके मरने और कृतवर्मा के विरथ होनेपर ७६ दुर्योधन की सब सेनाने फिर मुख फेरा । इस हेतु और धूलसे सेनाके ढकजाने पर दूसरे पक्षवाले नहीं जाने गये ८० वह बहुत भारी हुई सेनाने मुख फेर लिया । हे पुरुषोत्तम ! इसके पीछे उन लोगों ने एक मुहूर्तमें ही उठी हुई धूलिको ८१ नाना प्रकार के रुधिरों से छिड़की हुई देखा । उस समय दुर्योधनने सम्मुख से अपनी सेनाको छिन्न भिन्न देखकर ८२ तीव्रतासे आनेवाले पाण्डवोंको अकेलेही रोका । रथसवार पाण्डवों को, धृष्टद्युम्नको ८३ और अजेय सात्यकी को तीक्ष्ण बाणों से रोका । उस समय शत्रु लोग उसके सम्मुख ऐसे नहीं हुए जैसे कि मरण धर्मवाले जीव आगत कालके सम्मुख नहीं होते ८४ तब कृतवर्मा भी दूसरे रथपर सवार होकर लौटा । शीघ्रता करनेवाले महारथी राजा युधिष्ठिरने ८५ चार बाणों से कृतवर्मा के घोड़ोंको मारकर कृपाचार्यको भी सुन्दर बेतवाले छः भल्लों से घायल किया ८६ अश्वत्थामाजी राजाके आघात से घोड़े और रथ से विहीन कृतवर्मा को अपने रथ के द्वारा युधिष्ठिरके सम्मुखसे हटा लेगया ८७ तब कृपाचार्यने भी छः बाणों से युधिष्ठिर को घायल किया और उसी प्रकार तेजधारके आठ शिलीमुख बाणोंसे घोड़ों को भी घायल किया ८८ महाराज, राजा धृतराष्ट्र ! पुत्रसमेत आपकी कुमन्त्रता से यह शेष लोगोंका युद्ध हुआ ८९ युद्ध में श्रेष्ठ कौरवके हाथ से धनुषधारियों में श्रेष्ठ शल्य के मारे जाने पर अत्यन्त प्रसन्नचित्त पाण्डवों ने इकट्ठे होकर शंख बजाये ९० और युद्धभूमिमें युधिष्ठिर की ऐसी प्रशंसा की जैसी पूर्वसमयमें वृत्रासुरके मारने पर देवताओं ने इन्द्रकी प्रशंसा की थी । फिर उन लोगों ने चारों ओरसे पृथ्वी को शब्दायमान कर नाना प्रकारके बाजे बजाये ९१ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिशल्यवधोनाम सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ।

संजय ने कहा, हे राजन् ! शल्य के मरने पर राजा मद्र के आगे पीछे चलनेवाले सात सौ महारथी वीर बड़ी सेना साथ लेकर बाहर निकले १ फिर शिर पर छत्र धारण किये और चामरोंसे युक्त दुर्योधनने पर्वताकार हाथीपर चढ़कर २ मद्रदेशियों से कहा, कि 'तुमको न जाना चाहिये, न जाना चाहिये'। दुर्योधन से बारम्बार रोके हुए वे वीर ३ युधिष्ठिर को मारने की अभि-

लाश से पाण्डवों की सेनामें पहुँचे। महाराज ! फिर लड़ने में प्रवृत्तचित्त वे शूरवीर ४ धनुषों के बड़े शब्द करके पाण्डवों से युद्ध करने लगे। शल्यको मृतक और धर्मपुत्र युधिष्ठिरको राजा मद्रके हितैषी मद्रदेशी महारथियों से पीड़ित सुनकर अर्जुन अपने गाण्डीवधनुषको टंकारते हुए आये ५-६ महारथी अर्जुन सब दिशाओं को शब्दोंसे पूर्णकर युद्धमें आपहुँचे। पाण्डव अर्जुन, भीमसेन, नकुल, सहदेव ७ नरोत्तम सात्यकी, द्रौपदी के सब पुत्र, धृष्टद्युम्न शिखंडी और सोमकोंसमेत सब पाञ्चाल ८ तथा युधिष्ठिरके चाहनेवाले सब लोगों ने उन्हें मध्यमें किया। चारों ओर से घिरे हुए पुरुषोत्तम पाण्डवोंने ९ उस सेना को ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे कि समुद्रको मगर छिन्न भिन्न करता है और आपके पुत्रोंको ऐसे कँपाया जैसे कि वृक्षों को तीव्र वायु कँपाता है १० हे राजन् ! तब पाण्डवी सेना में फिर ऐसे उथलपुथल हुई जैसे सम्मुख की वायु से गंगानदी व्याकुल होती है ११ महारथी लोग बड़ी सेनामें प्रवेश कर जहां तहां पुकारने लगे कि वह राजा युधिष्ठिर कहां है १२ और उसके शूरवीर भाई कहां हैं। यहां कोई दिखाई नहीं देते हैं। धृष्टद्युम्न, सात्यकी, द्रौपदी के सब पुत्र १३ बड़े पराक्रमी पाञ्चाल और महारथी शिखण्डी कहां हैं। इस प्रकार बातें करनेवाले उन शूरोंको द्रौपदी के महारथी पुत्रोंने १४ और युयुधान ने घायल किया। राजा मद्र के पीछे चलनेवाले कितने ही तो बाणोंसे मर्दित और कितनेही टूटी हुई बड़ी ध्वजाओं से विनष्ट हुए १५ युद्धमें आपके शूरवीर शत्रुओं के हाथ से मरे हुए दिखाई पड़े। हे भरतवंशिन् ! वे लोग युद्ध में पाण्डवों को और चारों ओरसे शूरवीरोंको देखकर १६ आपके पुत्रसे रोके जाकर बड़ी तीव्रता से बढ़े। क्रोध दूर करने के लिये दुर्योधन ने मधुर वचन कहकर उन वीरोंको रोका १७ वहां किसी भी महारथी ने उसकी आज्ञा नहीं मानी। इसके पीछे गांधारदेशके राजकुमार १८ वार्तालापमें कुशल शकुनी दुर्योधनसे बोला, कि हे भरतवंशिन् ! यह क्या बात है जो हमारे देखते हुए मद्रदेशियोंकी सेना मारी जाती है १९ युद्धमें तुम्हारे नियत होने पर यह बात अनुचित और अयोग्य है। इनका साथ देकर भी युद्ध करना चाहिये क्योंकि तुमने नियम किया है। हे राजन् ! फिर किस हेतुसे मरनेवाले दूसरे मनुष्यों को क्षमा करते हो २० दुर्योधन बोला कि इन्होंने मेरे रोकने पर भी मेरी बात नहीं मानी; इसीसे ये सब पाण्डवी सेना में प्रवेशकर मारे गये २१ शकुनि ने

कहा, कि युद्ध में क्रोधयुक्त वीर स्वामी की आज्ञा नहीं मानते हैं। क्रोधको दूर करिये। यह समय उन लोगों को त्यागने का नहीं है २२ घोड़े, रथ और हाथियों समेत हम सब निश्चय कर राजा मद्र के पीछे चलनेवाले धनुषधारियों की रक्षाके लिये चलें २३ हे राजन् ! बड़े उपायोंसे परस्पर रक्षा करें। ऐसा विचार-कर वह सब वहां गये जहांपर वे सेनाके लोग थे २४ इसके पीछे बड़ी सेना समेत राजा दुर्योधन पृथ्वीको सिंहनादों से कँपाता हुआ चलदिया २५ फिर आपकी सेना ने यह कठिन शब्द किया, कि 'मारो, छेदो, पकड़ो, प्रहार करो, शिर काटो'। पाण्डव राजा मद्रके पीछे चलनेवालोंको एक साथ देखकर मध्यवर्ती गुल्म नाम सेना के भागमें नियत हो सामने आये २६-२७ हे राजन् ! राजा मद्र के पीछे चलनेवाले वे वीर एक मुहूर्तभरमें ही मरे हुए दि-खाई पड़े २८ हमारे जाने पर मद्रदेशियों के मारनेवाले वेगवान् प्रसन्नचित्त प्रतिपक्षियों ने एक साथ ही किलकिला शब्द किया २९ सब ओर से उठे हुए धड़ दिखाई पड़े और सूर्यमण्डल के मध्यसे बड़ी उल्काएं गिरीं ३० टूटे रथ, युग, अक्ष, मृतक महारथी और पड़े हुए हाथियों से पृथ्वी आच्छादित होगई ३१ महाराज ! वहां युद्धभूमि में शूरवीर वायु के समान शीघ्रगामी और जहां तहां युगों से चिपटे हुए घोड़ों समेत दिखाई दिये ३२ युद्ध में कितने ही घोड़े टूटे पहियोंके रथोंको ले चले और कितने ही अधिरथीको दशों दिशाओं में ले भागे ३३ जहां तहां पोक्तरों से चिपटे हुए घोड़े दृष्टि पड़े। हे राजाओं में श्रेष्ठ ! कहीं गिरते हुए रथी ऐसे दृष्टिगोचर हुए ३४ जैसे कि शुभकर्मों के फल समाप्त होने पर आकाश से गिरे हुए सिद्ध दिखाई देते हैं। राजा मद्रके पीछे चलनेवाले शूरवीरों के मरने पर ३५ विजयके लोभी, प्रहारकर्ता, महारथी पाण्डव हमलोगों को आते हुए देखकर तीव्रता से सम्मुख हुए ३६ शंखों के शब्दों से संयुक्त बाणोंका शब्द करते हुए हम लोगों को पाकर लक्ष्य भेदनेवाले, प्रहर्ता ३७ और धनुषके चलानेवालों ने सिंहनाद किये। राजा मद्रकी बड़ी सेनाको मरी हुई देखकर ३८ और युद्ध में शूरवीर राजा मद्रको गिरा हुआ देखकर दुर्योधन की सब सेना ने मुँह फेर लिया ३९ महाराज ! विजय से शोभित, दृढ़ धनुषधारी पाण्डवों से घायल और भयसे व्याकुल भयभीत सेनाएं दिशाओं में भागीं ४० ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ।

सञ्जय बोले, कि युद्धमें अजेय महारथी राजा मद्रके मरने पर आपके पुत्रों और योद्धाओं ने बहुधा मुख मोड़ लिया १ अथाह और विना नौका के समुद्र में, नौकाके टूटने पर व्यापारी लोगों की पार होनेकी अभिलाषा के समान आपके वीर अपार में पारके चाहनेवाले हुए २ महाराज ! वे भयभीत, बाणों से घायल, अनाथ होकर इस प्रकार नाथोंके चाहनेवाले हुए जिस प्रकार सिंहसे पीड़ित मृग ३ टूटे सींगवाले बैल और टूटे दांतोंवाले हाथी होते हैं। अजातशत्रु युधिष्ठिरसे जीते हुए हमलोग मध्याह्न के समय हट आये ४ हे राजन् ! शल्यके मरनेपर आपके किसी शूरवीर का साहस सेनाके इकट्ठी करने और पराक्रम करने में नहीं हुआ ५ भीष्म, द्रोणाचार्य और कर्ण के मरनेपर आपके शूरों को जो दुःख और भय हुआ था; वही अब हुआ ६ हमारा वह भय और शोक फिर वर्तमान हुआ। महारथी शल्यके मरनेपर विजयमें निराशा हुई ७ हे राजन् ! राजा मद्रके मरनेसे तीक्ष्ण बाणों से घायल शूरवीर पराजित हुए जिनके बड़े वीर मारे गये थे वे भयभीत होकर भागे ८ कोई महारथी घोड़ों पर, कोई रथोंपर, कोई हाथियों पर सवार होकर भागे विशेषकर पदाती ही तीव्रता से भागे ९ शल्यके मरने पर पर्वत के रूप प्रहार करनेवाले दो हजार हाथी अंकुशों और अँगूठों से चलाये जाकर भागे १० हे भरतर्षभ ! आपके शूरवीर युद्ध से दिशाओं में भागे और बाणोंसे घायल श्वास लेते और दौड़ते हुए दिखाई पड़े ११ विजयाभिलाषी पाञ्चालों और पाण्डवों ने उन असाहसी, पराजित और छिन्न भिन्न भगोड़ों का पीछा किया १२ शूरवीरोंके बाणों के उत्तम शब्द, सिंहनाद और शंखों के शब्द महाभयकारी प्रकट हुए १३ पाण्डवों समेत पाञ्चाल लोग कौरवीय सेनाके लोगोंको भयभीत और भागते देखकर परस्पर बोले १४ कि "अब सच्चे धैर्यवाला, राजा युधिष्ठिर मृतक शत्रुओंवाला है । अब दुर्योधन प्रकाशवान् राजलक्ष्मी से रहित हुआ १५ अब राजा धृतराष्ट्र पुत्रको मरा हुआ सुनकर पृथ्वी पर पड़ा पड़ा अचेत होकर रोगग्रस्त होगा १६ अब अर्जुन को सब धनुर्धारियोंमें श्रेष्ठ और समर्थ जानो। अब वह पापकर्मी दुर्बुद्धि अपनी ही निन्दा करेगा १७ अब हितकारी वचन कहनेवाले विदुरजी के वचनों को स्मरण करेगा। अब से नौकरके समान युधिष्ठिरकी उपासना करता हुआ १८

राजा धृतराष्ट्र उस दुःखको जानेगा जो पाण्डवों ने पाया था । अब राजा श्रीकृष्णके भी माहात्म्यको जानेगा १६ अब युद्धमें अर्जुनके धनुषके घोर शब्द को, लड़ाई में दोनों भुजाओं और अस्त्रों के बलको जानेगा २० इन्द्रके हाथसे बलि नामक असुर जिस प्रकार मारा गया; उसी प्रकार युद्धमें अब मद्रराजके मरने पर महात्मा भीमसेन के घोर पराक्रमको जानेगा २१ भीमसेन ने दुश्शासनके मारने में जो कर्म किया उसे महात्मा भीमसेन के सिवाय दूसरा कौन मनुष्य करसक्ता है २२ देवताओं से भी अजेय राजा मद्र को मृतक सुनकर बड़े पाण्डवों के पराक्रमको भी जानेगा २३ अब शूरवीर शकुनि और सब गान्धारदेशियों के मरने पर युद्धमें पाण्डव नकुल और सहदेवकोभी जानेगा २४ उनकी विजय कैसे नहीं होसकती जिनके शूरवीर अर्जुन, सात्यकी, भीमसेन, धृष्टद्युम्न २५ द्रौपदी के पांचो पुत्र, पाण्डव नकुल, सहदेव बड़े धनुर्धर शिखण्डी और राजा युधिष्ठिर हैं २६ एवं सब जगतके स्वामी, दुष्टसंहारी श्रीकृष्णजी जिनके नाथहैं तथा धर्म जिनका आश्रयस्थानहै २७ भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण, राजा मद्र और अन्य सैकड़ों हजारों राजाओं को युद्धमें जीतने के लिये पाण्डव युधिष्ठिर के सिवाय कौन समर्थ है ? क्योंकि सदैव धर्म और यशके भाण्डार, इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजी इनके स्वामी हैं" २८-२६ इस प्रकार वार्तालाप करते हुए बड़े आनन्दित, अन्तःकरणसे प्रफुल्लित वे लोग आपके भागे हुए शूरवीरों के पीछे चले ३० पराक्रमी अर्जुन रथोंकी सेना के सामने आये और महारथी सात्यकी, नकुल तथा सहदेव ये तीनों शकुनि के सम्मुख हुए ३१ दुर्योधन उन सबको भीमसेन के भयसे पीड़ित और भागते हुए देख आश्चर्य कर अपने सारथिसे बोला ३२ कि धनुष हाथमें लिये, सम्मुख नियत अर्जुन मुझे उल्लंघन करता है । सब सेनाओंके मध्यमें मेरे घोड़ों को पहुँचाओ ३३ कुन्ती का पुत्र अर्जुन सेनाके मध्यमें वर्तमान मुझे उल्लंघन करनेका ऐसे उत्साह नहीं करेगा जैसे कि महासमुद्र मर्यादा को नहीं उल्लंघन कर सकता है ३४ हे सूत ! पाण्डवोंसे पराजित सेनाको देखो; चारों ओरसे उठी हुई इस सेनाकी धूलि को देखो ३५ और बड़े भयकारी घोर सिंहनादों को सुनो । इस हेतु हे सूत ! सेनाके मध्य की रक्षा करते हुए धीरे धीरे चलो ३६ मेरे सेनामें नियत होने और पाण्डवों के रोकने पर शीघ्र ही मेरी सेना तीव्रतासे फिर लौट आवेगी ३७ सारथिने आपके पुत्र के शूर और श्रेष्ठ

पुरुषों के योग्य वचन सुनकर सुवर्णके सामान से ढके हुए घोड़ों को धीरेपनेसे चलाया ३८ हाथी, घोड़े और रथियोंसे रहित, देह की प्रीति त्यागे इक्कीस हज़ार पदाती युद्ध करने में नियत हुए ३९ नाना देशों और अपूर्व नगरों में रहनेवाले शूरवीर सुयशकी चाहसे नियत हुए ४० उन प्रसन्नचित्त आने वालोंका घोररूप और भयानक बड़ा युद्ध हुआ था ४१ हे राजन् ! भीमसेन और धृष्टद्युम्न ने चतुरंगिणी सेना समेत उन नाना देशनिवासियों को रोका ४२ फिर सिंहनाद और भुजदण्डों के शब्दों समेत अत्यन्त प्रसन्न वीर लोकों के जाने के अभिलाषी अन्य पदाती भीमसेन के सामने आये ४३ भीमसेन को पाकर धृतराष्ट्रके क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद पुत्र गर्जनेलगे ४४ उन सबने भीमसेन को घेरकर चारों ओर से घायल किया । युद्धमें पदातियों से घिराहुआ, घायल भीमसेन अपने स्थानसे ऐसे नहीं डिगा जैसे कि मैनाक पर्वत निश्चल होताहै । महाराज ! फिर पाण्डवोंके महारथी क्रोधित हुए ४५-४६ और मारनेमें प्रवृत्त होकर उन्होंने अन्य अन्य शूरवीरों को रोका । भीमसेन युद्ध में चारों ओर नियत पदातियों के कारण क्रोधयुक्त हुआ ४७ उसने शीघ्र ही रथसे उतर आपभी पदाती होकर सुवर्ण से मढ़ी हुई बड़ी गदा ली ४८ और दण्डधारी कालके समान आपके शूरवीरों समेत रथ घोड़ेसे रहित पदातियों को मारा ४९ उस युद्ध में इक्कीस हज़ार पदातियोंको मारकर वह रुधिर से लिपटा हुआ शोभित हुआ ५० और थोड़े ही समय में धृष्टद्युम्नको आगे किये दिखाई दिया । वे मृतक पदाती रुधिरसे लथपथ पृथ्वीपर ऐसे सोगये जैसे कि पुष्पित कर्णिकार के वृक्ष हवासे टूटकर गिरे हों । विविध शस्त्रों से संयुक्त, नाना प्रकारके कुण्डल पहिने हुए ५१-५२ नाना जाति और देशोंके शूरवीर मारेगये । पताका और ध्वजाओं से ढकीहुई पल्टनों के लेटे हुए सिपाही ५३ महाघोर रूप और भयानक दिखाई दिये । सब सेनाके लोग और युधिष्ठिर को आगे कर महारथी लोग आपके पुत्र महात्मा दुर्योधन के सम्मुख दौड़े । उन्होंने बड़े धनुर्धारी और मुख फिरे हुए आपके शूरवीरों को देखकर ५४-५५ आपके पुत्र को उल्लंघन नहीं किया वहां हमने आपके पुत्रकी अपूर्व वीरता देखी ५६ युद्धमें सब पाण्डव उस अकेले को उल्लंघन करने में समर्थ नहीं हुए । बहुत दूर न जानेवाले, भागने में प्रवृत्तचित्त ५७ अत्यन्त घायल अपने सैनिकों से दुर्योधन ने कहा कि मैं पृथ्वी और पर्वतोंमें भी ऐसा देश नहीं देखता ५८ जहांपर

जाने से तुम लोगोंको पाण्डव बचादें । जब उनसे कहीं नहीं बचसकते तो भागनेसे क्या प्रयोजन है ? उनकी सेना थोड़ी है और श्रीकृष्ण समेत अर्जुन अत्यन्त घायल हैं ५६ यदि हम सब यहां नियत होजायँ तो हमारी विजय अवश्य हो । अहित करनेवाले पाण्डव भागे हुए छिन्नभिन्न तुमलोगों को ६० पीछा कर मारेंगे । इससे युद्धमें ही हमारा मरना श्रेष्ठ है । जितने क्षत्रिय यहां इकट्ठे हैं वे सब सुनें ६१ जब काल सदैव शूर और भयभीतोंको भी मारता है, तब कौन अज्ञान पुरुष असल क्षत्रिय होकर युद्ध न करेगा ६२ क्रोधयुक्त भीमसेनके सम्मुख ही हमारा कल्याण है; क्षत्रियधर्म से लड़नेवालों का युद्ध में मरनाही सुखदायकहै ६३ मनुष्य को घरमें भी कभी न कभी अवश्य मरना है । क्षत्रियधर्म से लड़नेवाले की मृत्यु सनातन है ६४ यहां विजय पाकर सुख पाता है और मरकर परलोक में बड़ा फल पाता है । हे कौरव ! निश्चय ही स्वर्गका मार्ग धर्मयुद्धसे उत्तम और कोई नहीं है ६५ युद्धमें मरनेवाला थोड़े ही समय में प्राप्त होनेवाले लोकों को भोगता है । राजा लोग ये बातें सुन बड़ी प्रशंसा करके ६६ शस्त्र धारण कर फिर पाण्डवों के सम्मुख आये । अलंकृत सेना समेत, शस्त्रधारी, विजय के आकांक्षी क्रोधयुक्त पाण्डव शीघ्र ही उन आनेवालों के सामने आये । पराक्रमी अर्जुन ने रथकी सवारी से युद्धभूमि में आकर तीनों लोक में विख्यात गाण्डीव धनुषको टंकारा ६७-६८ बड़ा पराक्रमी सात्यकी, नकुल और सहदेव-ये तीनों वीर तीव्रता से शकुनि के सम्मुख गये जहां आपकी सेना थी ६९ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वण्येकोनविंशतितमोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ।

संजय ने कहा, कि सेनासमूह के लौटने पर, म्लेच्छसमूहों का राजा अत्यन्त क्रोधित शाल्व पाण्डवों की बड़ी सेना के सम्मुख गया १ वह मतवाले, पर्वताकार, अहंकारी, ऐरावत के समान शत्रुओं के समूहोंको मर्दनेवाले २ भद्र नाम बड़े कुलमें उत्पन्न, सदैव दुर्योधन से पूजित, शास्त्र के निश्चय जाननेवाले मनुष्यों से अलंकृत बड़े हाथी पर युद्ध में सवार रहता था ३ हे राजन् ! राजाओं में श्रेष्ठ वह हाथीपर सवार होकर ऐसा विदित होता था जैसे कि प्रातःकाल उदयाचल पर सूर्य होताहै । उस अत्यन्त उत्तम हाथी की सवारी से वह

इकट्ठे होनेवाले पाण्डवों के सम्मुख गया ४ उसने बड़े तेज, वेगवान् इन्द्र के वज्र सदृश महाघोर पृषत्कों से पाण्डवों को घायल किया । बड़े युद्ध में बाण छोड़नेवाले तथा शूरवीरोंको यमलोकमें भेजनेवाले ५ इस राजाका छिद्र अपने और दूसरे शूरवीरों ने भी ऐसे नहीं देखा जैसे कि पूर्व समय में ऐरावत हाथी पर सवार सेनाके मर्दन करनेवाले वज्रधारी इन्द्रके छिद्रोंको देवताओं और असुरों ने नहीं देखा था ६ उन पाण्डव, सोमक और सृञ्जयों में चारों ओर विविध प्रकार से घूमनेवाले उस अकेले हाथीको सम्मुख ऐसे देखा जैसे कि महेन्द्र के हाथी को देखा था ७ तब प्रतिपक्षियों की सेना चारों ओर से भागी हुई और मरणप्राय दिखाई पड़ी । युद्ध में परस्पर अत्यन्त मर्दित सेना भयसे ठहर नहीं सकी ८ पाण्डवों की वह बड़ी सेना उस राजा के हाथसे अकस्मात् पराजित हुई और गजेन्द्र के वेगका पार न पाकर अकस्मात् चारों ओरको दौड़ी ९ आपके सब उत्तम शूरवीरों ने युद्ध में उस वेगवती सेना को पराजित देखकर उस राजाकी प्रशंसा कर चन्द्रवर्ण के श्वेत शंख बजाये १० पाण्डव और सृञ्जयों के सेनापति धृष्टद्युम्नने कौरवोंकी उस शंखों की गर्जना को सहन नहीं किया ११ शीघ्रता करनेवाला महात्मा धृष्टद्युम्न विजयके निमित्त उस हाथी के सम्मुख ऐसे गया जैसे कि इन्द्रके सम्मुख जृम्भनाम असुर गजराज ऐरावत के आगे गया था १२ राजाओं में श्रेष्ठ शाल्व ने अकस्मात् आते हुए धृष्टद्युम्नको देखकर शीघ्रतासे अपने हाथीको उसके मारनेके निमित्त चलाया १३ धृष्टद्युम्नने अग्निके रूप, कारीगरके हाथसे सफ़ा किये हुए तेज धार के प्रकाशित और बड़े वेगवान् उत्तम तीन पृषत्कों से उस अकस्मात् आते हुए हाथी को घायल किया १४ और अन्य पांच सौ नाराच उस हाथी के कुम्भपर छोड़े । तब वह उत्तम हाथी उन बाणों से अत्यन्त घायल हो घूमकर तीव्रता से भागा १५ शाल्व ने अकस्मात् भागे हुए और विचलित गजराज को लौटाकर धृष्टद्युम्न का रथ जतलाकर शीघ्र चाबुक और अंकुशों के द्वारा भेजा १६ उस आतेहुए हाथी को देख भय से व्याकुलशरीर वीर धृष्टद्युम्न शीघ्र ही अपनी गदा लेकर रथसे तीव्रतापूर्वक पृथ्वीपर कूद पड़ा १७ उस बड़े गर्जते हुए हाथी ने सुवर्ण से अलंकृत रथको घोड़े और सारथी समेत एकाएक सूंड़ से उठाकर पृथ्वीपर चूर्ण करडाला १८ उस उत्तम हाथी से राजा द्रुपद के पुत्रको पीड़ित देखकर भीमसेन, सात्यकी और शिखण्डी अकस्मात् बड़ी तेज़ी से उसकी ओर दौड़े १९

और अकस्मात् आनेवाले उस हाथी के वेगको रोका। वह हाथी उन रथियों से युद्ध में घेरा और रुका हुआ कँपा २० तब राजा शाल्व चारोंओरसे पृषत्कों की ऐसी वर्षा करने लगा जैसे कि किरणों के जालको सूर्य फैलाता है। उन शीघ्रगामी बाणोंसे घायल, रथोंके समूह एक साथ ही जहां तहां भागे २१ हे राजन्! नरों में उत्तम और हाहाकार शब्द करनेवाले सब पाञ्चाल, मत्स्य और सृञ्जयदेशियों ने शाल्व के उस कर्म को देख, हाथीको चारों ओर से रोका २२ वह शत्रुओं का मारनेवाला शूरवीर द्रुपदका पुत्र शीघ्र ही निर्भ्रान्त पर्वत शृङ्ग के समान गदा लेकर तीव्रतासे हाथी की ओर झपटा २३ उसने गदा से पर्वताकार बादल के समान मद झिरानेवाले हाथीको बहुत घायल किया २४ वह हाथी कुम्भ टूटने से अकस्मात् गर्जकर, मुखसे रुधिर छोड़ता हुआ ऐसे गिर पड़ा जैसे कि भूकम्प होने से पर्वत गिरता है २५ तब गजराज के गिरने और आपके पुत्रकी सेना के हाहाकार करनेपर, शिनियों में बड़े वीर सात्यकी ने राजा शाल्व का शिर भल्लसे काट गिराया २६ युद्ध में यादव के हाथसे कटा शिर राजा, गजराज समेत, पृथ्वीपर ऐसे गिर पड़ा जैसे कि देवराज के चलाये वज्र से टूटे पर्वतका बड़ा शिखर गिरता है २७॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि विंशोऽध्यायः २०॥

इक्कीसवां अध्याय।

सञ्जय बोले, कि उस युद्धके शोभा देनेवाले शूर शाल्वके मरनेपर आपकी सेना तीव्रतासे ऐसी पृथक् पृथक् हुई जैसे कि बड़े वृक्ष वायुसे पृथक् पृथक् होजाते हैं १ बड़े बली, शूरवीर महारथी कृतवर्मा ने उस सेना को पृथक् होती देखकर युद्धमें ही रोका २ हे राजन्! वे वीर पर्वतके समान युद्धमें नियत बाणों से ढकेहुए यादवको युद्ध में देखकर लौट आये ३ तब मृत्युको पीछे कर लौटने वाले कौरवों का युद्ध पाण्डवोंके साथ प्रवृत्त हुआ ४ वह युद्ध प्रतिपक्षियों के साथ अपूर्व हुआ। उसने अकेलेही कठिनतासे रोकने योग्य पाण्डवी सेनाको रोका ५ परस्पर शुभचिन्तक लोगोंके कठिन कर्म करनेपर उन लोगों के सिंहनाद आकाश और स्वर्ग को भी स्पर्श करनेवाले हुए ६ हे भरतर्षभ! उस शब्दको सुनकर पाञ्चालदेशी भयभीत हुए फिर शिनी का पौत्र महाबाहु सात्यकी उसके सम्मुख हुआ ७ उसने बड़े पराक्रमी राजा क्षेमकीर्ति को पैने

सात बाणों से यमलोक में पहुँचाया ८ तब बुद्धिमान् कृतवर्मा तीव्रता से, तेज बाण फेककर आते हुए महाबाहु सात्यकी के सम्मुख दौड़ा ९ सिंहों के समान गर्जनेवाले, अत्यन्त उत्तम शस्त्रों के धारण करनेवाले, रथियों में श्रेष्ठ, दोनों धनुर्धर सम्मुख दौड़े १० उनके घोर संग्राम में पाण्डव आदिक उत्तमोत्तम राजा लोग पाञ्चालों समेत अन्यान्य शूरवीर दर्शक थे ११ अत्यन्त प्रसन्न, हाथीके समान उस वृष्णी और अन्धककुलके महारथियोंने नाराच और वत्सदन्त बाणों से परस्पर घायल किया १२ नाना प्रकारके मार्गोंमें घूमनेवाले कृतवर्मा और सात्यकी परस्परकी बाणवृष्टि से बारम्बार गुप्त होगये १३ हमने उनके धनुषोंकी तीव्रता और बलसे ऊंचे फेके गये बाणोंको आकाश में शीघ्रगामी पक्षियों के समान देखा १४ हार्दिक्यके पुत्र कृतवर्माने अकेले सत्यकर्मीको पाकर चार तेज बाणोंसे उसके चारों घोड़ोंको घायल किया १५ तब उस लम्बी भुजावाले, चाबुकसे पीड़ित हाथी के समान अत्यन्त क्रोधयुक्त वीर ने आठ उत्तम बाणोंसे कृतवर्मा को घायल किया १६ कृतवर्मा ने अच्छी तरह खींचकर तेज धारके तीन बाणोंसे सात्यकी को घायल कर एक बाण से धनुष काटा। शिनियों में श्रेष्ठ, सात्यकी ने टूटा धनुष डालकर बड़े वेगसे बाणसमेत दूसरा धनुष हाथमें लिया १७-१८ धनुर्धारियों में श्रेष्ठ, पराक्रमी, बुद्धिमान् कृतवर्मा के हाथसे धनुषका तोड़ा जाना न सहकर क्रोधयुक्त अतिरथी सात्यकी दूसरा उत्तम धनुष चढ़ा कर शीघ्र ही कृतवर्मा के सम्मुख गया १९-२० सात्यकी ने अत्यन्त तेज धारके दश बाणों से कृतवर्मा के ध्वजासमेत सारथि और घोड़ों को मारा २१ धनुर्धारी क्रोधयुक्त महारथी सात्यकी को मारनेके अभिलाषी कृतवर्मा ने सुवर्णके समान रथको मृतक घोड़े, सारथीवाला देख शूल उठाकर भुजाके वेगसे फेका २२-२३ युद्धभूमि में माधव को मोहित करते हुए यादव कृतवर्मा के फेके शूलको सात्यकी ने पैने बाणोंसे काट, चूर्ण कर गिराया २४ और दूसरे भल्लसे उसको कठिन घायल किया। शुभ युद्धमें बड़े अस्त्रज्ञ, सात्यकी के हाथ से मृतक घोड़े और सारथीवाला कृतवर्मा पृथ्वी पर उतर आया। उस द्वैरथ युद्धमें सात्यकी के हाथ से वीर कृतवर्मा के विरथ होने पर २५-२६ सब सेनाओं को बड़ा भय हुआ और आपका पुत्र भी महाव्याकुल हुआ उस शत्रुओं के विजयी को मृतक सारथि और घोड़ेवाला देखकर २७-२८ सात्यकी को मारनेके अभिलाषी कृपाचार्य सम्मुख दौड़े और सब धनुर्धारियों के देखते

हुए उस महाबाहु को रथ में बिठाकर २६ शीघ्र ही युद्धभूमि से दूर ले गये। हे राजन्! सात्यकी के नियत होने और कृतवर्मा के विरथ होने पर ३० दुर्योधनकी सेनाने फिर मुख फेरा। सेना की धूलि से ढके हुए प्रतिपक्षियों ने उसको नहीं जाना ३१ हे राजन्! उस समय राजा दुर्योधनको छोड़ और आपके सब शूरवीर भागे। दुर्योधनने अपनी सेना को भागती हुई देखकर ३२ तीव्रता से शीघ्र ही सम्मुख आकर अकेले ही सबको रोका। उस अत्यन्त क्रोधयुक्तने सब पाण्डव, धृष्टद्युम्न ३३ द्रौपदी के पुत्र, पाञ्चालोंकी सेनाओंके समूह, केकय, सोमक और सृञ्जयों को तीक्ष्ण बाणों से रोका ३४ आपका बलवान् पुत्र सावधान और अजेय युद्ध में निर्भ्रान्त होकर नियत हुआ ३५ राजा दुर्योधन सब ओरसे तपाता हुआ युद्धमें ऐसे नियत हुआ जैसे कि यज्ञमें मन्त्रसे पवित्र बड़ा अग्नि होता है ३६ प्रतिपक्षीलोग युद्ध में उसके सम्मुख ऐसे नहीं ठहरे जैसे कि मृत्युका सामना मर्त्यलोक के निवासी नहीं करते। इतने में कृतवर्मा दूसरे रथपर सवार होकर युद्धभूमि में आगया ३७॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वण्येकविंशतितमोऽध्यायः २१॥

बाईसवां अध्याय।

सञ्जय ने कहा, कि महाराज! रथियों में श्रेष्ठ आपका रथसवार पुत्र युद्ध में ऐसे उत्साहित दिखा जैसे कि प्रतापी रुद्रजी नियत होकर शोभित होते हैं १ उसके हज़ारों बाणोंसे पृथ्वी ढक गई। उसने शत्रुओंको बाणोंसे ऐसे सींचा जैसे कि धाराओं से बादल पहाड़ों को सींचते हैं २ पाण्डवोंके सेनासागर में ऐसा कोई मनुष्य, घोड़ा, हाथी या रथ नहीं था जो उसके बाणोंसे विदीर्ण न हुआ हो ३ हे भरतवंशिन्, राजा धृतराष्ट्र! हमने जिस शूरवीर को युद्ध में देखा उसेही आपके बेटे के बाणों से छिदा हुआ पाया ४ जिस प्रकार फ़ौज की उठी हुई धूलि सेना को ढके हुए दिखाई पड़ी, उसी प्रकार महात्मा दुर्योधन के बाण भी उसे ढके हुए थे ५ हस्तलाघवी, धनुर्धर दुर्योधन के हाथसे बाणरूप की हुई पृथ्वी को हमने देखा ६ मेरा मत है, कि आपके और प्रतिपक्षियों के हज़ारों शूरवीरों में वह अकेला दुर्योधन ही पुरुषसिंह हुआ ७ वहां हमने आपके पुत्रका यह अपूर्व पराक्रम देखा। सब मिलकर भी पाण्डव लोग उसके सम्मुख नहीं होसके ८ हे भरतर्षभ! उसने युद्धभूमिमें युधिष्ठिर को सौ बाणोंसे, भीमसेन

को सत्तर बाणोंसे, सहदेव को सात बाणोंसे ६ नकुल को चौंसठ बाणोंसे, धृष्टद्युम्न को पांच बाणोंसे और द्रौपदी के पुत्रों तथा सात्यकी को तीन बाणोंसे घायल किया १० हे श्रेष्ठ ! जब उसने भल्लसे सहदेव के धनुष को काटा, तब माद्रीका प्रतापी पुत्र उस टूटे धनुष को छोड़ ११ दूसरा धनुष लेकर राजा दुर्योधन के सम्मुख दौड़ा और दश बाणों से उसे घायल किया १२ वीर नकुल बड़े घोर नौ बाणों से राजा को घायल कर बड़ी ध्वनिसे गर्जा १३ सात्यकीने भी टेढ़े पर्व के एक बाण से, द्रौपदी के पुत्रोंने तिहत्तर बाणोंसे, धर्मराजने पांच बाणों से १४ और भीमसेन ने सत्तर बाणोंसे राजा को पीड़ित किया । चारों ओर महात्माओं के बाणों की वर्षासे ढका हुआ दुर्योधन १५ सब सेना के देखते हुए कम्पित नहीं हुआ । सब मनुष्यों ने महात्मा की हस्तलघुता, सौष्ठव और बलको भी १६ सब जीवधारियों से अधिक देखा । हे राजेन्द्र ! थोड़े अन्तर को न देखनेवाले, कवचधारी आपके शूरवीर पुत्र राजा के चारों ओर आगये । उन चढ़ाई करनेवालों के ऐसे घोर शब्द हुए १७-१८ जैसे कि वर्षाऋतु में, वेग में आनेवाले समुद्र के शब्द होते हैं । फिर वे बड़े धनुर्धारी युद्ध में अजेय राजा को पाकर १९ शस्त्रधारी पाण्डवों के सम्मुख गये । अश्वत्थामा ने क्रोधयुक्त भीमसेन को युद्धमें रोका २० महाराज ! सब दिशाओं से छोड़े हुए बाणों के कारण वीरों ने दिशा विदिशाओं को नहीं जाना २१ उन दोनों निर्दयकर्मी, कठिनता से सहने योग्य, अस्त्रों के काटनेवालोंने भयङ्कर युद्ध किया २२ वे प्रत्यञ्चा के आघात से कठिन चर्म रखनेवाले और सब दिशाओं को भयसे पूर्ण करनेवाले थे । इसके अनन्तर वीर शकुनी ने युधिष्ठिरको घायल किया २३ सब सेनाओंको कँपाते हुए उस सौबल के पुत्र ने, उसके चारों घोड़ों को मारकर कठोर शब्द किया २४ इसी अन्तरमें प्रतापी सहदेव, युद्धमें अजेय वीर राजाको रथके द्वारा दूर ले गया २५ इसके पीछे धर्मराज युधिष्ठिरने दूसरे रथपर सवार होकर नौ बाणों से शकुनीको घायलकर फिर पांच बाण मारे २६ और सब धनुर्धारियों में अत्यन्त श्रेष्ठ बड़े शब्दसे गर्जा । हे श्रेष्ठ ! वह युद्ध अपूर्व भयकारी २७ देखनेवालों को प्रसन्नता उपजानेवाला और सिद्ध, चारणों से सेवित हुआ । बड़ा साहसी उलूक चारोंओरसे बाणोंकी वृष्टियों समेत उस बड़े धनुर्धारी युद्धदुर्मद नकुलके सम्मुख गया । उसीप्रकार शूरवीर नकुलने युद्धमें शकुनीके पुत्रको २८-२९ बाणोंकी वर्षा के द्वारा

चारोंओर से रोका। उस युद्धमें वे दोनोंवीर, कुलीन महारथी ३० परस्पर अपराध करनेवाले लड़े शत्रुओंको तपानेवाला सात्यकी कृतवर्मासे ३१ लड़ता हुआ ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि युद्ध में बलिसे लड़ता हुआ इन्द्र शोभित हुआ था। इसके पीछे दुर्योधनने युद्धमें धृष्टद्युम्नका धनुष काटकर ३२ इस टूटेधनुषवाले को पैने बाणों से घायल किया; तब धृष्टद्युम्न भी युद्धमें उत्तम शस्त्र लेकर ३३ सब धनुषधारियों के देखते हुए राजासे युद्ध करने लगा। हे भरतर्षभ! फिर युद्धभूमिमें ऐसा भयङ्कर युद्ध हुआ ३४ जैसे मद बहानेवाले दो मतवाले हाथियोंका युद्ध होता है। युद्धमें क्रोधयुक्त वीर कृपाचार्य ने बलवान् द्रौपदीके पुत्रोंको ३५ गुप्त ग्रन्थिवाले बाणोंसे घायल किया। इनका उनके साथ ऐसा युद्ध हुआ जैसे कि शरीरधारी का युद्ध इन्द्रियोंके साथ होता है ३६ घोररूप, बन्धुओंका अयोग्य और अमर्याद युद्ध हुआ परन्तु उनको ऐसे पीड़ित नहीं किया जैसे कि इन्द्रियां बालकको पीड़ित नहीं करतीं ३७ मनुष्य मनुष्योंके साथ, हाथी हाथियोंके साथ, घोड़े घोड़ोंके साथ और रथी रथियोंके साथ भिड़ गये। इस रीतिसे वह युद्ध महाघोररूप और संकुल हुआ ३८-४० महाराज! अपूर्व, घोर और रुद्र—इसप्रकारके कई घोर युद्ध हुए ४१ उन शत्रुओं के विजय करने वालों ने युद्धमें परस्पर एक एक को पाकर घायल किया और मारा ४२ हे राजन्! तब उनके शस्त्रोंसे प्रकट होनेवाली बड़ी धूलि दिखाई पड़ी और बहुत से घुड़सवारोंकी हवासे ऊंची उठी ४३ रथकी नेमियों से और हाथियोंकी श्वासों से उठनेवाली सायंकालकीसी अरुणता से युक्त सूर्य के मार्ग में गई ४४ उस धूलिसे ढकाहुआ सूर्य प्रकाशसे रहित हुआ। पृथ्वी और वे महारथी शूर ढकगये ४५ हे भरतर्षभ! फिर एक मुहूर्तमें ही चारों ओर सब स्वच्छ होगया क्योंकि वीरोंके रुधिरसे आर्द्र पृथ्वीपर ४६ वह घोरदर्शन कठिन धूलि शान्त होगई। महाराज! फिर द्वन्द्वयुद्धों को देखा ४७ मध्याह्न में बल पराक्रमके समान बड़ा भयकारी युद्ध हुआ। हे राजेन्द्र! तब वहां कवचोंके स्वच्छ प्रकाश दिखाई पड़े ४८ और युद्धमें गिरनेवाले बाणोंके ऐसे कठोर शब्द हुए जैसे कि पर्वत पर जलते हुए बांसोंके बड़े बड़े वनोंके शब्द होते हैं ४९॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि द्वाविंशोऽध्यायः २२॥

तेईसवां अध्याय ।

संजय बोले, कि इस प्रकार वहां आपके बेटोंका घोर, भयङ्कर युद्ध पाण्डवों के साथ होनेपर सेना छिन्न भिन्न हुई १ आपके पुत्रने बड़े उपायों से उन महारथियों को रोककर पाण्डवों की सेनासे युद्ध किया २ आपके पुत्रकी विजय चाहनेवाले शूरवीर अकस्मात् लौटे और उनके लौटनेपर ३ आपके शूरवीरों का दूसरों के शूरवीरों से देवासुरसंग्रामके समान बड़ा भयानक युद्ध हुआ । दूसरों में और आपकी सेनामें किसी ने भी मुख नहीं मोड़ा ४ वे ध्यान और नामोंके द्वारा परस्पर लड़ते थे । तब परस्पर युद्ध करनेवाले उन वीरोंका बड़ा विनाश हुआ ५ बड़े क्रोधभरे युद्धमें, राजाओं समेत धृतराष्ट्र के पुत्रों को जीतने के अभिलाषी राजा युधिष्ठिर ने ६ सुनहले पुंख के पैने तीन बाणों से कृपाचार्यको घायलकर चार नाराचोंसे कृतवर्मा के घोड़े मारे ७ तब अश्वत्थामाजी उस यशस्वी कृतवर्मा को युद्धभूमि से दूर ले गये । इसके पीछे कृपाचार्य ने आठ बाणोंसे युधिष्ठिरको घायल किया ८ राजा दुर्योधन ने सात सौ रथियों को युद्ध में उस स्थानपर भेजा जहां कि धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर था ९ वायुके समान शीघ्रगामी वे रथ, रथियों समेत युद्धमें युधिष्ठिरके रथकी ओर गये १० महाराज! उन रथियों ने चारों ओर से युधिष्ठिरको घेरकर शायकोंसे ऐसा गुप्त कर दिया जैसे कि सूर्यको बादल छिपालेते हैं ११ अत्यन्त क्रोधयुक्त शिखण्डी आदिक रथी कौरवों से उस प्रकार घिरे हुए युधिष्ठिरको देख १२ उत्तम घोड़ों से युक्त, क्षुद्रघंटिकाओं से अलंकृत रथों की सवारीसे वहां आपहुँचे और कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर की चारोंओर से रक्षा करनेलगे १३ इसके पीछे पाण्डव और कौरवोंका वह युद्ध जारी हुआ जो रुद्ररूप, रुधिररूपी जलसे युक्त यमपुरी का बढ़ानेवाला था । पाञ्चालोंसमेत पाण्डवों ने सात सौ रथियोंको मारकर कौरवों के युद्धकर्त्ताओंको रोका १४–१५ वहां पाण्डवों और आपके पुत्रसे ऐसा बड़ा युद्ध हुआ जैसा न देखा था न सुना था १६ चारों ओर अमर्याद युद्धों के जारी होने, आपके और दूसरों के शूरवीरों के मरने १७ उत्तम शंखों के बजने, ऊंचे सिंहनाद होने, धनुषधारियोंकी गर्जनाके साथ शूरवीरोंके गर्जने १८ बड़े युद्धोंमें मर्मस्थलों के घायल होने, विजयाभिलाषी शूरवीरों के दौड़ने १९ सब ओर से पृथ्वीपर शोक उत्पन्न करनेवाला नाश होने, बहुतसी उत्तम कुलाङ्गनाओं

की मांग मिटाने २० बड़े भयानक और अमर्याद युद्धके होनेपर नाशके द्योतक महाभयानक उत्पात प्रकट हुए २१ पर्वत और वनोंसमेत शब्द करने वाली पृथ्वी कम्पायमान हुई और हे राजन् ! दण्ड ज्वालाओं समेत चारों ओरको फैली हुई उल्का २२ सूर्यमण्डल को घायल कर स्वर्गसे पृथ्वीपर गिरी तथा कङ्कड़, पत्थर बरसानेवाली वायु प्रकट हुई २३ हाथियों ने आंसू डाले और कठिन कम्पन उत्पन्न हुआ । इन बड़े भयानक और घोर उत्पातों का अनादरकर २४ पीड़ासे रहित, स्वर्ग के अभिलाषी क्षत्रिय लोग युद्ध करनेकी सलाहकर सुन्दर धर्मके मूल कुरुक्षेत्रमें नियत हुए २५ तब गान्धारदेश के राजाका पुत्र शकुनी बोला कि तुम तबतक आगे से युद्ध करो जबतक मैं पीछेकी ओरसे पाण्डवों को मारूं २६ इसके पीछे चढ़ाई करनेवाले हम लोगों में वेगवान्, प्रसन्नचित्त, मद्रदेशी और अन्यान्य शूरवीरोंने किलकिला शब्द किया २७ लक्ष्य प्राप्त करनेवाले, कठिनता से सम्मुखताके योग्य और धनुषोंको चलानेवाले उन पाण्डवोंने हमको फिर पाकर बाणों की वर्षासे आच्छादित किया । हे राजन् ! फिर राजा मद्रकी सेना शत्रुओं के हाथसे मारी गई । उसे देखकर दुर्योधन की सेना फिर मुख फेर चली २८–२९ तब गान्धारके राजा पराक्रमी शकुनी ने कहा, कि हे धर्म के न जाननेवाले, वीर लोगो ! लौटो; युद्ध करो; तुम्हारा भागने से क्या प्रयोजन है ३० हे भरतर्षभ ! राजा गान्धार के बड़े बड़े प्रासों से लड़नेवाले शूरवीरों की घोड़ोंवाली दश हजार सेना थी ३१ मनुष्योंके नाश होनेपर उस सेनासमेत पराक्रम कर पैने बाणोंसे पाण्डवी सेना को पीछे से मारा ३२ महाराज ! वायुसे हटाये हुए फटे बादल की भाँति पाण्डवों की वह बड़ी सेना छिन्न भिन्न होगई ३३ सावधान युधिष्ठिरने अपनी सेनाको सम्मुख से छिन्न भिन्न देखकर बड़े पराक्रमी सहदेव से कहा, कि ३४ यह सौबल का पुत्र हमारी जघन सेनाको पीड़ित कर रहा है और मार रहा है । हे पाण्डव ! तुम इस दुर्बुद्धि को देखो ३५ तुम द्रौपदी के पुत्रों समेत जाकर इस सौबलके पुत्र शकुनीको मारो । हे निष्पाप ! मैं धृष्टद्युम्नको साथ लेकर रथकी सेनाका नाश करूंगा । सब हाथी, घोड़े और तीन हजार पदाती तेरे साथ जायँ । उन सब सेनाओं से युक्त होकर तुम शकुनीको मारो । इसके पीछे धनुषधारियोंसे युक्त सात सौ हाथी, पांच हजार घोड़े, तीन हजार पदाती और द्रौपदी के पुत्रों के साथ पराक्रमी सहदेव उस युद्धदुर्मद शकुनी के सम्मुख गये ३६–३९

हे राजन्! इसके अनन्तर शकुनी को उल्लंघनकर विजयाभिलाषी, प्रतापी सहदेव ने पीछेकी ओरसे मारा ४० फिर वेगवान् पाण्डवों के क्रोधयुक्त घुड़सवार, उन रथियोंको उल्लंघनकर शकुनीकी सेना में पहुँचे ४१ वहां उन घुड़सवारों ने शकुनी की बड़ी सेनाको बाणों से ढक दिया ४२ हे राजन्! आपकी कुमन्त्रता से व गदा और प्रास उठानेवाले महात्माओं का युद्ध जारी हुआ था ४३ उसमें धनुषोंकी प्रत्यञ्चाओंके शब्द बन्द होगये, रथी कुतूहलदर्शी हुए और अपने तथा दूसरोंकी मुख्यता भी दृष्टि न पड़ी ४४ हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ! उन कौरव और पाण्डवोंकी भुजाओं से छोड़ी हुई शक्तियों का गिरना नक्षत्रों के आकाश से गिरनेके समान हुआ ४५ हे राजन्! जहां तहां गिरे हुए निर्मल दुधारे खड्गों से संयुक्त पृथ्वी बहुत शोभायमान हुई ४६ हे भरतर्षभ, राजा धृतराष्ट्र! चारों ओर से गिरते हुए प्रासों के रूप ऐसे हुए जैसे कि आकाशमें शलभ-समूहोंके रूप होते हैं ४७ रुधिरसे लिप्त शरीर और बाणों से घायल हज़ारों घोड़े चारों ओर से गिरे ४८ परस्पर सम्मुख होकर चूर्ण होगये मुखोंसे रुधिर वमन करते हुए घायल दृष्टि पड़े ४९ शत्रुओं के विजय करने और सेनाकी धूलि से संयुक्त होने पर घोर अन्धकार हुआ; तब अन्धकार से ढकजाने के कारण उन घोड़ों और मनुष्यों को उस स्थानसे हटा हुआ देखा। कितने ही रुधिर वमन करते हुए पृथ्वीपर गिरपड़े ५०—५१ घोड़ोंकी पीठ से परस्पर खींचनेवाले, बाणों से चिपटे हुए मनुष्य अंगोंकी चेष्टा करनेमें समर्थ नहीं हुए ५२ मल्लोंके समान मिलकर परस्पर मार हुई और बहुतसे निर्जीव मनुष्यों को घोड़े दूर दूरतक खींचते लेगये ५३ बहुतसे विजयाभिलाषी, अपनेको शूर माननेवाले मनुष्य जहां तहां पृथ्वीपर पड़े हुए दिखाई पड़े ५४ रुधिरसे लिप्त, टूटे भुज, केशों से रहित हज़ारों मनुष्योंसे आच्छादित पृथ्वी दिखाई पड़ी ५५ सवारों समेत मृतक घोड़ों से पृथ्वी के लुप जाने पर घोड़ेकी सवारीसे दूर जाना असम्भव होगया ५६ रुधिरसे लिपटे शरीर, आयुधोंसे प्रहार करनेवाले और परस्पर मारने के अभिलाषी, घोररूप ५७ जिनके बहुतसे मनुष्य मारे गये ऐसे योद्धाओं को साथ ले युद्ध में सेना के समीप ही एक मुहूर्त भर लड़कर शकुनी बचे हुए छःहजार घोड़ों समेत हट गया ५८॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि त्रिविंशोऽध्यायः २३॥

चौबीसवां अध्याय।

संजय बोले, कि उसी प्रकार रुधिर से लिप्त, थकी हुई, सवारीवाली पाण्डवीय सेना भी शेष बचे हुए छःहजार घोड़ों समेत हट गई १ बहुत समीपी युद्धमें जीवनके त्यागनेवाले, रुधिरसे भरे, पाण्डवोंके घुड़सवार बोले २ कि यहां जब हाथियों से लड़ना ही असम्भव है तब बड़े हाथियों से लड़ना कैसे सम्भव होगा ? रथ, रथोंके और हाथी, हाथियोंके ही सम्मुख जायँ ३ सम्मुख होनेवाला शकुनी अपनी सेना में है। राजा शकुनी फिर युद्धको प्राप्त नहीं करेगा ४ इसके पीछे द्रौपदी के पुत्र और मतवाले बड़े हाथी वहां गये; जहां पर पाञ्चालदेशी महारथी धृष्टद्युम्न था ५ धूलिके बादल उठने पर अकेला कौरव्य सहदेव भी वहां गया; जहां राजा युधिष्ठिर थे ६ उनकी चढ़ाई होने पर क्रोधयुक्त शकुनी ने अपने पक्ष में नियत धृष्टद्युम्नकी सेना को मारा ७ फिर प्राणोंको त्यागकर परस्पर मारने के अभिलाषी, आपके और प्रतिपक्षियों के शूरवीरों का वह कठिन युद्ध हुआ। हे राजन्! उस वीरोंकी सम्मुखता में उन्होंने परस्पर देखा; सैकड़ों, हजारों शूरवीर चारों ओर से दौड़े ८-९ संसार के नाश में, खड्गों से कटनेवाले शिरों के ऐसे बड़े शब्द हुए जैसे कि गिरते हुए तालफलों के शब्द होते हैं १० हे राजन्! कवचोंसे रहित, टूटे अंग, पृथ्वी पर गिरते हुए शरीर; शस्त्रधारी भुजाएं और जंघाओं के चटचटा नाम शब्द बड़े कठोर और रोमांच खड़े करने वाले हुए। पैने शस्त्रों से भाई, पिता और पुत्रों को मारते हुए ११-१२ शूरवीर चारों ओरसे ऐसे दौड़े जैसे कि मांस के निमित्त क्रोधयुक्त पक्षी परस्पर एक दूसरे को पाकर दौड़ते हैं १३ 'प्रथम मैं, प्रथम मैं' इस प्रकार कहकर हजारों ने प्रहार किये और कठिन प्रहारों से निर्जीव, आसनों से च्युत घुड़सवारों के कारण हजारों घोड़े चारों ओर दौड़े। हे राजन्! फड़कते हुए, रगड़ सहित तीव्रगामी घोड़ों १४-१५ अलंकृत गर्जनेवाले मनुष्यों और शक्ति, प्रास तथा दुधारे खड्गों के कठोर शब्द हुए १६ हे राजन्! आपके कुविचार से शत्रुके मर्मस्थल काटनेवाले पुरुषों के बड़े शब्द हुए। परिश्रमसे दबाये हुए, क्रोधयुक्त, प्यासे, थकी सवारीवाले १७ और तेज बाणों से अत्यन्त घायल आपके शूरवीर सम्मुख हुए। वहां रुधिर की गन्ध से मतवाले और अचेत मनुष्यों ने १८ समीप आनेवाले शत्रुओं समेत अपने ही शूरवीरों को मारा और

विजयाभिलाषी मरे हुए बहुतसे क्षत्रिय बाणों की वर्षा से घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े १९-२० आपके पुत्र के देखते हुए सेना का घोर नाश हुआ। हे राजन् ! मनुष्य और घोड़ों के शरीरों से पृथ्वी ढक गई २१ रुधिररूप जल वाली महा अपूर्व, भयभीतोंका भय बढ़ानेवाली होगई। खड्ग, पट्टिश और शूलोंसे बारम्बार घायल २२ पाण्डव और आपके शूरवीर नहीं लौटे। जबतक शरीर में प्राण शेष रहे, तबतक सामर्थ्य के अनुसार युद्ध करते रहे २३ व्रणों से रुधिर टपकाते हुए शूरवीर चारों ओर को दौड़े और धड़ (रुंड) शिरको बालों से पकड़कर २४ रुधिरसे भरा तीक्ष्ण खड्ग उठाकर दिखाई दिया। हे राजन् ! इसके पीछे बहुत रुंडोंके उठनेपर २५ उस प्रकारके रुधिरकी गन्धिसे शूरवीर मूर्च्छित होने लगे। उस शब्दके न्यून होने पर शकुनी थोड़े से घोड़ों समेत पाञ्चालदेशियों की बड़ी सेनाके सम्मुख हुआ; तब विजयाभिलाषी पाण्डव शीघ्र ही सम्मुख दौड़े २६-२७ युद्धके अन्तपर पहुँचने के इच्छुक शस्त्र उठानेवाले पैदल, हाथी और घुड़सवारों ने उसको चारों ओर सब प्रकारसे घेरकर २८ नाना प्रकारके शस्त्रों से घायल किया। आपके रथ, घोड़े, पत्ति और हाथी सब ओरसे चढ़ाई करनेवाले पाण्डवों को देखकर सम्मुख पहुँचे और शस्त्रोंसे कितने ही शूरवीर पदातियोंने युद्धमें चरणघात और मुष्टिकाओं से परस्पर २९-३० घायल किया और घायल करके गिर पड़े। रथी रथपरसे और हाथीके सवार हाथी परसे ऐसे गिरे ३१ जैसे कि पुण्य फलके क्षीण होने पर विमानसवार सिद्ध, स्वर्ग से गिरते हैं। इस प्रकार महादुःखित शूरवीरोंने परस्पर प्रहार किये और इसी प्रकार अन्य लोगोंने पिता, भाई समान वयवाले और पुत्रों को भी मारा। हे भरतर्षभ ! इस प्रकार प्रास, खड्ग और बाणोंसे युक्त भयानक युद्ध होनेपर बड़ी ही अमर्यादा हुई ३२-३३ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ।

संजय बोले, कि उस शब्दके मृदु होने और पाण्डवोंके हाथसे सेनाके मारे जाने पर शकुनी बचे हुए सात सौ घोड़ों समेत हट गया १ युद्ध में शीघ्रता करता हुआ वह शकुनी सेनाके पास पहुँचकर बारम्बार बोला, कि हे अत्यन्त प्रसन्न चित्त और शत्रुओं के विजय करनेवालो ! तुम युद्ध करो २ वहां सब क्षत्रियोंसे

पूछा कि दुर्योधन कहां है। हे भरतर्षभ! तब वे क्षत्रियलोग शकुनी की बात सुन कर बोले ३ कि वह महारथी कौरव, युद्धमें वर्तमान है, जहां कि पूर्णचन्द्रमा के समान उसका छत्र दिखाई देता है ४ जहां पर कि ये कवचधारी शस्त्र लिये रथी नियत हैं और जहां पर यह बादलके समान उत्तम घोर शब्द होरहा है ५ हे राजन्! तुम वहां शीघ्र जाकर उस कौरवराजको देखोगे। उन शूरोंके वचन सुनकर शकुनी वहां गया ६ वहांपर आपका पुत्र युद्धमें मुख न मोड़नेवाले वीरोंसे चारों ओरसे रक्षित था ७ वहां रथकी सेना समेत दुर्योधनको देख आपके सब रथियोंको प्रसन्न करता हुआ ८ प्रसन्नमूर्ति, अपने को कृतकृत्य मानता हुआ शकुनी राजा दुर्योधन से बोला कि ९ हे राजन्! अब तुम रथकी सेनाको मारो। मैंने सब घोड़े विजय किये। युद्धमें जीवन त्याग कर युधिष्ठिर विजय करने के योग्य नहीं है १० पाण्डवों से रक्षित उस रथकी सेनाके मरनेपर हम लोग इन हाथी, पदाती आदि सब को मारेंगे ११ विजयाभिलाषी, प्रसन्नचित्त आपके पुत्र उसका वचन सुनकर तीव्रता से पाण्डवों की सेनाके सम्मुख दौड़े १२ सब तूणीर बांधे, धनुषों को चलाते हुए धनुषधारियों ने सिंहनाद किये १३ हे राजन्! इसके पीछे प्रत्यञ्चा और तलों समेत अच्छे प्रकार से छोड़े हुए बाणों के फिर महाभयकारी शब्द हुए १४ कुन्ती के पुत्र अर्जुन, उन सम्मुख वर्तमान तीव्रतासे धनुष उठानेवालों को देखकर, श्रीकृष्णजी से बोले १५ कि आप भ्रान्तिसे रहित होकर घोड़ों को चलाइये और सेनारूपी समुद्र में प्रवेश करिये। मैं पैने बाणों से शत्रुओं का नाश करूंगा १६ हे जनार्दनजी! परस्पर सम्मुख होकर महाभारी युद्ध को अब अठारह दिन होगये १७ इन महात्माओं की असंख्य सेना अब युद्ध में नष्ट होगई। दैव को देखिये कि कैसा है १८ हे माधवजी! समुद्रके समान दुर्योधन की सेना हमको पाकर गोपद के समान देखने में आई १९ भीष्म के मरने पर यदि यह सन्धि करलेता; तो यहां के सब लोगों की कुशल होजाती। परन्तु अज्ञान, निर्बुद्धि दुर्योधन ने फिर भी नहीं माना २० हे माधवजी! भीष्मजी ने जो बड़ा हितकारी शुभदायक वचन कहा था; इस निर्बुद्धि दुर्योधन ने उसे भी नहीं किया। कठिन युद्ध में भीष्मजी के पृथ्वी पर गिरनेपर मैं नहीं जानता कि किस कारण युद्ध जारी हुआ २१-२२ मैं सब प्रकार धृतराष्ट्रके पुत्रोंको अज्ञान और निर्बुद्धि मानता हूं कि जिन्होंने भीष्मजी के गिरने पर भी युद्ध किया २३ ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ, द्रोणाचार्य, कर्ण

और विकर्णके मरने पर भी विनाश शान्त न हुआ २४ थोड़ी सेना बचने और नरोत्तम कर्णके पुत्र समेत गिरायेजाने पर भी नाशने शान्ति न पाई २५ वीर श्रुतायुश, पौरव, जलसिन्धु और राजा श्रुतायुधके मरने पर भी नाश न रुका २६ हे जनार्दनजी ! भूरिश्रवा, शल्य, शाल्व और अवन्तिदेशके दोनों वीर राजा लोगों के मरने पर भी नाश बन्द नहीं हुआ २७ जयद्रथ, अलायुध राक्षस, बाह्लीक, सोमदत्त २८ शूर भगदत्त, काम्बोज, सुदक्षिण और दुश्शासन के मरने पर भी यह क्षत्रियोंका नाश बन्द न हुआ २९ हे कृष्णजी ! पृथक् पृथक् मण्डलवाले शूरवीर पराक्रमी राजाओं को युद्धमें मरा हुआ देखकर भी नाश बन्द न हुआ ३० भीमसेन के हाथसे अक्षौहिणी के प्रधान लोगों को मृतक देखकर मोह और लोभसे नाश बन्द न हुआ ३१ राजाओं के घराने, मुख्य कर कौरवों के घरानेमें उत्पन्न होकर, दुर्योधनके सिवाय कौन पुरुष निरर्थक बड़ी शत्रुता करेगा ३२ गुण, बल और शूरता से भी अधिक जानकर; हानि लाभको जानता हुआ कौनसा बुद्धिमान् मनुष्य युद्ध करेगा ३३ जो तुम्हारे भी हितकारी वचन कहने से उस दुर्योधनका चित्त पाण्डवों के साथ सन्धि करने में प्रवृत्त नहीं हुआ; वह फिर दूसरेके वचन कैसे सुन सकता है ३४ सन्धि के विषय में भीष्म, द्रोणाचार्य और विदुरजी को भी जिसने उत्तर दिया; अब उसका इलाज ही क्या है ३५ हे जनार्दनजी ! जिसने अपनी अज्ञानता से हितकर वचन कहनेवाले वृद्ध पिता और माताओं का भीबारम्बार अनादरकर उत्तर दिया; वह दूसरेके वचन कैसे अंगीकार करसकता है ? हे मधुसूदनजी ! प्रकट है कि यह कुलका नाश करनेवाला उत्पन्न हुआ ३६–३७ हे विशाम्पते ! उसी प्रकार इसकी चेष्टा और नीयत देखी जाती है कि यह हमको राज्य नहीं देगा । हे अविनाशिन् ! मेरा यह मत है ३८ हे बड़ाई देनेवाले भाई ! मुझसे बहुधा महात्मा विदुरने कहाथा,कि दुर्योधन कभी अपने जीतेजी राज्यका भाग नहीं देगा ३९ दुर्योधन जबतक जीताहै; तबतक हम निरपराधियों के साथ पाप-कर्म करेगा ४० हे माधवजी ! न्यायके देखनेवाले विदुरजीने सदैव मुझसे यही कहा कि वह विना युद्ध किये और किसी प्रकारसे भी जीतने योग्य नहींहै ४१ सो अब उस दुरात्माके सब निश्चयोंको और जो वचन महात्मा विदुरजी ने कहा है; उसको जानूंगा ४२ जिस दुर्बुद्धिने परशुरामजी के सत्य और परि-णाममें हितकर वचन सुनकर अपमान किया; इससे निश्चय ज्ञात होता है

कि वह नाश के सम्मुख हुआ है ४३ दुर्योधन के उत्पन्न होने पर बहुत सिद्धों ने कहा था कि इस दुरात्मा दुर्बुद्धिको पाकर बहुतसे क्षत्रियों के कुल नाश होंगे ४४ हे जनार्दनजी! उनका बारम्बार कहा हुआ वह वचन अब सत्य होरहा है कि दुर्योधन के कारण असंख्य राजाओं का नाश होगया ४५ सो हे माधवजी! अब मैं युद्ध में सब शूरवीरों को मारूंगा। क्षत्रियों के शीघ्र मरने और डेरों के जल्दी खाली होने पर ४६ अपने मरणके लिये वह दुर्योधन हमारे साथ युद्ध करना अंगीकार करेगा। हे जनार्दनजी! अनुमान से विदित होता है कि शत्रुताका अन्त वहीं होगा ४७ हे श्रीकृष्णजी! मैं अपनी बुद्धि से शोचता हुआ विदुरजी के वचन और इस दुरात्माके कर्म से ऐसा ही देखता हूं ४८ हे वीर! इस हेतु आप उस सेनामें चलें। युद्धमें तेज बाणोंसे इस दुरात्मा दुर्योधनको और इसकी सेनाको मारूंगा ४९ हे गरुड़ध्वजजी! अब मैं दुर्योधन के देखते, इस निर्बल सेनाको मारकर धर्मराजका मङ्गल करूंगा ५० सञ्जय बोले, कि अर्जुन के इस वचन को सुनकर हाथ में रास पकड़नेवाले श्रीकृष्ण जीने निर्भयतासे उस सेनामें प्रवेश किया ५१ बड़े साहसी गोविन्दजी, बड़ी पताकावाले रथकी सवारी से उस सेनाको मँझाते हुए घूमने लगे जो कि प्रास, खड्ग और बाणों से भयानक; शक्तिरूपी कांटों से पूर्ण; गदा और परिघकी सूरत का मार्ग रखनेवाला; रथ, हाथीरूप बड़े वृक्षोंवाला; घोड़े और पत्तिरूपी लताओं से संयुक्त सेनारूपी वन था ५२। ५३ हे राजन्! युद्धमें श्रीकृष्णजी से चलाये गये वे श्वेत घोड़े अर्जुनको सवार किये हुए सब दिशाओं में दिखाई पड़े ५४ इसके पीछे शत्रुओंका तपानेवाला अर्जुन सैकड़ों बाणजाल फैलाता हुआ रथकी सवारी से युद्ध में ऐसे आया जैसे कि जलधाराओं को बरसाता हुआ बादल आता है ५५ अर्जुनके बाणों से ढके हुए शूरवीरों और टेढ़े पर्ववाले बाणों के बड़े शब्द हुए ५६ गाण्डीव धनुषसे चलाये हुए, इन्द्रवज्रके समान स्पर्शवाले कवचों पर लगते हुए बाणसमूह पृथ्वीपर गिरे ५७ हे राजन्! वे बाण हाथी और घोड़ों को मारकर पक्षियों के समान युद्धभूमि में गिर पड़े ५८ उन बाणों से सब पृथ्वी इतनी ढक गई कि युद्धमें दिशा और विदिशाएं भी नहीं जानी गई ५९ अर्जुनके नामों से अंकित, सुनहले पुंखवाले, तेलसे साफ़ किये हुए और कारीगरके मांजे हुए बाणों से सब जगत् पूर्ण होगया ६० अग्नि के समान अर्जुनसे भस्म होनेवाले तेज बाणों से घायल उन घोर हाथियों ने

अर्जुनको त्यागा नहीं ६१ सूर्य के समान प्रकाशमान, तेजस्वी, धनुष-बाण-धारी अर्जुन ने युद्ध में लड़नेवालों को ऐसे भस्म किया जैसे कि ज्वलितरूप अग्नि सूखे वनको भस्म करता है ६२ और जैसे कि वनके समीप वनवासियोंसे छोड़ा हुआ काला मार्ग अथवा बड़े शब्दवाला, वृद्धियुक्त प्रतापी, अग्नि वृक्षपरिपूर्ण, सूक्ष्मलताओं से अच्छादित सूखे वनको भस्म करे ६३ इसी प्रकार नाराचों से संतप्त करनेवाले, बाणरूप छोटी बड़ी ज्वालाएं रखनेवाले, बड़े तेजस्वी, वेगवान् अशान्तचित्त अर्जुन ने आपके पुत्रकी सब सेनाका नाश करदिया ६४ अच्छे प्रकारसे छोड़े हुए, सुनहले पुङ्खके, प्राणहरनेवाले उसके बाण कवचोंको भेदकर पार होगये। उसने मनुष्य, घोड़े और उत्तम हाथियों पर भी एकके सिवाय दूसरा बाण नहीं मारा ६५ उस अकेले ने महारथियोंकी सेनामें प्रवेशकर अनेकरूपके बाणों से आपके पुत्रकी सेनाको ऐसे मारा जैसे कि दैत्यों को वज्रधारी इन्द्र मारता है ६६॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि पञ्चविंशोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय।

सञ्जय बोले, कि अर्जुनने गाण्डीव धनुषसे उन उपाय करनेवाले, मुख न मोड़नेवाले धनुषधारी शूरवीरों के संकल्प निष्फल कर दिये १ वह इन्द्रवज्रके समान स्पर्शवाले असह्य महाप्रकाशित बाण छोड़ता हुआ ऐसे दिखाई देता था जैसे कि जलधाराएं छोड़नेवाला बादल दिखाई पड़ता है २ हे भरतर्षभ! अर्जुन के हाथसे घायल सेना आपके पुत्रके आगे सेही युद्ध छोड़कर भागी ३ कितने ही भाई, पिता और समान अवस्थावालों को भी छोड़कर भागे। कोई मृतक घोड़ेवाले और कोई मृतक सारथिवाले रथ दिखाई पड़े ४ हे राजन्! कितनेही रथ टूटे ईशादण्ड, युग और चक्रों के होगये और दूसरोंके सायक नष्ट हुए और बहुतेरे बाणों से पीड़ित हुए ५ कितने ही घायल हुए विना ही भयसे पीड़ित होकर भागे और जिनके बहुत भाई, बन्धु मारे गये, वे बहुतसे मनुष्य पुत्र, भाई आदि को लेकर भागे ६ कोई पिताको, कोई साथी, बान्धव-नातेदार और भाइयों को पुकारने लगे ७ और हे राजन्! कितने ही जहां तहां सामान छोड़कर भागे। फिर वहां बहुतसे महारथी कठिन घायल और अचेत होकर ८ अर्जुन के बाणों से घायल और श्वास लेते हुए दिखाई पड़े। बहुतसे उनको

रथ पर बिठलाकर एक मुहूर्त विश्वास करा, थकावट दूर कर, अच्छे प्रकार तृप्त करके फिर युद्ध के निमित्त भेजे गये। कितने ही युद्धाभिलाषी लोग उनको छोड़कर ९-१० आपके पुत्रकी आज्ञा मानकर फिर युद्धमें गये। बहुतसे युद्धदुर्मद जल पीकर, सवारी को आराम देकर और कितने ही कवचों को बदलकर युद्धमें गये। हे भरतर्षभ! कितने ही अपने भाइयों को डेरों में छोड़ विश्वास देकर चल दिये ११-१२ किसीने पुत्रों को, किसीने पिताओं को डेरोंमें छोड़कर युद्ध कोही स्वीकार किया और कितनेही शूरवीरों ने उत्तम रथ सजा १३ पाण्डवीय सेनामें प्रवेश करके फिर युद्ध किया। वे शूर क्षुद्रघण्टिकाओं के जालों से युक्त ऐसे शोभायमान हुए १४ जैसे कि तीनों लोकों की विजय में प्रवृत्त दैत्य और दानव होते हैं। कितने ही शूरवीरों ने सुवर्ण से अलंकृत रथोंकी सवारी से १५ पाण्डवों की सेना में आकर धृष्टद्युम्न से युद्ध किया। पाञ्चालदेशी धृष्टद्युम्न, महारथी शिखण्डी १६ और नकुल के पुत्र शतानीकने रथ की सेना से युद्ध किया। इसके पीछे क्रोधयुक्त, बड़ी सेना सहित १७ मारने को सन्नद्ध धृष्टद्युम्न आपके पुत्रों के सम्मुख गया। धृष्टद्युम्न के आने पर आपके पुत्र राजा दुर्योधन ने १८ बाणोंके समूह चलाये। हे राजन्! इसके अनन्तर आपके धनुषधारी पुत्र से घायल शीघ्रकर्मी धृष्टद्युम्न ने १९ कारीगर के हाथसे मांजे हुए नाराच, अर्द्धनाराच और वत्सदन्त नामके बाणोंसे २० आपके पुत्र के चारों घोड़ों को मारकर दोनों भुजाओं और छातीपर घायल किया। चाबुक से पीड़ित हाथी के समान, अत्यन्त घायल, उस बड़े धनुषधारी ने २१ बाणों से उसके चारों घोड़ोंको तो मारही डाला; साथही उसके सारथी का शिर भी भल्लके द्वारा धड़ से अलग किया २२ फिर शत्रुविजयी राजा दुर्योधन रथ टूटने से, घोड़े की ही पीठपर चढ़कर थोड़ी दूर हट गया २३ महाराज! आपका बड़ा बलवान् पुत्र सेनाको पराक्रमसे हीन देखकर वहां गया, जहां कि शकुनी था २४ तदनन्तर रथोंके टूटने पर, तीन हजार बड़े हाथियों ने पांचों महारथी पाण्डवों को चारों ओर से घेर लिया २५ हे भरतवंशिन्! युद्ध में हाथियों की सेना से घिरे हुए वे पांचों नरोत्तम ऐसे शोभित हुए जैसे कि बादलों से घिरे हुए ग्रह होते हैं २६ इसके पीछे श्वेत घोड़े और श्रीकृष्णको सारथि रखनेवाले, लक्ष्यभेदी महाबाहु अर्जुन रथ की सवारी से बाहर निकले २७ चारों ओर पर्वताकार हाथियों से घिरे हुए अर्जुन ने निर्मल और तीक्ष्ण नाराचों से हाथियों की

सेनाका नाश किया २८ वहां हमने अर्जुन के एक ही बाणसे बड़े हाथियों को घायल, मृतक और गिरता हुआ देखा २९ मतवाले हाथी के समान पराक्रमी भीमसेन गदा हाथमें लिये हाथियों के सम्मुख गये । इसके पीछे हाथ में दण्ड रखनेवाले कालके समान शीघ्र रथसे कूदकर गदा उठानेवाले पाण्डवों के महारथी को देखकर ३०-३१ आपकी सेना के लोग भयभीत हुए और कितनों ही ने विष्ठा मूत्र भी गिराया । भीमसेन के गदा हाथ में लेने से सब सेना व्याकुल हुई ३२ हमने भीमसेन की गदा से उन पर्वताकार मद झिरानेवाले हाथियों को टूटे कुंभ और भागते हुए देखा ३३ फिर भीमसेन की गदासे घायल हाथी भागे और टूटे पक्षवाले पर्वतों के समान शब्द करते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े ३४ आपकी सेनाके लोग टूटे कुंभवाले इधर उधर से भागते और गिरते हुए बहुतसे हाथियों को देखकर भयभीत हुए ३५ क्रोध-युक्त युधिष्ठिर और नकुल, सहदेव ने भी गृध्रपक्ष से जटित तीक्ष्ण बाणोंसे लोगों को यमलोकमें पहुँचाया ३६ धृष्टद्युम्न युद्ध में राजा का पराजय कर और अश्वकी सवारी से उसके हट जाने पर ३७ सब पाण्डवों को हाथियों से घिरे हुए देख प्रभद्रकों समेत ३८ हाथियोंके मारने की अभिलाषा से चला और शत्रुविजयी दुर्योधन को रथों की सेनामें न देखकर ३९ अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा ने क्षत्रियों से पूछा कि दुर्योधन कहां गये ४० मनुष्यों का नाश होनेपर आपके पुत्र महारथी राजा को न देख-मृतक हुआ मान कर ४१ उन वीरोंने मुखका रूपान्तर कर सबसे आपके पुत्रको पूछा । कितनेही लोगोंने तो कहा कि वह सारथि के मरनेपर वहां गया है, जहां कि राजा शकुनी है ४२ तब अत्यन्त घायल दूसरे क्षत्रिय बोले कि दुर्योधन से आपको क्या काम है ? देखो जो जीते हैं ४३ वे सब मिलकर युद्ध करें । राजा तुम्हारा क्या करेगा ? जिनकी बहुतसी सवारियां मारी गईं, वे घायल क्षत्रिय ४४ बाणोंसे पीड़ित, बड़े धीरेसे बोले, कि हम इस सब सेनाको मारें जोकि हमें चारों ओर से घेरे है ४५ ये सब पाण्डव हाथियोंको मारकर सम्मुख आगये । फिर उनके वचन सुनकर बड़े पराक्रमी अश्वत्थामा ४६ कृपाचार्य और कृतवर्मा कठिनता से सम्मुखता के योग्य राजा पाञ्चाल की सेनाको चीरकर वहां गये जहां शकुनी था ४७ ये दृढ़ धनुषधारी शूर रथोंकी सेनाको त्यागकर वहां पहुँचे हे राजन् ! इनके चले जाने पर धृष्टद्युम्नको आगे रखनेवाले ४८ पाण्डव आपके शूरवीरोंको मारते हुए

वहां आपहुँचे; तब उन अत्यन्त प्रसन्न, आते हुए महारथियों को देखकर ४६ और उस प्रकार पराक्रम करनेवाले वीरोंको जानकर जीवनसे निराश आपकी सेनाका मुख अत्यन्त विवर्ण होगया ५० हे राजन् ! मैं उन नाशवान् सेनाओं को और चारोंओर से घिरेहुओं को देख अपने जीवन की आशा त्यागकर दो अङ्ग रखनेवाली सेना समेत ५१ वहां गया जहांपर कृपाचार्य थे । वहां डरकर मैं अपने शरीरसे पांचवें राजा पाञ्चालकी सेना से युद्ध करने लगा ५२ अर्जुन के बाणों से हम पांचों पीड़ित हुए । वहां धृष्टद्युम्नसे हमारा महारौद्र, घोर युद्ध हुआ ५३ हम सब उससे पराजित होकर वहां से हट आये । तब मैंने सम्मुख आनेवाले सात्यकी को देखा ५४ वह वीर चार सौ रथियों समेत मेरे सम्मुख दौड़ा और मैं कुछ थकी सवारीवाले धृष्टद्युम्नसे छूटा ५५ और कृतवर्माकी सेना की ओर ऐसे दौड़ा जैसे पापी नरक को जाता है । वहांपर एक मुहूर्त तक घोर युद्ध हुआ ५६ फिर महाबाहु सात्यकी ने मेरे घोड़े आदि मारकर अचेत और पृथ्वीपर गिरे हुए मुझे जीता पकड़लिया ५७ इसके एक मुहूर्तमें ही भीमसेन की गदा और अर्जुन के नाराचोंसे वह हाथियों की सेना नष्ट होगई ५८ चारों ओरसे पर्वतोंके समान चूर्ण शरीरके बड़े हाथियों से पाण्डवों का मार्ग छिपासा होगया ५९ महाराज ! तब हाथियोंको हटाकर बड़े पराक्रमी भीमसेनने पाण्डवों का रथमार्ग साफ किया ६० अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा रथकी सेनामें उस शत्रुविजयी दुर्योधनको न देख ६१ आपके पुत्र महारथी राजा दुर्योधनको निश्चयसे खोजने लगे और धृष्टद्युम्नको छोड़कर वहां गये, जहां शकुनी था । ये सब मनुष्योंका नाश होने पर और राजाको न देख व्याकुल हुए ६२ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ।

सञ्जय बोले, कि पाण्डव अर्जुनके हाथसे रथकी सेनाके मारेजाने और युद्ध में भीमसेन के हाथसे सेनाके नाश होने पर १ तथा क्रोधयुक्त, प्राणों के हरनेवाले दण्डधारी कालके समान, घूमते हुए शत्रुविजयी भीमसेन को देख कर २ मरनेसे बचे हुए आपके पुत्र, सब सगे भाई युद्ध में इकट्ठे हुए और अपने बड़े भाई कौरव दुर्योधन के दिखाई न देने पर ३ भीमसेन के सम्मुख गये । उनके नाम दुर्मर्षण, श्रुतान्त, जयत्र, भूरिबल, रवि ४ जयत्सेन, सुजात, शत्रु-

हन्ता, दुर्वश, दुर्विमोचन, दुष्प्रधर्ष ५ महाबाहु और श्रुतर्वा हैं। युद्ध में कुशल आपके इन सब पुत्रों ने साथ होकर ६ चारों ओरसे भीमसेनके सम्मुख जाकर सब दिशाओं से रोका। महाराज! तब तो भीमसेन फिर अपने रथपर सवार हुए ७ और आपके पुत्रों के मर्मस्थलों में तेजधारवाले बाण मारे। बड़े युद्ध में भीमसेन के हाथसे घायल आपके पुत्रों ने ८ भीमसेन को ऐसे घेर लिया जैसे कि नीचे स्थान से हाथी को घेर लेते हैं। तब क्रोधयुक्त भीमसेन ने दुर्मर्षण के शिर को ६ क्षुरप्र से काटकर शीघ्रही पृथ्वी पर गिराया और सब कवचों के काटनेवाले दूसरे भल्ल से १० आपके पुत्र महारथी श्रुतान्तको मारा; फिर हँसते हुए उस शत्रुविजयीने जयत्सेनको नाराचसे घायल कर ११ उस कौरवको भी रथके स्थानसे गिराया। हे राजन्! वह रथसे गिरते ही तुरन्त मर गया १२ इसके पीछे आपके पुत्र क्रोधयुक्त श्रुतर्वा ने गृध्रपक्षसे जटित टेढ़े पर्वके सौ बाणों से भीमसेन को घायल किया १३ तब युद्धमें क्रोधयुक्त भीमसेन ने विष, अग्निके समान तीन बाणों से जयत्र, भूरिबल और रवि—इन तीनोंको घायल किया१४ वे मृतक महारथी रथोंसे ऐसे गिर पड़े जैसे कि वसन्त ऋतु में कटे हुए पुष्पित किंशुक के वृक्ष गिरते हैं १५ फिर शत्रुसन्तापी भीमसेन ने दूसरे भल्ल नाराच से दुर्विमोचन को घायल कर मृत्यु की गोद में लिटाया १६ वह महारथी मृतक होकर रथ से ऐसे गिर पड़ा जैसे कि पर्वतके वायु से टूटा हुआ वृक्ष गिरता है १७ इसके पीछे सेना के मुखपर दुष्प्रधर्ष और सुजात नामक आपके पुत्रों को युद्धमें दो दो बाणों से मारा १८ वे उत्तम रथी शिलीमुख बाणसे घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। इसके पीछे भीमसेन ने युद्धभूमि में गिरते हुए आपके पुत्र को देखकर १६ दुर्वशको भी भल्लसे मार गिराया। वह मरा हुआ सब धनुषधारियों के देखते रथ से गिर पड़ा २० युद्धमें एकके ही हाथसे मरे हुए बहुत भाइयों को देखकर क्रोधमें भरा हुआ श्रुतर्वा भीमसेन के सम्मुख गया २१ वह सुवर्ण से अलंकृत बड़े धनुषको टंकारता; विष, अग्नि के समान बहुत बाणों को छोड़ता हुआ गया २२ हे राजन्! इसने उस युद्ध में भीमसेन के धनुषको काटकर बीस बाणोंसे घायल किया २३ तब महारथी भीमसेन ने दूसरा धनुष ले, आपके पुत्रको घायलकर 'तिष्ठ, तिष्ठ' कहा २४ उन दोनों का अपूर्व और भयकारी युद्ध ऐसा शोभित हुआ जैसा कि पूर्व समय में जंभ और इन्द्रका युद्ध हुआ था २५ वहां उन दोनों के, यमदण्ड के समान तेज

बाणोंसे सब पृथ्वी, आकाश और दिशा विदिशाएं ढक गईं २६ हे राजन्! फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतर्वा ने धनुष लेकर सायकों से भीमसेन को दोनों भुजाओं समेत छाती में घायल किया २७ महाराज! आपके धनुर्धर पुत्रके हाथसे अत्यन्त घायल होकर क्रोधयुक्त भीमसेन ऐसे वेगमें होगया जैसे कि पर्वकाल में समुद्र वेगवान् होजाता है २८ हे श्रेष्ठ! क्रोधसे पूर्ण भीमसेन ने बाणोंसे आपके पुत्र के सारथी और चारों घोड़ों को यमलोक में पहुँचाया २९ हस्तलाघव दिखाते हुए साहसी भीमसेन ने उसको विरथ देखकर विशिखों से ढक दिया ३० हे राजन्! रथसे रहित श्रुतर्वाने खड्ग और ढालको लिया। पर खड्ग और सौ चन्द्रमावाली प्रकाशित ढाल धारण करनेवाले इस श्रुतर्वाके शिरको भी भीमसेन ने क्षुरप्र से काट गिराया ३१-३२ तब उसका शरीर भी पृथ्वी को शब्दायमान कर रथसे गिर पड़ा। उस वीर के गिरने पर भयसे अचेत ३३ युद्धके अभिलाषी, आपके शूरवीर लोग भीमसेन के सम्मुख गये। मरनेसे बचीहुई, समुद्रके समान शीघ्र आनेवाली सेनाके कवच-शस्त्रधारी शूरवीरों को प्रतापी भीमसेन ने शीघ्र ही रोका। उन्होंनेभी उसे चारों ओरसे घेर लिया ३४-३५ इसके पीछे घिरे हुए भीमसेनने आपके उन शूरवीरों को तीक्ष्ण धारके बाणोंसे ऐसे पीड़ित किया जैसे कि असुरोंको इन्द्र पीड़ित करता है ३६ उसने युद्धमें पांच सौ कवचधारी महारथियों को मारकर; सात सौ हाथियोंकी सेना को मारा ३७ वह श्रेष्ठ भीमसेन बाणोंसे दश हजार पत्तियों और आठ सौ घोड़ों को मारकर शोभित हुआ ३८ हे प्रभो! कुन्ती का पुत्र भीमसेन आपके पुत्रोंको मारकर अपना अभीष्ट प्राप्त करनेवाला और सफल जन्मवाला हुआ ३९ हे श्रेष्ठ! आपकी सेनाके लोगों ने उस प्रकार युद्धकर्ता और आपके शूरों को मारनेवाले भीमसेन को देखने का उत्साह नहीं किया ४० फिर सब कौरवों को भगाकर और पीछे चलनेवालों को मारकर, बड़े हाथियों के डरानेवाले ने बड़ी भुजाओं का शब्द किया ४१ महाराज, राजा धृतराष्ट्र! फिर आपकी सेना में जिसके बहुतसे शूरवीर मारे गये थे; कुछ शेष और दुखी आकर वर्तमान हुए ४२॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणि सप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय ।

सञ्जय ने कहा, कि महाराज ! मरने से बचे हुए आपके पुत्र दुर्योधन और सुदर्शन युद्ध में घोड़ों के मध्यवर्ती होकर वर्तमान हुए १ तब देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी घोड़ोंके मध्यमें दुर्योधनको देखकर कुन्तीके पुत्र अर्जुन से बोले २ कि शत्रु बहुत मारे गये; जातिवाले हटाये गये और यह सात्यकी सञ्जय को पकड़कर लौटा है ३ हे भरतवंशिन् ! नकुल-सहदेव, धृतराष्ट्र के पुत्र और उनके सब साथियों से लड़ते लड़ते थक गये ४ कृपाचार्य, कृतवर्मा और महारथी अश्वत्थामा दुर्योधन को त्यागकर नियत हुए ५ बड़ी शोभासे युक्त यह धृष्टद्युम्न दुर्योधन की सेनाको मारकर प्रभद्रकों समेत नियत है ६ हे राजन् ! शिर पर धारण किये हुए छत्र समेत बारम्बार देखता हुआ, यह दुर्योधन घोड़ों के बीच ७ सब सेनाको अलंकृत कर युद्धभूमि में उपस्थित है । इसको तीक्ष्ण बाणों से मारकर कृतकृत्य होजाना अच्छा है । रथकी सेनाको मृतक और शत्रुविजयी तुम्हें देखकर जबतक ये लोग न भागें; तबतक इस दुर्योधन को मारें ८-९ कोई धृष्टद्युम्न के पास जाकर, उसको जल्दी से बुला लावे । जबतक वह नहीं आवेगा, तबतक यह थकी हुई सेनावाला पापी नहीं छूटेगा । धृतराष्ट्र का पुत्र युद्धमें आपकी सब सेनाको मारकर पाण्डवोंको विजय कियाहुआ समझे बड़ा रूप धारण किये है १०-११ वह राजा पाण्डवोंके हाथसे अपनी सेनाको मरी हुई और पीड़ित देखकर युद्धमें मरनेके लिये अवश्य वर्तमान होगा १२ यह सुनकर अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से कहा कि धृतराष्ट्रके सब पुत्र भीमसेन के ही हाथसे मारे गये हैं १३ हे श्रीकृष्णजी ! ये दोनों भी अब नहीं रहेंगे अर्थात् मारे जायेंगे । भीष्मजी मारे गये, द्रोणाचार्य मारे गये और कुण्डल-कवचका दान करनेवाला कर्ण भी मारा गया १४ राजा शल्य और जयद्रथ मारा गया । हे श्रीकृष्णजी ! सौबलके पुत्र शकुनीके अभी पांचसौ घोड़े बचे हैं १५ हे जनार्दनजी ! उसके सौ रथ, कुछ ऊपर सौ हाथी और तीन हज़ार पदाती शेष रहे हैं १६ अश्वत्थामा, कृपाचार्य, राजा त्रिगर्त, उलूक, शकुनी और यादव कृतवर्मा १७ अब दुर्योधन की इतनी ही सेना बाकी है । निश्चयकर पृथ्वी पर कालसे किसीका बचना नहीं है १८ इसी प्रकार सेना के मरने पर दुर्योधन को नियत देखो । महाराज युधिष्ठिर आजके दिन मृतक शत्रुवाले होंगे १९

हे श्रीकृष्णजी ! शत्रुओं में मेरे हाथसे कोई नहीं बचकर जाता है; यह विचारकर आजके दिन जो ये मदोत्कट लोग युद्ध नहीं त्यागेंगे २० तो निश्चय ही चाहे इनमें मनुष्यों के विशेष देवता आदिक भी क्यों न हों तौभी मैं इन सबको मारूंगा। अब युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर मैं तेज बाणोंसे शकुनी को मार-कर राजा युधिष्ठिर के बड़े जागरण को दूर करूंगा। दुराचारी शकुनी ने छलसे जिन रत्नोंको २१-२२ सभामें, द्यूत में ले लियाहै; मैं उनको फिर अवश्य लूंगा। अब हस्तिनापुरकी सभी स्त्रियां २३ युद्धमें पाण्डवों के हाथ से मारे गये अपने पति और पुत्रों को जानेंगी। हे श्रीकृष्णजी ! अभी निश्चय कर सब कार्य पूर्ण होगा २४ अब दुर्योधन अपनी प्रकाशित लक्ष्मी समेत प्राणों को भी त्यागेगा क्योंकि वह भय के कारण मेरे युद्ध से नहीं हटता है २५ हे श्रीकृष्णजी ! बड़े अज्ञानी दुर्योधन को आप मृतक ही जानिये। हे शत्रुओं के विजय करनेवाले ! ये घोड़ों के समूह २६ मेरी प्रत्यञ्चा और तलके शब्द सहने में असमर्थ हैं; आप चलिये, मैं जबतक इन्हींको मारूं। हे राजन् ! बड़े साहसी अर्जुन के इन वचनों को सुनकर श्रीकृष्णजी ने दुर्योधन की सेनामें घोड़े चलाये २७ हे श्रेष्ठ ! उस सेनाको देखकर कवच और शस्त्र धारण करनेवाले तीनों महारथी भीमसेन, अर्जुन और सहदेव सिंहनाद कर दुर्योधन के मारने की इच्छा से चले २८-२९ शकुनी तीव्रता से सब साथ मिले हुए उन धनुष-धारियों को देखकर, युद्धमें मारनेकी अभिलाषा से पाण्डवों के सम्मुख गया ३० आपका पुत्र सुदर्शन भीमसेन के सम्मुख गया; सुशर्मा और शकुनी अर्जुनके साथ युद्ध करनेलगे ३१ घोड़े की पीठपर सवार आपका पुत्र दुर्योधन सहदेव के सम्मुख गया। हे राजन् ! फिर आपके पुत्रने शीघ्र ही उपायपूर्वक ३२ प्राससे सहदेव के शिर पर कठिन प्रहार किया। आपके पुत्रसे घायल सहदेव रथमें बैठनेके स्थानपर ३३ रुधिरसे लथपथ और विषैले सर्पके समान श्वासा लेते हुए गिर पड़े। हे राजन् ! थोड़ी देरमें सहदेवने सचेत होकर ३४ बड़े क्रोधयुक्त हो तेज बाणोंसे दुर्योधनको घायल किया। कुन्तीके पुत्र अर्जुनने भी युद्धमें परा-क्रम कर ३५ शूरोंके शिरोंको घोड़ोंकी पीठपर काटकर उस सेनाको पैने बाणों से छिन्न भिन्न कर दिया ३६ वे इस प्रकार सब घोड़ोंको गिराकर त्रिगर्तदेशी रथियों के सम्मुख गये। उन त्रिगर्तदेशियों के रथियों ने इकट्ठे होकर ३७ अर्जुन और वासुदेवजी को बाणोंकी वर्षाओं से ढकदिया। उस बड़े यशस्वीने

क्षुरप्रसे सत्कर्मा को गिराकर ३८ उसके रथके ईशाको तेजधारके क्षुरप्रसे काटा ३९ और सुवर्णके कुण्डलों से अलंकृत शिरको भी अकस्मात् काटा; तब वह आपके शूरवीरों के देखते हुए युद्धमें गिर पड़ा ४० हे राजन्! जिस प्रकार वनमें भूखा सिंह मृगको मारता है; उसी प्रकार अर्जुनने उसे मार तीन बाणों से सुशर्मा को घायल कर ४१-४२ सुवर्ण के भूषणों से अलंकृत उन सब रथियों को मारा। बहुत कालके एकत्रित क्रोधके विषको छोड़ता हुआ अर्जुन उस प्रस्थल के राजाके सम्मुख दौड़ा। हे भरतर्षभ! अर्जुनने उस धनुषधारी को सौ पृषत्कों से घायल कर उसके घोड़ों को मारा। फिर हँसते हुए अर्जुन ने यमराज के दण्ड के समान बाण चढ़ा ४३-४४ सुशर्माको लक्ष्य बनाकर शीघ्रतासे छोड़ा। उस क्रोधयुक्त धनुषधारी के छोड़े हुए बाणने ४५ सुशर्माको युद्धमें हृदय पर छेदा। महाराज! फिर वह निर्जीव होकर ४६ सब पाण्डवों को प्रसन्न करता और आपके पुत्रोंको पीड़ा देता हुआ पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसने सुशर्मा को युद्ध में मारकर उसके पैंतालीस महारथी पुत्रों को शायकों से यमलोक में पहुँचाया ४७ और इसके सब अनुगामियों को तेज धार बाणों से मारकर ४८ वह महारथी बची हुई भरतवंशियों की सेनाके सम्मुख गया और युद्धमें क्रोधयुक्त हँसते हुए भीमसेन ने ४९ सुदर्शन को बाणोंसे ढक दिया; फिर उसने इसके शिरको भी शरीरसे जुदा किया ५० तब वह अत्यन्त तेज क्षुरप्रसे मरकर पृथ्वीपर गिर पड़ा। उस वीरके मरनेपर बाणोंको फैलाते उसके पीछे चलनेवालों ने ५१ भीमसेन को घेर लिया। तब भीमसेन ने इन्द्रवज्र के समान स्पर्श, तेज धार के बाणोंसे आपकी सेनाको सब ओर से घायल किया। हे भरतर्षभ! भीमसेन ने एक क्षणमें ही उस सेनाको मारा ५२-५३ उनके मरने पर बड़े पराक्रमी सेनाके प्रधानोंने भीमसेन से युद्ध किया ५४ तब भीमसेन ने उन सबको तेज बाणोंसे घायल किया। हे राजन्! इसी प्रकार आपके शूरवीरों ने महारथी पाण्डवों को ५५ बाणोंकी वर्षा कर चारों ओर से रोका। पाण्डवों का और आपके शूरवीरों का वह युद्ध व्याकुल करनेवाला हुआ। उस समय अपने बान्धवोंको शोचते, परस्पर घायल, दोनों सेनाओं के शूरवीर चढ़ाई करनेवाले हुए ५६-५७॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वण्यष्टाविंशोऽध्यायः २८॥

उन्तीसवां अध्याय ।

संजय बोले, कि हे राजन् ! मनुष्य, हाथी और घोड़ों के नाशकारी उस युद्ध के होनेपर सौबलका पुत्र शकुनी सहदेव के सम्मुख गया १ प्रतापी सहदेव ने शीघ्र ही उस आनेवाले के ऊपर सूर्यादिक के समान शीघ्रगामी बाणसमूह चलाये २ फिर उलूकने दश बाणोंसे युद्धमें भीमसेन को घायल किया । हे राजन् ! फिर शकुनीने तीन बाणोंसे घायल कर नब्बे शायकोंसे सहदेव को ढक दिया ३ हे राजेन्द्र ! उन शूरोंने युद्ध में सम्मुख होकर कंक और मोर पक्षों से जटित, तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया ४ वे सुनहले पुंख के, शिला से स्वच्छ किये हुए और कानतक खींचकर छोड़े गये थे । उनके धनुष और भुजाओं से छोड़ी हुई बाणवृष्टिने ५ सब दिशाओंको ऐसे ढक दिया जैसे कि जलकी धाराओंसे बादल ढकदेता है । तब युद्ध में क्रोधयुक्त भीमसेन और पराक्रमी सहदेव दोनों महाबली युद्ध में प्रलय मचाते हुए भ्रमण करने लगे । हे भरतवंशिन् ! तब आपकी सेना उनके बाणों से ढक गई ६–७ जहां तहां आकाश अन्धकाररूप हुआ । बाणोंसे ढके हुए, चारों ओर दौड़ते ८ और बहुत मृतकों को खींचते हुए घोड़ों से जहां तहां मार्ग रुँध गया हे श्रेष्ठ ! घुड़सवारों के साथ मृतक घोड़ों के समूह ९ टूटे कवच, प्रास, खड्ग, शक्ति और तोमरों से १० पृथ्वी चारों ओर से ऐसी गुप्त हुई जैसे कि पुष्पों से शवल गुप्त होते हैं । महाराज ! वहां शूरवीर परस्पर सम्मुख होकर ११ युद्धमें क्रोधयुक्त एक दूसरे को मारते, अच्छे प्रकार भ्रमण करने लगे । क्रोधसे फैले हुए नेत्र, दोनों ओष्ठोंके काटनेवाले, कुण्डलधारी, कमलकी किंजल्कके समान मुखों से पृथ्वी ढक गई १२ हे समर्थ, महाराज ! गजराजकी सूंड़के समान; बाज़ूबन्द, कवच, खड्ग और फरसा धारण करनेवाली टूटी भुजाओं १३ और युद्ध में टूटे, खड़े और नृत्य करते हुए अन्यान्य रुण्डों से पृथ्वी महाघोर और मांसाहारी जीवोंके समूहोंसे पूर्ण होगई १४ फिर थोड़ी सेना रहने पर पाण्डवोंने अत्यन्त प्रसन्न होकर बड़े युद्धमें कौरवोंको यमलोक में पहुँचाया १५ हे राजन् ! उसी अन्तर में प्रतापी शकुनी ने प्राससे सहदेव के शिरपर कठिन प्रहार किया । महाराज ! उस भारी प्रहारसे सहदेव व्याकुल होकर रथमें बैठने के स्थानपर ही बैठगये फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रतापी भीमसेन ने सहदेवको देखकर १६–१७

सब सेनाओं को रोका और हजारों शूरवीरों को नाराचोंसे छेदा १८ उस शत्रु-विजयी ने उनको छेदकर सिंहनाद किया; उस शब्दसे सब हाथी और घोड़े पृथ्वी पर गिर पड़े १६ फिर भयभीत होकर अकस्मात् भागे तब राजा दुर्योधन ने उन छिन्न भिन्न सेनाओंसे कहा २० हे धर्म के न जाननेवाले शूरवीरो ! लौटो; युद्ध करो। युद्धसे भागने में तुम्हारा क्या प्रयोजन है ? जो वीर युद्धमें पीठ न दिखा सम्मुख होकर अपने प्राण त्यागताहै, वह इस लोकमें शुभ कीर्ति पाकर मरनेके पीछे शुभलोकोंको भोगता है। राजाके इस प्रकार कहनेपर शकुनी के साथी २१-२२ मृत्युको पीछे कर पाण्डवों के सम्मुख हुए। हे राजन् ! वहां भागनेवाले वीरों ने बड़े भयकारी शब्द किये २३ वह सेना वेगयुक्त सागरके समान सब ओरसे व्याकुल होगई। महाराज ! इसके पीछे विजयके निमित्त सन्नद्ध पाण्डव शकुनी के साथियों को आगे देखकर २४ सम्मुख गये। फिर अजेय सहदेव ने विश्राम लेकर २५ दशबाणोंसे शकुनीको घायल कर तीन बाणों से उसके घोड़ोंको घायल किया और हँसकर बाणोंसे शकुनीके धनुषको काटा। इसके पीछे युद्ध में दुर्मद शकुनी ने दूसरा धनुष लेकर साठ बाणोंसे नकुलको और सात बाणोंसे भीमसेन को घायल किया २६-२७ हे राजन् ! जङ्गमें पिताके चाहनेवाले उलूक ने भी सात बाणों से भीमसेन को और सत्तर बाणों से सहदेव को घायल किया २८ भीमसेनने उसको नौ बाणों से, शकुनीको चौंसठ बाणों से और इधर उधरके पक्षवर्ती शूरवीरोंको तीन तीन बाणों से घायल किया २६ भीमसेनके तीक्ष्ण नाराचों से घायल और क्रोधयुक्त उन शूरवीरों ने बाणों की वर्षा से सहदेव को ऐसे ढक दिया जैसे कि बिजलीवाले बादल जलकी धाराओं से पहाड़को ढकते हैं। महाराज ! फिर प्रतापी, शूर सहदेव ने सम्मुख दौड़ने वाले ३०-३१ उलूकका शिर भल्लसे काटा। वह रुधिरसे लिपटा, सहदेवका गिराया हुआ, युद्धमें पाण्डवोंको प्रसन्न करता हुआ रथसे पृथ्वी पर गिरा। हे भरतवंशिन् ! तब शकुनी अपने पुत्रको मरा हुआ देख ३२-३३ विदुरजीके वचन का स्मरण करता अश्रुपूर्ण कण्ठसे बड़ी श्वास लेकर एक मुहूर्ततक चिन्ता करने लगा। फिर अश्रुपूरित नेत्रवाले शकुनी ने ३४ सहदेव को तीन शायकों से घायल किया। महाराज ! प्रतापी सहदेव ने बाणसमूहों से उन छोड़े हुए बाणोंको हटाकर उसका धनुष काटा। धनुष के टूटनेपर सौबलके पुत्र शकुनी ने ३५-३६ बड़ा खड्ग सहदेव के ऊपर चलाया। तब हँसते हुए

सहदेवने उस अकस्मात् आते हुए शकुनीके घोर खड्ग को ३७ खण्ड खण्ड कर दिया। खड्ग को खण्डित देखकर उसने बड़ी गदा ३८ सहदेवके ऊपर फेकी। पर वह गदा भी निष्फल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। इसके पीछे अत्यन्त क्रोध-युक्त शकुनी ने महाघोर कालरात्रि के समान उठाई हुई घोर शक्ति सहदेव पर चलाई। हँसते हुए सहदेव ने अपने स्वर्णभूषित बाणों से उस आती हुई शक्ति के ३९-४० युद्धमें तीन खण्ड कर दिये। वह सुवर्ण से अलंकृत, तीन स्थानों से टूटी हुई शक्ति पृथ्वीपर ऐसे गिर पड़ी ४१ जैसे कि प्रकाशित बिजली आ-काशसे गिरतीहै। शक्तिको टूटी और शकुनी को पीड़ित देख ४२ भय उत्पन्न होने पर शकुनी समेत आपके सब शूरवीर भागे। तव विजय से शोभित पाण्डवोंकी ओर बड़ा शब्द हुआ ४३ आपके सब शूरवीर मुख फेर गये। माद्री के प्रतापी पुत्र ने उनको उदासचित्त देखकर ४४ युद्धमें हजारों बाणोंसे विरोधियोंको रोका। फिर सहदेवने हृष्ट पुष्ट, गान्धारदेशी घोड़ों से रक्षित, विजयमें प्रवृत्तचित्त ४५ युद्धमें आनेवाले शकुनी को सम्मुख पाया। हे राजन्! सहदेव उस शकुनी को अपना भाग स्मरणकर सुवर्ण के अङ्गवाले रथकी सवारी से सम्मुख गये ४६ और दृढ़ धनुष चढ़ाकर टंकारा ४७ उसने क्रोधयुक्त हो शकुनी के सम्मुख जाकर गृध्रपक्ष वाले तीक्ष्ण बाणों से ऐसे कठिन घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े हाथी को घायल करते हैं ४८ वह बुद्धिमान् उसे रोककर स्मरण कराता हुआ बोला, कि क्षत्रियधर्म में नियत और शूरता करके युद्ध करो ४९ सभामें, पाशोंके द्यूतमें तुम प्रसन्न हुए थे; हे दुर्बुद्धे! अब उस दुष्टकर्म के फलको देखो ५० वे सब दुरात्मा तो मारे गये, जो पूर्वमें हमको हँसे थे, अब इस दुर्योधन के कुलको भस्म करनेवाले अग्निरूप तुम्हीं हमारे मामाजी बचे हो ५१ अब क्षुरप्रसे तेरे शिरको ऐसे जुदा करूंगा जैसे कि प्रहार करनेवाली लाठी से वृक्षका फल तो-ड़ते हैं ५२ महाराज! अत्यन्त क्रोधयुक्त, पराक्रमी नरोत्तम सहदेवने इस प्रकार कहकर, बड़े वेगसे उसको घायल किया ५३ बड़े अजेय शूरवीरों के प्रधान, क्रोधसे जलते हुए सहदेवने पक्का धनुष खींचकर ५४ दश बाणोंसे शकुनीको और चार बाणोंसे उसके घोड़ों को घायलकरके उसके छत्र, ध्वजा और धनुष को काटकर सिंहके समान गर्जना की। वह बहुत शायकों से सब मर्मस्थलोंपर अत्यन्त घायल किया गया ५५-५६ महाराज! इसके पीछे प्रतापी सहदेवने कठिनता से सहने योग्य बाणों की वर्षा शकुनी के ऊपर की ५७ तब अत्यन्त

क्रोधयुक्त और युद्धमें सुवर्ण से जटित प्रासके द्वारा माद्रीनन्दन सहदेवको मारने की इच्छासे शीघ्र ही अकेला शकुनी उसके पास गया ५८ फिर माद्री के पुत्रने एक साथ तीन भल्लोंसे उसके उठाये हुए प्रास और सुन्दर गोल भुजाओं को युद्ध के मुखपर काटा तथा बड़े वेगसे युद्धभूमिमें उच्च स्वर से गर्जना की ५६ शीघ्रता करनेवाले सहदेवने सुनहले पुंख के, दृढ़ शिलापर घिसे हुए सब कवच आदि को छेदनेवाले, श्रेष्ठ रीति से चलाये हुए भल्लसे उसके शिरको शरीर से जुदा करदिया ६० सुवर्ण से अलंकृत, सूर्य के समान प्रकाशमान सहदेवके बाणसे युद्धमें कटा हुआ शिर पृथ्वीपर गिरपड़ा ६१ क्रोधयुक्त पाण्डवोंने सुनहले पुंख के पैने फुर्तीले बाणसे उसके कटे हुए शिरको बहुत दूर फेंका वह कौरवों के अन्यायका मूल था ६२ आपके शूरवीर उस टूटे और पृथ्वी पर पड़े हुए, रुधिर में लिपटे शकुनी को देखकर भयसे पराक्रमहीन हो दिशाओं को भागे ६३ सूखे मुख, अचेत और गाण्डीवधनुष के शब्द से विदीर्ण, भयसे पीड़ित, टूटे और घायल रथ, घोड़े तथा हाथीवाले पदाती होकर दुर्योधनसमेत भागे ६४ हे भरतवंशिन्! इसके अनन्तर शकुनी को रथसे गिराकर, केशवजी समेत सेनाके लोगों को प्रसन्न करनेवाले अत्यन्त हर्षित अन्तःकरण पाण्डवों ने युद्ध में शंख बजाये ६५ तब सब प्रसन्न लोगों ने युद्ध में सहदेव की पूजा कर प्रशंसा की और कहा कि हे वीर! यह छली और दुरात्मा शकुनी प्रारब्ध से ही पुत्र समेत तुम्हारे हाथ से मारा गया ६६॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिशकुन्युलूकवधे एकोनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

तीसवां अध्याय।

संजय बोले, कि महाराज! इसके पीछे शकुनी के क्रोधयुक्त साथियों ने जीवन त्यागकर पाण्डवों को चारों ओर से रोका १ सहदेवकी विजय में दत्तचित्त अर्जुन ने और क्रोधयुक्त विषैले सर्प के समान दिखाई देनेवाले तेजस्वी भीमसेन ने शकुनी के सब साथियों को रोका २ अर्जुन ने गाण्डीवधनुष के द्वारा शक्ति, दुधारे, खड्ग और प्रास हाथ में रखनेवाले सहदेव के मारने के अभिलाषी लोगोंका संकल्प निष्फल किया ३ और भल्लों से उन सम्मुख दौड़नेवाले शूरवीरों के, शस्त्रधारी भुजाओं समेत, शिर भी काटे ४ तब वे निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। लोकवीर घूमनेवाले अर्जुन के हाथ से सब मारे

गये ५ इसके पीछे शत्रुओं का तपानेवाला, क्रोधयुक्त आपका पुत्र राजा दुर्योधन अपनी सेनाका नाश देखकर मरने से बचे हुए बहुत से रथ, हाथी, घोड़े और पदातियों के समूहों को इकट्ठाकर उनसे बोला ६-७ कि युद्ध में मित्रसमूहों समेत पाण्डवों को और सेना समेत धृष्टद्युम्न को भी मारकर शीघ्र लौटो ८ वे सब युद्धमें दुर्मद वीर उसके वचन को शिर से अंगीकार करके पाण्डवों के सम्मुख गये ९ पाण्डवों ने विषैले सर्प के समान बाणों से, शेष सम्मुख आनेवालों को घायल किया १० हे भरतर्षभ! एक मुहूर्त में ही वह सब सेना युद्ध में महात्माओं के हाथ से मारी गई और कोई अपना रक्षक नहीं पाया ११ वह शस्त्रधारी सेना भयभीत होकर नियत नहीं होती थी। चारों ओर दौड़नेवाले घोड़ों की धूलि से व्याप्त दिशा और विदिशा नहीं जानी गईं। पाण्डवीय सेनासे बहुत मनुष्यों ने निकलकर १२-१३ युद्ध में, एक मुहूर्त भर में ही आपकी सेनाके लोगों को मारा। हे भरतवंशिन्! तब आपकी वह सेना समाप्त होगई १४ हे प्रभो! आपके पुत्र की एकत्रित ग्यारह अक्षौहिणी सेना युद्ध में पाण्डव और सृञ्जयों के हाथ से मारी गई १५ हे राजन्! आपके उन हज़ारों महात्मा राजाओं में से अकेला राजा दुर्योधन अत्यन्त घायल दिखाई पड़ा १६ इसके पीछे सब दिशाओंको और सब शूरवीरों से रहित पृथ्वी को तथा युद्ध में प्रसन्नतापूर्वक अभीष्ट प्राप्त कर चारों ओर से गर्जनेवाले पाण्डवों को देख एवं उन महात्माओं के बाणोंके शब्द सुनकर १७-१८ दुर्योधन को मूर्च्छा हुई। फिर सेना और सवारियों से रहित दुर्योधन ने हटजाने का विचार किया १९ धृतराष्ट्र बोले, कि हे सूत! मेरी सेनाके मरने और डेरों के खाली करने पर पाण्डवों की सेना में क्या शेष रहा २० हे संजय! मेरे इस प्रश्न का उत्तर दो क्योंकि तुम वर्णन करने में बड़े सावधान और कुशल हो। उस समय मेरे अभागे पुत्र दुर्योधन ने सेना का नाश देखकर अकेले ने ही जो कुछ किया हो, सो कहो २१ संजय बोले, कि दो हज़ार सात सौ हाथी, पांच हज़ार घोड़े और दश हज़ार पदाती २२ पाण्डवों की बड़ी सेना में बाक़ी थे, जिसको कि धृष्टद्युम्न अलंकृत कियेथा २३ हे भरतर्षभ! रथियों में श्रेष्ठ अकेले राजा दुर्योधन ने युद्ध में अपना कोई साथी नहीं देखा २४ महाराज! ग्यारह अक्षौहिणी सेनाओं का स्वामी आपका पुत्र दुर्योधन उस प्रकार गर्जते हुए शत्रुओंको और अपनी सेनाकेनाशको देख-

कर अपने मृतक घोड़े छोड़कर युद्ध से पूर्व की ओर भागा २५—२६ और बड़ी तेजस्विनी अपनी गदा लेकर ह्रदको चला; फिर पैदल ही थोड़ी दूर जाकर २७ उसने धर्म के अभ्यासी महाबुद्धिमान् विदुरजी के वचन का स्मरण किया कि निश्चय ही पूर्व समय में बड़े ज्ञानी विदुरजी ने २८ युद्ध में हमलोगों का और अन्यान्य सब क्षत्रियों का नाश होना जान लिया था। हे राजन्! वह दुर्योधन इस प्रकार अधिक चिन्ता कर ह्रदमें प्रवेश करनेका अभिलाषी हो २६ सेनाका नाश देखकर शोकसे महादुःखी हुआ। महाराज! राजा धृतराष्ट्र इसके पीछे वे सब पाण्डव—जिनका अग्रवर्ती धृष्टद्युम्न था ३० अत्यन्त क्रोधित होकर आपकी सेनाके सम्मुख दौड़े। अर्जुन ने गाण्डीवधनुषके द्वारा उन सम्मुख गर्जनेवाले; शक्ति, दुधारा, खड्ग और प्रासों को हाथोंमें रखनेवाले शूरवीरों का ३१ सङ्कल्प निष्फल किया। उन सबको मन्त्री और बान्धवों समेत तीक्ष्ण बाणों से मारकर ३२ श्वेत घोड़ेवाले रथपर अर्जुन बहुत शोभित हुए। घोड़े, हाथी और रथोंसमेत सौबलके पुत्र शकुनी के मरनेपर ३३ आपकी सेना टूटे हुए महावन के समान होगई। वीर अश्वत्थामा, कृतवर्मा, गौतम कृपाचार्य और आपके पुत्र राजा दुर्योधन के सिवाय दूसरा जीता हुआ कोई महारथी देखने में न आया। फिर धृष्टद्युम्न मुझको देखकर हँसता हुआ सात्यकी से बोला ३४—३६ कि पकड़े हुए इससे क्या प्रयोजन है और जीते हुए से भी कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं है; तब महारथी सात्यकी धृष्टद्युम्न की बात सुन ३७ पैना खड्ग उठाकर मेरे मारने को उद्यत हुआ; तो बड़े ज्ञानी व्यासजी ने आकर उससे कहा कि ३८—४० संजय को जीता छोड़दो; इसको कभी न कभी मारना चाहिये। व्यासजी का वचन सुनकर, सात्यकी ने हाथ जोड़े और मुझको छोड़कर कहा, कि हे संजय! तुम कल्याण का साधन करो; तब मैं आज्ञा पा, कवच और शस्त्रोंको त्यागकर रुधिर से भरा हुआ सायंकाल के समय नगर की ओर चलदिया। एक कोस हट आनेवाले, हाथ में गदा लिये हुए ४१ अत्यन्त घायल राजा दुर्योधन को मैंने देखा। हे राजन्! उस समय वह नेत्रों में आंसू भरे मेरी ओर देखने को समर्थ नहीं हुआ ४२ इस प्रकार दुःखी वह मुझे देखकर ठहरा रहा और मैं भी युद्ध में शोच करनेवाले उस अकेले को देखकर ४३ बड़ा दुःखी हो एक मुहूर्त भर भी वार्तालाप करने में समर्थ नहीं हुआ। फिर मैंने अपने पकड़े जानेका सब वृत्तान्त उससे कहा ४४

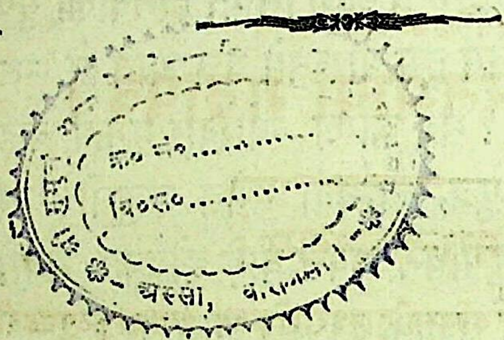
और व्यासजीकी कृपासे अपने जीवित छूट आने का वर्णन किया । तब उसने एक मुहूर्त ध्यान कर सचेत हो ४५ भाइयों समेत सब सेना का हाल मुझसे पूछा । अपने नेत्रों से देखनेवाले मैंने सब वृत्तान्त अर्थात् ४६ सब भाइयों का मरना और सेना का नाश होना वर्णन किया । हे राजन् ! निश्चय ही आपके तीन रथी बचे हैं ४७ चलते समय व्यासजीने यह वृत्तान्त मुझसे कहा है । तब लम्बी श्वासा लेकर और बारम्बार शोचकर ४८ आपके पुत्र ने मुझ को हाथ से स्पर्शकर कहा, कि हे संजय ! इस युद्ध में तुम्हारे सिवाय अब कोई जीता नहीं है ४९ यहां किसी दूसरे को नहीं देखता हूं और पाण्डव सहायतावाले हैं । हे संजय ! अब तुम ज्ञानरूपी नेत्रोंवाले महाराज धृतराष्ट्र से कहना कि आपका पुत्र दुर्योधन ह्रदमें प्रवेश कर गया । वह मित्र, पुत्र और भाइयों से रहित होगया ५०–५१ पाण्डवों से राज्य हरण होने पर मुझ सा कौन मनुष्य जीता रहसकता है ? यह वृत्तान्त और बड़े युद्धसे बचे हुए ५२ इस ह्रदके जलमें गुप्त अत्यन्त घायल जीते हुए मेरा वृत्त कह देना । महाराज ! संजय से ऐसा कहकर वह बड़े ह्रदमें प्रवेश कर गया ५३ ह्रदमें घुस कर राजाने अपनी मायासे जलको नियत किया । ह्रदमें उसके घुस जानेपर अकेले मैंने उस स्थानपर आने के अभिलाषी, थकी सवारीवाले तीन रथियों को देखा ५४ अर्थात् शारद्वत कृपाचार्य, रथियोंमें श्रेष्ठ वीर अश्वत्थामा ५५ और भोजवंशी कृतवर्मा–इन तीनोंको, बाणोंसे घायल, साथ साथ आनेवालोंको देखा । उन सबने मुझको देखकर शीघ्रही घोड़े दौड़ाये ५६ और समीप आकर मुझसे बोले कि हे संजय ! तू प्रारब्धसे जीता है; यह कहकर सबने आपके पुत्र राजा को पूछा ५७ कि हे संजय ! वह हमारा राजा दुर्योधन जीताहै ? तब मैंने राजाकी कुशलता कही ५८ और वे सब बातें भी उनसे कहीं; जो दुर्योधनने मुझसे कही थीं और वह ह्रद भी बताया जिसमें राजा छिपा था ५९ हे राजन् ! अश्वत्थामा ने मेरा वचन सुन उस बड़े ह्रदको देखकर दयासे विलाप किया ६० कि अहो धिक्कार है, जो वह राजा हमको जीता नहीं जानता है । उसके साथ होकर हम लोग शत्रुओं से युद्ध करनेमें समर्थ हैं ६१ रथियों में श्रेष्ठ वे महारथी वहां बहुत देर तक विलापकर और युद्धमें पाण्डवोंको देख भागे ६२ मरनेसे बचे हुए वे तीनों रथी कृपाचार्य के अच्छे अलंकृत रथमें मुझको बिठलाकर सेनाके निवास-स्थान में आये ६३ वहां सूर्यके अस्त होनेपर, भयभीत हो सब गुप्त आपके

पुत्रों का नाश सुनकर पुकारने लगे ६४ महाराज ! इसके पीछे स्त्रियों के रक्षक वृद्ध मनुष्य, रानी आदि को लेकर नगर को चले ६५ वहां सेनाका नाश सुनकर पुकारती और रोती हुई सब स्त्रियों के बड़े शब्द हुए ६६ हे राजन् ! बारम्बार शब्द करनेवाली उन स्त्रियों ने कुर्री पक्षी के समान अपने आर्त-शब्दोंसे पृथ्वीको शब्दायमान किया ६७ हे राजन् ! जहां पुकारती हुईं उन स्त्रियोंने उंगलियों और हाथोंसे अपने अपने शिर पीटे और शिरों के बाल नोचे ६८ वहां हाहाकार करके शब्द करने और छाती पीटनेवाली शोचती, पुकारती स्त्रियां रोनेलगीं ६९ इसके पीछे आंसुओं से गद्गद कण्ठ और अत्यन्त दुःखी (दुर्योधनके) प्रधान रानी आदि को लेकर नगरको चलदिये ७० हे राजन् ! हाथमें बेत लिये रक्षक लोग और द्वाराध्यक्ष मूल्यवान् उज्ज्वल शयन-सामग्री लेकर ७१ शीघ्रतासे नगरको गये। कितने ही मनुष्य खच्चरोंके रथोंपर सवार होकर ७२ अपनी अपनी स्त्रियों को लिये नगरको गये। महाराज ! जो स्त्रियां महलोंमें प्रथम कभी सूर्य से भी नहीं देखी गई थीं; उन स्त्रियों को पुरमें जाते हुए लोगोंने देखा। हे भरतर्षभ ! वे कोमल शरीरवाली स्त्रियां७३-७४ जिनके स्वजन बान्धव मारे गये, शीघ्र ही नगरको चलीं और गोपाल विपाल आदिक सब नगरकी ओर दौड़े ७५ भीमसेनके भयसे पीड़ित और भ्रान्तिसे युक्त मनुष्य चले। उनको भी बड़ा असह्य और कठिन भय उत्पन्न हुआ ७६ वे परस्पर देखते हुए नगरकी ओर दौड़े। इस प्रकार अत्यन्त भयानक भगोड़के होनेपर ७७ शोकसे अचेत युयुत्सुने समयानुसार चिन्ता की, कि युद्ध में भयानक पराक्रमवाले पाण्डवों ने ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके स्वामी दुर्योधनको जीत लिया। उसके भाई मारे गये और वे सब कौरव लोगभी—जिनके अग्रवर्ती भीष्म और द्रोणाचार्य थे—मारेगये ७८-७९ मैं अकेला प्रारब्ध और ईश्वरकी इच्छासे बचा हूं। सब डेरे आदिके लोग चारों ओरसे भागे ८० जिनके स्वामी मारेगये; वे कान्ति और शोभासे रहित, अपूर्वरूप दुःख से पीड़ित और भयसे व्याकुल-चक्षु इधर उधरसे ऐसे भागते हैं८१ जैसे,कि सिंहसे भयभीत मृग दशों दिशाओं को देखते हुए भागते हैं। दुर्योधनके बचे हुए प्रधान और सलाहकार ८२ राजकी स्त्रियोंको लेकर नगरकी ओर दौड़े। हे प्रभो ! मैं उनके साथ नगरमें पहुँच जानाही समयानुसार उचित जानता हूं। महाबाहु युयुत्सुने युधिष्ठिर और भीमसेनको जतलाकर यह प्रयोजन प्रकट किया ८३-८४ सदैव दयालु राजा

युधिष्ठिरने प्रसन्न हो मिलकर युयुत्सुको बिदा किया। तब उसने रथपर सवार होकर शीघ्र ही घोड़े दौड़ाये और भागतीहुई राजस्त्रियोंको वह पुरमें लेगया ८५-८६ सूर्य के अस्त होनेपर आंसुओं से पूर्णनेत्र और गद्गदकण्ठ युयुत्सु उन सबको साथ लिये शीघ्र ही हस्तिनापुरमें पहुँचा ८७-८८ उसने आर्द्रनेत्र, शोकसे व्याकुलचित्त, बड़े ज्ञानी राजाको और समीपसे निकलेहुए विदुरजीको देखा। सच्चे धैर्यवाले विदुरजी उस नम्रीभूत, आगे नियत होनेवाले, युयुत्सुसे बोले कि हे पुत्र! कौरवों के नाश होनेमें तुम प्रारब्धसे बच आये हो ८९ राजाके पहुँचे विना तुम यहां क्यों आगये? सब कारण ब्योरेवार मुझसे कहो ९० युयुत्सु बोला, कि हे तात! ज्ञाति, पुत्र, बान्धवों समेत शकुनीके मरनेपर बचे हुए परिवारका रखनेवाला राजा दुर्योधन अपने घोड़े छोड़कर, भयसे पूर्वकी ओर भाग गया। छावनी के लोग राजाके दूर चले जाने पर ९१-९२ भयसे व्याकुल हो सब नगर की ओर भागे। इसके पीछे प्रधान अधिकारी और नौकर चाकर लोग राजा दुर्योधन और दूसरे भाइयोंकी स्त्रियोंको ९३ सवारियों पर बिठलाकर सेनासे भागे। तब मैं केशवजी समेत राजा युधिष्ठिर से पूछकर ९४ दौड़ते हुए मनुष्यों की रक्षा करता हुआ हस्तिनापुरमें आया। युयुत्सुके वचन सुनकर ९५ सर्वधर्मज्ञ, बुद्धिमान् विदुरजी ने उसकी प्रशंसा की और कहा, कि यह सब समयके अनुसार है ९६ यह सब समय के अनुसार, योग्य है जो तुमने भरतवंशियों के नाश होनेपर दया से अपने कुल और धर्म की रक्षा की ९७ हे वीर! हम प्रारब्धसे वीरों के भयकारी इस युद्ध से बचकर पुर में आये हुए तुम्हें ऐसे देखते हैं जैसे कि सृष्टि सूर्य को देखती है ९८ हे पुत्र! लोभी, अदूरदर्शी, बहुत समझाये हुए, दैवसे घातित बुद्धि, अन्धे राजा धृतराष्ट्र की लाठी ९९ तुम्हीं अकेले उस आपत्तिसे बचकर सब प्रकार जीवित हो। अब तुम यहां रहकर प्रातःकाल युधिष्ठिर के पास जाना। आंसू भरे हुए विदुरजी ने इतनी बात कहकर और युयुत्सु से पूछकर राजमहल में प्रवेश किया १००-१०१ पुरवासियोंने भी बड़े दुःख और हाय हाय के शब्द किये। प्रसन्नता और शोभासे रहित, अप्रकाश टूटे बागवाले स्थान के समान १०२ वह पुर उजाड़ और दुःखरूप हुआ। सब धर्मों के ज्ञाता विदुरजी अन्तरात्मा समेत व्याकुल हो १०३ श्वास लेते हुए धीरे धीरे नगर में पहुँचे। हे राजन्! युयुत्सु भी उस रात्रिको अपने घरमेंही रहा १०४ वह महादुःखी, भरतवंशियों के परस्पर

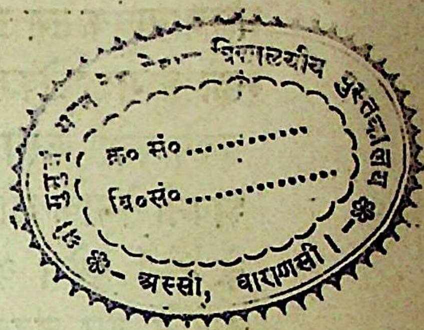
नाश को शोचता हुआ अपने लोगों से प्रशंसा पाकर भी आनन्दयुक्त नहीं हुआ १०५ ॥

इति श्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिदुर्योधनहृदप्रवेशे
युयुत्सुगमने त्रिंशोऽध्यायः ३० ॥









श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः।

महाभारतभाषा गदापर्व।

मंगलाचरणम्।

श्लोक॥ नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिम्पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम्॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणम्पापाटवीपावकं स्वाराण्मस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ या भाति वीणामिव वादयन्ती महाकवीनां वदनारविन्दे॥ सा शारदा शारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभा नः प्रतिभां व्यनक्तु २ पाण्डवानां यशोवर्ष्म सकृष्णमपि निर्मलम्॥ व्यधायि भारतं येन तं वन्दे बादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यते भूतलमद्य येन॥ तं शारदालब्धवरप्रसादं वन्दे गुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः॥ कथानुगं रम्यगदाह्वपर्वभाषानुवादं विदधाति सम्यक् ५॥

पहिला अध्याय।

श्रीनारायणजी, नरोत्तम नर और श्रीसरस्वती देवीको नमस्कार कर इतिहास वर्णन करता हूं। धृतराष्ट्र बोले, कि हे संजय! युद्धभूमि में पाण्डवोंके हाथसे सब सेनाके मरनेपर मेरी बचीहुई सेनाओंने क्या किया १ उस समय पराक्रमी कृतवर्मा, कृपाचार्य, अश्वत्थामा और निर्बुद्धि राजा दुर्योधन ने क्या किया २ संजय ने कहा, कि महात्मा क्षत्रियों की स्त्रियों के शीघ्र चलेजाने, भागजाने और डेरोंके खाली होनेपर विजयके अभिलाषी अत्यन्त व्याकुल तीनों रथियों ने ३ विजयी पाण्डवों के शब्द सुनकर और सायंकालके समय उजाड़ डेरे देख ४ वहां निवास स्वीकार नहीं किया। वहांसे चलकर फिर वे ह्रदके ही समीप गये। धर्मात्मा युधिष्ठिर भी भाइयोंसमेत प्रसन्नचित्त युद्धमें ५ दुर्योधन को मारने की इच्छासे चारों ओर भ्रमण करने लगे। हे राजन्! फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त, आपके पुत्रको जीतनेके अभिलाषी पाण्डव उसको खोजने लगे ६

विचारपूर्वक उन उपायसे ढूंढ़नेवालों ने राजाको नहीं देखा। वह तो बड़े वेगसे हाथमें गदा लेकर दूर चला गया ७ और अपनी मायासे जलको रोककर उस ह्रदमें प्रवेश करगया था। जब सब पाण्डवोंकी सवारियां बहुत थक गईं ८ तब अपनी सेनाके लोगोंसमेत डेरेमें नियत हुए। कृपाचार्य, अश्वत्थामा ९ पाण्डवों के डेरेमें प्रवेश करने पर बड़ी सावधानी से छिप कर उस ह्रदके पास गये। उन्होंने उस ह्रदको—जहांपर राजा सोता था—पाकर १० जलमें सोनेवाले अजेय राजा दुर्योधन से कहा कि "हे राजन्! उठो; हमारे साथ होकर युधिष्ठिर से युद्ध करो ११ और उसे जीतकर पृथ्वीको भोगो अथवा मृतक होकर स्वर्ग पाओ। हे दुर्योधन! तुमने भी उनकी सब सेना मारी १२ और वहां अब जो सेनाके लोग बाक़ी हैं; उनको अत्यन्त घायल किया। हे राजन्! वे आपका वेग सहने में समर्थ नहीं हैं १३ क्योंकि तुम हमसे रक्षित होकर लड़ोगे। इस कारण हे भरतवंशिन्! आप उठें"। तब दुर्योधन बोला, कि प्रारब्धसे इस प्रकार पाण्डव और कौरवोंके मनुष्योंका नाश होनेपर युद्धसे बचे १४ और जीतेहुए तुम नरोत्तमोंको देखता हूं। विश्राम करनेवाले और थकावटसे रहित हम सब लोग मिलकर विजय करेंगे १५ पर आप थके हुए हैं; हम अत्यन्त घायल हैं और उनकी सेना बड़ी है। इस हेतु से मैं युद्धको स्वीकार नहीं करता १६ हे वीरलोगो! यह अपूर्व बात नहीं है जो तुम्हारा चित्त बड़ा उत्साहयुक्त है और हममें बड़ा सामर्थ्य है परन्तु यह पराक्रम का समय नहीं है १७ अब मैं एक रात्रि विश्राम कर आप लोगोंको साथ ले प्रातःकाल युद्धमें शत्रुओं से लड़ूंगा; इसमें मुझको संशय नहीं है १८ संजय ने कहा, कि इस प्रकार दुर्योधनके वचन सुनकर अश्वत्थामाजी उस युद्धदुर्मद राजासे बोले कि हे राजन्! उठो; आपका भला हो। हम शत्रुओंको जीतेंगे १९ हे राजेन्द्र! अब मैं यज्ञ, बावड़ी आदिक सुकर्म और दान, सत्यता तथा विजयकी शपथ खाता हूं कि सोमकों को मारूंगा २० मैं यज्ञ करनेवाले सज्जनोंके योग्य फलों को न पाऊं जो इस रात्रिके बीतनेपर युद्धमें शत्रुओंको न मारूं २१ हे समर्थ! सब पाञ्चालोंको मारे विना मैं कवच नहीं उतारूंगा; यह तुमसे सत्यही कहता हूं २२ उनके वार्तालाप करते समय मांसके भार से थकेहुए बधिक लोग दैवयोग से उस स्थानपर आ पहुँचे २३ हे समर्थ, महाराज! वे बधिक सदैव बड़ी भक्तिसे मांसों के भार भीमसेन के पास ले आते थे २४ परस्पर मिले हुए और वहांपर

वर्तमान उन बधिकोंने एकान्त में उनकी और दुर्योधनकी सब बातें सुन लीं २५ उस कौरवके युद्धसे अनिच्छा प्रकट करने पर उन युद्धाभिलाषी बड़े धनुषधारियोंने युद्धके निमित्त बड़ा हठ किया २६ हे राजेन्द्र ! उन बधिकों ने कौरवों के महारथियों को उस प्रकार देख और युद्धके अनिच्छुक, ह्रदमें प्रविष्ट राजाको जानकर २७ उनकी और जल में छिपे हुए राजाकी बातें सुनकर जान लिया कि दुर्योधन जलमें छिपा है २८ दैवकी इच्छा से समीप जाने वाले उन बधिकों से राजाको खोजनेवाले पाण्डवोंने आपके पुत्रको पूछा २६ हे राजन् ! मृगोंके मारनेवाले बधिक पाण्डवों के वचनका स्मरण कर धीरे से परस्पर बोले ३० कि जो हम दुर्योधन का पता बतादेंगे तो पाण्डव हमें धन देंगे। राजा दुर्योधन इस जल में गुप्त है; इस हेतु हम सब उस जल में सोनेवाले क्रोधयुक्त दुर्योधन को प्रकट करने के लिये राजा युधिष्ठिर के पास चलें ३१-३२ हम सब इस जल में सोनेवाले धृतराष्ट्र के पुत्रको बुद्धिमान्, धनी भीमसेन से वर्णन करें ३३ इसे सुनकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त भीमसेन हमको बहुत धन देंगे; हमें इस सूखे और आघात से उत्पन्न कठिन मांस से क्या लाभ है ३४ तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त धनके अभिलाषी वे बधिक इस प्रकार सलाहकर मांस के बोझ लिये हुए डेरे में गये ३५ महाराज ! लक्ष्य को प्राप्त, प्रहारकर्ता, युद्ध में नियत, दुर्योधनको न देखनेवाले ३६ और उस पापी के छलके अन्तपर पहुँचनेके अभिलाषी पाण्डवों ने उस युद्धभूमिमें चारों ओर दूत भेजे ३७ तब धर्मराजकी सेना के लोगों ने एक साथ आकर दुर्योधन का गुप्त होना बतलाया । हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ ! उन दूतों के वचन सुनकर राजाको कठिन चिन्ता हुई ३८-३६ हे भरतर्षभ, समर्थ, धृतराष्ट्र ! इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले वे बधिक वहां से चलकर दुःखीचित्त, पाण्डवों के ४० डेरेमें आये और राजा दुर्योधन को देखनेसे प्रसन्नचित्त वे रोकेजाने पर भी भीमसेन के देखतेहुए प्रवेश करगये ४१ वहां उन्होंने बलवान् पाण्डव भीमसेन को पाकर वह सब वृत्तान्त, जो वहां सुनाथा, कहदिया ४२ हे राजन् ! शत्रुके तपाने वाले भीमसेनने उनको बहुतसा धन देकर सब वृत्तान्त धर्मराजको सुनाया ४३ हे राजन् ! दुर्योधनका पता बधिकों के कहने से मुझे विदित हुआ है । जिसके लिये आप दुःख मानते हैं वह जल को स्थिर करके सोता है ४४ हे राजन् ! कुन्ती के पुत्र, अजातशत्रु युधिष्ठिर भीमसेनके उस प्रिय वचनको

सुन सगे भाइयों समेत बहुत प्रसन्न होकर ४५ ह्रद के जलमें प्रवेश करनेवाले, बड़े धनुषधारी दुर्योधन को जान श्रीकृष्णजी को आगे करके शीघ्रता से वहां पहुँचे ४६ अत्यन्त प्रसन्न सब पाण्डव और पाञ्चालों के कलकल शब्द हुए ४७ हे भरतर्षभ ! इसके पीछे सिंहनाद तथा अन्य शब्द भी हुए। हे राजन् ! शीघ्रता करनेवाले क्षत्रिय व्यासजी के ह्रदको गये ४८ वहां अत्यन्त प्रसन्नमूर्ति सोमक युद्ध में चारों ओर से बारम्बार पुकार उठे कि पापी दुर्योधनको जान लिया और देखा है ४९ हे पृथ्वीनाथ ! वहां उन शीघ्र चलनेवाले वेगवान् रथियोंके कठिन शब्द स्वर्ग को स्पर्श करनेवाले हुए ५० वे थकी सवारीवाले, दुर्योधन के चाहने वाले, बड़ी शीघ्रता करनेवाले क्षत्रिय जहां तहां राजा युधिष्ठिर के पीछे चले ५१ अर्जुन, भीमसेन, नकुल, सहदेव, पाञ्चाल देशका राजा धृष्टद्युम्न, अजेय शिखण्डी ५२ उत्तमौजा, युधामन्यु, महारथी सात्यकी और पाञ्चालों के शेष रथी, द्रौपदीके पुत्र ५३ सब घोड़े हाथी और सैकड़ों पदाती पीछे चले। महाराज ! इसके पीछे प्रतापी धर्मराज ५४ व्यासजी के उस घोर ह्रदपर पहुँचे जिसमें कि दुर्योधन था और जो शीतल निर्मल जलसे पूर्ण, बड़ा प्रिय दूसरे सागरके समान था ५५ उसमें आपका पुत्र मायासे जलको रोके हुए था। हे भरतवंशिन् ! वह बड़ी अपूर्व बुद्धिवाला और दैवयोगसे ५६ जल में वर्तमान शूरवीरों का मारनेवाला था। हे प्रभु, महाराज धृतराष्ट्र ! वह गदाधारी राजा दुर्योधन किसी मनुष्यको मिल न सकता था ५७ जलमें वर्तमान राजा दुर्योधनने बादलों की गर्जनाके समान कठिन शब्द सुना ५८ हे राजेन्द्र ! राजा युधिष्ठिर अपने सगे भाइयों समेत आपके पुत्र को मारने के लिये उस ह्रदपर ५९ शंख और रथनेमियों के बड़े शब्द समेत बहुत धूलि उड़ाते और पृथ्वी को भी कँपाते हुए आपहुँचे ६० महारथी कृतवर्मा, कृपाचार्य और अश्वत्थामा, युधिष्ठिर की सेना को देखकर राजा से बोले ६१ कि जबतक अत्यन्त प्रसन्नचित्त विजय से शोभा पानेवाले पाण्डव यहां आते हैं तबतक हमको आप यहांसे हट जाने की आज्ञा दें ६२ हे प्रभो ! तब दुर्योधनने उन वेगवानोंकी बात सुनकर 'बहुत अच्छा' कहा और माया से जलको फिर रोकदिया ६३ महाराज ! फिर शोक से पूर्ण कृपाचार्य आदिक रथी राजाकी आज्ञा से दूर चले गये ६४ हे श्रेष्ठ ! अत्यन्त थके हुए तीनों दूर मार्गपर जाकर एक वट वृक्षके नीचे राजाके विषय में सोचते हुए ठहर गये ६५ बड़ा बलवान् दुर्योधन जलको रोककर सोगया

और युद्ध के अभिलाषी पाण्डव भी उस स्थानपर पहुँच गये ६६ हे राजन् ! उन कृपाचार्य आदिक रथियों नें इस प्रकार चिन्ता करते हुए कि किस प्रकार से युद्ध होगा, राजा कैसे होगा और कैसे पाण्डव लोग उस कौरव दुर्योधनको पावेंगे; रथोंसे घोड़े छोड़कर वहां निवास किया ६७–६८ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिदुर्योधनान्वेषणे प्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ।

संजय बोले, कि उन तीनों रथियों के दूर चले जाने पर पाण्डवों ने उस ह्रदको पाया जिसमें दुर्योधन था १ हे कौरवों में श्रेष्ठ ! तब दुर्योधन से अचल किये गये व्यास ह्रदको और जलमें सोनेवाले राजाको देखकर २ कौरवनन्दन युधिष्ठिर वासुदेवजीसे बोले, कि जलमें संयुक्त दुर्योधनकी इस मायाको देखो ३ कि जलको रोककर सोता है । इसको मनुष्य से भय नहीं है । दैवी माया को प्रकट कर जल में वर्तमान ४ छलसंयुक्त बुद्धिवाला दुर्योधन मेरे हाथ से अब जीता नहीं बचसकता । हे माधवजी ! जो वज्रधारी इन्द्र भी युद्धमें इसकी सहायता करें ५ तौभी युद्धमें इसको सबलोग मरा हुआ ही देखेंगे । वासुदेव जी बोले, कि हे भरतवंशिन् ! माया करनेवालेकी इस माया को मायासे ही नाश करो ६ मायावी पुरुष मायाके द्वारा ही मारने योग्य है । हे युधिष्ठिर ! यह सत्य है कि यह राजा दुर्योधन बहुत उपाय और कर्मोंसे जलमें माया करके सोता है ७ हे भरतर्षभ ! तुम इस छली को मारो । इन्द्र ने भी कर्म और उपायों से दैत्य, दानवोंको मारा है ८ महात्मा इन्द्रके हाथसे बहुत कर्म और उपायों के द्वारा ही राजा बलि बांधा गया और बड़े बड़े कर्म तथा उद्योगों से महा-असुर हिरण्याक्ष ९ और हिरण्यकशिपु दोनों भाई मारे गये । हे राजन् ! वृत्रासुर भी कर्मों से ही मारा गया १० हे राजन् ! इसी प्रकार पुलस्त्यका पुत्र रावण राक्षस अपने सब भाई और साथियों समेत श्रीरामचन्द्रजी के हाथसे मारा गया ११ अब तुम भी इसीप्रकार पराक्रम करो । हे समर्थ, राजा युधिष्ठिर ! उसी प्रकार कर्म और उपाय करने से दोनों प्राचीन राक्षस मेरे हाथ से मारे गये १२ बड़ा दैत्य तारक और पराक्रमी विप्रचित्ति, वातापी, इल्वल और त्रिशिरा भी मारे गये १३ इसी प्रकार सुन्द, उपसुन्द असुर भी कर्मसे ही मारे गये । हे समर्थ ! इन्द्र भी कर्म और उपायों से ही स्वर्ग भोगता है १४ महाराज, युधिष्ठिर !

कर्म प्रबल है; दूसरा कुछ प्रबल नहीं है, दैत्य, दानव, राक्षस और राजा लोग १५ कर्म और उपायों से ही मारे गये । इसलिये अच्छी रीति से कर्मको करो। संजय बोले, कि महाराज, धृतराष्ट्र ! वासुदेवजीसे समझाये हुए तेजव्रत, कुन्ती के पुत्र पाण्डव युधिष्ठिर ने हँसकर १६ जल में नियत बड़े बलवान् आपके पुत्रसे कहा कि १७ हे दुर्योधन ! तुमने जल में यह कर्म किस लिये किया ? हे राजन् ! सब क्षत्रियों के कुलों को और अपने कुलको मरवाकर १८ अब अपने जीवन की चाह से ह्रदमें घुसे बैठे हो । हे दुर्योधन ! उठो, हमारे साथ युद्ध करो १९ हे नरोत्तम ! वह तुम्हारा अभिमान और अहम्भाव कहां गया जो भयभीत् होकर तुम जलको रोके हुए छिपे हो २० सब लोग तुमको सभा में शूर कहते हैं; जलमें सोनेवाले तुम्हारी उस शूरताको मैं निरर्थक मानताहूं २१ हे राजन् ! उठो, युद्ध करो । कुलीन क्षत्रिय हो और अधिकतर कौरववंशी हो; अपने कुल और जन्मको याद करो २२ कौरवकुलमें अपना जन्म कहते हुए तुम युद्धसे भयभीत होकर जलमें क्यों छिपे हो २३ युद्धका और राज्यका त्याग अथवा स्वर्ग के निमित्त उपाय न करना प्राचीन धर्म नहीं है । हे राजन् ! युद्धसे भागना नीचों का कर्म है । यह स्वर्ग देनेवाला नहीं है २४ निश्चय ही युद्धमें पार न पाकर किसी रीति से जीवन के अभिलाषी हो तुम इन पड़े हुए पुत्र, भाई और वृद्धपुरुषोंको देखकर २५ नातेदार, समानवय, मामा और बान्धवोंको मरवाकर अब कैसे ह्रदमें पड़ेहो २६ अपने को शूर मानते हो परन्तु तुम शूर नहीं हो । हे दुर्बुद्धे ! सब लोगोंके समक्ष तुम मिथ्या कहते हो कि मैं शूर हूं २७ शत्रुओं को देखकर शूरवीर किसी प्रकार भी नहीं भागते हैं । तुम जिस वृत्ति से युद्ध त्यागते हो २८ वह हमें बतलाओ । अब तुम उठो; युद्ध करो और अपना भय दूर करो । हे दुर्योधन ! सब भाई और सेना को मरवाकर युद्ध करो २९ और क्षत्रियधर्म में नियत होकर धर्म करने की इच्छा से तुम सरीखे राजा को अब जीवन की इच्छा न करनी चाहिये ३० हे भरतवंशिन् ! कर्ण और सौबलके पुत्र शकुनी के भरोसे अपनेको सदैव जीनेवाला माना; इस भूलसे जो तुमने अपनेको नहीं जाना ३१ वह पाप बड़ा दुःखरूप हुआ । सम्मुख होकर युद्ध करो । तुमसा राजा होकर, मोहसे किस प्रकार भागना अङ्गीकार करे ३२ हे सुयोधन ! तुम्हारी वह वीरता और अहङ्कार कहां गया ? वह पराक्रम और बड़ी गर्जना कहां गई ३३ तुम्हारी अस्त्रज्ञता कहां गई ? तड़ागमें

क्यों सोते हो ? हे भरतवंशिन् ! तुम उठकर क्षत्रियधर्म से युद्ध करो ३४ हमको जीतकर इस पृथ्वी पर राज्य करो अथवा हमारे हाथ से मरकर पृथ्वी पर सोओगे ३५ हे महारथिन् ! ईश्वरने यही तुम्हारा उत्तमधर्म उत्पन्न किया है; इसको विधिपूर्वक करो और राजा होजाओ । संजय बोले, कि महाराज ! बुद्धिमान् धर्मराजके वचन सुनकर जलमें नियत आपका पुत्र बोला कि ३६-३७ हे महाबाहो ! यह अपूर्व बात नहीं है जो जीवधारी में भयका प्रवेश हो । हे भरतवंशिन् ! मैं जीव के भय से डरा हुआ नहीं बैठा हूं ३८ किन्तु रथ और तूणीर से रहित, मृतक सारथी और साथवाला, अपने समूह से पृथक् युद्धमें अकेला होकर मैंने विश्राम करना अङ्गीकार कियाहै ३९ हे राजन् ! प्राणों के भयसे या व्याकुलता से मैं इस जलमें नहीं घुसा हूं । मैंने केवल थकावट से यह काम किया है ४० हे कुन्ती के पुत्र ! तुम विश्राम करो और तुम्हारे साथी भी विश्राम करें । मैं इस जलसे निकलकर युद्धमें तुम सबसे लडूंगा ४१ युधिष्ठिर ने कहा; हम विश्राम कर चुके हैं और बड़ी देरसे तुमको ढूंढ़ते फिरते हैं । हे सुयोधन ! अब उठो और यहां युद्ध करो ४२ युद्ध में पाण्डवों को मारकर वृद्धियुक्त राज्य पाओ अथवा युद्ध में हमारे हाथ से मरकर वीरलोक को पाओगे ४३ दुर्योधन बोले, कि हे कौरवनन्दन, राजा युधिष्ठिर ! मैं जिन कौरवों के लिये राज्य चाहता था; वे सब मेरे भाई मारे गये ४४ मैं रत्नों से रहित, मृतक उत्तम क्षत्रियोंवाली विधवा स्त्री के समान इस पृथ्वी को भोगनेका उत्साह नहीं करता ४५ हे भरतर्षभ, युधिष्ठिर ! मैं अब भी पाण्डवों समेत पाञ्चालों का उत्साह तोड़कर तुमको जीतनेकी आशा करता हूं ४६ अब मैं द्रोणाचार्य, कर्ण और भीष्मपितामह के मरनेपर किसी समय भी युद्ध से अपना कोई कार्य नहीं मानता ४७ हे राजन् ! अब यह सब पृथ्वी तुम्हारी हो । अपने साथियों से रहित होकर कौनसा राजा राज्यपर शासन करनेकी इच्छा करेगा ४८ उस प्रकारके मित्र, पुत्र, भाइयों और वृद्धोंको भी मारकर और आप लोगोंसे राज्यहरण होनेपर मुझसा कौन मनुष्य जीता रहेगा ४९ हे भरतवंशिन् ! मैं मृगचर्मधारी होकर वनको जाऊंगा । जिसके पक्षवाले लोग मारे गये, उस राज्य में मेरी प्रीति नहीं है ५० हे राजन् ! जिसमें बहुत बान्धव, घोड़े और हाथी आदिक मारेगये; वह सब पृथ्वी तुम्हारी है । इसको तुम विगतज्वर होकर भोगो ५१ मैं मृगचर्मोंको धारण कर वनको जाऊंगा । हे समर्थ ! भाई, पुत्रोंसे वियुक्त मेरी

अब जीवन में इच्छा नहीं है ५२ हे राजेन्द्र ! तुम जाओ और इस पृथ्वी को सुखपूर्वक भोगो; जिसके स्वामी और शूरवीर मारे गये; जिसमें रत्नों का नाश हुआ और गढ़ प्रकोष्ठादिक जीर्ण होगये ५३ संजय ने कहा, कि बड़ा यशस्वी युधिष्ठिर ऐसे दीन वचन सुनकर जल में निवास करनेवाले आपके पुत्र दुर्योधन से बोले कि ५४ हे भाई ! जलमें नियत होकर तुम पीड़ा के प्रलाप मत कहो । हे राजन् ! पक्षीके समान निवास करना मेरे चित्तमें नहीं है ५५ हे सुयोधन ! जो तुम देनेके निमित्त समर्थ भी हो; तौभी मैं तुम्हारी दी हुई पृथ्वीपर राज्यशासन करनेकी इच्छा नहीं करता ५६ तुम्हारी दी हुई इस पृथ्वी को मैं अधर्म से नहीं लूंगा । क्योंकि दान लेना क्षत्रिय का धर्म नहीं कहा गया है ५७ मैं तुम्हारी दी हुई इस सम्पूर्ण पृथ्वीको नहीं चाहता । मैं तुम्हें युद्ध में जीतकर ही इस पृथ्वी को भोगूंगा ५८ हे राजन् ! तुम स्वामी न होकर पृथ्वीको कैसे देना चाहते हो ? तुमने उस समय कुलकी शान्ति के लिये धर्मसे मांगनेवाले हमलोगों को यह पृथ्वी क्यों नहीं दी ? प्रथम बड़े बलवान् श्रीकृष्णजी को उत्तर देकर ५९-६० अब तुम क्यों देते हो ? तुम्हारे चित्तकी भ्रान्ति क्या है ? कौन पराजय होनेवाला राजा पृथ्वी देना चाहेगा ६१ हे कौरवनन्दन ! अब तुम पृथ्वी देनेके अधिकारी नहीं हो और न बलसे लेने में ही समर्थ हो फिर कैसे देना चाहते हो ? मुझको युद्धमें जीतकर इस पृथ्वीका पालन करो ६२ हे भरतवंशिन् ! सुईके अग्रभागभर भी जो पृथ्वी तुमने हमको पूर्व समय में नहीं दी; अब उस सब पृथ्वीको कैसे दिये डालते हो ६३-६४ प्रथम तो सुईके अग्रभागके समान भी पृथ्वी नहीं दी; अब उसी पृथ्वीको कैसे छोड़े देते हो ? इस प्रकारका ऐश्वर्य पाकर और इस पृथ्वीपर राज्य करके ६५ कौनसा अज्ञानी अपने शत्रुको वही पृथ्वी देनेका निश्चय करेगा ? तुम महाअज्ञानी होकर निरे अज्ञान से ही सावधान नहीं होते हो ६६ पृथ्वी देने के अभिलाषी होकर भी तुम जीवित नहीं बच सकते । तुम हमको जीतकर इस पृथ्वीपर राज्य करो ६७ अथवा हमारे हाथसे मरकर उत्तम लोकोंको जाओ । हे राजन् ! निश्चय ही मेरे और तुम्हारे जीते रहने पर हम दोनोंके इच्छानुसार सब जीवधारियों को सन्देह होगा । हे दुर्बुद्धे ! तुम्हारा जीवन मुझमें है ६८-६९ मैं जीता रहूंगा परन्तु तुम जीते रहने में समर्थ नहीं हो । हे राजन् ! तुमने हमारे नाश करने में बड़े बड़े उपाय किये ७० विषधर सर्पोंके विषसे जल में डुबोनेसे

और राज्य छीन लेकर तुमने हमारा निरादर किया ७१ अयोग्य, अप्रिय वचनों और द्रौपदी को खींचने से पीड़ित किया । हे पापिन् ! इस कारण तू जीता हुआ नहीं बचसकता ७२ उठ, उठ, युद्धकर; इसीसे कल्याण होगा । हे राजन् ! उन वीरोंने वहां इसप्रकार विजययुक्त नानाप्रकारके वचन बारम्बार कहे ७३ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ।

धृतराष्ट्र बोले, कि शत्रुओं के तपानेवाले, स्वभाव से क्रोधी, मेरे पुत्र वीर राजा दुर्योधनकी इसप्रकार के कठोर वचन सुनने से कैसी दशा हुई १ उस ने पहले कभी निन्दित और अप्रतिष्ठित वचन नहीं सुने । वह राजा होने से सबलोकोंका माननीय हुआ २ जिसके अभिमानसे छत्रकी छाया भी धूप से रक्षा करने के कारण दुःखके निमित्त होती थी; वह ऐसे वचनों को कैसे सह सकताहै ३ हे संजय ! तेरे समक्ष यह सम्पूर्ण पृथ्वी म्लेच्छ और आटविकाओं समेत जिसकी प्रसन्नतासे सजीव रहती थी, वह पाण्डवों से अधिकतर घुड़का हुआ निर्जन वनमें अपने नौकरों से रहित और शत्रुओंसे घिरा हुआ था ४–५ हे संजय ! मुझे बतलाओ, कि उसने पाण्डवोंसे विजयसंयुक्त कटु वचन बारम्बार सुनकर क्या कहा ६ संजय बोले, कि हे राजेन्द्र ! तब भाइयों समेत युधिष्ठिरसे घुड़के हुए जलमें नियत और आपत्तिग्रस्त आपके पुत्र राजा दुर्योधनने ७ कटुवचनों को सुना तब वह बारम्बार लम्बी उष्ण श्वास लेकर हाथोंकी भी कँपाता हुआ जल से बाहर निकला और युद्ध के निमित्त चित्त करके राजा युधिष्ठिर से बोला कि ८–९ हे पाण्डवलोगो ! तुम सब रथ, घोड़े और मित्रों समेत हो पर मैं अकेला, थका हुआ, विरथ और मृतक सवारी वाला १० और अशस्त्र होकर शस्त्रधारी बहुतसे रथसवार शूरवीरोंसे संयुक्त आप लोगों से लड़ने का उत्साह कैसे करसकता हूं । हे युधिष्ठिर ! तुम एक एक होकर मेरे साथ युद्ध करो । युद्धमें एक मनुष्य बहुतों के साथ न्यायसे लड़ने योग्य नहीं है ११–१२ अधिकतर कवच से रहित, थका हुआ, आपत्तिग्रस्त, अत्यन्त घायल, मृतक सवारी और सेनावालाहूं १३ हे राजन् ! मुझको तुमसे भय नहीं है । पाण्डव भीमसेन, अर्जुन, वासुदेवजी और पाञ्चालोंसे भी भय नहीं है १४ नकुल, सहदेव, सात्यकी से और आपकी सेना के अन्यान्य

लोगों से भी भय नहीं है । युद्ध में क्रोधयुक्त होकर मैं अकेला ही तुम सबको रोकूंगा १५ हे युधिष्ठिर ! अच्छे लोगों की शुभ कीर्ति धर्म का मूल रखनेवाली है । मैं यहां धर्म और कीर्तिका पालन करता हुआ कहता हूं कि १६ मैं उठकर तुम सबके सम्मुख युद्धमें ऐसे लड़ूंगा जैसे कि वर्षकी समाप्तिमें सब ऋतुओं के सम्मुख होकर वर्षका युद्ध होता है १७ अब शस्त्रों से रहित, विरथ होकर भी रथ-घोड़ेवाले तुम सबका वैसेही नाश करूंगा जैसे कि रात्रि बीतने पर सब नक्षत्रोंको सूर्य नष्ट करदेता है । हे पाण्डवलोगो ! नियत होजाओ, मैं तुम सबका अपने तेजसे नाश करूंगा । अब मैं यशस्वी क्षत्रियोंसे अनृणता पाऊंगा १८–१६ हे भरतर्षभ ! अब तुमको सब भाइयों समेत मारकर बाह्लीक, द्रोणाचार्य, भीष्म, महात्मा कर्ण, शूर जयद्रथ २० मद्रके राजा शल्य, भूरिश्रवा, अपने पुत्र, सौबलके पुत्र शकुनी, मित्र, शुभचिन्तक और बान्धवों के ऋण से मुक्त होऊंगा । वह राजा इतना कहकर मौन होगया २१–२२ युधिष्ठिर बोले, कि हे सुयोधन ! तुम भी प्रारब्ध से क्षत्रियधर्म को जानते हो । हे महाबाहो ! प्रारब्ध ही से तुम्हारी बुद्धि युद्धके लिये वर्तमान है २३ हे कौरव ! प्रारब्धसे ही शूर होकर तुम युद्धको जानते हो । जो अकेले होकर तुम हम सब से लड़ना चाहतेहो २४ तो जो शस्त्र तुम्हें अंगीकृतहो; उसे ही लेकर, चाहें जिस अकेले से भिड़कर युद्ध करो । हम सब तमाशा देखने को खड़े हैं २५ हे वीर ! अब फिर मैं तुम्हारे इस अभीष्ट को देता हूं । हम पांचों में से किसी एक को मारकर तुम्हारा राज्य हो अथवा मरकर तुम स्वर्ग पाओ २६ दुर्योधन बोला कि जो अब युद्ध में लड़ने को एक शूर मुझे देते हो तो आपके मतसे शस्त्रोंमें से यह गदा भी चाही गई २७ एकको मारकर ही जो राज्यके मिलने न मिलनेकी प्रतिज्ञा है तो तुममेंसे एक शूर, जो मुझको योग्य मानता हो, वह पदाती होकर गदाके द्वारा मुझसे युद्ध करे २८ प्रथम स्थान स्थान पर रथोंके विचित्र युद्ध जारी हुए । अब यहां गदाका अपूर्व और बड़ा युद्ध हो २९ मनुष्य अस्त्रोंकी भी रचना करना चाहते हैं; अब तुम्हारी बुद्धिसे युद्धों की भी रचना हो ३० हे महाबाहो ! अब मैं गदासे तुम्हें, छोटे भाइयोंसमेत जीतूंगा । पाञ्चाल, सृञ्जयआदि तुम्हारी सेनाके अन्यान्य लोगों को भी जीतूंगा । हे युधिष्ठिर ! कभी इन्द्रसे भी मुझे भय नहीं है ३१ युधिष्ठिर बोले, कि हे गान्धारी के पुत्र, सुयोधन ! उठ और मुझसे युद्ध कर । बलवान् और अकेला युद्ध में

गदाके द्वारा एकके साथ भिड़कर ३२ शूर होजा और हे गान्धारीके पुत्र ! अच्छी सावधानी से युद्ध कर । अब जो इन्द्र भी तेरी सहायता करें तोभी तेरा जीवन नहीं है ३३ संजय बोले, कि जलके मध्यवर्ती सर्पके समान महाश्वास लेनेवाले आपके पुत्रसे यह बात न सही गई ३४ हे राजन् ! उस प्रकारके वचन-रूपी कोड़ों से घायल दुर्योधन ने उन वचनोंको ऐसे नहीं सहा जैसे कि उत्तम घोड़ा चाबुकको नहीं सहता है ३५ वह पराक्रमी वेगसे जलको छिन्नभिन्न कर सुनहले बाजूबन्दोंसे अलंकृत लोहेकी गदा लिये ३६ सर्पराज के समान श्वास लेता हुआ जलके मध्यमें से उठा । वह आपका पुत्र रोके हुए जलको हटाकर लोहेकी गदा कन्धेपर रखे ३७ सूर्यके समान तपाता हुआ जलसे बाहर निकला । फिर शैक्यमें रहनेवाली लोहेकी भारी सुवर्णजटित गदा ३८ बुद्धिमान्, बड़े पराक्रमी दुर्योधनने अपने हाथमें ली । शिखर रखनेवाले पर्वतके समान हाथ में गदा लिये दुर्योधनको देखकर ३९ उसे क्रोधयुक्त नियत होनेवाले शिवजीके समान माना । वह भरतवंशी सूर्यके समान तपाता हुआ शोभायमान था ४० सब जीवोंने जलसे बाहर आये हुए, हाथमें गदा लिये शत्रुविजयी दुर्योधन को दण्डधारी यमराज के समान माना ४१ सब पाञ्चालों ने आपके पुत्र राजा दुर्योधन को उस प्रकार देखा जैसे कि वज्रधारी इन्द्र और शूलधारी रुद्रजीको देखते हैं ४२ सबलोग जलसे बाहर निकलते हुए उस दुर्योधनको देखकर बहुत प्रसन्न हुए । उन पाञ्चाल और पाण्डवोंने तालियां बजाई ४३ आपका पुत्र दुर्योधन उस तालियों की ध्वनि से अपना उपहास मानकर क्रोधयुक्त दोनों नेत्र खोले पाण्डवोंको भस्म करता हुआसा ४४ बङ्क भ्रुकुटि किये दांतोंकी पंक्तिको काटता हुआ केशवजी समेत पाण्डवोंसे बोला, कि ४५ हे पाण्डवलोगो ! तुम इस हास्यका फल पाओगे और पाञ्चालों समेत मुझसे मरकर शीघ्र ही यमलोक को जाओगे ४६ संजय बोले, कि जलसे निकला हुआ आपका पुत्र दुर्योधन भयसे युक्त, हाथ में गदा लेकर नियत हुआ ४७ वह भयसे युक्त, जलसे आर्द्रशरीर ऐसा विदित होता था जैसे कि झरनाओं से युक्त पर्वत होता है ४८ वहां पाण्डवोंने उस ऊंची गदा करनेवाले वीरको क्रोधयुक्त दण्डधारी यमराजके समान माना ४९ फिर प्रसन्नतासे वृषभके समान गर्जनेवाले और बादल के समान शब्दायमान पराक्रमी दुर्योधन ने गदाके युद्ध में पाण्डवों को बुलाया ५० वह बोला, कि हे युधिष्ठिर ! तुम युद्धमें

एक एक मेरे सम्मुख आओ। अकेले वीरका बहुतोंके साथ युद्ध करना रण-नीतिके अनुसार योग्य नहीं है ५१ अधिकतर कवच त्यागे, थके हुए, जलसे भीगे, अत्यन्त घायल, मृतक सवारी और सेनावाले ५२ मेरे साथ सबको अवश्य ही लड़ना चाहिये। तुम सदैव योग्य और अयोग्य बातों को जानते हो ५३ युधिष्ठिर बोले, कि हे सुयोधन! यह तेरी बुद्धि नहीं हुई। यह बात तब कैसी हुई थी जब कि बहुतसे महारथियों ने मिलकर युद्धमें अकेले अभिमन्युको मारा था ५४ क्षत्रियधर्म अत्यन्त निर्दय और असम्बन्धित है। उस समय, उस दशावाले अभिमन्युको विपरीत रीति से कैसे मारा ५५ आप सब धर्मों के जाननेवाले, शूर और शरीर की प्रीति को त्यागनेवाले थे। न्यायसे, उत्तम रीतिके युद्ध करनेवालोंकी इन्द्रलोकमें उत्तम गति कही है ५६ यदि अकेला बहुतों के हाथसे मारने योग्य नहीं—यही धर्म है; तो उस समय तेरी बुद्धिसे बहुत शूरवीरों ने मिलकर अकेले बालक अभिमन्युको कैसे मारा ५७ दुःख में पड़े हुए सब जीव धर्मदर्शन विचारते हैं और अपने स्थानपर नियत परलोक के द्वारको बन्द मानते हैं ५८ हे वीर! कवचको धारण करो और शिरके बाल बांधो। हे भरतवंशिन्! यदि दूसरी और कोई वस्तु तेरे पास न हो, तो वह भी लेलो ५९ और हे वीर! मैं फिर तुम्हारे इस एक मनोरथको देताहूं कि पांचों पाण्डवों में से जिसके साथ तुम लड़ना चाहते हो ६० निश्चय उसको मारकर तुम राजा होगे अथवा मरकर स्वर्गको जाओगे। हे वीर! युद्धमें जीवनके सिवाय तेरी कौनसी शिष्टाचारी करें ६१ संजय बोले कि हे राजन्! इसके पीछे आपके पुत्रने सुनहला कवच और जाम्बूनद सुवर्णसे जटित शिरस्त्राण लिया ६२ तब शिरस्त्राण बांधनेवाला आपका पुत्र उज्ज्वल स्वर्णमय कवच धारण किये सुवर्ण के पर्वतके समान शोभायमान हुआ ६३ हे राजन्! कवचधारी, अलंकृत, गदाधारी आपका पुत्र दुर्योधन युद्ध के मुखपर खड़ा होकर सब पाण्डवों से बोला, कि ६४ आप सब भाइयों में से एक भाई गदा लेकर मेरे साथ युद्ध करो। मैं सहदेव, भीमसेन अथवा नकुल के साथ युद्ध करूंगा ६५ हे भरतर्षभ! अथवा अब मैं युद्ध में अर्जुन के साथ या तुम्हारे साथ लड़ूंगा और रणभूमि में तुमको जीतूंगा ६६ हे पुरुषोत्तम! अब मैं स्वर्णवस्त्रोंसे मढ़ी हुई गदा के द्वारा बड़े दुःख से मिलनेके योग्य शत्रुता का अन्त पाऊंगा ६७ यही अपने चित्तमें विचारता हूं कि गदायुद्ध में मेरे समान कोई नहीं है। सम्मुख

आनेवाले तुम सबको गदा से ही मारूंगा ६८ तुम सब न्याय से मेरे साथ लड़ने को समर्थ नहीं हो; इस प्रकार अहंकारपूर्ण वचन अपनी ओर से कहने के योग्य नहीं हूं ६९ अथवा आप लोगोंके आगे इस वचन को सफल करूंगा। इस मुहूर्त में यह बात सत्य हो या असत्य; तुममें से वह मनुष्य गदा हाथमें ले जो अब मेरे साथ लड़ना चाहता है ७० ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय।

संजय बोले, कि हे राजन्! इस प्रकार बारम्बार दुर्योधनके गर्जने पर युधिष्ठिर के ऊपर क्रोधित हो वासुदेवजी बोले, कि १ हे युधिष्ठिरजी! यह युद्धमें तुम्हें, अर्जुनको, नकुलको या सहदेवको भी बुलावे २ तो क्या होगा? हे राजन्! तुमने विना विचारे यह क्यों कहा, कि "रणभूमिमें एकको ही मारकर कौरवों में राजा होजाओ" ३ हाथ में गदा लेनेवाले उस दुर्योधनके युद्धमें तुमको मैं समर्थ नहीं मानता हूं। यहां इसने भीमसेन को मारने की इच्छासे तेरह वर्ष तक लोहे की मूर्ति पर कृत्या सिद्ध की है। हे भरतर्षभ! हम लोगोंकी ओर से अब कैसे कार्य होसकता है ४-५ हे राजेन्द्र! तुमने दया करके विना विचारे यह कर्म किया। मैं युद्धमें उसके सम्मुख लड़नेवाला, सिवाय भीमसेन के राजाओंमें से किसी राजाकोभी, नहीं देखता हूं सो भीमसेनभी अत्यन्त अभ्यास करनेवाला नहीं है। यह द्यूत आपने फिर भी प्रारम्भ कर ही दिया जैसा कि पहले किया था ६-७ हे राजन्! शकुनिकी और तुम्हारी विषमता है। भीमसेन बलवान् और समर्थ है; राजा दुर्योधन कर्मकर्ता है ८ बलवान् और कर्मकर्तामें कर्मकर्ताही अधिक है। हे राजन्! इस शत्रुको तुमने सत्यमार्गमें प्रवृत्त किया ९ और अपने को बड़ी आपत्ति में डालकर हमको भी दुःख में लपेट लिया। कौन मनुष्य सब शत्रुओंको जीत कर दुःख में पड़े हुए अकेले शत्रुके साथ १० मिलनेवाले राज्यको हारता है? मैं लोकमें अब ऐसा पुरुष नहीं देखता हूं जो युद्धमें ११-१२ गदाधारी दुर्योधनको जीतने में समर्थ हो। देवताभी इसे विजय करने में समर्थ नहीं है, क्योंकि राजा दुर्योधन कर्मकर्ता है। हे भरतवंशिन्! तुम किस प्रकार शत्रुसे कहते हो कि गदासे युद्ध करो १३ और हममेंसे एकको मार कर राजा होजाओ। भीमसेन के द्वारा न्यायसे युद्ध करनेवाले हम लोगों की

विजय में सन्देह है १४ क्योंकि बड़ा बलवान् दुर्योधन कर्मकर्ता है; फिर तुमने यह भी कहा है कि हममेंसे एक को मारकर राजा होगे; सो निश्चयही पाण्डु और कुन्तीकी सन्तान के भाग्य में राज्य भोगना नहीं लिखा है; केवल बड़ा वनवास और बारम्बार भिक्षा मांगना लिखा है १५-१६ भीमसेन बोले, कि हे मधुदैत्यके मारनेवाले यदुनन्दनजी! व्याकुल न हूजिये। अब मैं उसी कठिन और दुष्प्राप्य शत्रुता का अन्त पाऊंगा १७ मैं युद्धमें दुर्योधनको निस्सन्देह मारूंगा हे श्रीकृष्णजी! धर्मराजकी पूर्ण और अचल विजय दिखाई देती है १८ यह मेरी गदा अर्द्धभाग में बहुत भारी है; ऐसी दुर्योधनकी नहीं है। हे माधवजी! पीड़ा मत करो १९ मैं युद्धमें गदासे इसके साथ लड़ने का उत्साह करता हूं। हे जनार्दनजी! आप सब लोग मेरा युद्ध देखते रहें २० हे श्रीकृष्णजी! मैं युद्धमें नाना प्रकार के शस्त्रधारी देवताओं समेत तीनों लोकों से भी युद्ध करसकता हूं; तो दुर्योधन से क्यों न करूंगा २१ तब प्रसन्नचित्त वासुदेवजी ने ऐसी बातें करनेवाले भीमसेन की प्रशंसा कर कहा, कि २२ हे महाबाहो! यह धर्मराज युधिष्ठिर तुम्हारे आश्रित होकर निस्सन्देह मृतक शत्रुवाला और अपनी प्रकाशमान लक्ष्मीको प्राप्त है २३ युद्धमें धृतराष्ट्रके सब पुत्र तुम्हारे ही हाथसे मारे गये; राजा, राजकुमार और हाथी भी गिराये गये २४ हे पाण्डुनन्दन! कलिङ्ग, मगधपूर्वीय और गान्धारदेशियों समेत कौरव लोग तुम्हारे बड़े युद्धमें मारे गये २५ हे कुन्ती के पुत्र! अब तुम दुर्योधन को भी मारकर यह सागराम्बरा पृथ्वी धर्मराज को ऐसे सौंपो जैसे कि विष्णुने इन्द्रको सौंपी थी २६ पापी दुर्योधन युद्धमें तुम्हें पाकर मारा जावेगा; तुम इसकी जंघा तोड़कर अपनी प्रतिज्ञा पालन करोगे २७ हे भीमसेन! यह दुर्योधन सदैव उपाय पूर्वक लड़ने के योग्य है; क्योंकि यह सदैव कर्मकर्ता, बलवान् और युद्ध में कुशल है २८ हे राजन्! इसके पीछे सात्यकी, पाञ्चाल और धर्मराज समेत सब पाण्डवों ने भीमसेन की प्रशंसा की २९ सभीने भीमसेन के बचनों की प्रशंसा की। तब भयानक पराक्रमी भीमसेन ३० सृञ्जियों समेत नियत, सूर्य के समान संतप्त करनेवाले युधिष्ठिर से बोले कि मैं युद्धमें इसके सम्मुख होकर लड़ने का उत्साह करता हूं ३१ यह नीच पुरुष युद्ध में मुझे जीतने में समर्थ नहीं है। अब मैं हृदय में रक्खे हुए कठिन क्रोधको ३२ धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन पर ऐसे छोड़ूंगा जैसे कि खाण्डव वन में अर्जुनने छोड़ा था। हे पाण्डव!

अब मैं गदासे पापीको मारकर आपके हृदयमें रहनेवाले भल्लको उखाड़ूंगा ३३ हे राजन् ! प्रसन्न होजाओ; हे निष्पाप ! अब मैं कीर्तिरूपी माला आपके कण्ठ में पहिनाऊंगा ३४ अब सुयोधन राज्यलक्ष्मी समेत अपने प्राणोंको त्यागेगा और राजा धृतराष्ट्र मेरे हाथसे मारेहुए पुत्रको सुनकर ३५ उस दुष्ट कर्मका स्मरण करेगा; जो शकुनि की बुद्धिसे उत्पन्न होकर श्रेष्ठ भरतर्षभ लोगोंपर गिरा। यह कहकर भीमसेन ने गदा उठाकर खड़े हो ३६ युद्धके निमित्त उसको ऐसे बुलाया जैसे कि इन्द्रने वृत्रासुरको बुलाया था । आपका पराक्रमी पुत्र उसके बुलानेको न सहकर ३७ शीघ्रता से ऐसे सम्मुख हुआ जैसे कि मतवाला हाथी मत्तगज के सम्मुख जाता है । सब पाण्डवों ने हाथ में गदा रखनेवाले और सम्मुख नियत आपके पुत्रको ३८ शिखरधारी कैलासके समान देखा । अपने यूथसे बिछुड़े हाथीके समान अकेले बड़े बलवान् दुर्योधनको पाकर ३९ पाण्डव अत्यन्त प्रसन्न हुए । पर दुर्योधनको व्याकुलता, भय, ग्लानि और पीड़ा ४० नहीं हुई । वह युद्धमें सिंहके समान नियत हुआ । हे राजन् ! तब भीमसेनने गदा उठानेवाले, शिखरधारी कैलासके समान दुर्योधनको देखकर ४१ कहा, कि राजा धृतराष्ट्र ने और तुमने हमारे साथ जो पापकर्म किया ४२ और वारणावत नगर में जो पापकर्म किया उसका स्मरण करो। रजस्वला द्रौपदीको सभामें दुःखी किया ४३ और शकुनिकी बुद्धिके निश्चयसे राजा युधिष्ठिरको द्यूतमें छलसे जीता और हे दुर्बुद्धे ! इनके सिवाय जो जो तुमने अन्य पाप ४४–४५ निरपराधी पाण्डवोंके साथ किये हैं; उसके बड़े फलको देख कर तेरे कारण मृतक बड़े यशस्वी गाङ्गेय हम सबके पितामह भरतर्षभ भीष्मजी शरशय्या पर पड़े सोते हैं । प्रतापी शल्य, कर्ण और द्रोणाचार्यजी मारे गये ४६ तथा शत्रुताका आदि कारण वह शकुनि भी युद्धमें मारा गया। सेनाके लोगों समेत तेरे शूर भाई और पुत्रादिक भी मारे गये ४७ युद्ध को पीठ न दिखाने वाले शूरवीर राजा लोग मारे गये । इनके सिवाय अन्यान्य हज़ारों उत्तम क्षत्रिय मारे गये ४८ द्रौपदी के दुःख का उत्पन्न करनेवाला पापी प्रातकामी मारा गया; कुलका नाश करनेवाला नीचपुरुष अकेला अब तू ही रह गया है ४९ अब निस्सन्देह तुझे गदासे मारूंगा। अब मैं युद्धमें तेरे सब अहंकारका नाश करूंगा और विजयकी बड़ी आशा समेत पाण्डवोंके साथ किये गये तेरे दुष्टकर्मों को भी दूर करूंगा ५० दुर्योधन ने कहा, कि भीमसेन ! अधिक बातों

से क्या लाभ है ? तू मेरे साथ युद्ध कर । मैं तेरे युद्ध करने के उत्साहको दूर करूंगा ५१ हे पापी ! हिमाचलके शिखर के समान बड़ी गदा लिये हुए गदा-युद्ध में नियत मुझको क्या तू नहीं देखता है ५२ रे दुष्ट ! अब कौन शत्रु अथवा देवताओं में इन्द्र भी न्याय से युद्ध करनेवाले मुझ गदाधारीको मारने का उत्साह करता है ५३ हे कुन्ती के बेटे ! जलसे खाली, शरद् ऋतु के बादल के समान निरर्थक क्यों गर्जता है ? युद्धमें अपना बल दिखला । जहांतक तुझसे पराक्रम होसके, सब कर दिखला ५४ विजयाभिलाषी पाण्डवोंने सृञ्जियों समेत उसके वचन की प्रशंसा की ५५ हे राजन् ! मनुष्यों ने हाथी के समान मतवाले, राजा दुर्योधनको प्रत्यञ्चा के शब्दोंसे फिर प्रसन्न किया ५६ वहां हाथी चिग्घाड़े; घोड़े बारम्बार हिनहिनाने और पाण्डवोंके शस्त्र प्रकाशित हुए ५७ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ।

संजय बोले, कि महाराज ! उस बड़े भयकारी युद्ध के होने; सब महात्मा पाण्डवों के बैठ जाने १ और उन दोनों शिष्यों का युद्ध होनेपर ताल-ध्वजधारी हलधर बलदेवजी भी उस युद्धको सुनकर वहां आपहुँचे २ उनको देखकर केशवजी समेत सब पाण्डव लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए । उनको, समीप जाकर, बड़े आदर समेत ले आये और विधिपूर्वक उनका पूजन किया ३ हे राजन् ! इसके पीछे सब लोग बोले, कि हे बलदेवजी ! युद्ध में दोनों शिष्यों की सावधानी देखो ४ तब बलदेवजी पाण्डवोंसमेत श्रीकृष्णजी को और हाथ में गदा लिये हुए, दुर्योधनको सम्मुख देखकर बोले, कि ५ अब मुझे तीर्थयात्रा करते बयालीस दिन बीत गये । पुष्य नक्षत्रमें गयाथा और पितृलोक सम्बन्धी श्रवण नक्षत्रमें फिर लौटा हूं । इस नक्षत्रमें शरीर त्यागनेवालों को दिव्य शरीर और स्वर्ग मिलता है ६-७ हे माधव ! निश्चय ही मैं अपने शिष्यके गदायुद्ध को देखने का अभिलाषी हूं । फिर हाथमें गदा रखनेवाले, रणभूमि में वर्तमान दोनों वीर-दुर्योधन और भीमसेन अत्यन्त शोभित हुए । राजा युधिष्ठिर ने हलधारी बलदेवजी से मिलकर ८ यथाबुद्धि स्वागतपूर्वक उनका कुशलक्षेम पूछा । बड़े धनुषधारी, अत्यन्त प्रसन्न और यशस्वी श्रीकृष्णजी और अर्जुन भी नमस्कार करके मिले । हे राजन् ! उसी प्रकार शूर नकुल, सहदेव और

द्रौपदी के पांचों पुत्रों ने ६–१० बड़े बलवान् बलदेवजीको नमस्कार किया। हे राजन्! इसके पीछे बलवान्, गदाधारी भीमसेन और आपके पुत्र ने ११ बलदेवजीका पूजन किया। वहांपर वह सब लोग चारोंओर से स्वागतपूर्वक प्रतिष्ठा कर १२ बलदेवजी से बोले, कि हे महाबाहो! युद्धको देखो। जब इस प्रकार सब राजाओंने बलदेवजी से कहा १३ तब बड़े तेजस्वी बलदेवजी ने पाण्डव सृञ्जय आदि सब महात्मा राजाओं से मिलकर उनका कुशल वृत्त पूछा १४ इस प्रकार उन सबने मिलकर बलदेवजी से कुशल संवाद पूछा। बलदेवजी सब महात्मा क्षत्रियों को नमस्कारादि करके १५ और अवस्थाके अनुसार कुशलक्षेमके शब्दोंसे युक्त वार्तालाप कर बड़े प्रीतिपूर्वक श्रीकृष्ण और सात्यकीसे मिले १६ उन दोनोंके मस्तक सूंघकर कुशल मंगल पूछा। हे राजन्! उन दोनोंने भी उन गुरुजीका विधिपूर्वक ऐसे पूजन किया १७ जैसे कि प्रसन्नचित्त इन्द्र और उपेन्द्र ब्रह्माजीका पूजन करते हैं। इसके पीछे धर्मपुत्र युधिष्ठिर शत्रुविजयी बलदेवजी से बोले; कि १८ हे बलदेवजी! दोनों भाइयों के इस बड़े युद्धको देखो। यह सुनकर उन महारथियोंसे प्रतिष्ठापूर्वक पूजित, अत्यन्त प्रसन्न, महाबाहु बलदेवजी उनके मध्यमें बैठ गये। नीलाम्बर गोरे बलदेवजी राजाओंके मध्यमें ऐसे शोभित हुए १९–२० जैसे कि स्वर्ग में नक्षत्र समूहों से घिरा हुआ चन्द्रमा शोभित होता है २१ हे राजन्! इसके पीछे आपके दोनों पुत्रों का युद्ध बड़ा कठिन और रोमहर्षण करनेवाला तथा शत्रुताका अन्त करनेवाला हुआ २२ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवागमने पञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

छठा अध्याय।

संजय बोले, कि युद्ध होने से पहले ही बलदेवजी केशवजी से पूछकर वृष्णियोंके साथ यह कहकर चलेगये, कि १ हे केशवजी! मैं पाण्डवोंकी और दुर्योधन की सहाता नहीं करूंगा, जैसे आया हूं वैसे ही चला जाऊंगा २ शत्रुओं के मारनेवाले बलदेवजी ऐसा कह कर चले गये। जनमेजयने पूछा, कि हे ब्रह्मन्! आप फिर उनके आगमनका वृत्तान्त मूल समेत वर्णन कीजिये। वे कैसे आये और किस प्रकार युद्धको देखा। हे श्रेष्ठ! आप वर्णन करनेमें समर्थ हैं ३–४ वैशम्पायन बोले, कि उपप्लवी स्थानपर महात्मा पाण्डवोंके

टिकनेपर, शरीरधारियों के आनन्द के अर्थ सन्धि के निमित्त मधुसूदनजी धृतराष्ट्रके सम्मुख भेजे गये । महाराज ! श्रीकृष्णजी ने हस्तिनापुर में पहुँच, धृतराष्ट्र से मिलकर ५-६ सत्य सत्य सबकी वृद्धि करनेवाली बातें कीं । परन्तु बहुत समझानेपर भी धृतराष्ट्रने एक न मानी ७ तब पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी सन्धि न कर उपप्लवी स्थानमें लौट आये ८ मधुसूदनजी दुर्योधनसे विदा होकर उपप्लवी स्थानमें आ सन्धि न होने के कारण पाण्डवों से बोले, कि ९ कालसे प्रेरित होकर कौरव लोग मेरी बात नहीं मानते हैं । हे पाण्डवो ! तुम मेरे साथ पुष्य नक्षत्रमें यात्रा करो १० तब सेनाओंके विभक्त होनेपर बलवानों में श्रेष्ठ, बड़े साहसी बलदेवजी अपने भाई श्रीकृष्णजीसे बोले, कि ११ हे महाबाहो, मधुसूदनजी ! उन की भी सहायता करो; परन्तु श्रीकृष्णजीने यह बात न मानी १२ इसके पीछे क्रोधसे पूर्णचित्त, यशस्वी, बलदेवजी सरस्वती तीर्थको चले गये १३ अनुराधा नक्षत्र के प्रारम्भमें यादवों समेत उन्होंने यात्रा की । फिर शत्रुविजयी कृतवर्मा दुर्योधन से आकर मिला १४ और सात्यकी समेत वासुदेवजी पाण्डवों में संयुक्त हुए । शूर बलदेवजी के जाने पर मधुसूदनजी पुष्य नक्षत्र में १५ पाण्डवों को आगे कर कौरवों के सम्मुख गये । फिर मार्ग में चलते हुए बलदेवजी ने सेवकों को आज्ञा दी १६ कि तीर्थयात्रा में सब सामान और शस्त्रादिकों को लेआओ और द्वारका से अग्नियों समेत यज्ञ करानेवालों को भी लेआओ १७ सोना, चांदी, गौ, वस्त्र, हाथी, रथ, खच्चर और ऊंट आदि सवारियां १८ तथा सब प्रकारका सामान तीर्थयात्राके निमित्त शीघ्र लेआओ । तुम शीघ्रता से चलकर सरस्वती के तटपर आमिलो १९ और सैकड़ों उत्तम वेदपाठी याज्ञिक ब्राह्मणों को भी लेआओ; तब कौरवोंका नाश होनेपर बलदेवजी इसप्रकारकी आज्ञा अपने नौकरों को देकर तीर्थयात्रा को गये और चारों ओरके सरस्वती तीर्थोंकी यात्रा की २०-२१ ऋत्विज्, मित्रवर्ग, अन्य श्रेष्ठ ब्राह्मण, रथ, हाथी, घोड़े, नौकर चाकर २२ बैल, खच्चर और ऊंटोंसे युक्त बहुतसी सवारियों समेत, थके हुए; पीड़ित शरीर बालक, वृद्ध और आकांक्षा करनेवालोंके पूजनके लिये दानके योग्य नाना प्रकार की अनेक वस्तुओं को प्रत्येक स्थान पर जुटा दिया २३-२४ हे राजन् ! तब जो ब्राह्मण जहां भोजन करनेकी इच्छा करता था, उसे वहांही अभीष्ट भोजन पहुँचाया जाता था २५ वहां बलदेवजीकी आज्ञासे जहां तहां

सेवक, अहल्कार लोग चारों ओर खानपान के पदार्थ रखते थे २६ वहां सुख चाहनेवाले वेदपाठी ब्राह्मणोंके पूजन के लिये बहुमूल्य वस्त्र, पलँग और उनके वस्त्र तैयार किये गये २७ हे भरतवंशिन्! जहांपर जो ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय जिस वस्तुको चाहता था; वहींपर उसे अभीष्ट वस्तु तैयार दिखाई पड़ी २८ हे भरतर्षभ! उस समय सब लोग बड़े आनन्द और सुखपूर्वक जाते थे। वे उत्तमोत्तम स्थानों पर निवास करते जाते थे। वहां मनुष्यों ने चलनेवालों को सवारियां, प्यासों के लिये पीने की वस्तुएं २६ भूखों के लिये स्वादिष्ठ भोजन, वस्त्र और भूषण जुटा दिये ३० हे वीर, राजा जनमेजय! तब चलनेवाले मनुष्यों का वह मार्ग सबको सुखदायी होकर स्वर्ग के समान हुआ ३१ वह मार्ग सदैव प्रसन्न लोगों से संयुक्त, स्वादिष्ठ भोजनों की सुन्दर दूकानों और बेचने के योग्य वस्तु रखनेवाले नाना प्रकारके सैकड़ों मनुष्यों से व्याप्त, अनेक प्रकारके वृक्ष-वल्लियों और भांति भांति के रत्नों से अलंकृत था ३२ हे राजन्! नियम में नियतचित्त, यादवों में बड़े वीर, प्रसन्नचित्त बलदेवजी ने धर्मकी वृद्धि के कारण तीर्थों पर ब्राह्मणों को धन और यज्ञकी दक्षिणाएं दीं ३३ दूध देने वाली सुन्दर पोशाकोंसे युक्त सुवर्णशृङ्गी गौएं, नाना देशोंमें उत्पन्न होनेवाले उत्तम घोड़े, सवारियां और शुभ दास ब्राह्मणों को दान में दिये ३४ बलदेवजीने रत्न, मणि, मोती, मूंगा, श्रेष्ठ सुवर्ण, शुद्ध चांदी और लोहे तथा तांबे के पात्र भी उत्तम ब्राह्मणों को दान किये ३५ इस प्रकार उन्होंने सरस्वती के उत्तम तीर्थों पर बहुतसा धन दिया। वे अनुपम प्रभाव और उत्तम वृत्तिवाले बलदेवजी क्रमसे कुरुक्षेत्रको गये ३६ जनमेजय बोले, कि हे द्विपादोंमें श्रेष्ठ, वैशम्पायनजी! सरस्वतीके तीर्थोंके गुण, उत्पत्ति, फल और यात्राकी विधि भी मुझसे कहिये ३७ हे समर्थ, वैशम्पायनजी! मुझे बड़ाही उत्साह है; आप क्रमपूर्वक तीर्थोंका वर्णन कीजिये ३८ वैशम्पायन ने कहा, कि हे राजेन्द्र, राजा जनमेजय! तीर्थों के क्रम, सर्वगुण और उत्पत्ति में सम्पूर्ण तुमको सुनाता हूं। तुम उस धर्मकी वृद्धि करनेवाले माहात्म्यको मनसे सुनो ३९ महाराज! प्रथम यादवों में बड़े वीर बलदेवजी, ऋत्विज् मित्र और ब्राह्मणों समेत प्रभास क्षेत्र नाम उत्तम और पवित्र तीर्थको गये जहां चन्द्रमा यक्ष्मा रोगसे दुःखी होकर गया था ४० और शापसे निवृत्त होकर तृतीयाके दिनसे सब जगतको प्रकाशित करता है। इस रीति से उस चन्द्रमाकी अत्यन्त प्रकाशित किरणों से उत्पन्न

वह अत्यन्त उत्तम तीर्थ है और इसी हेतुसे उसका नाम प्रभासक्षेत्र होगया है ४१ जनमेजयने पूछा कि चन्द्रमाको यक्ष्मा रोग कैसे होगया और उस अत्यन्त उत्तम तीर्थ के प्रभावसे कैसे नष्ट हुआ ४२ वह चन्द्रमा किस प्रकार उस तीर्थमें स्नान करके फिर वृद्धियुक्त हुआ ? हे महामुने ! वह सब वृत्तान्त ब्योरे समेत वर्णन कीजिये ४३ वैशम्पायन बोले, कि हे राजन् ! दक्ष ने अपनी कन्याओं में से सत्ताईस कन्याएं चन्द्रमाको दीं ४४ वे कन्याएं नक्षत्र, योग में अधिकारी होकर उनकी संख्याके निमित्त हुईं जो कि उस शुभकर्म करनेवाले चन्द्रमा की स्त्रियां थीं ४५ वे सब दीर्घनेत्रोंवाली और स्वरूपमें अनुपम थीं। उन सत्ताईसों में रोहिणी स्वरूप और लावण्यमें सबसे बढ़कर थी ४६ इससे चन्द्रमाने उसी से अधिक प्रीति की; वही उसके चित्तकी प्यारी हुई। इस हेतु सदैव उसीको भोगा ४७ हे राजेन्द्र ! चन्द्रमा पहले रोहिणीकेही पास अधिक रहताथा। इससे महात्मा चन्द्रपर नक्षत्र नामसे विख्यात वे सब स्त्रियां क्रोधित हुईं ४८ उन सावधान स्त्रियों ने अपने पिता दक्ष प्रजापति से कहा, कि चन्द्रमा हमारे पास निवास कभी नहीं करता; सदैव रोहिणीको चाहता है ४९ हे सृष्टिके स्वामी ! इससे हम सब उचित आहार करनेवाली और तप करने में प्रवृत्त आपकेही सम्मुख रहेंगी. ५० दक्ष प्रजापतिजी उनके वचन सुनकर चन्द्रमासे बोले, कि तुम सब स्त्रियों में समान भाव से बर्ताव करो। इससे तुमको बड़ा अधर्म न होगा ५१ फिर दक्षजी उन सबसे बोले, कि चन्द्रमा के पास जाओ; चन्द्रमा मेरी आज्ञासे सबके पास बराबर रहा करेगा ५२ उस प्रकारसे बिदा की हुईं वे सब स्त्रियां शीतांशु चन्द्रमाके भवनको गईं। हे राजन् ! इसपर भी भगवान् चन्द्रमा उसी प्रकार ५३ बारम्बार प्रीति के वश रोहिणीके ही पास रहते थे। इससे चिढ़ कर उन सबने फिर अपने पितासे कहा, कि ५४ हम सब आपकी सेवामें प्रवृत्त होकर आपके ही पास रहेंगी क्योंकि चन्द्रमा हमारे पास नहीं रहता; उसने आपका वचन भी नहीं माना ५५ दक्षजी ने उनके वचन सुनकर फिर चन्द्रमासे कहा, कि हे शुभ्रचन्द्र ! तुम स्त्रियोंसे समान बर्ताव करो। जो मेरा कहना न करोगे तो मैं तुमको शाप दूंगा ५६ फिर भी चन्द्रमा दक्षके वचनका अनादर कर रोहिणीके ही पास रहे। इससे वे स्त्रियां क्रोधयुक्त हुईं ५७ तब उन्होंने पिताके पास जाकर शिरसे प्रणाम करके कहा, कि चन्द्रमा हमारे पास निवास नहीं करता। अब आप ही हमारे रक्षक हूजिये ५८ भगवान्

चन्द्रमा सदैव रोहिणीके पास ही निवास करते हैं; आपके वचनको कुछ नहीं गिनते हैं और हमपर प्रीति करना नहीं चाहते ५६ इस कारण हम सब की ऐसी रक्षा करो, जिसके भय से चन्द्रमा हमको अपने पास रखे। हे राजन्! क्रोधयुक्त दक्षप्रजापति ने यह सुनकर क्रोधसे यक्ष्मा नामक रोग ६० चन्द्रमा के ऊपर छोड़ा। वह चन्द्रमा में प्रवेश कर गया। उस यक्ष्मा रोग से ग्रसित होकर चन्द्रमा प्रतिदिन क्षीण होने लगा ६१ महाराज, जनमेजय! चन्द्रमाने विविध यज्ञों से पूजनकर उस यक्ष्मा रोग को दूर करने के लिये अनेक उपाय किये ६२ परन्तु शाप से मुक्त न हुआ और सदैव क्षीण ही होता गया। चन्द्रमाके क्षीण होनेपर ओषधियां पृथ्वीपर उत्पन्न न हुईं ६३ सब ओरसे सब रस स्वादसे रहित और निर्बल हुए। ओषधियों का विनाश होनेपर जीवोंका भी नाश हुआ ६४ चन्द्रमा के विनाशयुक्त होनेपर सृष्टि के सब जीव दुर्बल हुए। तब देवताओंने मिलकर चन्द्रमासे कहा, कि आपका ऐसा रूप कैसे होगया है, कि प्रकाश नहीं करता? अब जिनसे तुमको बड़ा भय है, उन सब कारणोंको आप हमसे कहो ६५–६६ जब हमसे सब वृत्तान्त कहोगे, तब हम सब देवता उसका उपाय करेंगे। देवताओं के वचन सुनकर चन्द्रमाने उनसे ६७ अपने शापका कारण और यक्ष्मा रोग होनेका वृत्तान्त कहा। देवता लोग चन्द्रमाका वृत्तान्त सुन, दक्षके पास जाकर बोले, कि ६८ भगवन्! आप चन्द्रमा के ऊपर प्रसन्न हों और अपने शापको लौटालें। यह चन्द्रमा नाशवान् होकर कुछ ही बाक़ी रहा दीखता है ६९ हे देवताओं के ईश्वर! उसके विनाशवान् होने से सृष्टि भी नाशयुक्त होगई है। वीरुध, ओषधी और नानाप्रकार के बीज नष्ट हो गये ७० उनके नाशसे हमारा विनाश है और हमारे विना जगत् कैसा होगा? हे लोकगुरो! यह जानकर आपको कृपा करना उचित है ७१ देवताओं के ऐसे वचन सुनकर प्रजापतिजी ने उनसे कहा, कि मेरा वचन विपरीत करना उचित नहीं है ७२ हे भाग्यवानो! मेरा शाप इसी बहाने से लौटेगा कि चन्द्रमा सदैव सब स्त्रियों में समान बर्ताव करे ७३ हे देवताओ! सरस्वती के उत्तम तीर्थ में ग्रीवा पर्यन्त जलमें ग़ोते लगाकर यह फिर वृद्धियुक्त होगा; यह मेरा वचन सत्य है ७४ चन्द्रमा सदैव आधे मास तक क्षीण होगा और आधे महीने में बढ़ेगा; यह मेरा वचन सत्य है ७५ पश्चिमीय समुद्र के जिस स्थानपर सरस्वती से समुद्रका मिलाप है, वहां जाकर देवताओं के ईश्वरका आराधन करने से यह

तेज पावेगा ७६ इसके पीछे चन्द्रमा ऋषिकी आज्ञा से सरस्वतीतीर्थ को गये। वे पहले सरस्वतीतीर्थ को और फिर प्रभासक्षेत्रको गये ७७ अमावास्या के दिन उसमें स्नानकर बड़े तेजस्वी और उत्तम कान्तिवाले चन्द्रने लोकों को प्रकाशित किया एवं किरणोंकी शीतलता पाई ७८ हे राजेन्द्र! फिर सब देवता प्रभासक्षेत्र नामक उत्तम तीर्थको पाकर चन्द्रमा समेत दक्षजीके सम्मुख हुए तब प्रजापतिजी सब देवताओं को बिदाकर प्रसन्नचित्त हो चन्द्रमा से बोले, कि ७९-८० हे पुत्र! स्त्रियोंका और ब्राह्मणोंका अपमान तुम कभी मत करना। अब जाओ और सदैव प्रवृत्त होकर मेरी आज्ञापालन करो ८१ महाराज! फिर उनसे बिदा होकर चन्द्रमा अपने लोकको गया और सब सृष्टिभी प्रसन्न होकर पूर्वके ही समान होगई ८२ चन्द्रमाके शापका और उससे निवृत्त होनेका वृत्तान्त तथा प्रभासतीर्थ का सब तीर्थों में अत्यन्त श्रेष्ठतर होनेका उत्तम वृत्तान्त भी मैंने तुमसे कहा ८३ महाराज! श्रीमान् चन्द्रमा सदैव अमावास्या के दिन उत्तम तीर्थ प्रभास में स्नान कर वृद्धि पाता है ८४ हे राजन्! इससे इस तीर्थको प्रभासक्षेत्र जानते हैं; चन्द्रमाने उसमें गोते लगाकर बड़ा प्रकाश पाया ८५ इसके पीछे बलवान्, अजेय बलदेवजी उस चमस्तोद्भेद तीर्थ को गये जिसको लोग चमसोद्भेद तीर्थ कहते हैं ८६ वहां उत्तम दान दे, एक रात्रि निवासकर और विधिपूर्वक स्नान करके ८७ केशवजी के बड़े भाई बलदेवजी उदपान तीर्थको गये जहां बड़े प्राचीन और कल्याणकारी उत्तम फल मिले ८८ हे राजेन्द्र, जनमेजय! ओषधियों से और पृथ्वीके स्वच्छ, चिकनी होनेसे सिद्ध लोग गुप्त सरस्वतीको भी जानते हैं ८९॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांचन्द्रशापविमोचने षष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय।

वैशम्पायन बोले, कि महाराज! इस कारण बलदेवजी यशस्वी त्रितसी के उदपान तीर्थको गये जो नदी में था १ वहां बहुत दान, पुण्य कर ब्राह्मणों को पूज और उसी तीर्थ में स्नान करके बलदेवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए २ वहां बड़े तपस्वी त्रित धर्म कर पूर्ण सिद्ध हुए। इस महात्माने कूपमें निवासकर अमृत पान किया था ३ वहां इसके दोनों भाई इसे कूपमें छोड़कर अपने अपने घरोंको चले गये। तब ब्राह्मणों में श्रेष्ठ त्रितने उन दोनों को शाप दिया ४

जनमेजय बोले, कि हे ब्रह्मन् ! किस प्रकारका कूप था और वह बड़ा तेजस्वी उस कूपमें किस रीति से गिरा और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ दोनों भाइयों ने उसको क्यों त्याग दिया ५ दोनों भाई उसको किस प्रकार कूपमें ही छोड़कर घरेंको चले गये और कैसे अमृत पान किया । हे ब्रह्मन् ! जो उसे आप मेरे सुनने योग्य मानते हैं तो वर्णन करें ६ वैशम्पायन बोले, कि हे राजन् ! सत्ययुगमें तीन भाई मुनि हुए जिनमें एक, द्वित और त्रित नाम से विख्यात, सूर्यके समान तेजस्वी थे ७ सब प्रजापति के समान सन्तानवाले, तपस्याके द्वारा ब्रह्मलोकको जीतनेवाले और ब्रह्मवादी थे ८ धर्म में प्रीति रखनेवाले उनके पिता गौतम उन्हींके तप, नियम और जितेन्द्रियपने से सदैव प्रसन्न रहते थे ९ फिर वे गौतम ऋषि बहुत काल पीछे उनकी प्रीतिसे अपने योग्य स्थानको गये १० हे जनमेजय ! जितने राजा उस महात्माके यजमान थे, उन सबने गौतमजी के स्वर्ग जानेपर उनके पुत्रों को पूजा ११ उनमेंसे त्रितने अपने कर्म और वेदपाठ आदिक आचरणों से पिता के समान ही प्रतिष्ठा पाई १२ और पवित्र लक्षणवाले महाभाग सब मुनियों ने भी उस महाभाग को वैसेही पूजा जैसे कि पहले उसके पिताको पूजते थे १३ हे राजन् ! किसी समय एक और द्वित नामक उसके दोनों भाइयोंने यज्ञ और धन की इच्छा की १४ हे शत्रुके तपाने वाले ! उन दोनों ने विचारा कि त्रितको लेकर सब यजमानोंको इकट्ठाकर दक्षिणामें गौवें लें १५ और बड़े फलवाला यज्ञ पाकर प्रसन्नतासे अमृत पियें । हे राजन् ! तीनों भाइयों ने यही किया १६ फिर उन्होंने गोरूप दक्षिणा के निमित्त सब यजमानों के पास घूमकर उनको यज्ञ कराये १७ उस यज्ञकर्म के द्वारा विधिपूर्वक बहुतसा धन और पशु पाकर वे सब महर्षि पूर्व दिशाको गये १८ महाराज ! प्रसन्नचित्त त्रित उनके आगे चलता था और पीछे पीछे एक और द्वित पशुओंको हांकते हुए जाते थे १९ पशुओं का बड़ा समूह देख कर उन दोनोंको चिन्ता हुई कि इस त्रित के विना ये गौवें किस प्रकार हमारी होसकती हैं । हे राजन् ! यह विचारकर उन दोनों पापी भाइयोंने मिलकर विचारा, कि २० । २१ त्रित यज्ञकर्म में सावधान है और वेदोंका भी पूर्ण ज्ञाता है । इससे त्रित और बहुतसी गौवें प्राप्त करलेगा २२ इस हेतु हम दोनों साथ होकर गौओंको हांकते हुए चलदें और हम दोनों से पृथक् होकर त्रित भी स्वेच्छापूर्वक जाय २३ रातको चलते समय मार्गमें, उनके आगे एक भेड़िया

आया और वहीं सरस्वतीके किनारे एक बड़ा कूप था २४ इसके अनन्तर त्रित मार्ग में भेड़िये को देख, भयभीत होकर हटा और उस कूपमें गिरपड़ा २५ वह कूप बड़ा अगाध, घोर और सब जीवों के लिये भयावना था। महाराज ! तब मुनियों में श्रेष्ठ त्रितने कूप में से २६ पीड़ा के शब्द किये; उन्हें उन दोनों भाई मुनियोंने भी सुने; पर एक और द्वित दोनों भाई कूपमें पड़े हुए त्रितको जानकर भी २७ भेड़िये के भयसे और लोभसे, उसको उसी कूप में छोड़कर चले गये। पशुओंको पानेवाले, दोनों भाइयों से त्यागे हुए बड़े तपस्वी २८ त्रितने निर्जल, धूलिसे युक्त तृणोंसे ढके हुए कुएं में २९ अपनेको इस प्रकार डूबा देखा जैसे कि नरकमें पापी डूबा हो। तब मृत्युसे भयभीत और अमृतपान न करनेवाले उस ज्ञानी ने बुद्धि से विचार किया, कि ३० यहां पर मैं कैसे अमृत पान करसकता हूं। हे भरतर्षभ, राजा जनमेजय ! उस बड़े तपस्वी ने कूपके भीतर ३१ इस प्रकार विचारकर वहां दैवयोगसे लटकती हुई एक लता को देखा। फिर धूलि से आच्छादित कूप में मुनिने जलका ध्यानकर ३२ अग्नियों की कल्पना करके अपने को होता माना। तब उस बड़े तपस्वी मुनिने उस वीरुधको अमृत कल्पना करके ३३ यजुर्वेद और सामवेदकी ऋचाओं का चित्तसे ध्यान किया। हे राजन् ! उसने कङ्कड़ोंको खाँड़ बनाकर चूर्ण किया ३४ और जलको घृत बनाकर देवताओं के भाग विचार अमृत का यज्ञ करके बड़ी ध्वनि की ३५ हे राजन् ! त्रितका वह शब्द ब्रह्मवादियों के शब्द की नाईं स्वर्ग में पहुँचा। इस रीतिसे उस यज्ञको प्राप्त ३६ होनेवाले महात्मा त्रित का यज्ञ होने पर सब स्वर्ग व्याकुल होगया परन्तु कोई कारण न जाना गया ३७ तब देवताओं के पुरोहित बृहस्पतिजी ने भी उस बड़े शब्दको सुनकर देवताओं से कहा, कि ३८ हे देवताओ ! त्रितका यज्ञ वर्तमान है, उसमें चलो। वह बड़ा तपस्वी क्रोधित होकर दूसरे देवताओंको भी उत्पन्न कर सकता है ३९ उनका वचन सुनकर सब देवता, जहां त्रितका यज्ञ होरहा था, वहां गये ४० देवताओं ने उस कूपमें जाकर यज्ञकर्मों में दीक्षित महात्मा त्रित को देखा ४१ बड़ी शोभा से युक्त उस महात्माको देखकर देवतालोग बोले, कि भाग के चाहनेवाले हम सब देवता आगये ४२ तब ऋषिने देवताओंसे कहा, कि हे देवताओ ! इस भयकारी कूपमें डूबे हुए बुद्धिहीन मुझको देखो ४३ महाराज ! फिर त्रितने मंत्रों से युक्त भाग विधिपूर्वक उन्हें दिये तो वे प्रसन्न हुए ४४

इसके पीछे विधिपूर्वक मिले हुए भाग पाकर प्रसन्नचित्त देवताओंने उसको अभीष्ट वर दिये ४५ उसने मांगा, कि हे देवताओ ! प्रथम तो इस कूप से निकालकर मेरी रक्षा करो; फिर यह वरदान दो, कि जो इस कूपमें स्नान और आचमन करे वह अमृत पीनेवाले की गति पावे ४६ हे राजन् ! उस कूपमें तरङ्ग संयुक्त सरस्वती ऊपर आई । उनसे उछाला हुआ वह ऋषि देवताओं को पूजता हुआ ऊपर आगया ४७ हे राजन् ! फिर देवता अपने लोकों को गये, तब प्रसन्नचित्त त्रित भी अपने स्थानको आया ४८ क्रोधयुक्त बड़े तपस्वी त्रितने उन दोनों ऋषि भाइयों को देख कठोर वचन कहे और शाप दिया, कि ४९ जो तुम पशुओंके लोभ में फँसकर मुझे छोड़कर भाग आये; इस हेतु बगले के समान भयानकरूप, चारों ओर घूमने और डाढ़ रखनेवाले होगे ५० मेरे शाप से इस पापकर्म के कारण तुम्हारी ऐसी दशा होगी और तुम दोनों की सन्तान गोलांगूल, रीछ और बन्दर होगी ५१ हे राजन् ! उस सत्यवक्ता के ऐसा कहते ही वे दोनों उसी क्षण में उस रूपवाले दिखाई पड़े ५२ बड़े पराक्रमी बलदेवजीने वहां भी आचमन और स्नानपूर्वक नाना प्रकार के दान देकर ब्राह्मणों को पूजा और नदी में उस कूपको देख बारम्बार प्रशंसा करके विनशन तीर्थ को प्राप्त किया ५३–५४ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांतीर्थकथने सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ।

वैशम्पायन बोले, कि हे राजन् ! इसके अनन्तर बलदेवजी विनशन तीर्थ को गये जहां पर शूद्र आभीरों की शत्रुता से सरस्वती गुप्त होगई १ इससे ऋषियों ने सदैव से उसे विनशन कहा है । बड़े बलवान् बलदेवजी वहां भी सरस्वती में स्नान और आचमन कर २ सरस्वती के उत्तम किनारे पर सुभूमिक तीर्थको गये जहां निर्मलमुख, निरालस्य अप्सराएं सदैव स्वच्छ क्रियाओं से क्रीड़ा करती हैं ३ हे राजन् ! देवता और गन्धर्व हरमहीने में ब्राह्मणोंसे सेवित उस पवित्र तीर्थको जाते हैं । उस स्थानपर अप्सरा और गन्धर्वों के समूह दिखाई पड़े ४–५ हे राजेन्द्र ! वहां देवता और पितर साथ मिलकर समयानुकूल सुख पाकर सदैव वीरुधों समेत ६ पवित्र दिव्य पुष्पों से बारम्बार युक्त होकर क्रीड़ा करते हैं । उन अप्सराओं की वह शुभभूमि है ७ और सरस्वती के उत्तम

तटपर सुभूमिका नामसे प्रसिद्ध है। बलदेवजी वहां स्नानकर ब्राह्मणोंको धन दे ८ गीत वाद्योंके शब्द सुनकर गन्धर्व और राक्षसोंकी बड़ी बड़ी छायाओंको देखते हुए गन्धर्वों के तीर्थको गये। वहां प्रीतिसे युक्त विश्वावसु गन्धर्व ९-१० बड़े सुहावने गीत गाते और बाजे बजाते हैं। हलधर ने भी वहां बहुतसे ब्राह्मणों को नानाप्रकार के धन देकर भेड़, बकरी, गौ, खच्चर, ऊंट और सुवर्ण, चांदी आदि दानकर बड़ी प्रसन्नता से ब्राह्मणों को उत्तम पदार्थ भोजन कराके, बड़ी दक्षिणाएं दीं ११-१२ फिर ब्राह्मणोंसे स्तुतियां सुनते हुए रेवतीरमणजी उस गान्धार तीर्थसे चले १३ वहां से बलदेवजी गर्गस्रोत तीर्थको गये। हे जनमेजय! वहांपर तपसे शुद्ध अन्तःकरणवाले, वृद्ध महात्मा गर्गजीने १४ त्रिकाल ज्ञान की गति से नक्षत्रों के व्यतिक्रम और अशुभ भयकारी उत्पातोंको सरस्वतीके शुभ तीर्थपरजाना। उन्हींके नामसे वह तीर्थ गर्गस्रोतनामसे विख्यातहै १५-१६ हे राजा जनमेजय! वहांसुन्दर व्रतवाले ऋषिलोग सदैव ज्ञानके निमित्त महात्मा गर्ग ऋषि के पास रहते थे १७ श्वेत चन्दन लगानेवाले बलदेवजी ने वहां शुद्ध अन्तःकरणवाले मुनियों को धन देकर १८ नाना प्रकारके भोज्य पदार्थ ब्राह्मणों को खिलाये। फिर बड़े यशस्वी नीलाम्बरधारी होकर वे शङ्खतीर्थ को गये १९ वहां ऋषियोंके समूहों से सेवित, महामेरु पर्वत के समान ऊंचे, श्वेत पर्वत के समान महाशङ्ख २० वृक्षको तालध्वजाधारी बलवान् बलदेवजी ने देखा। वह सरस्वतीके किनारे था। हजारों सिद्धों, यक्षों, विद्याधरों, बड़े बड़े तेजस्वी राक्षसों और बड़े बलवान् पिशाचादिकोंने उस वृक्ष के फलोंको २१-२२ व्रत और नियमोंसमेत समय समय पर भोजन किया और उन प्राप्त होनेवाले नियमों से पृथक् पृथक् बिचरने चले गये ३२ हे पुरुषोत्तम! वे सब मनुष्यों की दृष्टिसे गुप्त भ्रमण करते हैं। हे नरोत्तम! इस प्रकार से वह वृक्ष इस लोक में विख्यात हुआ २४ यादवों में श्रेष्ठ बलदेवजी सरस्वतीके उस विख्यात पवित्र तीर्थपर गौओं का दान कर २५ तांबे, लोहेके बर्तनों और नाना प्रकारके वस्त्रों से ब्राह्मणोंको पूजकर और आप भी ब्राह्मणोंसे स्तुतियां सुनकर २६ द्वैतवन पवित्र सरोवर पर गये। वहां बलदेवजी ने नाना प्रकारकी पोशाक धारण करने वाले मुनियों को देख २७ जलमें स्नान किया; ब्राह्मणों को पूजा और बड़े बड़े अभीष्ट पदार्थ दिये २८ फिर बलदेवजी सरस्वती के दक्षिण ओर चले। थोड़ी दूर जाकर २९ उन धर्मात्मा अरिनाशी ने नागधन्वा तीर्थ पाया, जहां

पर सर्पोंके राजा, महातेजस्वी राजा वासुकी का स्थान बहुतसे सर्पोंसे व्याप्त था। वहीं चौदह हजार ऋषियोंने भी निवास किया था ३०-३१ वहां देवताओं ने इकट्ठे होकर सर्पों में उत्तम, सर्पोंके राजा वासुकी का विधिपूर्वक अभिषेक कराया ३२ हे कौरव! वहां उनको सर्पोंसे भय नहीं हुआ; वहां भी ब्राह्मणों को विधिपूर्वक रत्नसमूह देकर ३३ वे पूर्व दिशा को गये। वहां पद पदपर लाखों तीर्थ देखे ३४ और जिसप्रकार ऋषियोंने कहा, उसी प्रकारसे उन्होंने तीर्थों में स्नान तथा उपवास नियमादिक किये। सब प्रकार के दान दे ३५ तीर्थवासी मुनियों को दण्डवत् कर और मार्ग पूछकर वहां से वे सरस्वती के पूर्वमुख होकर ३६ फिर वायुसे प्रेरित बादल की भांति लौटे क्योंकि नैमिषवासी महात्मा ऋषियोंका दर्शन करना था। हे राजन्! श्वेतचन्दन लगाये हुए बलदेवजी वहांपर नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वतीको लौटी हुई देखकर अत्यन्त आश्चर्ययुक्त हुए ३७-३८ जनमेजयने पूछा, कि हे ब्राह्मण! सरस्वती पूर्वाभिमुख क्यों लौटी। हे अध्वर्युओं में श्रेष्ठ! मैं सब वर्णन सुना चाहता हूं ३९ वहां यदुनन्दन बलदेवजी को आश्चर्य क्यों हुआ और वह उत्तम नदी क्यों और किस प्रकार इस रीति से लौटी ४० वैशम्पायन बोले, कि हे राजन्! पूर्व सत्ययुग में नैमिषवासी बहुतसे तपस्वी ऋषि बारह वर्षके बड़े यज्ञ में ४१ आये। वे महाभाग उस यज्ञ में विधिपूर्वक निवासकर ४२ नैमिशारण्यमें बारह वर्ष का यज्ञ समाप्त होनेपर तीर्थके कारण वहां गये ४३ हे राजन्! तब ऋषियों की अधिकता से सरस्वती के दक्षिण तटके तीर्थों की संख्या न होसकी ४४ हे नरोत्तम! जहांतक समन्तपंचक है, वहांतक वे उत्तम ब्राह्मण तीर्थ के लोभसे नदी के किनारे पर ठहरे ४५ वहांपर हवनकर्ता शुद्ध अन्तःकरणवाले मुनियोंके वेदपाठ से दिशाएं पूर्ण होगई ४६ महात्माओं के किये हुए प्रकाशित अग्निहोत्रों से वह उत्तम नदी चारों ओर से शोभित हुई ४७ महाराज! बालखिल्य, अश्मकुट, दन्तोलूखली, प्रसंख्यान ४८ वायुभक्षी, जलाहारी और वृक्षों के पत्ते खानेवाले, नानाप्रकार के नियमों से युक्त मैदान में सोनेवाले, तपस्वी ४९ मुनि सरस्वती के सम्मुख ऐसे ठहरे हुए थे जैसे कि नदियों में श्रेष्ठ श्रीगंगाजी को शोभित करते हुए देवता होते हैं ५० यज्ञ से पूजन करनेवाले सैकड़ों ऋषि आये। उन बड़े व्रतवालों ने सरस्वती का अवकाश नहीं देखा ५१ फिर उन ऋषियों ने यज्ञोपवीतों से उस तीर्थ को रचकर अग्निहोत्रादिक अनेक प्रकारकी क्रियाएं

कीं ५२ हे राजेन्द्र! इसके पीछे सरस्वती ने उनकी प्रसन्नता के लिये उस निराश चिन्तित ऋषिसमूहको अपना दर्शन दिया ५३ हे जनमेजय ! वह श्रेष्ठ नदी पवित्र तप करनेवाले ऋषियोंकी दया से बहुत कुञ्जें करके लौटी ५४ हे राजेन्द्र ! इसीसे वह श्रेष्ठ सरस्वती उनके लिये लौटकर पश्चिमाभिमुख जारी हुई ५५ और कहा, कि मैं तुम्हारा आना सफल कर फिर जाती हूं। उस महानदी ने यह बड़ा अपूर्व कर्म किया ५६ हे राजन्! इस प्रकार वह कुञ्ज नैमिषी नामसे प्रसिद्ध है। हे कौरवोत्तम ! तुम इस कुरुक्षेत्रमें बड़ी क्रिया करो ५७ वहां बहुत कुञ्जों समेत लौटी हुई सरस्वती को देखकर महात्मा बलदेवजी को बड़ा आश्चर्य हुआ ५८ उस तीर्थमेंभी यदुनन्दन बलदेवजी विधिपूर्वक स्नानकर ब्राह्मणों को नाना प्रकारके दान दे, विविध भक्ष्य भोज्य-पदार्थों से ब्राह्मणोंको तृप्त कर और ब्राह्मणों से पूजित होकरके चले ५९-६० फिर बलदेवजी उस सप्तसारस्वत तीर्थ को गये जोकि सरस्वती के तीर्थोंमें श्रेष्ठ; नाना प्रकारके पक्षियों से युक्त; बदरी, इंगुद, काश्मर्य, प्लक्ष, पीपल, विभीतक, कंकोल, पलाश, करील, पीलू और सरस्वती के तीर्थपर उत्पन्न होनेवाले नाना प्रकारके वृक्षों से शोभित ६१-६२ करूषक, बिल्व, आम्रातक, अतिमुक्तक, अखण्ड और पारिजातकों से शोभित; केलोंके वनोंवाला; देखने के योग्य; चित्तरोचक वायु, जल, फल और पत्तों के खानेवाले; दांतों को उलूखल रखनेवाले ६३-६४ पाषाणपर कूटनेवाले वनवासी मुनियों से युक्त; वेदध्वनिसे शब्दायमान; मृगोंके अनेक यूथों से व्याकुल; हिंसारहित और धर्मको उत्तम जाननेवाले मनुष्यों से सेवित था और जहांपर महामुनि सिद्ध मङ्कणकने तपस्या की थी ६५-६६॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेऽष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ।

जनमेजय बोले, कि सप्तसारस्वत नाम क्यों हुआ और मङ्कणक मुनि कौन था और वह समर्थ तथा सिद्ध कैसे हुआ; उसका नियम क्या था १ हे ब्राह्मणोत्तम ! वह किसके कुल में उत्पन्न हुआ और क्या क्या पढ़ा था ? आप विधिपूर्वक मुझसे सब वर्णन कीजिये २ वैशम्पायन बोले, कि हे राजन् ! सात सरस्वती हैं; जिनसे यह जगत् व्याप्त है। बलवानों से बुलाई हुई सरस्वती जहां तहां प्रकट हुई ३ उनके नाम ये हैं; सुप्रभा, कांचनाक्षी, विशाला, मनोरमा,

ओघवती, सुरेणु और विमलोदका ४ ब्रह्माजीका बड़ा यज्ञ होने पर उसके विस्तृत बाड़ेमें निर्मल, पुण्याहवाचन के शब्द, वेदध्वनियों समेत ब्राह्मणों के सिद्ध होने और यज्ञविधिमें देवताओंके सावधान होने५-६ तथा वहां ब्रह्माजी के दीक्षित होनेपर सब अभीष्ट वस्तुओं से वृद्धियुक्त यज्ञके द्वारा उन ब्रह्माजीको पूजन करते ७ धर्म-अर्थमें कुशल पुरुषोंके मनसे विचारेहुए अर्थ जहां तहां ब्राह्मणोंके पास नियत हुए। हे राजेन्द्र! वहां गन्धर्वों ने गाया, अप्सराओं ने नृत्य किया और वेगसे दिव्य बाजे बजाये ८-६ उस यज्ञकी ध्वनि आदिकसे देवतादिक भी प्रसन्न हुए तो मनुष्य कैसे प्रसन्न न होंगे १० हे राजन्! इसी प्रकार पुष्करजीमें ब्रह्माजी के नियत होने और यज्ञ होने पर ऋषि बोले, कि यह यज्ञ कुछ विशेष नहीं है ११ क्यों कि यहां नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वती दिखाई नहीं देती; तब भगवान् ब्रह्माजी ने सरस्वतीका स्मरण किया १२ हे राजेन्द्र! वहां पुष्करों में यज्ञ करनेवाले ब्रह्माजी से बुलाई हुई सुप्रभानाम सरस्वती प्रकट हुई १३ मुनि लोग शीघ्रता से युक्त ब्रह्माजी की प्रतिष्ठा करनेवाली सरस्वतीको देखकर प्रसन्न हुए और उस यज्ञको भी बड़ा माना १४ इस प्रकार नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती ब्रह्माजी की और बुद्धिमान् ऋषियों की प्रसन्नता के लिये प्रकट हुई। तब सब मुनिलोग नैमिष में इकट्ठे होकर बैठ गये और वेदके विषय में अपूर्व कथा होने लगी १५-१६ हे राजन्! जहांपर अनेक प्रकार की ऋचाएं जाननेवाले मुनि बैठे थे, वहां उन मुनियों ने मिलकर सरस्वती का स्मरण किया १७ तब हे महाभाग! यज्ञोंसे पूजनेवाले ऋषियोंसे ध्यान की हुई काञ्चनाक्षी सरस्वती धर्मकी वृद्धिके हेतु इकट्ठे होनेवाले महात्मा ऋषियों की सहायताके निमित्त नैमिष में आपहुँची और यज्ञसे पूजनेवाले मुनियों के आगे प्रकट हुई १८-१६ फिर वह श्रेष्ठ नदी गय देशमें बड़े यज्ञों से पूजनेवाले राजा गय के बुलाने पर उनके यज्ञ में प्रकट हुई! तेजव्रत ऋषियों ने गयकी बुलाई हुई सरस्वतीको विशाला कहा २०-२१ वह शीघ्र चलनेवाली नदी हिमाचलकी कुक्षिसे उत्पन्न हुई। हे भरतवंशिन्! इसी प्रकार उस पूजन करने वाले औद्दालकके यज्ञ में २२ सब ओरसे वृद्धियुक्त, इकट्ठे होनेवाले मुनियों के मण्डलमें कोशलदेशके पवित्र भागपर २३ पूजन करनेवाले महात्मा औद्दालक से ध्यान की हुई सरस्वती उस ऋषिके निमित्त उस देशमें आपहुँची २४ जो कि केवल मृगचर्मधारी मुनियों से पूजित थी। उनके मनसे प्रकट की हुई सरस्वती

मनोरमा नाम से प्रसिद्ध हुई २५ यज्ञ करनेवाले महात्मा कुरुके इस कुरुक्षेत्र में; जो कि राजर्षियों से सेवित, पवित्र और उत्तम द्वीपमें है, सुरेणु नाम भाग्यवती सरस्वती आई। हे राजन्! महात्मा वशिष्ठजीसे २६ बुलाई हुई दिव्य जल-वाली ओघवती नाम सरस्वती कुरुक्षेत्र में प्रकट हुई और गंगाद्वारपर यज्ञ करने वाले दक्षसे बुलाई हुई २७-२८ शीघ्रगामिनी सरस्वती सुरेणु नामसे प्रसिद्ध हुई। और यज्ञ करनेवाले ब्रह्माजी से बुलाई हुई विमलोदा नाम भगवती सरस्वती २६ पवित्र हिमाचल पर्वतपर गई। फिर सब एकत्र होकर उस तीर्थपर आईं ३० इसीसे वह तीर्थ इस पृथ्वीपर सप्तसारस्वतनाम से विख्यात हुआ। हे राजन्! बाल ब्रह्मचारी, नदीके जल में स्नान करनेवाले मङ्कणक ऋषिका भी उत्तम चरित्र सुनो। किसी समय वहां दैवेच्छा से जलमें ३१-३३ स्नान करनेवाली एक अति मनोहर, श्रेष्ठ नेत्रवाली निर्दोष नंगी स्त्रीको देखकर सरस्वती के जल में इनका वीर्य गिर पड़ा ३४ तो उस बड़े तपस्वीने उस वीर्य को कलशमें रख दिया। फिर कलशमें उस वीर्यके सात भाग हुए ३५ उसमें सात ऋषि उत्पन्न हुए जिन्होंने मरुद्गणों में अवतार लिया था। उनके नाम ये हैं;-वायुवेग, वायुबल, वायुहा, वायुमण्डल ३६ वायुज्वाल, वायुरेता और पराक्रमी वायुचक्र। इस प्रकार मरुतोंके ये ऋषि हुए ३७ हे राजेन्द्र! पृथ्वीपर बड़े आश्चर्य-कारी उस महर्षिके तीनों लोकोंमें विख्यात चरित्रको सुनो ३८ निश्चय ही पहले मङ्कणक सिद्ध कुशाओं की नोकसे घायल हुआ था। सुनागया कि उसके हाथसे शाकरस टपका था ३९ वह ऋषि अपने हाथसे टपके हुए शाकरसको देखकर प्रसन्न हो नृत्य करने लगा। हे वीर! फिर उस ऋषिके नृत्य करने पर संसारके जड़चैतन्य सब जीव उसके तेजसे नृत्य करने लगे ४०-४१ हे राजन्! तब ब्रह्मादिक देवता और तपोधन ऋषियोंने महादेवजीसे प्रार्थना की, कि हे देवताओंके देवता! ऐसा कोई उपाय कीजिये, जिससे यह ऋषि नृत्य न करे ४२ महादेवजी उस मुनिको अत्यन्त प्रसन्नता में पूर्ण देखकर देवताओं के हितके लिये बोले, कि ४३ हे धर्मज्ञ, ब्राह्मण! आप नृत्य क्यों करते हैं। आपको इतनी प्रसन्नता कैसे हुई है? हे श्रेष्ठ ब्राह्मण! धर्ममार्ग में तपस्वीकी प्रसन्नताका कारण क्या है ४४ ऋषि ने कहा, कि हे ब्राह्मण! मेरे हाथसे टपके हुए इस शाकरस को क्या तुम नहीं देखते हो? हे समर्थ! मैं इसी शाकरस को देख आनन्दमग्न होकर नाचता हूं ४५ तब शिवजी उस रागसे मोहित मुनिसे

हँसकर बोले, कि हे वेदपाठिन्! मुझे आश्चर्य नहीं होता है; तुम मुझे देखो ४६ हे राजेन्द्र! उस श्रेष्ठ मुनिसे इस प्रकार कहकर बुद्धिमान् महादेवजी ने अँगुठे की नोकसे अपना अँगुठा घायल किया ४७ उस घावसे बर्फ के समान निकली हुई श्वेत भस्म को देख लज्जित होकर वह मुनि उनके चरणोंपर गिर पड़ा (आशय) शरीरका भस्मरूप होना बड़ी सिद्धि है। रुद्रजी उसे दिखलाकर उसका अहङ्कार दूर करते हैं ४८ उसने उन्हें देवताओं का भी देवता महादेव माना और आश्चर्यित होकर कहने लगा, कि मैं रुद्रसे उत्तम और बड़ा किसी दूसरे देवताको नहीं मानता हूं ४९ हे शूलपाणे! तुम देवता, असुर आदि समेत सब जगत्की गति हो; तुमसे सब जगत् उत्पन्न हुआ है। इस लोक के पण्डितों की ऐसी ही राय है ५० प्रलय होनेपर यह सब जगत् तुममें ही लय होता है। जब तुम देवताओं से ही जानने योग्य नहीं हो तब मैं अल्पबुद्धि कैसे जान सकता हूं ५१ जगत के प्रकाशरूप भाव सब आपके रूपमें दिखाई पड़ते हैं। हे निष्पाप! ब्रह्मादिक देवताओं ने भी तुम्हीं वरदाता की उपासना की है ५२ देवताओं के उत्पन्न करनेवाले और सबको कर्मों में प्रवृत्त करनेवाले आपही हो। इस लोक में सब देवता आपकी ही कृपासे निर्भय होकर आनन्द करते हैं ५३ वह ऋषि महादेवजी की इस प्रकार स्तुति करके नम्र होगया और कहने लगा कि हे देवता! मैंने जो अहङ्कारादिक चपलता की है ५४ उस सबसे आपको प्रसन्न करता हूं और चाहता हूं, कि मेरा तप नष्ट न होने पावे। तब प्रसन्नचित्त शिवजी ऋषि से बोले; कि ५५ हे ब्राह्मण! मेरी कृपासे तुम्हारा तप हजार प्रकार से बढ़ै और मैं इस आश्रम में सदैव तुम्हारे साथ रहूंगा ५६ जो मनुष्य इस सप्तसारस्वत तीर्थ में मेरी पूजा करेगा, उसको इस लोक और परलोकमें कोई वस्तु दुष्प्राप्य नहीं है ५७ और निस्सन्देह वह सारस्वत लोक में जायगा। यह बड़े तेजस्वी मङ्कणक ऋषि का चरित्र है ५८ वह बैठा हुआ इसी सुकन्यामें उत्पन्न हुआ है ५९॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्याने नवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय।

वैशम्पायन बोले, कि बलदेवजी ने वहां निवास किया; आश्रमवासियों को अच्छीरीति से पूजा और मङ्कणक ऋषि में शुभ प्रीति की १ हे भरतवंशिन्!

बलदेवजी ब्राह्मणों को दान देकर उस रात्रि में वहीं ठहरे। फिर बड़े प्रातःकाल उठकर मुनियोंके समूहोंसे पूजित हो २ और आपभी उनको पूजकर, स्नान आचमन करके तीर्थ के निमित्त शीघ्र चलदिये ३ इसके पीछे बलदेवजी शुक्र जीके कपालमोचन तीर्थ को गये। महाराज, राजा जनमेजय! जहांपर पहले रामचन्द्रजीके फेंके हुए राक्षसके बड़े शिरसे निगली हुई जंघावाले महोदर महामुनि मुक्त हुए ४-५ वहां पूर्वकालमें बड़े महात्मा शुक्रजी ने तप किया। जहां उस महात्माकी सम्पूर्ण नीति प्रकट हुई ६ वहीं नियत होकर शुक्रजी ने दैत्य और दानवोंके परस्पर विरोधको शोचा। हे राजन्! राजा बलिने उस अत्यन्त श्रेष्ठ तीर्थ में विधिपूर्वक महात्मा ब्राह्मणों को धन दिया ७ जनमेजय ने कहा, कि हे द्विजवर्य! इस तीर्थका कपालमोचन नाम कैसे हुआ? राक्षसका शिर मुनि की जंघामें कैसे चिपटा और फिर कैसे छूटा ८ वैशम्पायन बोले, कि हे राजेन्द्र! पूर्वसमय में दण्डकवनवासी राक्षसों के मारनेवाले महात्मा रामचन्द्रने ९ उस दुष्ट राक्षसका शिर काटडाला। तब तेजधारवाले आयुधसे काटा हुआ वह शिर उछला १० दैवयोग से वह शिर महोदर की जंघापर चिपट गया वह शिर वनमें घूमनेवाले महोदरके हाड़को छेदकर कुछ चेष्टा करने लगा ११ बड़ा ज्ञानी वह ब्राह्मण उस चिपटे हुए शिरके कारण तीर्थ और देवालयों में जाने योग्य न रहा १२ हमने सुना है, कि इतने पर भी चिपटे हुए दुर्गन्धित शिर से पीड़ित वह महामुनि पृथ्वीके सब तीर्थोंको गया १३ उस बड़े तपस्वी ने सब नदियों और समुद्रोंपर जाकर वह वृत्तान्त शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषियों से वर्णन किया १४ सब तीर्थों में स्नान करने पर भी जब वह शिर न छूटा; तब फिर उस ऋषिने मुनियोंके वचन सुने, कि १५ सरस्वतीका एक उत्तम तीर्थ औशनस नामसे विख्यात है, जो सब पापोंका दूर करनेवाला, सिद्धिका क्षेत्र और अत्यन्त श्रेष्ठ है १६ फिर औशनस तीर्थ में जाकर स्नान करते ही उस ऋषिका चरण छोड़कर वह शिर जल में गिर पड़ा। उस शिरसे छूटे हुए ऋषि ने बड़ा आनन्द पाया १७-१८ वह शिर भी जल में गुप्त होगया। हे राजन्! उस शिर से पृथक्, पवित्रशरीर, पापों से रहित १९ सुखी और कृतकर्मी होकर वह महोदर ऋषि अपने आश्रमको आया। उस शिरसे छूटे हुए उस बड़े तपस्वी ने पवित्र आश्रममें जाकर वह सब वृत्तान्त शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषियों से कहा। हे बड़ाई देनेवाले! इकट्ठे होकर उन ऋषियों ने उसके वचन सुनकर

उस तीर्थका कपालमोचन नाम रक्खा तब उस महर्षि ने भी उस अत्यन्त उत्तम तीर्थ में जाकर २०–२२ जल पान किया और बहुत बड़ी सिद्धि पाई । वहां भी वृष्णियों में श्रेष्ठ बलदेवजी बहुत दान दे, ब्राह्मणों को पूजकर २३ उस रुषंगों के आश्रम को गये जहां आर्ष्टिषेण ने बड़ा घोर तप किया था २४ वहीं महामुनि विश्वामित्र ने ब्राह्मण वर्ण पाया । वह बड़ा स्थान २५ सब अभीष्टोंसे वृद्धियुक्त और सदैव मुनि, ब्राह्मणों से सेवित है । हे समर्थ, राजेन्द्र ! ब्राह्मणों समेत श्रीबलदेवजी वहां गये २६ जहांपर रुषंगने अपना शरीर त्यागा था । हे भरतवंशिन् ! सदैव तप करनेवाले, वृद्ध ब्राह्मण २७ शरीरके त्याग ने में प्रवृत्तचित्त रुषंगने बहुत चिन्ता कर अपने सब पुत्रोंको बुलाकर २८ सबसे कहा, कि मुझे पृथूदक तीर्थ को लेचलो । उन तपस्वी ऋषिकुमारोंने तपोधन रुषंगको वृद्ध जानकर २९ सरस्वतीके उस तीर्थपर पहुँचाया जोकि धर्मकी वृद्धिके कारण, सैकड़ों तीर्थोंसे युक्त और वेदपाठियों से सेवित था ३० हे राजन् ! वह बड़ा तपस्वी, ऋषियों में श्रेष्ठ रुषंग वहां विधिपूर्वक स्नान करके ३१ तीर्थ के गुणों को जान, अत्यन्त प्रसन्न होकर समीप बैठे हुए पुत्रोंसे बोला, कि ३२ जपमें प्रवृत्त होकर जो मनुष्य सरस्वती के उत्तरीय तट में पृथूदक तीर्थपर अपना शरीर त्यागेगा, उसको कलियुगमें मरना दुःखी नहीं करेगा—वह अविनाशी होकर स्वर्ग पावेगा ३३ ब्राह्मणों के प्यारे बलदेवजीने वहां जाकर स्नान, आचमनादि करके बहुतसा दान ब्राह्मणों को दिया ३४ जहां पर भगवान् लोकपितामह ने लोकोंको उत्पन्न किया और जहां पर तेजव्रत आर्ष्टिषेण ने ३५ बड़े तपसे ब्राह्मण वर्ण पाया; ऋषियों में श्रेष्ठ, बड़े तपस्वी राजर्षि सिन्धुद्वीप और देवापी ने ३६ ब्राह्म वर्ण पाया; इसी प्रकार जहां महातपस्वी और उग्र तेजवाले समर्थ विश्वामित्र मुनिने भी ब्राह्मणत्व पाया वहां भी प्रतापी बलभद्रजी गये ३७–३८ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्याने दशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ।

जनमेजयने पूछा, कि भगवान् आर्ष्टिषेण ने किस प्रकारसे बड़ी तपस्या की और सिन्धुद्वीप, देवापी और विश्वामित्र ने किस प्रकार ब्राह्मणत्व पाया; हे भगवन् ! सब मुझसे कहिये क्योंकि मुझको सुननेका बड़ा उत्साह है १–२

वैशम्पायन बोले, कि हे राजन् ! पूर्व सत्ययुग में, द्विजों में श्रेष्ठ आर्ष्टिषेण
सदैव वेदपाठ में प्रीति रखकर सदा गुरुकुलमें ही रहते थे ३ सदैव गुरुकुलमें
रहने पर भी उस राजर्षि की विद्या और वेद सम्पूर्ण न हुए ४ तब उस व्या-
कुलचित्त तपस्वी ने बड़ा तप किया । उस तपसे वेदोंको पाकर ५ बुद्धिमान्,
वेदज्ञ, सिद्ध और ऋषियोंमें श्रेष्ठ उस तपस्वी ने उस तीर्थको तीन वर दिये ६
अबसे इस महानदीके तीर्थमें स्नान करनेवाला मनुष्य अश्वमेधका फल पा-
वेगा ७ यहां सर्प से किसीको भय नहीं होगा और थोड़े ही समय में उत्तम
फल पावेगा ८ बड़े तेजस्वी मुनि इस प्रकार कहकर स्वर्ग को गये । भगवान्
प्रतापी आर्ष्टिषेण इस प्रकारसे सिद्ध हुए ९ महाराज ! फिर उस तीर्थ में प्रतापी
सिन्धुद्वीप और देवापीने ब्राह्मणत्व पाया १० हे तात ! उसी प्रकार सदैव
तप करनेवाले जितेन्द्रिय विश्वामित्रने तपके द्वारा ब्राह्मणत्व पाया ११ एक
गाधि नामक क्षत्रिय इस पृथ्वीपर बड़े विख्यात थे; उनके पुत्र विश्वामित्र भी
बड़े प्रतापी हुए १२ हे तात ! निश्चयही राजा कौशिक बड़े बुद्धिमान् और
प्रज्ञ थे । उस बड़े तपस्वीने विश्वामित्र पुत्रका राज्य पर अभिषेक कराके १३
शरीर त्यागने में चित्तको प्रवृत्त किया; तब हाथ जोड़कर प्रजाने कहा, कि हे
बड़े ज्ञानी ! आपको वन में न जाना चाहिये । बड़े भय से आप हमारी रक्षा
करें १४ इस प्रकार प्रजाके वचन सुनकर गाधिने उन्हें उत्तर दिया, कि मेरा
पुत्र संसार भर का रक्षक होगा १५ हे राजन् ! राजा गाधि विश्वामित्र को
राज्यसिंहासन पर बिठलाकर स्वर्ग को गये और विश्वामित्र राजा हुए १६ पर
विश्वामित्र अनेक उपायों से भी पृथ्वीकी रक्षा करने में समर्थ न हुए। उन्होंने
राक्षसों का बड़ा भय सुना १७ वे चतुरंगिणी सेना समेत नगर से निकल कर
बहुत दूर वशिष्ठजी के आश्रमको गये । हे राजन् ! वहां उनकी सेना के लोगों
ने बड़े अन्याय किये; तब ब्रह्माजी के पुत्र वशिष्ठजी ने १८-१९ सब महावन
को टूटा और बिगड़ा हुआ देखा । क्रोधित होकर मुनियों में श्रेष्ठ वशिष्ठजी
ने २० अपनी गौसे कहा, कि घोर शबरों को उत्पन्न करो । उनकी आज्ञासे
उस गौने भयङ्कर मनुष्य उत्पन्न किये २१ उन्होंने विश्वामित्रकी सेनाको सब
दिशाओं में छिन्न भिन्न कर दिया । गाधिके पुत्र विश्वामित्रने अपनी सेना
भागी हुई सुनकर २२ तपको श्रेष्ठ मान, तपमेंही चित्त लगाया । हे राजन् !
सावधान विश्वामित्र ने सरस्वती के उत्तम तीर्थपर २३ नियम और व्रतों से

अपने शरीरको दुर्बल किया और जल, वायु तथा पत्रोंका आहार किया २४ मैदान में शयन कर अनेक पृथक् पृथक् नियमों को भी वारम्बार किया। फिर देवताओंने उस व्रत में विघ्न किये २५ परन्तु इस महात्माकी बुद्धि नियमसे पृथक् न हुई। उत्तम उपायोंसे विविध तप करके २६ विश्वामित्र तेज से सूर्य के समान हुए तब बड़े वरदाता ब्रह्माजी ने तप में प्रवृत्त विश्वामित्र को और उसके उत्तम तपको स्वीकार किया २७ और वर मांगनेको कहा। उसने वर मांगा, कि मैं ब्राह्मण होजाऊं २८ उस समय सब लोकोंके पितामह ब्रह्माजी बोले, कि ऐसा ही हो। वह बड़ा यशस्वी बड़ी तपस्या से ब्राह्मण वर्ण पाकर २९ अभीष्ट सिद्धि करनेवाला, देवताओं के समान होकर सब पृथ्वीपर घूमा। बलदेवजी ने उस उत्तम तीर्थपर बहुत प्रकारका धन देकर ३० दुग्धवती गौ, सवारी, वस्त्र, भूषण, भक्ष्य-भोज्य और पानकी वस्तुएं ३१ दान कीं। हे राजन्! इस प्रकार से बलदेवजी उत्तम ब्राह्मणों को पूजकर समीप ही बकके आश्रमको गये; जहांपर सुना जाता है, कि दाल्भोबकने कठिन तपस्या की थी ३२ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्याने एकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय।

वैशम्पायनजी बोले, कि बलदेवजी उस ब्रह्मयोनि तीर्थसे संयुक्त तीर्थको गये, जहांपर अपने आश्रममें बड़े तपस्वी दाल्भोबकने विचित्रवीर्यके पुत्र धृतराष्ट्रके देशको हवन किया और घोर तपसे अपने शरीरको दुर्बल कर १-२ धर्मात्मा प्रतापी बड़े क्रोधसे पूर्ण हुआ। पूर्व समय में नैमिषनिवासियों का बारहवर्ष का यज्ञ ३ समाप्त होनेपर विश्वचिति यज्ञके अन्त में ऋषिलोग पाञ्चाल देशोंमें गये। उन ज्ञानी ऋषियों ने वहां दक्षिणाके निमित्त राजा से याचना की ४ उस राजाने हृष्ट पुष्ट, नई अवस्था की और नीरोग इकीस गौएं दीं। दाल्भोबक उनसे बोले, कि पशुओं का विभाग करो ५ मैं इन पशुओं को छोड़कर उस उत्तम राजासे भिक्षा मांगूंगा। हे राजन्! ब्राह्मणों में श्रेष्ठ प्रतापी दाल्भोबक सब ऋषियों से इस प्रकार कहकर ६ धृतराष्ट्रके भवनको गये और राजा धृतराष्ट्रके सम्मुख जाकर ७ उनसे पशु मांगे। उस श्रेष्ठ राजाने दैवयोगसे गाय और बैलों को मृतक देखकर क्रोधपूर्वक उनसे कहा, कि ८ हे ब्रह्मबन्धो! जो तुम चाहते हो, तो इन पशुओंको शीघ्र लेजाओ। तब धर्मज्ञ ऋषिने उस

प्रकार के वचन सुनकर बड़ी चिन्ता की, कि ९ बड़े दुःख की बात है जो इसने मुझको सभामें ऐसे निर्दय और अनादरके वचन कहे । क्रोध से पूर्ण उस श्रेष्ठ ब्राह्मणने एक मुहूर्तभर चिन्ता करके १० राजा धृतराष्ट्रको नाश करने का विचार किया । उस श्रेष्ठ मुनिने मृतक पशुओं का मांस काटकर ११ राजा धृतराष्ट्रके देशको हवन करदिया । महाराज ! सरस्वती के अवकीर्ण तीर्थमें अग्नि प्रज्वलित करके १२ वह बड़ा तपस्वी दाल्भोबक बड़े नियममें नियत हुआ और उसने उन मांसखण्डों से उसके देशको होमा १३ हे राजन् ! इसके पीछे विधिके अनुसार उस भयानक यज्ञके होनेपर धृतराष्ट्रका देश नष्ट होगया १४ राजाका वह राज्य ऐसा अत्यन्त नष्ट हुआ जैसा कि फरसेसे कटा हुआ बड़ा वन होता है १५ बड़ी आपत्तिमें फँसा हुआ वह देश चौपट होगया । हे राजन्! वह राजा अपने देशको इस प्रकार विनष्ट देखकर १६ महादुःखी हुआ और चिन्तित होकर उसने ब्राह्मणोंसमेत राज्यको आपत्तिसे बचानेके अनेक उपाय किये १७ परन्तु कल्याण न हुआ । हे निष्पाप, जनमेजय ! जब देशका नाश होना बन्द न हुआ, तब उस राजा समेत सब ब्राह्मण दुःखी हुए १८ सबने प्रश्नों के बतानेवालोंसे पूछा । तो उन लोगोंने कहा, कि पशुओं के विषय में तुमसे अनादर किया हुआ १९ एक मुनि गौवों के मांस से तुम्हारे देशको होमता है । उससे होमे हुए तुम्हारे देश का बड़ा नाश होरहा है २० यह उसीके तप का प्रभाव है जिससे, कि तुम्हारा बड़ा नाश है । हे राजन् ! सरस्वती के जलकुञ्जमें उसको प्रसन्न करो २१ हे भरतर्षभ ! इसके पीछे उस राजा ने सरस्वती पर जाकर हाथ जोड़ शिर से पृथ्वी पर गिरकर उस बकमुनिसे कहा, कि २२ हे भगवन् ! मैं आपको प्रसन्न करता हूं । मेरे अपराध क्षमा करो । मुझ दुःखी, लोभी और अज्ञानतासे निर्बुद्धिकी तुम्हीं गति हो २३-२४ तुम मेरे नाथ हो, मुझपर कृपा करने योग्य हो । इस प्रकार विलाप करनेवाले, शोक से निर्बुद्धि राजाको देखकर उसको दया हुई और उस देशके नाश न होने के लिये फिर अग्निमें आहुति दी । फिर देशको निर्विघ्नकर बहुतसे पशुओं को ले २५-२६ प्रसन्न होकर वे नैमिषारण्यको गये और धर्मात्मा, सावधान, बड़े साहसी, और वृद्धिवाले राजा धृतराष्ट्र ने भी अपना नगर पाया । महाराज ! उसी तीर्थपर बड़े बुद्धिमान् बृहस्पतिजी ने २७-२८ असुरों के नाश और देवताओंकी वृद्धिके निमित्त मांससे यज्ञमें हवन किया । इस हेतुसे असुरों

का विनाश हुआ २६ युद्ध में विजयसे शोभित देवताओं के हाथ से राक्षसोंका नाश हुआ । बड़े यशस्वी बलदेवजी वहां भी ब्राह्मणों को विधिपूर्वक ३० घोड़े, हाथी, खच्चरोंसे युक्त रथ, बहुमूल्य रत्न और बहुतसे धन धान्य देकर ३१ ययाति तीर्थ को गये । हे पृथ्वीनाथ, महाराज ! वहां नहुषके पुत्र महात्मा ययाति के यज्ञ में सरस्वती ने ३२ घृत और दूध बहाया । सब पृथ्वीका स्वामी पुरुषोत्तम ययाति वहां यज्ञ करके ३३ प्रसन्नता से ऊपरके उत्तम लोकोंको गया । उसने श्रेष्ठ लोक पाये । महाप्रभु राजा ययाति ने यज्ञ करते हुए ३४ बड़ी उदारता और सनातन भक्तिको चित्तमें धारण कर ब्राह्मणों को इच्छानुकूल अभिष्ट वस्तुओंका दान किया ३५ यज्ञरचनामें बुलाये हुए पुरुषोंको उस उत्तम नदीने गृहों समेत उत्तम शयन दिये ३६ षट्रस भोजनपूर्वक अनेक प्रकारके दान दिये । राजासे उत्तम दान को पानेवाले ३७ उन प्रसन्न ब्राह्मणों ने शुभ आशीर्वाद देकर राजाको प्रसन्न किया । वहां गन्धर्वों समेत सब देवता यज्ञ के सामानों से प्रसन्न हुए और सब मनुष्य यज्ञकी सामग्री आदिको देख कर आश्चर्यित हुए ३८ इसके पीछे तालध्वजाधारी, बड़े धर्मध्वज महात्मा, शुद्ध अन्तःकरणवाले, सदैव बड़े दानी और साहसी बलदेवजी वशिष्ठजीके भयानक वेगवाले तीर्थको गये ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ।

जनमेजय बोले, कि वशिष्ठजी का भयानक वेगवाला अपवाह तीर्थ कैसे हुआ और उस उत्तम नदीने उसको कैसे बहाया १ उसकी शत्रुता कैसे हुई; हे प्रभो ! उसका क्या हेतु है । हे बड़े ज्ञानी ! आप मुझसे वर्णन कीजिये, मैं उसके सुननेसे तृप्त नहीं होताहूं २-३ वैशम्पायन बोले, कि हे राजा जनमेजय ! ब्रह्मर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र के तपकी ईर्षा से बड़ी शत्रुता हुई । शिवजी के तीर्थ पर वशिष्ठजी का बड़ा आश्रम हुआ और पूर्वीय पक्षमें बुद्धिमान् विश्वामित्र का आश्रम हुआ ४ महाराज ! जहांपर शिवजीने उत्तम तपको तपा था; वहीं ज्ञानी लोग इसका घोर कर्म कहते हैं ५ जहांपर प्रभु शिवजीने यज्ञकर सरस्वती का पूजन करके स्थाणु नाम से प्रसिद्ध उस तीर्थको नियत किया ६ हे राजन् ! देवताओं ने जिस तीर्थ पर असुरोंके मारनेवाले स्वामिकार्त्तिकजी को

देवताओंके सेनापतिपद पर अभिषेक कराया ७ उस सारस्वत तीर्थ में विश्वामित्र महामुनि ने उग्र तपसे वशिष्ठजी को चलायमान किया ८ हे भरतवंशिन् ! उन तपोधन वशिष्ठजी और विश्वामित्रजी में तपके कारण कठिन ईर्षाहुई ९ वहां भी अत्यन्त दुःखी महामुनि विश्वामित्र वशिष्ठजी के तेजको देखकर बड़े चिन्तित हुए १० सदैव धर्मपर चलनेवाले विश्वामित्र की यह मति हुई, कि यह सरस्वती शीघ्र ही तपोधन ११ और जप करनेवालों में श्रेष्ठ वशिष्ठजी को मेरे सम्मुख लावेगी। यहां आने पर उस ब्राह्मण को निस्सन्देह मारूंगा १२ इस प्रकार क्रोधसे रक्तनेत्र उस महामुनि विश्वामित्र ने निश्चय कर नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती का स्मरण किया १३ मुनिके ध्यान करतेही प्रकाशमान सरस्वती बड़ी व्याकुल हुई। उसने पराक्रमी विश्वामित्र को बड़ा क्रोधित जाना १४ तब कम्पायमान, रूपान्तरमुख सरस्वती हाथ जोड़कर मुनियों में श्रेष्ठ विश्वामित्र के सम्मुख खड़ी हुई १५ मृतक वीरोंवाली स्त्री के समान वह सरस्वती भी अत्यन्त दुःखी हुई और उस श्रेष्ठ मुनिसे बोली, कि कहो क्या आज्ञा है १६ क्रोधयुक्त मुनि ने कहा, कि मैं वशिष्ठजी को मारूंगा। इससे तुम उनको शीघ्र लेआओ। यह सुनकर वह नदी बड़ी पीड़ित हुई १७ वह कमललोचनी अत्यन्त भयभीत हो, हाथजोड़ कर ऐसे कम्पित हुई, जैसे कि वायु से ताड़ित लता होती है १८ तब वह मुनि ऐसे रूपवाली नदी से बोले, कि तुम विना विचारे वशिष्ठजी को मेरे पास ले आओ १९ उसे सुन, पाप करनेकी इच्छा जानकर, पृथ्वीपर वशिष्ठजी के अतुल प्रभावको जानती हुई २० सरस्वतीने वशिष्ठजी के पास जाकर सारा हाल कह दिया। नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती से बुद्धिमान् विश्वामित्रने जो कहा था २१ उससे और वशिष्ठजीके शापसे भयभीत और बारम्बार कम्पित वह महाशाप को विचार कर ऋषिसे अत्यन्त भयभीत थी २२ धर्मात्मा वशिष्ठजी उस दुर्बल, विपरीत रूपान्तरित और चिन्तित सरस्वती को देखकर बोले, कि हे नदियोंमें श्रेष्ठ, शीघ्रगामिनि ! तू अपनी रक्षा कर और मुझको शीघ्र लेचल; नहीं तो विश्वामित्र तुझको शाप देगा। तू और विचार मत कर २३-२४ हे कौरव ! तब उस नदी ने करुणाभ्यासी वशिष्ठजीके वचन सुनकर चिन्ता की, कि किस रीति और उपायसे शुभ कर्म हो २५ उसको चिन्ता हुई कि वशिष्ठजीने मुझपर सदैव दया की है; मुझको इनका हित करना योग्य है २६ हे राजन् ! तब सरस्वतीने अपने तटपर जप होमादिक करनेवाले ऋषियों में श्रेष्ठ विश्वामित्रको देखकर चिन्ता

की, कि २७ यह समय है । फिर सरस्वतीने अपने वेगसे किनारेको हटाया २८ वशिष्ठजी उस किनारे के हटाने से सवार किये गये । उस जलपर सवार ऋषिने सरस्वतीकी प्रशंसा की, कि २९ हे सरस्वती ! तुम ब्रह्माजी की नदीसे जारी हुई हो और यह सब संसार तुम्हारे ही उत्तम जलोंसे व्याप्त है ३० हे देवि ! आकाश में रहकर तुम्हीं बादलों में अमृतको छोड़ती हो और सब जल भी तुम्हीं हो । हम तुमसे वेद पढ़ते हैं ३१ तुम्हीं पुष्टि, द्युति, कीर्ति, सिद्धि, बुद्धि, उमा और वाणी होकर स्वाहा हो । यह जगत् तुम्हारे आधीन है ३२ इन चार प्रकारके जीवोंमें तुम्हीं वास करती हो । हे राजन् ! इस प्रकार महर्षि से स्तुत्यमान सरस्वती ने ३३ उन्हें वेगसे विश्वामित्र के आश्रम में पहुँचाया और विश्वामित्रसे उनका आना बारम्बार वर्णन किया ३४ सरस्वती के लाये हुए उस ऋषिको देखकर क्रोधित विश्वामित्र ने वशिष्ठजी को नाशनेवाला शस्त्र चाहा ३५ सावधान नदी ने क्रोधयुक्त विश्वामित्रको देखकर ब्रह्महत्या के भय से, वशिष्ठजी को पूर्वदिशाकी ओर बहा दिया ३६ दोनोंके वचन कर सरस्वती ने विश्वामित्रको छलकर ऐसा कर्म किया । तब अत्यन्त अशान्तचित्त, क्रोधयुक्त विश्वामित्र बोले, कि हे उत्तम नदि ! तुम मुझको छलकर चली गई हो ३७-३८ इस हेतु हे कल्याणिनि ! तुम राक्षसों के स्वीकृत रुधिरको धारण करो । फिर बुद्धिमान् विश्वामित्र से शापित सरस्वती ने ३९ एक वर्षतक रुधिरयुक्त जल बहाया । इसके अनन्तर ऋषि, देवता, अप्सरा और गन्धर्व ४० सरस्वतीको उस प्रकारकी देखकर अत्यन्त दुःखी हुए । हे राजन् ! इस प्रकार वशिष्ठजीका अपवाह लोकमें प्रसिद्ध हुआ ४१ तब वह श्रेष्ठ नदी फिर अपने मार्गको आई ४२ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिहलधरतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्याने त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ।

वैशम्पायन बोले, कि क्रोधी विश्वामित्रसे शापित सरस्वती ने उत्तम और उज्ज्वल तीर्थपर रुधिर बहाया १ हे राजा जनमेजय ! इसके पीछे वहां राक्षस आये । वे सब रुधिर पान कर सुखपूर्वक वहां रहनेलगे २ उस रुधिर के पीने से वे राक्षस स्वर्गविजयी पुरुषोंके समान अत्यन्त तृप्त, सुखी और तपों से रहित हर्षयुक्त हुए ३ इसके पीछे तपोधन ऋषि किसी समय सरस्वती के तीर्थ-

पर यात्राको गये ४ वे तपके लोभी पण्डित और श्रेष्ठ मुनि उन सब तीर्थों में स्नानकर श्रेष्ठ प्रीति पा करके ५ वहांसे चलेगये और जिस मार्ग से रुधिर का बहानेवाला तीर्थ था, उस भयानक तीर्थ पर भी वे भाग्यवान् ऋषि गये। वहां रुधिरयुक्त सरस्वती के जल को राक्षसों से पान किया हुआ और उन राक्षसों को देखकर तेजस्वी मुनियों ने सरस्वती की रक्षा में बहुत उपाय किये ६-८ वे बड़े व्रतवाले ऋषि नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती को बुलाकर बोले, कि ९ हे कल्याणिनि! तेरा ह्रद ऐसा व्याकुल क्यों है; सब वृत्तान्त कहो। हम सुनकर इसका निश्चय करेंगे १० तब उस कम्पित सरस्वती ने सब वृत्तान्त वर्णन किया। तपोधन ऋषि उसे दुःखी देखकर कहने लगे, कि ११ हमने हेतु और शाप दोनों सुने। हम सब तपस्वी ऋषि इसके उपायका विचार करेंगे १२ उस श्रेष्ठ नदी से ऐसा कहकर वे परस्पर बोले, कि हम इस सरस्वती को निष्पाप करें १३ हे राजन्! उन सब ब्राह्मणों ने तप, नियम और अनेक कठिन व्रत जितेन्द्रियतासे किये १४ और पशुओंके स्वामी जगत्पति महादेवजी का आराधन करके इस नदियोंमें श्रेष्ठ देवी सरस्वतीको पाप के अंशसे मुक्त किया १५ वह सरस्वती उन के प्रभावसे पूर्व के समान ही मुख्यरूप और स्वभाववाली हुई १६ शाप से मुक्त वह श्रेष्ठ नदी पहले की भांति शोभित हुई। उन मुनियों से शुद्ध की हुई सरस्वतीको देखकर १७ क्षुधार्त राक्षस उनकी शरणमें गये। हे राजन्! क्षुधासे पीड़ित राक्षस हाथ जोड़कर १८ दयालु मुनियों से बारम्बार बोले, कि हम क्षुधासे दुःखी होकर सनातन धर्म से रहित हैं १९ हम अपनी इच्छा सेही पाप नहीं करते हैं। अब आपकी कृपासे पापकर्मों से छूट जायँ २० हमारे पाप, जिनसे हम ब्रह्मराक्षस हैं, और बढ़ते जाते हैं, उन सब पापों को सुनो। स्त्रियोंके उस पापसे, जोकि उत्पत्तिस्थान योनिदोष से सम्बन्ध रखनेवाला है, हम ब्रह्मराक्षस होते हैं २१ वैश्य, शूद्र और क्षत्रियोंमें जो लोग ब्राह्मणों से शत्रुता रखते हैं, वे इस लोक में राक्षस होते हैं २२ जो लोग गुरु, ऋत्विज्, आचार्य और वृद्ध मनुष्यों समेत सब जीवधारियोंका अपमान करते हैं; वे इस लोकमें राक्षस होते हैं २३ हे उत्तम ब्राह्मण लोगो! आप हमारी रक्षा करो। आप सब लोकोंको तारनेमें भी समर्थ हैं २४ मुनियोंने उनके वचन सुनकर महानदी की स्तुति की और उन राक्षसों के मोक्ष के निमित्त उससे कहा २५ क्षुत-कीटयुक्त, उच्छिष्ट, केशों सहित, त्यागा हुआ, और अश्रुओंसे युक्त २६ अन्न राक्षसों का भाग है।

इस हेतु बुद्धिमान् मनुष्य अच्छे प्रकार जानकर सदैव ऐसे अन्नों को उपाय से त्याग दे २७ जो ऐसे अन्न खाता है, वह राक्षसोंके अन्न खाता है। फिर उन तपोधन ऋषियों ने उस तीर्थ को पवित्रकर राक्षसों की मोक्ष के लिये उस नदीको चलायमान किया। हे पुरुषोत्तम! उस उत्तम नदीने महर्षियों का विचार जानकर २८-२९ अपने अरुणा शरीर को वहां वर्तमान किया। वे राक्षस उस अरुणामें स्नानकर अपने शरीर छोड़करके स्वर्गको गये ३० महाराज! वह तीर्थ ब्रह्महत्याको दूर करनेवाला है। सौ यज्ञ करनेवाला देवताओंका इन्द्र इस बातको जानकर उस उत्तम तीर्थमें स्नानकर पापों से निवृत्त हुआ था ३१ जनमेजयने कहा, कि हे भगवन्! इन्द्रसे ब्रह्महत्या कैसे हुई और वे इस तीर्थ में स्नान करके पापों से कैसे छूटे ३२ वैशम्पायन बोले, कि हे राजन्! इस वृत्तान्तको सुनो कि जिस प्रकार इन्द्रने पूर्व समय में नमुचि की प्रतिज्ञा भंग की थी ३३ जब इन्द्रसे भयभीत होकर नमुचि सूर्यकी किरणों में प्रवेश करगया तब इन्द्रने उससे मित्रता की और यह प्रतिज्ञा की, कि हे असुरश्रेष्ठ, मित्र! मैं शपथ कर कहता हूं, कि तुझको मैं जल, थल, रात्रि और दिनमें भी कभी न मारूंगा ३४-३५ हे राजन्! इन्द्र ने प्रतिज्ञा करके नीहारको देखकर जल के फेनसे उसका शिर काट डाला ३६ तब कटा हुआ नमुचिका शिर समीप से यह कहता हुआ इन्द्रके पीछे चला, कि हे मित्रके मारनेवाले पापी! ३७ कहां जाता है। इस प्रकार उस शिर की बातों से महादुःखी इन्द्रने सब वृत्तान्त ब्रह्माजीसे निवेदन किया ३८ लोकके गुरु ब्रह्माजी ने कहा, कि हे देवेन्द्र! तुम विधिपूर्वक पापों के भयको दूर करनेवाले अरुणा तीर्थपर यज्ञ करके स्नान करो ३९ हे इन्द्र! मुनियों से रचा हुआ पवित्र जलका यह तीर्थ है। पहले भी इस लोकमें उस तीर्थकी यात्रा गुप्त होती थी ४० फिर इन्द्रने अरुणा देवीके पास जाकर जलसे अपनेको पवित्र किया। सरस्वती और अरुणा देवीका यह बड़ा पवित्र संगम है ४१ हे देवेन्द्र! यहां तुम यज्ञ करो और बहुत प्रकारके दान दो। तुम इस तीर्थमें स्नान करके बड़े घोर पापोंसे छूटोगे ४२ हे जनमेजय! ब्रह्माजी के उपदेशसे इन्द्रने सरस्वती के कुञ्जमें यज्ञकर अरुणामें स्नान किया ४३ ब्रह्महत्याके पापसे छूटा हुआ प्रसन्नचित्त इन्द्र स्वर्ग को गया ४४ हे राजाओं में श्रेष्ठ, भरतवंशिन्! नमुचि के उस शिरने भी इसी तीर्थ में स्नानकर अभीष्ट प्राप्त करनेवाले अविनाशी लोक पाये ४५ वैशम्पायन

बोले, कि बलदेवजी उस तीर्थ में भी स्नान करके अनेक प्रकारके दान दे धर्म प्राप्त करके चन्द्रमाके उस बड़े तीर्थको गये ४६ जहांपर स्वयं चन्द्रमाने पूर्व समयमें विधिपूर्वक राजसूय यज्ञ किया था। उस उत्तम यज्ञमें ब्राह्मणों में श्रेष्ठ, बुद्धिमान् महात्मा अत्रिजी होता थे ४७ जिस तीर्थ के पास दानव दैत्य और राक्षसों का देवताओंके साथ महायुद्ध हुआ था; जहां तारक नाम कठिन युद्ध हुआ; जिसमें स्वामिकार्त्तिकेयजी ने तारक असुरको मारा ४८ जहां महासेन दैत्योंके नाशक स्वामिकार्त्तिकेयजी देवताओं के सेनापति हुए और साक्षात् कुमार कार्त्तिकेयजी स्थित हुए यहांपर वही प्लक्षनाम राजतीर्थ था ४६ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ।

जनमेजय बोले, कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ! तुमने सरस्वती का प्रभाव तो कहा; अब हे द्विजवर्य ! कुमारका अभिषेकभी कहिये १ हे वदतांवर! स्वामिकार्त्तिक जी जिस देश में, जिस समय, जिस विधि से उत्पन्न हुए और जिन देवताओं ने कुमारजीका अभिषेक किया २ तथा जिस प्रकार उन्होंने दैत्योंका संहार किया; वह सब वृत्तान्त मुझसे कहिये। मुझको उसके सुनने की बड़ी उत्कण्ठा है ३ वैशम्पायन बोले,कि हे जनमेजय! तुम्हारा सुनने का उत्साह कौरववंशके योग्य है। इससे मैं प्रसन्न होता हूं ४ हे राजन्! मैं कुमारजीका अभिषेक और प्रभाव तुमसे कहता हूं ५ पहले शिवजी का तेजरूप वीर्य अग्निमें गिरा; सबके भस्म करनेवाले भगवान् अग्नि उस अविनाशी को भस्म करने में समर्थ नहीं हुए ६ उसके कारण प्रकाशित अग्नि अत्यन्त तेजस्वी हुए परन्तु उस तेजरूप गर्भ को धारण न करसके ७ अग्निने ब्रह्माजीकी आज्ञासे उस सूर्य के समान महातेजस्वी दिव्य गर्भको गंगाजीमें नियत किया। तदनन्तर गर्भके धारण करनेमें अक्षम श्रीगंगाजी ने भी देवताओं से पूजित, सुन्दर हिमालय पर्वत पर उसको छोड़ा ८-९ वह अग्निका पुत्र वहां अपने तेजसे लोकोंको व्याप्त करके बड़ा हुआ। इसके पीछे कृत्तिकाओंने उस अग्निरूप गर्भको देखा १० पुत्रकी अभिलाषा से वे सब अग्निके पुत्र महात्मा ईश्वरको शरस्तम्बपर देखकर यह पुकार उठीं कि यह हमारा है ११ तब भगवान् प्रभुने दुग्धपान करनेके लिये उत्सुक माताओं के भावको जानकर छःमुखों से उनका दूध पिया १२, दिव्य

दुग्धधारिणी कृत्तिकाओंने उस बालकका अतुल प्रभाव जानकर बड़ा आश्चर्य माना १३ हे कौरव्य ! जहां पर्वतके मस्तक पर वह कुमार गंगाजी के हाथसे छोड़ा गया था, वह पर्वत सुवर्णका होकर शोभायमान हुआ १४ उस बढ़नेवाले बालकसे पृथ्वीभी रँगीली होगई । इससे सब पर्वत सुवर्ण की खानें होगये १५ बड़ा पराक्रमी कुमार 'कार्त्तिकेय' अर्थात् कृत्तिकाओं का पुत्र कहा गया। बड़े योगबलसे युक्त कुमार प्रथम गंगाजीके पुत्र हुए १६ हे राजेन्द्र ! अन्तःकरणसे जितेन्द्रिय, तप और पराक्रमसमेत चन्द्रमाके समान अपूर्व दर्शनवाले कुमार बहुत बड़े हुए १७ वे शोभासे युक्त, गन्धर्व और मुनियोंसे स्तुत्यमान होकर दिव्य सुवर्णके शरस्तम्ब पर सदैव शयन करते थे १८ उसी प्रकार दिव्य वाद्य और नृत्योंकी ज्ञाता प्रशंसा करनेवाली हज़ारों सुन्दर देवकन्याएं पास आकर नृत्य करने लगीं १९ नदियों में श्रेष्ठ श्रीगंगाजी उसके पास हुईं और उत्तम रूप धारण कर पृथ्वी ने उनको धारण किया २० बृहस्पतिजी ने उनके जातकर्म आदिक संस्कार किये और चार मूर्तियों वाला वेद भी हाथ जोड़कर सम्मुख हुआ २१ चार चरणोंवाला धनुर्वेद और संग्रहों समेत अस्त्रों के समूह भी इनके पास आये। वहां साक्षात् वाणी भीं वर्तमान हुई २२ उसने पार्वतीजी समेत पुत्र और जीवधारियों के समूहों सहित बड़े पराक्रमी देवदेव शिवजी महाराज को देखा २३ अत्यन्त सुन्दर अपूर्व रूप और भूषण रखनेवाले २४ व्याघ्र, सिंह, रीछ, बिडाल, मकर, बिलाव, हाथी और ऊंटके समान मुखवाले २५ उलूक, गिद्ध, शृगाल, क्रौंच, कपोत और रंक मृगों के समान मुखवाले २६ श्वावित, शल्लक, गोधा, बकरी, भेड़ और बैलोंके समान शरीरों को दूसरे पार्षदों ने जहां तहां धारण किया २७ कितने ही पर्वत और बादलके रूप, चक्रगदाधारी; कितने ही कज्जल समूह के समान और कोई श्वेत पर्वताकार थे २८ हे राजन् ! सप्त माताओं समेत साध्य, विश्वेदेवा, मरुद्गण, अष्ट वसु, सब पितर २९ एकादश रुद्र, द्वादश सूर्य, सिद्ध, सर्प, दानव, गरुड़ादिक पक्षी और विष्णुजी समेत स्वयं प्रकट होनेवाले भगवान् ब्रह्माजी ३० इसी प्रकार इन्द्र भी उस अजेय उत्तम कुमार के देखने को आये । नारदादिक ऋषि, देवता, गन्धर्व ३१ देवर्षि, बृहस्पतिजी प्रमुख सिद्ध और देवताओं के भी देवता जगत् में श्रेष्ठ पितृगण, सब याम और धाम सभी आये। फिर बड़े योगव्रतसे युक्त वह बालक भी ३२-३३ शूल और पिनाक धनुष को हाथमें रखनेवाले देवताओं

के ईश्वर शिवजी के पास गया। उसे आते हुए देखकर शिवजी के चित्तमें विचार हुआ, कि ३४ यह बालक एक बारही पार्वती, गंगा और अग्नि-तीनों में से किसके महत्त्व और गौरव से देखें पहले किसके पास जायगा ३५ मेरे पास भी आवेगा या नहीं। कुमार ने उन सबका अभिप्राय जानकर ३६ एक साथही योगमें नियत हो विविध शरीर उत्पन्न किये इसके पीछे वे भगवान् क्षणभरमें ही चार मूर्तिवाले हुए ३७ शाख, विशाख और नैगमेय मूर्तियां उनके पृष्ठभाग से प्रकट हुईं अपने को चार रूपवाला कर ३८ रुद्रजी की ओर अपूर्वदर्शन स्वामिकार्त्तिकजी गये। जिधर देवी पार्वती थीं, उधर विशाख गया; वायुरूप भगवान् शाख अग्निके पास गया और अग्नि के समान प्रकाशित कुमार नैगमेय गंगाजीके पास गये ३९-४० चारों सूर्य के समान शरीर वाले सब एकरूप सावधान उनके पास गये; यह आश्चर्य सा हुआ ४१ अपूर्व और शरीर में रोमाञ्च करनेवाला बड़ा आश्चर्य देखकर देव, दानव और राक्षसोंका बड़ा हाहाकार हुआ ४२ फिर रुद्र, देवी, अग्नि और गंगाजी-इन सबने जगत्पति ब्रह्माजी को दण्डवत् की ४३ विधिपूर्वक दण्डवत् करके स्वामिकार्त्तिकजी की प्रसन्नता के अर्थ कहा कि ४४ हे देवताओं के ईश्वर, भगवन्! हमारे हित के लिये इस बालकको इसके योग्य अधिकार दीजिये ४५ तब लोकों के पितामह बुद्धिमान् ब्रह्माजी ने चित्त से विचारा, कि इसको कोनसा अधिकार दिया जाय ४६ पहले ही इस तेजस्वी ने देवता, गन्धर्व, राक्षस, भूत, यक्ष, पक्षी और सर्पों के ऐश्वर्य को ४७ महात्माओं के समूहों में उपदेश किया है। इसीसे बड़े बुद्धिमानोंने उसको सब ऐश्वर्योंमें समर्थ माना है ४८ इसके पीछे देवताओंकी वृद्धि में नियत ब्रह्माजी ने एक मुहूर्त ध्यान कर कुमारको सब जीवधारियों का सेनापति किया ४९ और उन सब जीवोंको उनके आज्ञाकारी होनेकी आज्ञा दी जो सब देवसमूहों के राजा प्रसिद्ध थे ५० फिर ब्रह्मादिक सब देवता कुमारको लेकर अभिषेक के लिये गिरिराज के समीप ५१ धर्मकी वृद्धिके हेतु, नदियों में श्रेष्ठ हिमाचल की उस पुत्री देवी सरस्वती के पास गये जो कि तीनों लोकों में प्रसिद्ध समन्तपञ्चक देश में है ५२ बड़े प्रसन्नचित सब देवता और गन्धर्व सरस्वती के पवित्र, पुण्यकारी किनारे पर जाकर बैठ गये ५३ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि पञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ।

वैशम्पायन बोले, कि बृहस्पतिजी ने शास्त्रोक्त रीति से अभिषेककी सब सामग्रियां एकत्र कर वृद्धियुद्ध अग्निमें विधिपूर्वक अग्निदेवताको आहुति दी १ तब देवगणों ने हिमाचल के दिये हुए, अत्यन्त उत्तम, मणियों से शोभित, दिव्य रत्नों से जटित उत्तम आसनपर विराजमान कुमार का २ सब मंगलरूप सामग्रियों समेत विधिपूर्वक मन्त्रों के द्वारा अभिषेक की वस्तुओं से अभिषेक कराया ३ बड़े पराक्रमी विष्णुजी इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा, धाता, विधाता, अग्नि, वायु ४ पूषा, भग, अर्यमा, अंश, विवस्वत्, मित्र, वरुण समेत एकादश रुद्र ५ अष्ट वसु, द्वादश सूर्य, दोनों अश्विनीकुमार, विश्वेदेवा, मरुद्गण, पितृ, साध्यगण ६ गन्धर्व, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, सर्प, असंख्य ब्रह्मर्षि, देवर्षि ७ वायुभक्षी, सूर्यांशु को पान करनेवाले वैखानस, बालखिल्य ऋषि, भृगुवंशी, अङ्गिरावंशी महात्मा, यति ८ विद्याधर और पवित्र योगवाले सिद्ध पुरुषों समेत ब्रह्माजी, पुलस्त्य, पुलह, बड़े तपस्वी अङ्गिरा ९ कश्यप, अत्रि, मरीचि, भृगु, क्रतुहर, प्रचेता, मनु दक्ष १० सब ऋतु, उत्तम ग्रह, नक्षत्रादिक प्रकाशित शरीरवाली सदेह नदियां, सनातन वेद, ह्रद, नाना प्रकार के तीर्थ, पृथ्वी, स्वर्ग, दिशा, वृक्ष, देवताओंकी माता, अदिति, ह्री, श्री, स्वाहा, सरस्वती, उमा, शची, शिनीवाली, अनुमति, कुहू ११-१३ राका, धिषणा और देवताओंकी अन्यान्य स्त्रियां, हिमाचल, विन्ध्याचल और अनेक शिखरधारी मेरु पर्वत १४ साथियों समेत ऐरावत हाथी, कला, काष्ठा, मास, पक्ष, ऋतु, दिन, रात १५ घोड़ों में श्रेष्ठ उच्चैःश्रवा, सर्पों का राजा वासुकी, अरुण, गरुड़, औषधियों समेत वृक्ष १६ भगवान् धर्म देवता, काल, यम, मृत्यु और यमराज के आगे पीछे चलनेवाले सब मिले हुए वहां आये १७ अनेक देवता, जिनका नाम यहां नहीं लिखा गया, वे भी कुमारके अभिषेक के लिये जहां तहां से आये १८ हे राजन्! उन सब देवताओं ने अभिषेक के पात्र और सब माङ्गलिक वस्तुओं को लिया १९ अत्यन्त प्रसन्नचित्त देवताओं ने दिव्य सामग्रियों से युक्त और सरस्वती के पवित्र, दिव्य जल से पूर्ण सुवर्ण के कलशों से २० उस कुमार का अभिषेक कराया जो कि असुरों को भयप्रद महात्मा सेनापति था २१ महाराज! पूर्वसमय में जलके स्वामी वरुण का जिस

प्रकार अभिषेक कराया था, उसी प्रकार सब लोक के पितामह ब्रह्माजी २२
और बड़े तेजस्वी कश्यप आदिक लोक विख्यात ऋषियों ने मिलकर अभिषेक
कराया। ब्रह्माजी ने कुमारको बलवान् और वायुके समान शीघ्रगामी २३ इच्छा-
नुसार पराक्रमी, सिद्ध महापार्षद दिये। वे नन्दिसेन, लोहिताक्ष, घण्टाकर्ण २४
और कुमुदमालीके नामसे प्रसिद्ध हैं। हे राजेन्द्र! फिर बड़े तेजस्वी शिवजी ने २५
सैकड़ों मायाधारी और इच्छानुसार बल-पराक्रमी, असुरों का नाशक काम
नामक महापार्षद स्वामिकार्त्तिक को दिया २६ उस क्रोधयुक्तने देवासुर संग्राम
में दोनों हाथों से भयकारी कर्म करनेवाले चौदह प्रयुत दैत्यों को मारा २७
उसी प्रकार देवताओं ने असुरों की नाश करनेवाली, अजेय और नैर्ऋत अ-
सुरोंसे युक्त विष्णुरूप सेना उनको दी २८ इन्द्र समेत सब देवता, गन्धर्व, यक्ष,
राक्षस, मुनि और पितरों ने विजय का शब्द किया २९ यमराज ने कालरूप,
बड़े पराक्रमी और तेजस्वी उन्माथ तथा प्रमाथ नामक दो अनुचर दिये ३०
प्रसन्नचित्त, प्रतापी सूर्य ने सुभ्राज और भास्कर नामक दो अनुचर स्वामि-
कार्त्तिक को दिये। ये दोनों सूर्य के पीछे चलनेवाले थे ३१ चन्द्रमा ने कैलास
के शिखर के रूप, श्वेत माला और चन्दनधारी मणि और सुमणि नामके दो
अनुचर दिये ३२ उसी प्रकार अग्नि ने अपने पुत्र को शूर और शत्रु की सेना
के नाशक ज्वालाजिह्व और ज्योति नामक दो अनुचर दिये ३३ अंश देवता
ने भी बुद्धिमान् स्वामिकार्त्तिक को पांच अनुचर दिये; उनके नाम परिघ,
वट, बलवान् भीम, दहति, दहन हैं। ये पांचों अत्यन्त शीघ्रगामी और पराक्रमी
थे ३४ शत्रुविजयी इन्द्र ने अग्नि के पुत्र को उत्क्रोश, पञ्चक, वज्रधारी और
दण्डधारी ये चार अनुचर दिये ३५ वज्रधारी और दण्डधारी– दोनोंने युद्धमें
महेन्द्र के बहुत शत्रुओं को मारा था ३६ बड़े यशस्वी विष्णुजी ने कुमार को
बड़ा बलवान् चक्र, विक्रमक और संक्रम–ये तीन अनुचर दिये ३७ वैद्योंमें
श्रेष्ठ प्रसन्नचित्त अश्विनीकुमारों ने वर्धन और नन्दन नामक दो अनुचर
स्वामिकार्त्तिक को दिये। वे दोनों सब विद्याओं में कुशल थे ३८ बड़े यशस्वी
धाता ने उस महात्मा को नीचे लिखेहुए अनुचर दिये;–कुन्द, कुसुम, कुमुद,
डम्बर और अडम्बर ३९ त्वष्टा ने स्वामिकार्त्तिक को चक्र, अनुचक्र ये दोनों
अनुचर दिये। वे दोनों बड़े मायावी, बलमें मतवाले और मेघोंकी सेनारखनेवाले
थे ४० प्रभु मित्रने महात्मा कुमार को सुव्रत और सत्यसन्ध ये दो अनुचर दिये,

जो तप और विद्या धारण करनेवाले महात्मा थे ४१ विधाता ने महात्मा सुव्रत और शुभकर्म स्वामिकार्त्तिक को दिये। ये प्रसन्नमूर्ति, वरदाता तीनों लोकों में विख्यात थे। हे भरतवंशिन्! पूषा ने बड़े मायावी पानीतक और कालक ४२ पार्षद स्वामिकार्त्तिकको दिये। हे भरतर्षभ! वायु ने बड़े बलवान् बल और अतिबल ४३-४४ स्वामिकार्त्तिक को दिये। सत्यसङ्कल्प वरुण ने निमि मत्स्य केसे मुखवाले बड़े बलवान् यम और अतियम अनुचर ४५ स्वामिकार्त्तिक को दिये। हे राजन्! हिमाचल ने सुवर्चस और अतिवर्चस ४६ मेरु पर्वत ने स्थिर, अस्थिर काञ्चन और मेघमाली; विन्ध्याचल ने बड़े पाषाणों से लड़नेवाले उच्छृङ्ग और अतिशृङ्ग ४७-४८ समुद्र ने गदाधारी संग्रह और विग्रह ५० इसी प्रकार उन्माद, पुष्पदन्त और शंकुकर्ण ५१ पार्षद पार्वतीजी ने दिये। हे पुरुषोत्तम! सर्पों के राजा वासुकी ने जय, महाजय सर्प; साध्य, रुद्र, वसु, पितृ ५२-५३ सागर, नदियां और बड़े बलवान् पर्वतों ने शूल और पट्टिश धारण करनेवाले सेना के अफ़सर दिये ५४ ये दिव्य अस्त्र शस्त्रों से युक्त और नाना प्रकार की पोशाकों से अलंकृत थे। स्वामिकार्त्तिक की सेना के अन्यान्य लोग जो ५५ नाना शस्त्रधारी, अपूर्व भूषणोंसे अलंकृत थे, उनके नाम ये हैं;-शंकुकर्ण, निकुम्भ, पद्म, कुमुद ५६ अनन्त, द्वादश, भुज, कृष्ण, उपकृष्णक, घ्राणश्रवा, प्रतिस्कन्ध, काञ्चनाक्ष, जलन्धम ५७ अक्षसंतर्जन, कुनदीक, तमोन्तकृत, एकाक्ष, द्वादशाक्ष, प्रभु एकजटा ५८ सहस्रबाहु, विकट, व्याघ्राक्ष, क्षितिकम्पन, पुण्यनामा, सुनामा, सुचक्र, प्रियदर्शन ५९ परिश्रुत, कोकनद, प्रियमाल्यानुलेपन, अजोदर, गजशिरा, स्कन्दाक्ष, शतलोचन ६० ज्वालाजिह्व, करालाक्ष, शितिकेशी, जटी, हरि, कोकनट, कृष्णकेश जटाधर ६१ चतुर्दंष्ट्र, उष्ट्रजिह्व, मेघनाद, पृथुश्रव, विद्युताक्ष, धनुर्वक्र, जाठर, मारुताशन ६२ उदाराक्ष, रथाक्ष, वज्रनाभ, वसुप्रद, समुद्रवेग, शैलकम्पी ६३ वृष, मेष, प्रवाह, नन्द, उपनन्दक, धूम्र, श्वेत, कलिन्द, सिद्धार्थ, वरद, प्रियक, एकनन्द, प्रतापी गोनन्द, आनन्द, प्रमोद, स्वस्तिक, ध्रुवक ६४-६५ क्षेमवाह, सुवाह, सिद्धपात्र, गोव्रज, कनका, पीड़नाम महापार्षदोंका ईश्वर, गायन, हसन, बाण, पराक्रमी खड्ग, वैताली, गतिताली, कथक, वार्तिक ६६-६७ हंसज, पङ्कदिग्धांग, समुद्रोन्मादन, रणोत्कट, प्रहास, श्वेतसिद्ध, नन्दक ६८ कालकण्ठ, प्रभास। इसी प्रकार दूसरा कुमाण्डक,

कालकाक्ष, जीवोंको मथनेवाला सत ६९ यज्ञवाह, प्रवाह, देवयाजी, सोमप, तेजस्वी मज्जान, क्रथ, क्राथ ७० तुहर, तुहार, पराक्रमी चित्रदेव, मधुर, सुप्रसाद, बलवान् किरीटी ७१ वत्सल, मधुवर्ण, कलशोदर, धर्मद, मन्मथकर, पराक्रमी सूचीवक्र ७२ श्वेतवक्र, सुवक्र, चारुवक्र, पाण्डुर, दण्डबाहु, सुबाहु, रज, कोकिलक ७३ अचल, कंकाक्ष, बालकोंका भी प्रभु चञ्चारक, कोकनद, गृध्रप, जम्बुक ७४ लोहाजवक्र,जवन,कुम्भवक्र,कुम्भक, स्वर्णग्रीव,कृष्णौजा, हंसवक्र, चन्द्रभ ७५ पाणिकूर्चा, शम्बूक, पञ्चवक्र, शिक्षक, चाषवक्र, जम्बूक, शाकवक्र और कुञ्जल ७६ ये सबपार्षद योगसे संयुक्त, सदैव महात्मा ब्राह्मणों के प्यारे, बड़े साहसी और ब्रह्माजीके पुत्र हैं ७७ हे जनमेजय ! हजारों तरुण, बालक और वृद्ध कुमार के पास आकर नियत हुए ७८ नाना प्रकारके मुख वाले पार्षदोंको भी सुनो । कच्छ और कुक्कुटके समान मुखवाले, शश और उलूकके समान मुख वाले ७९ गर्दभ, ऊंट, शूकर मार्जार और शशवक्र के समान दीर्घ मुख वाले थे ८० इसी प्रकार दूसरे पार्षद नेवला, उलूक, काक, चूहे और मोर के समान मुख वाले थे ८१ बहुतसे अन्य पार्षद मत्स्य, मेष, बकरी, भेड़, भैंसा, रीछ, शार्दूल और सिंहके मुख वाले थे ८२ इसी प्रकार भयानक रूप हाथी, नक्र, गरुड़, कङ्क, भेड़िया और काकके मुख वाले थे ८३ बैल, गर्दभ, ऊंट, वृष, दंश के मुखवाले; बड़े उदर, चरण, अंग वाले और नक्षत्रोंके समान नेत्रोंवाले थे ८४ हे भरतर्षभ ! बहुत से कपोतमुखी, वृषमुखी, कोकिलामुखी, बाजमुखी और तीतरमुखी थे ८५ कृकलासमुखी, दिव्य वस्त्रधारी, व्यालमुखी, शूलमुखी, चण्डमुखी और शुभमुखवाले थे ८६ विषैली डाढ़ वाले, चीरधारी, बैल के समान नाक और मुँह वाले; स्थूल उदर, कृशशरीर, स्थूलशरीर और सूक्ष्म उदर वाले ८७ छोटी गर्दन, बड़े कान, नाना प्रकारके सर्पों के भूषणों वाले, गजराज के चर्मकी पोशाक और कृष्ण मृगचर्म के धारण करनेवाले थे ८८ महाराज ! बहुतेरे कन्धेपर मुख रखने वाले; उदर, पीठ, ठोढ़ी अथवा जंघापर भी मुख रखनेवाले ८९ उसी प्रकार बहुतसे पार्षद कुक्षिमें और अनेक प्रकारके स्थानोंपर कीट-पतंगोंके समान मुखवाले भी सेनासमूहोंके ईश्वर थे ९० बहुतेरे अनेक प्रकारके सर्पोंके समान मुख, बहुत भुजा, शिर और उदर वाले; कोई नाना प्रकारके वृक्षोंके समान भुजा वाले और कोई कमरपर शिर रखनेवाले थे ९१ सर्पके फणके समान मुख, बहुतसे सेनाके भागमें रहनेवाले,

चीरधारी, नानाप्रकार की स्वर्णमयी पोशाक वाले ६२ अनेक प्रकार की पोशाकों वाले, नाना प्रकारकी माला और चन्दनादिसे संयुक्त शरीर, विविध वस्त्रधारी, चर्म-वस्त्रोंसे अलंकृत ६३ वेष्टनसमेत, सुन्दर मुकुटधारी, सुन्दर ग्रीवा, बड़े तेजस्वी, किरीट से शोभित, पांचशिखा वाले और स्वर्णकेशधारी ६४ तीन शिखा, दो शिखा और सात शिखाधारी शिखण्डी, मुकुटधारी, जटाधारी ६५ और चित्रमालाधारी इसी प्रकार कोई मुखपर रोम वाले, सदैव युद्ध स्वीकार करनेवाले, उत्तम देवताओं से भी अजेय ६६ श्यामरूप, विना मांस का मुख, मोटी पीठ परन्तु छोटा उदर, स्थूल पृष्ठ, सूक्ष्म पृष्ठ, अत्यन्त लम्बोदर, लिंगेन्द्रिय युक्त ६७ बड़ी भुजा और छोटी भुजावाले, छोटा डील, बौना, कुबड़े, अल्प-जंघा, हाथी के समान कान, शिर और पेट वाले ६८ इसी प्रकार बहुतसे हाथी, कछुआ और बगले के समान नाक वाले, लम्बी श्वासा और लम्बी जंघा वाले बिकराल रूप अधोमुख ६६ बड़ी डाढ़, छोटी डाढ़ और चार डाढ़ वाले थे। हे राजन्! बहुतसे पार्षदों का रूप गजेन्द्रके समान भयङ्कर था १०० सुडौल शरीर, प्रकाशित, अच्छे अलंकृत, पिंगलाक्ष, शङ्खश्रोत्र, रक्तनासिकावाले १०१ मोटी डाढ़, बड़ी डाढ़, मोटे होंठ और पिंगल वर्ण के थे। बहुतसे केशधारी, नाना प्रकारके चरण, होंठ, डाढ़, हाथ और ग्रीवा रखनेवाले थे १०२ वे सब नाना प्रकारके मृगचर्मोंसे ढके हुए, नाना प्रकारके देशोंकी भाषा बोलनेवाले और उनमें कुशल, परस्पर वार्त्ता करनेवाले, ईश्वर, प्रसन्नचित्त १०३ महापार्षद चारोंओर से आये। वे लम्बी गर्दन, नख, चरण और भुजाओं वाले १०४ पिंगलाक्ष, नीलकण्ठ, लम्बे कानवाले, वृकोदर के समान, कितने ही अंजनके रूप १०५ श्वेताक्ष, रक्तग्रीव और पिंगलाक्ष थे हे राजा जनमेजय! इसी प्रकार बहुतसे पार्षद कल्माषवर्ण, चित्रवर्ण १०६ श्वेत, रक्त पंक्तिवाले, नानावर्ण, सवर्ण, मोर के सदृश वर्णधारी प्रकाशमान थे १०७ अब मैं इन सबके शस्त्रोंका वर्णन करता हूं। कोई हाथोंसे पाश उठानेवाले, फैले मुख, गर्दभके समान मुख, पृष्ठपर नेत्र वाले, नीलकण्ठ और परिघ शस्त्र के समान भुजा वाले थे १०८-१०६ कोई शतघ्नी, चक्रको हाथ में धारण करनेवाले, मूसल हाथ में रखनेवाले, खड्ग-मुद्गर और दण्ड धारण करनेवाले ११० गदा, भुशुण्डी और तोमर हाथ में रखनेवाले, नाना प्रकारके घोर शस्त्रोंसे युक्त, बड़े साहसी, शीघ्रगामी १११ बड़े बलवान्, वेगवान्, युद्ध को प्रिय मानने वाले महापार्षद ये सभी कुमारके

अभिषेक को देखकर प्रसन्न हुए ११२ घण्टाजाल से अलंकृत शरीर, बड़े तेजस्वी सब पार्षद नृत्य करने लगे और अन्यान्य बहुतसे महापार्षद भी ११३ यशस्वी, कीर्तिमान् प्रतापी, महात्मा स्वामिकार्त्तिक के पास आये । स्वर्ग, आकाश और पृथ्वी से सम्बन्ध रखनेवाले, वायु के समान ११४ सब शूरवीर देवताओं के आज्ञापालक होकर स्वामिकार्त्तिकजी के अनुचर हुए । उस प्रकार के हजारों, करोड़ों ही नहीं-अर्बुदों पार्षद ११५ उस अभिषेक किये हुए महात्मा कुमारके चारों ओर से परिधि रूप होकर समीप आगये ११६ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिषोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ।

वैशम्पायन बोले, कि हे वीर, राजा जनमेजय ! अब मुझसे इन माताओं का वृत्त सुनो जो शत्रुसमूहों को मारतीं और कुमारके पीछे चलती हैं १ हे भरतवंशिन् ! इन यशस्विनी माताओं के नाम सुनो; जिन कल्याणरूप नामों से तीनोंलोक विभाग पूर्वक व्यासहैं २ प्रभावती, विशालाक्षी, पालिता, गोस्तनी, श्रीमती, बहुला, बहुपुत्रका ३ अप्सुजाता, गोपाली, बृहदा, अम्बालिका, जयावती, मालतिका, ध्रुवरत्ना, अभयंकरी ४ वसुदामा, सुदामा, विशोका, नन्दिनी, एकचूडा, महाचूडा, चक्रनेमि ५ उत्तेजसी, जयत्सेना, कमलाक्षी, शोभना, शत्रुञ्जया, क्रोधना, शलभी, खरी ६ माधवी, शुभवक्त्रा, तीर्थसेनी, गीतप्रिया, कल्याणी, रुद्ररोमा, अमिताशना ७ मेघस्वना, भोगवती, सुभ्रु, कनकावती, अलाताक्षी, वीर्यवती, विद्युज्जिह्वा ८ पद्मावती, सुनक्षत्रा, कन्दरा, बहुयोजना, संतानिका, कमला, महाबला ९ सुदामा, बहुदामा, सुप्रभा, यशस्विनी, नृत्यप्रिया, शतोलूखलमेखला १० शतघण्टा, शतानन्दा, भाविनी, वपुष्मती, चन्द्रशीता, भद्रकाली, ऋक्षाम्बिका, निस्कुटिका, वामा, चत्वरवासिनी, सुमङ्गला, स्वस्तिमती, बुद्धिकामा, जयप्रिया ११-१२ धनदा, सुप्रसादा, भवदा, एड़ी, भेड़ी, समेड़ी, वेतालजननी, गण्डूती, कालिका, देवमित्रा, वसुश्री, कोटिरा, चित्रसेना, अचला १३-१४ कुक्कुटिका, शंखलिका, अशकुनिका, कुण्डारिका, कौकुलिका, कुम्भिका, शतोदरी १५ उत्क्रोधनी, जनेना, महावेगा, कङ्कणा, मनोजवा, कण्टकिनी, परिघा, पूतना १६ केशयन्त्री, त्रुटि, क्रौशना, तडित्प्रभा, मन्दोदरी, मुण्डी, कोटरा, मेघवाहिनी १७ सुभगा, लम्बिनी, लम्बोदरा, ताम्र-

चूडा, विकाशिनी, ऊर्ध्ववेणी धरा, पिंगाक्षी, लोहमेखला १८ पृथुवस्त्रा, मधुनिका, मधुपुम्भा, पक्षालिका, मत्कुणिका, जरायुष्, जर्जरानना १९ ख्याता, दहदहा, धमधमा, खण्डखण्डा, पूषणा, मणिकुट्टिका २० अमोघा, लम्बपयोधरा, वेणुवीणाधरा, पिंगाक्षी, लोहमेखला २१ शशोलूकमुखी, कृष्णा, खरजंघा, महाजवा, शिशुमारमुखा, श्वेता, लोहिताक्षी, विभीषणा २२ जटालिका, कामचरी, दीर्घजिह्वा, बलोत्कटा, कालोहिका, वामनिका, मुकुटा २३ लोहिताक्षी, महाकाया, हरिपिण्डा, एकत्वचा, सुकुसुमा, कृष्णकर्णा २४ क्षुरकर्णी, चतुष्कर्णी, कर्णप्रावर्णा, चतुष्पथ, निकेता, गोकर्ण, महिषानना २५ खरकर्णी, महाकर्णी, भेरीस्वना, महास्वना, शङ्ख, कुम्भश्रवा, भगदा, महाबला २६ गणा, सुगणा, भीति, कामदा, चतुष्पथरता, भूतितीर्था, अन्यगोचरा, पशुदा, वित्तदा, सुखदा, महायशा, पयोदा, गोमहिषदा, सुविशाला २७-२८ प्रतिष्ठा, सुप्रतिष्ठा, रोचमाना, सुरोचना, नौकर्णी, मुखकर्णी विशरामन्थिनी २९ एकचन्द्रा, मेघकर्णा, मेघमाला और विरोचना। हे भरतर्षभ! ये सब और अन्यान्य बहुतसी माताएं ३० स्वामिकार्त्तिकके पीछे चलनेवालीं, नाना रूपवालीं हज़ारों थीं। लम्बे नख, लम्बे दांत, लम्बे मुख वाली ३१ सबल, मधुर वचन, तरुण, अच्छी अलंकृत, महत्त्व से युक्त, अभीष्टरूप धारण करने वाली ३२ मांससे रहित शरीर, श्वेतवर्ण और काञ्चनरूप थीं। हे भरतर्षभ! इसी प्रकार दूसरी देवी कृष्णमेघ की सूरत, धूम्रवर्ण ३३ अरुणवर्ण, लम्बे केशों वाली; कोई लम्बी मेखला वाली ३४ लम्बा उदर, कान और स्तनोंवाली; उसी प्रकार दूसरी देवी लम्बे रक्तनेत्र, लाल वर्ण, पिंगलाक्षी ३५ वरदायिनी, इच्छानुसार कर्म करनेवाली, सदैव प्रसन्न यमराज, रुद्र और चन्द्रमा समेत, कुबेर से सम्बन्ध रखनेवाले बड़े बलवान् लोग ३६ वरुण, महेन्द्र, अग्नि, वायुकुमार और ब्रह्माजी से सम्बन्ध रखनेवालीं देवियां ३७ उसी प्रकार विष्णु, सूर्य और वाराहजी से सम्बन्ध रखनेवालीं बड़ी बलवती, स्वरूपमें अप्सराओंके समान चित्तरोचक, मनको प्रसन्न करनेवालीं ३८ बातों में कोकिलाओं के समान, धनमें कुबेरके तुल्य, युद्धमें रुद्र और इन्द्र के तुल्य तथा तेजमें अग्निके सदृश थीं ३९ वे सदैव शत्रुओं को युद्ध में भय देनेवाली होती हैं। उसी प्रकार इच्छानुसार रूप धारण करनेवालीं, वेगमें वायुके समान ४० ध्यानसे बाहर बल-पराक्रम रखनेवालीं, वृक्ष, चत्वर और निर्जन वनमें रहनेवालीं ४१ गुफा और श्मशानवासिनी,

पर्वतों के झिरनों में रहनेवालीं ४२ नाना प्रकारके भूषण और माला रखनेवालीं, विचित्र वेष रखनेवालीं ये और अन्यान्य बहुतसे शत्रुसमूहों को भय उत्पन्न करनेवालीं ४३ देवराज की आज्ञासे महात्मा कुमारके पीछे चलीं। फिर इन्द्रने शक्ति और अस्त्र ४४ असुरों के नाशके लिये स्वामिकार्त्तिक को दिये । हे भरतर्षभ ! शब्दायमान और बड़े घण्टेवाली, प्रकाशित, श्वेतप्रभा रखनेवाली, सूर्यके वर्ण, अरुण पताका भी दी। पशुपतिजी ने सब जीवोंकी वह बड़ी सेना दी ४५-४६ जो महा उग्र नाना प्रकार के शस्त्रों को धारण करनेवाली, तप, बल और पराक्रमसे युक्त, अजेय उत्तम गुणवाली, धनञ्जयनाम से विख्यात४७ और रुद्रजीके समान तीन अयुत शूरवीरोंसे संयुक्त थी। वह सेना कभी युद्धसे मुख फेरना नहीं जानती थी ४८ विष्णुजीने बलको बढ़ानेवाली वैजयन्ती माला दी; उमा देवी ने सूर्य के समान प्रकाशित दो दिव्य वस्त्र दिये ४९ श्रीगंगाजी ने बड़ी प्रीतिसे दिव्य और अमृत उत्पन्न करनेवाला उत्तम कुण्डल दिया; बृहस्पतिजी ने दण्ड दिया ५० गरुड़जी ने विचित्र पुच्छवाला सुन्दर मोर दिया; अरुण ने चरणायुधवाला कुक्कुट दिया ५१ फिर राजा वरुण ने बल-पराक्रमसे युक्त नाग दिया। इसके अनन्तर ब्रह्माजीने वेद-ब्राह्मणोंके रक्षककुमार को कृष्णमृग दिया ५२ और युद्धों में विजय को भी दिया, तब स्वामिकार्त्तिकजी सब देवगणों का सेनानी पद पाकर ५३ दूसरे प्रज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित हो शोभायमान हुए। फिर पार्षदों और माताओं से युक्त ५४ स्वामिकार्त्तिकजी उत्तम देवताओंको प्रसन्न करके दैत्योंका नाश करने के लिये चले और राक्षसों की वह भयानकरूप सेना भी घण्टे, ऊंची ध्वजा ५५ भेरी, शङ्ख, मुरजा, शस्त्र और पताका रखनेवाली, प्रकाशित शरीरोंसे शोभायमान; शरद् ऋतुके आकाशके समान प्रकाशमान थी ५६ देवताओंके समूह और नाना प्रकारके सावधान जीवसमूहोंने उत्तम भेरी और शङ्ख बजाये ५७ फिर इन्द्रसमेत सब देवताओं ने कुमार स्वामिकार्त्तिककी स्तुति की; देव-गन्धर्वों ने गाया और अप्सराओं ने नृत्य किया ५८-५९ अत्यन्त प्रसन्नरूप स्वामिकार्त्तिकजी ने देवताओं को वरदान दिया, कि मैं तुम्हारे मारने के अभिलाषी शत्रुओं को मारूंगा ६० तब प्रसन्नचित्त महात्मा देवताओं ने उस श्रेष्ठ देवता से वर लेकर शत्रुओं को मराहुआ माना ६१ महात्माकी ओरसे वर पानेपर सब जीवसमूहोंके प्रसन्नता के ऐसे शब्द हुए जिनके मारे तीनों लोक पूर्ण होगये ६३

बड़ी सेनासमेत स्वामिकार्त्तिकजी ने युद्धमें दैत्यों के मारने और देवताओं की रक्षाके निमित्त यात्रा की ६३ हे राजन् ! निश्चय ही धर्मसिद्धि, लक्ष्मी, धृति और स्मृति ये सब स्वामिकार्त्तिकजी की सेनाके आगे चलीं ६४ स्वामिकार्त्तिक देवता भयानक शूल, मुद्गर हाथमें रखनेवाले, ज्वलित शस्त्रधारी, जड़ाऊ भूषण और कवच धारण करनेवाले ६५ गदा, मूशल, नाराच, शक्ति और तोमरधारी उन्मत्त सिंहके समान गर्जनेवाले सेनाके साथ गर्जते हुए चले ६६ भयसे महान्याकुल सब दैत्य, दानव और राक्षस चारों ओर सब दिशाओं में भागे ६७ वे नानाप्रकार के शस्त्र हाथ में ले देवताओं के सम्मुख गये। तेज, बलसे युक्त भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी ने उस सेना को देख बारम्बार क्रोधित हो भयानक रूप शक्ति छोड़ और अपने तेजको ऐसे धारण किया जैसे कि हव्यसे वृद्धियुक्त अग्नि तेज धारण करता है ६८-६९ महाराज ! बड़े तेजस्वी स्वामिकार्त्तिक से शक्ति के छूटनेपर उल्का की ज्वलित अग्नि पृथ्वीपर गिरी ७० इसी प्रकार वायु से वायुके संघट्टनों के शब्द, ध्वनि करते हुए पृथ्वीपर ऐसे गिरे, जैसे कि प्रलयकाल में बड़े घोर शब्द होते हैं ७१ हे भरतर्षभ ! जब अग्नि के पुत्रके हाथसे वह बड़ी घोर शक्ति छोड़ी गई तब उस शक्ति से करोड़ों शक्तियां उत्पन्न होगईं ७२ उसके पीछे प्रसन्नचित्त स्वामिकार्त्तिकजी ने बड़े पराक्रमी तारक असुर को मारा ७३ हे राजन् ! बलवान् आठ पद्म एक लाख शूरवीर दैत्यों से युक्त महिषासुर को भी कुमारने युद्ध में मारा ७४ उस ईश्वर ने एक करोड़ दैत्यों समेत त्रिपादको और नाना प्रकार के शस्त्रों को हाथमें रखने वाले दश निखर्ब दैत्यों समेत ह्रदोदर को मारा ७५ इस प्रकारसे शत्रुओं के मरनेपर दशों दिशाओं को पूर्ण करते हुए कुमारके साथियों ने बड़े शब्द किये और प्रसन्न होकर नाचते हुए, वे चेष्टाएं करने लगे ७६-७७ हे राजेन्द्र ! शक्ति के चारों ओर प्रज्वलित होनेसे तीनों लोक सब ओरसे भयभीत हुए ७८ बहुत से शस्त्रों समेत हज़ारों दैत्य स्वामिकार्त्तिकजी के शब्दों से ही भस्म होगये और कितने ही असुर पताका से घायल होकर मर गये; कितनेही घण्टोंके शब्दोंसे पृथ्वीपर भयभीत होकर बैठ गये और कितनेही असुर अस्त्रों से खण्डित हो मर कर गिर पड़े ७९-८० इस प्रकार बलवान्, वीर, पराक्रमी स्वामिकार्त्तिकजी ने उन मारने के अभिलाषी असंख्य दैत्य-राक्षसादिकों को मारा ८१ इसके पीछे बलिके पुत्र महाबली बाण दैत्यने क्रौञ्चपर्वत में आश्रय ले

देवताओं के समूहों को पीड़ित किया ८२ तब बुद्धिमान् स्वामिकार्त्तिकजी देवताओं के शत्रु बाण के सम्मुख गये । उसने स्वामिकार्त्तिकजी के भयसे क्रौञ्च पर्वत की शरण ली ८३ क्रोधयुक्त भगवान् स्वामिकार्त्तिकने क्रौञ्चपक्षीके समान गर्जनेवाले क्रौञ्चपर्वत को अग्नि की दी हुई शक्ति से घायल किया ८४ जो कि शालवृक्ष के गुद्दोंसे शवल वर्ण, भयानक वानर और हाथीवाला, बहुत उड़नेवाले व्याकुल पक्षियोंवाला और बिलसे बाहर दौड़नेवाले सर्पोंवाला ८५ गोलांगूल, भागे हुए रीछोंके समूहों और कुरंगों के शब्दों से शब्दायमान पृथ्वी और वन रखनेवाला था ८६ अकस्मात् दौड़ने और भागनेवाले शरभ और सिंहों से शोचग्रस्त दशाको प्राप्त हो वह पर्वत भी शोभित हुआ ८७ उस पर्वत के शिखरपर रहनेवाले विद्याधर उछले और शक्तिके संघातशब्दसे घायल किन्नर व्याकुल हुए ८८ इसके पीछे विचित्र भूषणोंवाले हज़ारों दैत्य अत्यन्त ज्वलितरूप उस उत्तम पहाड़ से बाहर को दौड़े ८९ कुमारके पीछे चलनेवालों ने युद्धमें उनका पराजयकर मारा तब क्रोधयुक्त भगवान्ने भी दैत्यराजके पुत्र को ९० उसके भाई समेत ऐसे मारा जैसे कि देवराजने वृत्रासुरको मारा था। शत्रु के वीरों को मारनेवाले महाबली कुमार ने बहुत रूपवाला और एक रूपवाला करके शक्तिसे क्रौञ्च पर्वतको घायल किया। युद्धमें फेंकी हुई शक्ति बारम्बार उसके हाथमें आती थी ९१-९२ फिर ऐसे प्रभाववाले भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी शूरता, दुगुने योग, तेज, यश और शोभासे महाप्रभावशाली हुए ९३ उनके हाथसे क्रौञ्च पर्वत टूटा और हज़ारों दैत्य मारे गये। कुमार ने असुरों को मारकर ९४ सुरों से सेवित हो बड़ा आनन्द पाया। हे भरतवंशी, राजा जनमेजय ! फिर देवताओं के दुन्दुभि और शंख बजे ९५ और देवताओं की हज़ारों स्त्रियों ने योगियों के ईश्वर, देवता कुमार पर पुष्पोंकी उत्तम वर्षा की ९६ और सुन्दर दिव्य गन्धियोंको लेकर पवित्र वायु चली; गन्धर्वों समेत यज्ञ करनेवाले महर्षियों ने स्तुति की ९७ कोई इस प्रभुको ब्रह्माजी से प्रकट होनेवाले सब के आदिभूत सनत्कुमार नाम पुत्र निश्चय करते हैं ९८ कोई महेश्वरजी का; कोई उमा, गङ्गा, अग्नि और कृत्तिकाओंका पुत्र कहते हैं ९९ उस योगेश्वर, महाबली देवता को एक रूप, दो रूप, चार रूप और हज़ारों लाखों रूपवाला कहते हैं १०० हे राजन्! कार्त्तिकेयजी का यह अभिषेक मैंने तुमसे कहा, अब सरस्वती के उत्तम तीर्थ का मूल हेतु सुनो १०१ महाराज ! कुमारके हाथसे असुरों के मरने

पर वह अत्यन्त उत्तम तीर्थ दूसरे स्वर्ग के समान हुआ १०२ वहां पर नियत कुमार ने पृथक् पृथक् राज्यशासनों समेत तीनों लोक देवताओं को दिये १०३ इस प्रकार उस तीर्थपर दैत्यों के कुलका नाश करनेवाले भगवान् देवसेनापति का देवताओं की ओरसे अभिषेक किया गया १०४ हे भरतर्षभ ! वह तीर्थ तैजस नामसे प्रसिद्ध है, जिस पर जलके स्वामी वरुण देवता का देवसमूहों से अभिषेक किया गया १०५ बलदेवजी ने उस उत्तम तीर्थपर स्नान करके स्वामिकार्त्तिकजी को पूजकर सुवर्ण, वस्त्र और भूषणादिक ब्राह्मणोंको दिये १०६ शत्रुके वीरोंको मारनेवाले बलदेवजी वहां एक रात्रि निवास करके उस महापूज्य तीर्थराज को और उसके जल को स्पर्श करके १०७ बड़े प्रसन्नचित्त हुए । हे राजन् ! मैंने स्वामिकार्त्तिकजीका अभिषेक सब तुमसे कहा १०८ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ।

जनमेजय बोले, कि हे द्विजवर्य ! मैंने कुमार के अत्यन्त अपूर्व अभिषेक को विधिपूर्वक सुना १ हे तपोधन ! मैं इसे सुनकर अपने को पवित्र जानता हूं । मेरा शरीर प्रसन्नता से पूर्ण है और चित्त भी अत्यन्त प्रसन्न है २ कुमार के अभिषेक और दैत्यों के नाशको सुनकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ ३ हे बड़े ज्ञानी, श्रेष्ठ वैशम्पायनजी ! कृपाकर बतलाइये, कि इस तीर्थपर प्राचीन समय में वरुण देवता का किन देवताओं ने अभिषेक किया था । आप सर्वज्ञ हैं ४ वैशम्पायन बोले कि, हे राजन् ! इस अपूर्व वृत्तान्त को यथार्थ सुनो । सत्ययुग के प्रारम्भ में सब देवता वरुण से मिलकर बोले, कि जैसे देवराज इन्द्र हमको सदैव भयों से बचाते हैं ५-६ उसी प्रकार तुम भी सब नदियों के स्वामी हो । हे देवता ! आपका निवास मकरों के निवासस्थान सागर में हो ७ यह नदियों का स्वामी समुद्र आप के आधीन होगा और आपके वृद्धि और क्षय चन्द्रमा के साथ होंगे ८ तब वरुण देवता उन देवताओं से बोले, कि ऐसाही हो । इस के पीछे सब देवताओं ने वेदोक्त कर्म के द्वारा समुद्रमें निवास करनेवाले वरुण को जलों का स्वामी किया । फिर देवता लोग जलों के स्वामी वरुणका अभिषेक करा ९-१० और पूजनादिक करके अपने लोकों को गये; तब देवताओं से अभिषिक्त बड़े यशस्वी वरुण ने भी ११ नदी, सागर, नद और सरो-

वरों को भी विधिसे ऐसे पोषण किया जैसे कि मनुष्य इन्द्रियों का पोषण करता है १२ प्रलम्ब के मारनेवाले, बड़े ज्ञानी बलदेवजी उस तीर्थ में भी स्नान-आचमन करके नानाप्रकार के धन दान दे उस अग्नितीर्थको गये १३ जहांपर देवतालोग सब लोकों के पितामह ब्रह्माजी के समीप आकर कहनेलगे, कि हे भगवन् ! वहां अग्नि गुप्त होगये परन्तु हम इसका हेतु नहीं जानते हैं १४ शमीगर्भ में अग्नि दिखाई नहीं पड़ते । सो हे निष्पाप ! सब गुप्त प्रकट संसार के नाश होने में १५ सब जीवों का नाश न हो । हे समर्थ ! इससे आप अग्नि को उत्पन्न करो । जनमेजय बोले, कि लोकभावन भगवान् अग्नि क्यों गुप्त हुए १६ और किस रीति से उनको देवताओं ने जाना । सब वृत्तान्त आप मुझसे कहिये । वैशम्पायन बोले, कि भृगुजी के शाप से अत्यन्त भयभीत, प्रतापी १७ भगवान् अग्नि जब शमीगर्भ को पाकर अदृश्य हुए तब इन्द्र समेत सब देवता अग्निके गुप्त होनेपर १८ अत्यन्त दुःखी हुए और गुप्त होनेवाले अग्नि को ढूंढ़ने लगे । फिर अग्नितीर्थ को पाकर शमीगर्भ में नियत अग्नि को १९ विधिपूर्वक पूजन करके शमीमें ही देखा । हे नरोत्तम ! इन्द्रसमेत बृहस्पति प्रमुख सब देवता २० अग्निको पाकर बहुत प्रसन्न हुए । तदनन्तर अपने लोकों को गये । हे राजन् ! अग्नि भृगुजी के शापसे सर्वभक्षी हुए २१ उस तीर्थमें भी ब्रह्मवादियों के कहने से ज्ञानी बलदेवजी स्नान करके ब्रह्मयोनि तीर्थको गये २२ जहां सब लोकों के पितामह भगवान् ब्रह्माजी ने संसारकी पूर्व सृष्टि में देवताओं समेत स्नान करके २३ विधिके अनुसार देवताओं के तीर्थों को उत्पन्न किया था । बलदेवजी वहां पर स्नानकर अनेक प्रकार के धन दानकर २४ कुबेर तीर्थको गये । बड़े तपस्वी कुबेरजी ने वहां बड़ी तपस्या करके धनोंकी प्रभुता पाई २५ हे राजन् ! सब धन और रत्नों की खानें उस तीर्थ पर नियत कुबेरजी के पास आकर उपस्थित हुईं । हे नरोत्तम ! हलधारी बलदेवजी ने उस तीर्थपर २६ विधिपूर्वक स्नान करके ब्राह्मणों को धन दिया । वहां उन्होंने कुबेरजी के उत्तम वन में वह स्थान भी देखा २७ जहां यक्षराद कुबेरजी ने बड़ी तपस्या करके श्रेष्ठ वर पाये थे २८ सब धनों की ईश्वरता, बड़े तेजस्वी रुद्रजी के साथ मित्रता, देवभाव, लोकपाल का अधिकार और नलकूबर नामक पुत्रको पाया २९ महाराज ! इन अभीष्टों की प्राप्ति होने पर वहीं मरुद्गणों समेत कुबेरजी का अभिषेक किया गया ३० और उनको

नैर्ऋतनाम राक्षसोंका राज्य तथा हंसोंसे सेवित, मनके समान शीघ्रगामी पुष्पक विमान की दिव्य सवारी दीगई ३१ बलदेवजी वहां स्नान-दानकर शीघ्रही श्वेतानुलेपन तीर्थ को गये ३२ जो सबप्रकारके जीवों से सेवित, अत्यन्त शुभ और सदैव फलफूलोंवाला बदरपाचन नाम है ३३ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्याने अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ।

वैशम्पायन बोले, कि बलदेवजी तपस्वी और सिद्ध लोगोंसे सेवित बदरपाचन उत्तम तीर्थको गये जहां १ पृथ्वीपर अनुपम रूपवती कुमारी, ब्रह्मचारिणी, बहुत नियमवाली, तेजस्विनी भरद्वाज ऋषिकी कन्या श्रुतावती ने देवराज इन्द्र को पति पाने की इच्छासे अत्यन्त उग्र तप किया था २-३ हे कौरव्य! स्त्रियोंसमेत महादुःखसे करने योग्य उन तीव्र नियमों के करने में उस कन्याके सौ वर्षहुए ४ तब भगवान् इन्द्र उसके उस चलन, भक्ति और तपसे प्रसन्न हुए ५ देवराज इन्द्र ब्रह्मर्षि वशिष्ठजीका रूप धारण करके उसके आश्रममें आये ६ हे भरतवंशिन्! उसने उन तपस्वियों में श्रेष्ठ वशिष्ठजी को देखकर मुनियों से सीखे हुए, आचारों से उनका पूजन किया ७ और बड़ी नम्र, मधुर वाणीसे वह नियम धर्मवाली कल्याणी बोली, कि हे प्रभो! मुनियों में श्रेष्ठ आपकी क्या आज्ञा है ८ हे सुन्दर व्रतवाले! अब मैं इन्द्रके प्रभावसे सामर्थ्य के अनुसार, जो आप चाहेंगे सो सब दूंगी; परन्तु किसी दशामेंभी तुमको अपना हाथ न दूंगी ९ हे तपोधन! तीनों भुवनों का ईश्वर इन्द्र व्रत, नियम और तपस्याके द्वारा मुझसे प्रसन्न करने के योग्य है १० हे भरतवंशिन्! इस प्रकारके वचन सुन मन्द मुसकान कर इन्द्र उसके नियमको जानकर बड़ी मधुर वाणी से बोला, कि ११ हे सुन्दर व्रतवाली कल्याणिनि! मुझको वह सब विदित है जिस प्रयोजन के निमित्त इस कर्मका प्रारम्भ तुम्हारे चित्तमें है और उग्र तप करती हो १२ हे सुमुखि! जैसा तुम्हारे चित्तमें विचार हुआ है, वह सब होगा और जैसा तुमने विचार किया है; वह तपस्याके ही द्वारा प्राप्त होता है। देवताओं के दिव्य लोक तप से ही प्राप्त होने के योग्य हैं; तप बड़े सुखका मूल है १३-१४ हे कल्याणिनि! इस प्रकार मनुष्य घोर तपस्या करके अपना शरीर त्यागकर देवभाव पाते हैं। हे सुव्रते! 'अब तुम इन पांच बदरीफलों को पकाओ', भगवान् इन्द्र

इतना कहकर चले गये १५-१६ और उसने भी वहां फलों को पकाया। उस आश्रम से थोड़ी दूरपर वह उत्तम तीर्थ १७ तीनों लोकों में इन्द्रतीर्थ नाम से प्रसिद्ध हुआ। हे बड़ाई देनेवाले ! देवराज इन्द्रने उसकी परीक्षा के लिये १८ बदरफलों का परिपाक बन्द करदिया। हे राजन् ! तब वार्तालाप में चतुर, थकावटसे रहित १६ उसी में प्रवृत्त, उस तपस्विनी ने अग्निमें लकड़ी रक्खी। और उन बदरफलोंको पकाया २० पर पकाते पकाते उसका बहुत समय बीतगया परन्तु फल न पके और दिन समाप्त होगया २१ इसके पास इन्धनका जितना ढेर था, वह सब अग्निमें भस्म होगया। तब उसने अग्निको इन्धनसे खाली देखकर अपने शरीरको भी भस्म करदिया २२-२३ उसने प्रथम अपने दोनों चरण अग्निमें डालकर फिर जले हुए चरणोंको आगे बढ़ाना प्रारम्भ किया। महर्षिकी इच्छा से कठिन कर्म करनेवाली उस निर्दोषने जलते हुए चरणों से, कुछ भी दुःखसे चिन्ता नहीं की २४ पैरों के जलने पर भी उसके चित्तमें उदासीनता और कोई रूपान्तर नहीं हुआ। शरीरको अग्निसे प्रज्वलितकर वह ऐसे प्रसन्न थी, जैसे शीतल जल में हो २५ हे भरतवंशिन् ! उसका वह वचन बारम्बार हृदय में आया, कि सब दशा में बदरफल पकाने के योग्य हैं। उस शुभ कन्याने २६ महर्षिके उस वचन पर निश्चय कर बदरफलों को पकाया, परन्तु वे न पके २७ अग्निने आप उसके चरणोंको जलाया, तौभी उसके चित्तमें किसी प्रकार के दुःख का लवलेश न हुआ २८ तब तीनों भुवनों का ईश्वर इन्द्र उसके कर्मको देखकर प्रसन्न हुआ और अपना मुख्यरूप कन्याको दिखलाया २६ उस दृढ़ व्रतवाली कन्यासे इन्द्र बोले, कि हे शुभे ! मैं तुम्हारे नियम, भक्ति और तपस्या से प्रसन्न हूं ३० हे शुभदर्शने ! अब तुम्हारा अभीष्ट सिद्ध होगा। हे महाभागे ! तुम इस शरीर को त्याग कर स्वर्ग में मेरे साथ सुखपूर्वक निवास करोगी ३१ हे सुन्दर भृकुटिवाली ! तुम्हारा बदरपाचन नाम उत्तम तीर्थ सब पापोंको दूर करनेवाला, लोकमें विख्यात होगा ३२ जो कि तीनों लोकों में विख्यात और ब्रह्मर्षियों से स्तूयमानहै। निश्चय ही इस शुभ और उत्तम तीर्थपर ३३ सप्तर्षि अरुन्धतीको त्याग करके हिमालय पर्वतपर गये। इसके पीछे बड़े महाभाग, तेजव्रतधारी वहां जाकर ३४ आजीविकाके निमित्त उत्तम फलमूल लेनेके लिये वहां ठहरे, तब हिमालयके वनमें जीविकाके अभिलाषी ऋषियों के निवास करनेपर ३५ बारह वर्षका दुर्भिक्ष पड़ा। तब वे सातों तपस्वी वहां

आश्रम बनाकर ठहरे ३६ उस समय अरुन्धती भी सदैव तपस्या करने में प्रवृत्त हुई। फिर उसे तीव्र नियममें नियत देखकर ३७ अत्यन्त प्रसन्नमूर्ति सब वरों के दाता शिवजी महाराज आपहुँचे। बड़े यशस्वी महादेवजी ब्राह्मणका रूप धर कर ३८ उसके पीछे से बोले, कि हे शुभ स्त्री! मैं भिक्षा चाहता हूं। उस सुन्दर दर्शनवाली ने उत्तर दिया, कि ३६ हे वेदपाठिन्! अनाजका ढेर तो नष्ट हो गया; यहां आप बदरफलों को भक्षण करें। यह बात सुनकर महादेवजी ने कहा, कि हे सुव्रते! तुम इन बदरफलों को पकाओ ४० इस प्रकार शिवजी के वचन सुनकर उस यशस्विनी ने ब्राह्मणके हित के लिये बदरफलों को प्रकाशित अग्निपर चढ़ाकर पकाया ४१ और चित्तरोचक धर्मकी वृद्धिके हेतु दिव्य कथाएं भी सुनाईं। उतने अन्तर में वह बारह वर्ष का दुर्भिक्ष समाप्त होगया ४२ उस भोजन न करनेवाली और शुभ कथाएं सुनानेवाली अरुन्धती का बड़ा भयानक समय एक दिनके समान बीतगया ४३ इसके पीछे मुनि लोग पर्वत से फल लेकर आगये। तब प्रसन्नचित्त भगवान् शिवजी अरुन्धती से बोले, कि ४४ हे धर्मकी जाननेवाली! मैं तुम्हारे धर्मरूपी तप और नियमसे प्रसन्न हूं। अब तुम प्रथम के समान इन ऋषियों के पास जाओ ४५ फिर भगवान् हरने अपने रूपका अच्छे प्रकार दर्शन दिया और उसके बड़े कर्म का ऋषियोंके आगे वर्णन किया, कि ४६ हे ब्राह्मणो! आप लोगों ने हिमवान् पर्वत पर जो तप किया है, वह तुम्हारा तप मेरी समझ में इसके तपकी समान नहीं है ४७ इस तपस्विनीने बड़ी कठिनतासे करने योग्य तप किया है। इस भोजन न करनेवाली बदर पकानेवाली ने बारह वर्ष व्यतीत किये ४८ शिवजी अरुन्धती से बोले, कि हे कल्याणिनि! जो इच्छा हो, सो वर मांगो ४६ तब वह रक्त और दीर्घ नेत्रोंवाली अरुन्धती सप्तर्षियों की सभा में शिवजी से बोली, कि हे भगवन्! जो आप मुझपर प्रसन्न हैं, तो यह तीर्थ अपूर्व होजाय ५० अर्थात् सिद्ध देवर्षियों का प्यारा बदरपाचन नामसे विख्यात हो। हे देवेश! इस प्रकार से इस तीर्थपर तीन रात्रि रहनेवाला पवित्र मनुष्य ५१ व्रतके द्वारा बारह वर्षके व्रतके फल को पावे। तब देवताने तपस्विनी अरुन्धती से कहा, कि ऐसा ही हो ५२ सप्तर्षियों से स्तूयमान होकर शिवजी स्वर्ग को चले गये। ऋषि भी अरुन्धती को देखकर बड़े विस्मित हुए ५३ जो कि थकावट से रहित, विपरीत रूप और क्षुधा-पिपासासे युक्त थी। इस रीति

से अत्यन्त पवित्र अरुन्धती ने बड़ी सिद्धि पाई ५४ इन्द्रने कहा, कि हे व्रतयुक्त, महाभाग कल्याणिनि ! जिस प्रकारसे तुमने मेरे निमित्त इस व्रतमें अधिकता की ५५ हे श्रेष्ठ कल्याणिनि ! इस प्रकार तुम्हारे निमय से अत्यन्त प्रसन्न होकर मैं यह मुख्य वर तुमको देता हूं ५६ महात्मा शिवजीने जो वर अरुन्धतीको दिया, हे कल्याणिनि ! मैं उसके प्रभाव और तुम्हारे तेजसे ५७ यहां विधिपूर्वक श्रेष्ठ वरको फिर कहता हूं । जो अत्यन्त सावधान मनुष्य एक रात्रि इस तीर्थ में निवास करेगा ५८ वह स्नान के फलसे अपने शरीरको त्याग कर बड़े दुष्प्राप्य लोकों को पावेगा । प्रतापी इन्द्र देवता ५६ श्रुतावती से यह कह कर अपने पवित्र स्वर्ग को गये । हे भरतर्षभ, राजा जनमेजय ! वज्रधारी इन्द्र के जाने पर ६० उस स्थानमें पवित्र सुगन्धित दिव्य पुष्पोंकी वर्षा हुई और बड़े शब्दों से देवताओंने दुन्दुभियां बजाई ६१ और पवित्र सुगन्धवाली, शीतल, मन्द वायु चली । उस शुभ स्त्रीने इन्द्रका स्त्रीभाव पाया । हे अजेय ! वह स्त्री उग्र तपके द्वारा उसको पाकर उसके साथ क्रीड़ा करनेवाली हुई ६२ जनमेजय बोले, कि हे भगवन् ! उस स्त्री की माता कौन थी और उसने कहां पोषण पाया । हे द्विजवर्य ! मुझे सुनने का बड़ा उत्साह है । इसलिये आप वर्णन कीजिये ६३ वैशम्पायन बोले, कि एक समय बड़े दिव्य नेत्रोंवाली घृताची अप्सराको आती हुई देखकर ब्रह्मर्षि भारद्वाजजी का वीर्य पतन हुआ ६४ तो उन्होंने अपने गिरे हुए वीर्यको हाथमें लिया । वह एक दोने में गिरपड़ा; उसीमें वह कन्या उत्पन्न हुई ६५ महामुनि, तपोधन, भारद्वाज मुनिने जातकर्मादिक सब क्रियाएं करके उसका नामकरण किया ६६ देवर्षियों की सभामें उस धर्मात्माने श्रुतावती उसका नाम रक्खा । उसको अपने आश्रममें छोड़कर वे हिमालय को चले गये ६७ महानुभाव बलदेवजी वहां भी स्नान-आचमन करके बहुतसे उत्तम ब्राह्मणोंको धन दान देकर चित्तसे बड़े सावधान हो इन्द्रके पास गये ६८ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणयेकोनविंशोऽध्यायः १६ ॥

बीसवां अध्याय ।

वैशम्पायन बोले, कि यादवों में श्रेष्ठ बलदेवजी ने इन्द्र तीर्थमें विधिपूर्वक स्नानकर ब्राह्मणोंको धन-रत्नादिक दिये १ वहां जब देवेन्द्रने सौ यज्ञसे पूजन

किया था तब बृहस्पतिजी को बहुत धन दिया था २ वहां इन्द्रने अर्गला रहित कपाटों के रखनेवाले, नाना प्रकार के धन और दक्षिणावाले यज्ञों की वैसी ही तैयारी की, जैसी कि वेदोंके ज्ञाता ऋषियों ने कही थी ३ हे भरतर्षभ ! इन्द्रने उन यज्ञोंको सौ बार विधिपूर्वक पूर्ण किया। इसी से उसका नाम शतक्रतु हुआ ४ उसीके नामसे वह कल्याणरूप, सब पापोंसे छुटानेवाला प्राचीन इन्द्र-तीर्थ विख्यात हुआ ५ मुशलधारी बलदेवजी वहां भी विधिपूर्वक स्नान-आचमन कर उत्तम भोजन-वस्त्रादि से ब्राह्मणोंको पूजकर ६ वहांसे रामतीर्थ को गये, जो तीर्थोंमें उत्तम और शुभ है तथा जहां पर महाभाग भार्गव परशुरामजी ने ७ बार-म्बार उस पृथ्वीको, जिसमें कि उत्तमोत्तम क्षत्रिय मारेगये, जीतकर मुनियोंमें श्रेष्ठ उपाध्याय कश्यपजीको आगे करके ८ सौ अश्वमेधोंसे पूजन किया और समुद्रों समेत सब पृथ्वी दक्षिणामें दे दी ६ नाना प्रकारके रत्न, गौ, हाथी, घोड़े, दास, दासी और भेड़, बकरियोंसे युक्त विविध दान देकर वे वनको गये १० वहां पवित्र और श्रेष्ठ देवर्षियोंसे सेवित तीर्थपर मुनियोंको दण्डवत् करके यमुना तीर्थ पर गये ११ हे राजन् ! जहां अदिति के पुत्र महाभाग श्वेतवर्ण वरुण ने राजसूय यज्ञ किया था १२ वहां शत्रुओंके वीरोंको मारनेवाले वरुणने युद्धमें नरलोकवासी जीव और देवताओं को भी जीत कर उत्तम यज्ञकी तैयारी की१३ उस उत्तम यज्ञके होनेपर देवता और दानवों का तीनों लोकोंको भय उपजाने वाला युद्ध जारी हुआ १४-१५ हे जनमेजय ! श्रेष्ठ राजसूय समाप्त होने पर क्षत्रियों में बड़ा घोर युद्ध हुआ। हे भरतर्षभ ! वहां भी अभीष्ट वस्तुओं के देने में समर्थ बलदेवजी महर्षियों से स्तुतिमान होकर आदित्य तीर्थको गये १६-१७ जहां ज्योतिरूप भगवान् सूर्यने पूजन करके प्रकाशित पदार्थोंके राज्य और भाव को पाया १८ हे राजन् ! उस नदीके तटपर इन्द्रादिक सब देवता, विश्वेदेवा, मरुद्-गण, गन्धर्व, अप्सरा १६ व्यासजी, शुकदेवजी, मधुदैत्यसंहारी श्रीकृष्णजी, यक्ष, राक्षस और पिशाच भी रहे थे २० सरस्वती के उस कल्याणरूप पवित्र तीर्थपर ये और अन्यान्य हजारों योगसिद्ध हुए २१ हे भरतर्षभ ! पूर्वसमय में विष्णुजीने मधुकैटभ दैत्यको मारकर उस पवित्र तीर्थ में स्नान करके २२ और व्यासजी ने भी वहीं स्नान करके परमयोग पा सिद्धि पाई २३ बड़े तपस्वी असित, देवलनेभी उस तीर्थपर परमयोगमें नियत होकर ऋषियोग पाया २४॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि विंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय।

वैशम्पायन बोले, कि पूर्व समयमें धर्मात्मा और तपरूप धनवाले असित और देवल ऋषि गृहस्थ धर्म में नियत होकर उसी तीर्थपर रहे १ ये दोनों ऋषि सदैव धर्म करनेवाले, पवित्र, जितेन्द्रिय, दण्डके त्यागी, महातपस्वी, मन-वाणी और शरीरसे सब जीवों में समदर्शी २ क्रोधरहित, निन्दा-स्तुतिको समान जाननेवाले, प्रिय-अप्रियमें समान बुद्धिवाले, यमराजसे समदर्शी ३ सुवर्ण-लोहको तुल्य जानने और देखनेवाले, महातपस्वी और देवताओं समेत ब्राह्मण तथा अतिथियोंको सदैव पूजते ४ सदा ब्रह्मचर्य में प्रवृत्त और सदैव धर्म को ही श्रेष्ठ माननेवाले थे। हे राजन्! इसके पीछे महाभाग, बुद्धिमान्, सावधान, महातेजस्वी, मुनि जैगीषव्य संन्यासी उस तीर्थपर आकर योगमें नियत हो देवल के आश्रममें बसे ५-६ महाराज! वे महातपस्वी सदैव योगमें नियत और सिद्ध थे। देवलने वहां रहनेवाले महामुनि जैगीषव्यका ७ देखते ही अतिथिधर्म से सत्कार किया। महाराज! इसी रीति से उन दोनों का बहुत सा समय बीता ८ देवल ने मुनियों में श्रेष्ठ जैगीषव्य को नहीं देखा। हे जनमेजय! तब बुद्धिमान्, धर्मज्ञ वे संन्यासी ९ आहार और भिक्षा के समय पर देवल के पास आये, देवल ऋषिने भिक्षुकरूप से आनेवाले महामुनि को देख बड़ी प्रतिष्ठा से अत्यन्त प्रीति प्रकट की १० हे भरतवंशिन्! सावधान देवल ऋषि ने ऋषियोंकी बताई विधिसे सामर्थ्य के अनुसार बहुत वर्षोंतक उनकी पूजा की। दैवयोगसे एक समय देवल ऋषिको ११-१२ उस महातेजस्वी मुनिके देखने से बड़ी चिन्ता हुई, कि मुझे इनका पूजन करते बहुत वर्ष बीत गये १३ परन्तु आजतक इस उदासीन भिक्षुक ने कभी कोई बात न कही। इस प्रकार विचार कर अन्तरिक्षचारी देवल ऋषि कलश लेकर महासमुद्र को गये। हे भरतवंशिन्! समुद्र को जाते समय उस धर्मात्माने १४-१५ पहले से गये हुए जैगीषव्य को देखा। उन्हें वहां देखकर उस बड़े तेजस्वी ने आश्चर्य कर चिन्ता की, कि १६ यह भिक्षुक समुद्र पर कैसे आया और इसने स्नान कैसे किया। फिर उस महर्षि ने ऐसी चिन्ताकर १७ समुद्र में विधिवत् स्नान करके उस पवित्रात्मा ने जप किया। संध्या करके देवल ऋषि १८ जल पूर्ण कलश लिये अपने आश्रम को आये। हे जनमेजय! फिर अपने आश्रम-

स्थान में प्रवेश करते समय उस मुनिने १९ वहां बैठे हुए जैगीषव्यको
देखा। उस समय भी जैगीषव्य ने किसप्रकार कुछ न कहा २० फिर वे महा-
तपस्वी काठरूप हो आश्रमस्थान में निवासी हुए। देवल ऋषि ने उन्हें समुद्र
के समान जल में स्नान किये हुए और २१ अपने आने से पहले ही आश्रम
में बैठे देखा। हे राजन्! तब बुद्धिमान् असित देवलने चिन्ता की २२ उस
मुनि श्रेष्ठने जैगीषव्यके योगसे उत्पन्न तपको देखकर बड़ी चिन्ता की, कि २३
मैंने तो इन्हें समुद्रपर देखा था, अब यहां मुझसे पहले ही आश्रम में कैसे आ
गये। हे राजन्! तब वह मन्त्रविद्या में पूर्ण देवल मुनि इस प्रकार विचार
कर २४ जैगीषव्य संन्यासी की परीक्षा के अर्थ उस आश्रम से ऊपर, आकाश
की ओर उछले २५ अन्तरिक्षचारी और सावधान सिद्धों को देखनेवाले देवल
ऋषि ने वहां भी जैगीषव्य को उन सिद्धों से पूजित और प्रतिष्ठित देखा २६
तदनन्तर क्रोधयुक्त दृढ़ व्रतधारी असित देवलने वहां से जैगीषव्यको जातेहुए
देखा २७ उसने वहांसे उन्हें पितृलोकमें जाते हुए देखा और पितृलोक से यम-
लोकमें भी उन्हें देखा २८ और उन लोकोंसे भी उछलकर चन्द्रलोक में जा
उस महामुनि जैगीषव्यको देखा २९ फिर अच्छे यज्ञ करनेवालों के शुभलोकों
में भी उन्हें उछलकर जातेहुए देखा और वहांसे भी अग्निहोत्रियों के लोकों
को उछले ३० अमावस और पूर्णमासी के दिन यज्ञों से पूजन करनेवाले
अथवा पशुओं के यज्ञ करनेवालों के लोकोंसे निर्मल और देवपूजित लोक को
जानेवाले मुनिको बुद्धिमान् देवलने देखा जो तपोधन कि चातुर्मास्य नाम
नाना प्रकार के यज्ञों से पूजन करते हैं ३१-३२ वहांसे उनके लोकों में और
अग्निष्टोम यज्ञ करनेवालों के लोकों को जानेवाले मुनिको देखा। जो तपोधन
अग्निष्टुत यज्ञसे पूजन करते हैं ३३ उनके लोक में भी जाते हुए मुनिको
देवल ऋषिने देखा। इसीप्रकार बहुत सुवर्णवाले यज्ञों में, श्रेष्ठ वाजपेय यज्ञ
को ३४ करनेवाले ज्ञानियों के भी लोकों में जाते हुए मुनिको देखा। जो लोग
राजसूय और पुण्डरीक यज्ञों से पूजन करते हैं ३५ उनके लोकों में भी जैगी-
षव्यको देवलने देखा। इसीप्रकार जो नरोत्तम यज्ञों में श्रेष्ठ अश्वमेध और नरमेध
करते हैं ३६ उनके भी लोकों में उन्हें देखा। जो लोग कठिन सर्वमेध और
सूत्रामणि यज्ञ करते हैं ३७ उनके लोकों में भी देवल ने जैगीषव्यको देखा।
हे राजन्! नाना प्रकार के द्वादशाह यज्ञों से पूजनेवालों के ३८ लोकों में भी

देवलने जैगीषव्यको देखा। इसके पीछे असित देवलने अदिति के पुत्र मित्रा-वरुण और सूर्यादिक की ३६ सालोक्यता पानेवाले जैगीषव्य को देखा। ग्यारह रुद्र, अष्ट वसु और बृहस्पतिजी के सब लोकों को ४० लांघते हुए जैगीषव्य को असित देवलने देखा। फिर वे गोलोक में चढ़कर ब्रह्मयज्ञ करनेवालों के लोकों को गये ४१ फिर असित देवलने अपने तेजसे तीनों लोकोंको त्यागकर अन्य लोकों के जानेवाले जैगीषव्य को देखा ४२ और पतिव्रताओं के भी लोकों में जाते हुए उन मुनिको देखा। तब असित देवलने उन मुनिश्रेष्ठ, योगमें नियत, अन्तर्द्धान होनेवाले जैगीषव्य को न देखा ४३ हे जनमेजय! महाभाग देवलने जैगीषव्य के ४४ प्रभाव, व्रतकी उत्तमता और योग की बड़ी सिद्धि का विचार किया। तब असित देवलने लोकों में श्रेष्ठ सिद्धों से पूछा ४५ देवल पण्डितने हाथ जोड़कर ब्रह्मयज्ञ करनेवालों से कहा, कि मैं अब जैगीषव्यको नहीं देखता हूं ४६ उन बड़े तेजस्वी का सब वृत्तान्त वर्णन कीजिये। मुझे उनका वृत्तान्त सुननेकी बड़ी उत्कण्ठा है। सिद्ध बोले, कि हे दृढ़ व्रतवाले, देवल! हम तुमसे इसका वृत्तान्त कहते हैं, सुनो। निश्चय ही जैगीषव्य सनातन ब्रह्मलोकको गये ४७ वैशम्पायन बोले, कि असित देवल ब्रह्मयज्ञ करनेवाले सिद्धों के वचन सुनकर शीघ्रही ऊपर को चला परन्तु गिर पड़ा ४८ तब सिद्ध लोग देवलसे बोले, कि हे तपोधन, बलवान् देवल! उस ब्रह्मलोकमें जाने की तुम्हारी गति नहीं है, जिस को कि जैगीषव्यने पाया ४६ वैशम्पायनने कहा, कि फिर देवलजी उन सिद्धों के वचन सुनकर क्रम से अपने लोकों को उतरे ५० और पक्षी के समान अपने पवित्र स्थान आश्रमको आये। आश्रम में प्रवेश कर देवलने जैगीषव्य को देखा ५१ तो देवलने जैगीषव्य के योगसे उत्पन्न तपके प्रभावको देखकर धर्मयुक्त बुद्धि से विचार किया ५२ और नम्रता से झुककर देवलने महात्मा महामुनि जैगीषव्य से कहा, कि ५३ हे भगवन्! मैं मोक्षधर्म में नियत होना चाहता हूं। तब जैगीषव्य ने उपदेश किया ५४ शास्त्रके द्वारा योग और कार्य्याकार की परम विधि का उपदेश किया। इसके पीछे उन बड़े तपस्वी ने देवलको संन्यास में प्रवृत्तचित्त देखकर ५५ वेदोक्त कर्मोंके द्वारा उसकी सब क्रियाएं कीं। पितरों समेत सब जीवधारी उस संन्यास में बुद्धि लगानेवाले देवलको ५६ देख रोकर कहने लगे, कि अब हमको कौन भाग देगा। दशो दिशाओं में इस

प्रकार के दुःखित वचन सुनकर देवलने ५७ मोक्षको त्यागने का चित्त किया। हे भरतवंशिन् ! फिर पवित्र फल मूल ५८ और हज़ारों ओषधियां भी रोने लगीं, कि निश्चयही वह नीच और दुर्बुद्धि देवल हमको फिर काटेगा ५९ जोकि सब जीवोंको निर्भय कर सावधान नहीं होता है। मुनिश्रेष्ठ देवलने अपनी बुद्धि से विचारा, कि ६० मोक्ष और गृहस्थ धर्म—इन दोनों में से कौन धर्म कल्याणकारक है। हे राजाओं में श्रेष्ठ ! देवलने चित्तसे निश्चय कर ६१ गृहस्थ धर्मको त्याग मोक्ष धर्म को स्वीकार किया। फिर उसने निश्चय से उनको और अन्यान्य बातोंको विचार कर ६२ परम सिद्धि समेत परम योग पाया। इसके पीछे बृहस्पति प्रमुख देवताओं ने आकर ६३ जैगीषव्यकी और इस तपस्वी के तपकी प्रशंसा की। ऋषियों में श्रेष्ठ नारदजी देवताओं से बोले, कि ६४ जैगीषव्य में तप नहीं है। वह असितको आश्चर्ययुक्त करता है। इस प्रकारसे कहनेवाले देवता उस वीरसे बोले, कि ६५ ऐसा नहीं है। फिर महामुनि जैगीषव्य की प्रशंसा कर बोले, कि प्रभाव में इससे बड़ा तो क्या बराबरी का भी कोई नहीं है ६६ इस महात्मा के तेज, तप और योग के समान किसी का नहीं है। धर्मात्मा जैगीषव्य और असित देवल भी ऐसेही प्रभाववाले हैं ६७ इन दोनों उत्तम महात्माओं का यह श्रेष्ठ आश्रम और तीर्थ है। महात्मा बलदेवजी उस तीर्थ में स्नान-आचमन कर ब्राह्मणोंको बहुत धन दे धर्मको पाकर चन्द्रमा के तीर्थको गये ६८ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वण्येकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ।

वैशम्पायन बोले, कि हे भरतवंशिन् ! जहां पर चन्द्रमाने राजसूय यज्ञ से पूजन किया उस तीर्थपर तारकासुर सम्बन्धी बड़ा युद्ध हुआ १ धर्मात्मा बलदेवजी वहां स्नान-आचमन करके, दान दे कर सारस्वत मुनिके तीर्थ को गये २ वहां पूर्वकालमें सारस्वत मुनिने, बारह वर्षके दुर्भिक्ष में उत्तम ब्राह्मणों को वेद पढ़ाया था। वैशम्पायन बोले, कि महाराज ! पूर्वसमय में एक बुद्धिमान् ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय दधीचि मुनि थे ३—५ उनकी तपस्या से इन्द्र सदैव डरता रहता था और उनको नाना प्रकारके फलोंसे लुभाता था परन्तु वे किसी भी फल पर न ललचाने ६ तब इन्द्रने उनके लुभाने के लिये दिव्य, पवित्र और

दर्शनीय अलम्बुषा अप्सराको उनके पास भेजा ७ महाराज ! वह प्रकाशमान अप्सरा, सरस्वतीपर देवताओंका तर्पण करनेवाले उस महात्माके सम्मुख हुई ८ उस दिव्य शरीरवाली अप्सराको देखकर उस शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषिका वीर्य स्खलित होकर सरस्वती में गिरा। उस नदीने उसे धारण किया ९ हे पुरुषोत्तम ! उस नदीने ऋषिके वीर्यको अपनी कुक्षिमें पुत्र पाने की इच्छा से धारण किया १० कुछ समय पीछे उस श्रेष्ठ नदीने पुत्र उत्पन्न किया और वह उसे लेकर ऋषिके पास गई ११ हे राजेन्द्र ! वह नदी ऋषियों की सभा में उस श्रेष्ठ मुनिको पुत्र देती हुई बोली, कि १२ हे ब्रह्मर्षे ! यह तुम्हारा पुत्र है। मैंने तुम्हारी भक्तिसे इसको धारण किया था। उस समय अलम्बुषा अप्सराको देखकर जो तुम्हारा वीर्य गिर गया था १३ उस तुम्हारे तेज को भक्ति से नष्ट न होने देने के लिये मैंने अपनी कोख में धारण किया १४ मेरे दिये हुए इस अपने निर्दोष पुत्रको लो। इस प्रकार के सरस्वती के वचन सुनकर ऋषिने पुत्र को ले बड़ा आनन्द माना १५ उस श्रेष्ठ ब्राह्मण ने बड़े प्रेम से अपने पुत्र के मस्तक को सूंघा और बड़ी देर तक उस श्रेष्ठ मुनि ने पुत्र को गोदी में लेकर १६ सरस्वती को यह वर दिया, कि हे सुन्दरि ! ऐश्वर्यवान् पितरों समेत विश्वेदेवा, गन्धर्व और अप्सराओं के गण १७ तुम्हारे जल से तृप्त होकर आनन्द पावेंगे। इसके सिवाय वचनों से भी उस महानदी को प्रसन्न किया १८ हे राजन् ! उसने कहा, कि हे महाभागे ! तुम ब्रह्माजीके सरोवर से निकली हो १९ तुमको प्रशंसनीय व्रतवाले मुनि लोग जानते हैं। हे प्रियदर्शने ! तुम सदैव मेरा प्रिय करनेवाली भी हो २० हे सुन्दरि ! इसी से तुम्हारा बड़ा सारस्वत नाम होगा और तुम्हारा लोकभावन २१ महातपस्वी पुत्र सारस्वत नामसे प्रसिद्ध होगा। यह सारस्वत बारह वर्ष के दुर्भिक्ष में उत्तम ब्राह्मणों को २२ वेद पढ़ावेगा। हे महाभागे, सरस्वति ! तुम मेरी कृपासे सदैव पवित्र नदियों से भी महापवित्र रहोगी। हे भरतर्षभ ! इसप्रकार उस ऋषि से स्तूयमान वह महानदी वरपाकर २३–२४ बड़े आनन्द पूर्वक अपने पुत्रके साथ चली गई। उसी समय देवता और दानवों में परस्पर विरोध हुआ २५ इससे इन्द्र ने उनके मारने को अस्त्र बहुत ढूंढ़ा परन्तु ऐसा कोई अस्त्र न मिला, जो असुरों के मारने में समर्थ हो। तब इन्द्र ने देवताओं से कहा, कि दधीचि ऋषिके अस्थि विना किसी अस्त्रसे भी देवताओं

के शत्रु महा असुरों के मारने को मैं समर्थ नहीं होसकता। इस कारणसे हे देवता लोगो! उन उत्तम ऋषि से प्रार्थनापूर्वक याचना करो, कि २६-२८ आप हमपर कृपा करके अपने हाड़ दीजिये। आपके उन हाड़ोंसे हम अपने शत्रुओं को मारेंगे। हे कौरव्य! उसी प्रकार से उन देवताओं के मांगने पर उन महा-श्रेष्ठ ऋषि ने श्रेष्ठरीति से २६ विना विचार किये ही अपने प्राण त्याग कर अविनाशी लोक पाया ३० फिर अत्यन्त प्रसन्न इन्द्रने उनके हाड़ों से नाना प्रकार के दिव्य अस्त्र-शस्त्र तैयार करवाये ३१ वज्र, चक्र और गदाप्रभृति तप से पूर्ण भारी दण्डों से संसार में अद्वितीय पर्वताकार हृष्ट पुष्ट बड़े लम्बे शरीर वाले इन्द्रने ब्रह्मतेजसे उत्पन्न, तेजसंयुक्त शब्दायमान छोड़ेहुए वज्र से ३२-३५ आठसे दश दैत्य दानवों के बड़े वीरों को मारा। हे राजन्! इसके पीछे अत्यन्त भयकारी समय के अन्त में ३६ बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पड़ा। उस बारह वर्ष के दुर्भिक्ष में महर्षि लोग ३७ क्षुधा से व्याकुल आजीविका के निमित्त दशों दि-शाओं को चले गये। तब सारस्वत मुनिने उन ऋषियों को देखकर ३८ चलने का विचार किया। उस समय सरस्वती बोली, कि हे पुत्र! यहां से तुमको जाना योग्य नहीं है। मैं सदैव तुम्हारे आहार के निमित्त ३६ अत्यन्त उत्तम मछलियां दूंगी। हे भरतवंशिन्! माता के ऐसे वचन सुनकर उस ऋषिने उसी प्रकार से देवता और पितरोंको तृप्त किया ४० पुराण और वेदोंको धारण कर उस ऋषिने सदैव आहार किया। दुर्भिक्ष समाप्त होने पर महर्षियोंने ४१ वेदज्ञताके कारण परस्पर पूंछा। हे राजेन्द्र! क्षुधार्त और चारों ओरको दौड़नेवाले वे सब ऋषि लोग वेद को भूल गये ४२ उनमें से किसी ऋषिने तीक्ष्णबुद्धि और वेदपाठ करनेवाले ऋषियों में श्रेष्ठ सारस्वत ऋषिको पाया। उसने बड़े ते-जस्वी ४३-४४ देवताके समान, निर्जन वनमें वेदपाठ करनेवाले सारस्वत ऋषि को देखकर अपने साथी ऋषियोंसे वर्णनकिया। तब वे सब ऋषि मिलकर वहां गये ४५ और उन्होंने मुनियों में श्रेष्ठ सारस्वत मुनिसे कहा, कि हे मुने! आप हम सब को वेद पढ़ाइये। उस मुनिने ऋषियों से कहा, कि ४६ तुम विधिपूर्वक मेरी शिष्यता प्राप्त करो। तब महामुनियों ने कहा, कि हे पुत्र! तुम बालक हो ४७ सारस्वत ने उत्तर दिया, कि मेरा धर्म नष्ट होगा। यदि अधर्म से कहे और अधर्म से ही लेवे ४८ तो दोनों का शीघ्रही नाश होताहै अथवा वे दोनों परस्पर शत्रु होजाते हैं। यह सुनकर ऋषियों ने वर्षों की अधिकता, श्वेत बाल,

धन और बान्धवोंके कारण ४६ उत्पन्न धर्म न माना और कहा, कि जो शिक्षा आदिक छहों अगों समेत वेदोंका पढ़नेवाला है, वही हममें बड़ा है। ऐसा विचारकर मुनियों ने विधिके अनुसार ५० सारस्वत मुनि से वेद पाकर फिर धर्म किये अर्थात् साठ हज़ार मुनियोंने ५१ वेद पढ़नेके कारण परम ऋषि सारस्वतकी शिष्यता पाई। तदनन्तर वे सब उस परम ऋषि के आसन के लिये एक मुट्ठी कुशा लेआये और उस बालककी अधीनता में नियत हुए ५२ केशवजी के बड़े भाई महाबली बलदेवजी वहां भी धन दान करके क्रमपूर्वक उस प्रसिद्ध तीर्थपर गये जहां एक बहुत वृद्ध कन्या ठहरी थी ५३ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय।

जनमेजय बोले, कि हे भगवन्! पूर्व समयमें वह कुमारी तप में कैसे प्रवृत्त हुई, क्यों तपस्या की और उसका क्या नियम था १ हे ब्राह्मण! मैंने तुमसे यह महाश्रेष्ठ और बड़े कष्टसे करने योग्य तप सुना। अब उसका वह सब वृत्तान्त कहिये जैसे वह तपमें प्रवृत्त हुई २ वैशम्पायन बोले, कि हे राजन्! बड़े पराक्रमी और यशस्वी एक कुणिगर्ग ऋषि थे। उन्होंने बड़ी तपस्या करके ३ मनसे सुन्दरी बेटीको उत्पन्न किया। यशस्वी कुणिगर्ग मुनि उस कन्या को देख बहुत प्रसन्न हुए और ४ इस लोकमें शरीर त्यागकर स्वर्गको गये। वह सुन्दर भृकुटिवाली, कमललोचना, कल्याणी ५ निर्दोष उग्र तप के द्वारा परिश्रम करके व्रतों समेत देवता और पितरों का पूजन करनेलगी ६ हे राजन्! उस उग्र तपमें ही उसका बड़ा समय बीता उस निर्दोष ने कभी पतिकी इच्छा भी नहीं की; क्योंकि उसने अपने योग्य पति नहीं पाया। तब वह बड़े उग्र तपसे अपने शरीरको पीड़ित करके ७-८ निर्जन वन में देवता और पितरोंके पूजनमें प्रवृत्त हुई। हे राजेन्द्र! परिश्रम से रहित, अपने को अभीष्ट प्राप्त करने वाली मानकर वह कन्या ९ बड़ी तपस्यासे जीर्ण हुई। जब वह अपने चरणों से कहीं चलने फिरने को भी समर्थ न हुई १० तब परलोकके जाने में विधिपूर्वक बुद्धि की। फिर नारदजी उस शरीर त्यागनेकी इच्छावाली कुमारी से बोले, कि ११ हे निष्पाप! हमने देवलोकमें सुना है, कि संस्कारसे रहित कन्याको लोक कैसे मिल सकते हैं १२ तुमने बड़ी तपस्या की सही, परन्तु

लोकों को नहीं जीता; हे महाव्रते ! यह भी हमने देवलोक में सुना है १३ तब वह कुमारी नारदजी के वचन सुनकर ऋषियों की सभा में बोली, कि १४ हे उत्तम ऋषे ! मैं आधे तपका फल अपने पतिको दूंगी। ऐसा कहनेपर इसके हाथको गालवके पुत्र शृङ्गवान् ऋषिने पकड़ा और यह नियम कहा, कि हे शोभने ! अब मैं तेरे पाणिको इस प्रतिज्ञा के साथ ग्रहण करता हूं १५ यदि तू एक रात्रि मेरे साथ निवास करे। उसने 'तथास्तु' कहकर अपना पाणि उस के हाथमें देदिया १६ गालवके पुत्र शृङ्गवान् ने वेदोक्त विधिसे अग्निमें हवन कर उसका पाणिग्रहण किया १७ हे राजन् ! वह स्त्री रात्रि में तरुण, दिव्य भूषण और वस्त्रों से अलंकृत तथा सुगन्धियोंसे युक्त हुई १८ गालव के पुत्र शृङ्गवान् उस लक्ष्मी के समान प्रकाशित स्त्रीको देखकर प्रसन्नचित्त हो एक रात्रि उसके साथ रहे। तब वह प्रातःकाल उस ऋषिसे बोली, कि १९ हे तपस्वियों में श्रेष्ठ ब्राह्मण ! तुमने जो प्रतिज्ञा मुझसे की है इसी हेतुसे मैं तुम्हारे पास रही हूं। तुम्हारा कल्याण और शुभ हो । अब मैं जाती हूं २० वहां से निकलकर वह बोली, कि जो सावधान पुरुष इस तीर्थमें देवताओंको तृप्त करके एक रात्रि निवास करे २१ वह अट्ठावन वर्ष तक श्रेष्ठ रीति से ब्रह्मचर्य पालन करने का फल पावे २२ फिर वह पतिव्रता शरीर त्यागकर स्वर्ग को गई और ऋषि भी उसके रूपको सोचता हुआ महा दुःखी हुआ २३ उसने नियम से उसका आधा तप बड़ी कठिनता से लिया और आत्माका साधन कर उसकी गति पाई २४ हे भरतर्षभ ! उसके रूप और तेजबलसे महादुःखी ऋषिने ऐसा किया। इस प्रकार उस वृद्धकन्या का शुभचरित्र २५ ब्रह्मचर्य और शुभगति हुई। बलदेवजी ने वहीं पर शल्य के मरने का संवाद पाया २६ शत्रुओं के तपानेवाले बलदेवजी ने वहां भी ब्राह्मणों को दान देकर शल्य को मृतक सुना २७ फिर बलदेवजी ने समन्तपञ्चक के द्वार से निकलकर ऋषियोंसे कुरुक्षेत्र का फल पूछा २८ हे समर्थ ! उन यादवों में श्रेष्ठ बलदेवके वचन को सुनकर, उन महात्माओं ने कुरुक्षेत्र का ठीक ठीक फल बतलाया २९ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेत्रयोविंशतितमोऽध्यायः२३॥

चौबीसवां अध्याय।

ऋषि बोले, कि हे बलदेवजी ! यह समन्तपञ्चक ब्रह्माजी की सनातन उत्तर

वेदी कही जाती है, जहां बड़े दानी देवताओं ने उत्तम यज्ञ के द्वारा पूजन किया था १ पूर्व समय में, राजर्षि श्रेष्ठ, बड़े बुद्धिमान्, तेजस्वी महात्मा कुरुने इस क्षेत्र को जोता था । इसी से इसका नाम लोक में कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध हुआ २ बलदेवजी बोले, कि हे तपोधन ऋषियो ! कुरु ने इस क्षेत्र को क्यों जोता । मैं सब वृत्तान्त सुनना चाहताहूं ३ ऋषि ने उत्तर दिया, कि पूर्वसमयमें इन्द्र ने स्वर्ग से यहां आकर उस सदैव सन्नद्ध और जोतने में प्रवृत्त चित्त राजा कुरुसे कहा, कि हे राजेन्द्र ! बड़े उपायसे आप यह क्या काम करते हैं । हे राजर्षे ! इसमें क्या करने की आपकी इच्छा है४-५ कुरु ने कहा, कि हे इन्द्र ! जो पुरुष इस क्षेत्र में शरीर त्यागेंगे, वे अपने पुण्यसे निष्पाप लोकों को जायेंगे ६ फिर इन्द्र हँसकर अपने स्वर्ग को चलेगये । इसी प्रकार वह राजर्षि दुखी हो होकर उस क्षेत्र को जोताकरता था और इन्द्र बारम्बार इसी प्रकार से पूछ पूछ, हँस कर चले जाते थे७-८ जब राजा ने उग्र तपसे पृथ्वी को जोता तब उस राजर्षि के मन की इच्छा इन्द्र ने देवताओं को बतलाई ९ देवताओं ने इन्द्र से कहा, कि हे इन्द्र ! जो बनसके, तो इस राजर्षि को वर से लुभाना योग्य है १० यदि इस लोक में मनुष्य यज्ञों से हमको न पूजकर इसी क्षेत्र में मर करके स्वर्ग पा जायेंगे, तो हमारे भाग नष्ट होंगे ११ तब इन्द्र ने आकर उस राजर्षि से कहा, कि आपको कष्ट करना योग्य नहीं है । मैं कहूं, सो कीजिये १२ हे राजन् ! जो प्राणी यहां निराहार होकर, अथवा युद्ध में अच्छी रीति से मरण पाकर शरीर त्यागेंगे उनका तिर्यक् योनिमें जन्म भले ही हुआ हो, पर वे १३ स्वर्गभागी अवश्य होंगे । इन्द्र के वचन सुनकर राजा कुरु ने उत्तर दिया, कि ऐसा ही हो। तब तो इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न चित्त हो, आज्ञा ले शीघ्रही स्वर्गको गये १४-१५ हे यादवों में श्रेष्ठ ! इस प्रकार से पूर्वसमय में यह क्षेत्र राजर्षि कुरुसे जोता गया और उसी प्रकार देवताओं तथा ब्रह्माने इन्द्रको आज्ञादी १६ इससे श्रेष्ठतर धर्म की वृद्धिका हेतु पृथ्वी पर कोई और स्थान न होगा । जो कोई मनुष्य यहां उत्तम तपस्या करेंगे १७ वे सब शरीर को त्यागकर ब्रह्मलोक को जायेंगे और जो पुण्यात्मा लोग यहां धनादिक दान करेंगे १८ उनका वह दान थोड़े ही समय में सहस्रगुना होगा और भला चाहनेवाले मनुष्य सदैव यहां निवास करेंगे १९ वे कभी यमराज के देशको न देखेंगे और जो राजा लोग यहां बड़े यज्ञों से पूजन करेंगे २० उनका निवास स्वर्ग में पृथ्वी के अन्त तक होगा।

यहां देवताओं के राजा इन्द्रने भी कुरुक्षेत्रसे सम्बन्ध रखनेवाली यह गाथा गाई है हे बलदेवजी ! इस कुरुक्षेत्र में वायु से उड़ाई हुई धूलि भी पापी मनुष्य को परम गति देती है २१–२२ हे नरोत्तम ! यहां उत्तम देवता, ब्राह्मण और नृग आदिक श्रेष्ठ राजाओं ने भी बड़े बड़े यज्ञों से पूजन करके अपने शरीर त्याग कर उत्तम गति पाई है २३ तरन्तुक, आरन्तुक, परशुरामजी के ह्रद, मचक्रक का अन्तर कुरुक्षेत्र और समन्तपञ्चक ब्रह्माजी की उत्तर वेदी कही जाती है २४ यह कल्याणरूप, धर्म की वृद्धिका कारण और सब गुणोंसे युक्त है । इस हेतुसे यहां सदैव युद्धमें मरे हुए राजा लोग पवित्र और अविनाशी गति पावेंगे २५ ब्रह्माजी समेत इन्द्रने अपने मुखसे यह वर्णन किया और ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर ने उसे अङ्गीकार किया २६ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्याने चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ।

वैशम्पायन ने कहा, कि हे जनमेजय ! बलदेवजी ने कुरुक्षेत्र को देख और दान आदि देकर वनोंसे युक्त, नाना प्रकार के सुन्दर वृक्षों से सुशोभित एक आश्रम देखा और वहां के ऋषियों से पूछा कि यह अति उत्तम किसका आश्रम है १–३ हे राजन् ! उन सब महात्माओं ने उत्तर दिया, कि इस आश्रम का मूल-समेत वृत्तान्त सुनो ४ यहां पूर्व समयमें विष्णु देवता ने उत्तम तप किया और यहीं उनके सब सनातन यज्ञ भी विधिपूर्वक पूर्ण हुए ५ इस स्थानमें कुमारी ब्रह्मचारिणी ब्राह्मणी सिद्ध हुई । वह तपसे सिद्ध, योगसे संयुक्त तपस्विनी स्वर्ग को गई ६ हे राजन् ! महात्मा शाण्डिल्य ऋषिकी पुत्री श्रीमती व्रतधारिणी, पतिव्रता और ब्रह्मचारिणी हुई ७ वह भाग्यवती देवता और ब्राह्मणोंसे पूजित स्त्रियोंके साथ, कठिन घोर तप कर स्वर्गको गई ८ फिर अजेय बलदेवजी-ऋषियोंके वचन सुनकर उस आश्रमको गये और उन ऋषियों को दण्डवत् कर हिमवान् पर्वतके पार्श्व में ९ सन्ध्याके सब कर्म करके पर्वत पर चढ़े । वे थोड़ी दूर पर्वत पर जाकर धर्म वृद्धिके हेतुरूप उत्तम तीर्थको, सरस्वती के प्रभावको और प्लक्ष झिरनेको देखकर विस्मित हुए १०–११ वहांसे चलने पर कार-पवन नामका अत्यन्त उत्तम तीर्थ मिला । महाबली बलदेवजीने वहां भी दान दे १२ पवित्र, शीतल, निर्मल और धर्म की वृद्धिके कारणरूप जल में स्नान

कर देवता और पितरोंको अच्छी रीतिसे तृप्त किया १३ फिर वे यती और ब्राह्मणों समेत वहां एक रात्रि ठहरकर मित्रावरुणके पवित्र आश्रमको गये १४ कारपवनसे वे यमुना देशको गये जहां पूर्व समयमें इन्द्र, अग्नि और अर्यमा ने परम प्रीति पाई थी १५ उस तीर्थमें स्नानकर धर्मात्मा बलदेवजी परम प्रसन्न हुए। ऋषि और सिद्धों के साथ बैठकर उन्होंने उज्ज्वल कथाएं सुनीं। उन लोगोंके बैठनेपर नारद ऋषि भी १६–१७ उस स्थान पर आये। हे राजन्! जटाजूट धारी, स्वर्णमय वस्त्रधारी, महातपस्वी १८ स्वर्णदण्डधारी हाथमें कमण्डलु लिये, नृत्यगान में चतुर, देवता और ब्राह्मणों के पूजित, सदैव कलहप्रिय नारदजी चित्तरोचक शब्दवाली कच्छपी वीणाको लेकर १९–२० उस देश को गये जहांपर बलदेवजी थे। उन्होंने अभ्युत्थानपूर्वक सावधानव्रत देवर्षि नारदजीका सुन्दर रीतिसे पूजनकर कौरवोंका वृत्तान्त पूछा। तब सर्वधर्मज्ञ नारदजी ने कौरवों के विनाश का वर्णन किया। बलदेवजीने खिन्न होकर नारदजीसे कहा, कि २१–२३ जो राजा लोग वहां थे, उन सब क्षत्रियों का समूह कैसा है। हे तपोधन! मैंने पहले कुछ सुना तो है; परन्तु अब ब्यौरेसमेत सब वृत्तान्त आपसे सुनना चाहता हूं २४ नारदजी बोले, कि भीष्मजी तो प्रथम ही मारे गये; उसी प्रकार द्रोणाचार्य और जयद्रथ मारे गये २५ भूरिश्रवा और पराक्रमी राजा मद्र मारे गये। इनके सिवा और बहुतसे बलवान् लोग युद्धों में मुख न फेरनेवाले राजा और राजकुमार कौरवोंकी विजयके निमित्त मारे गये २६–२७ वहां अब दुर्योधनकी सेना में कृपाचार्य, कृतवर्मा और पराक्रमी अश्वत्थामा ये ही तीन युद्ध दुर्मद वीर बचे हैं। हे बलदेवजी! वे तीनों भी डर कर दशों दिशाओं में भागे २८–२९ शल्यके मरने और कृपाचार्यआदिक तीनों बचे हुए शूरवीरोंके भागजाने पर अत्यन्त दुःखी दुर्योधन ब्यासजीके द्वैपायन ह्रद में घुस गया ३० वहां श्रीकृष्णजी समेत पाण्डवोंने जलमें शयन करनेवाले दुर्योधन को उग्र वचनोंसे पीड़ित किया ३१ तब वह वीर चारों ओर के दुर्वचनों से व्यथित हो, उस ह्रद से गदा लेकर निकला ३२ वह भीमसेन से सम्मुख लड़नेको गया है। अब उन दोनोंका महाभयानक युद्ध होगा ३३ हे माधवजी! यदि आपको उस युद्धके देखनेका उत्साह हो, तो शीघ्र जाइये, देर न कीजिये। आप अपने दोनों शिष्योंके घोर युद्ध को देखिये ३४ नारदजी के वचन सुन साथ के उत्तम ब्राह्मणोंको अच्छी रीतिसे पूजकर बलदेवजीने

बिदाकिया ३५ और बड़े प्रसन्नचित्त से साथियोंको आज्ञा दी, कि तुम द्वारका को जाओ । पर्वतों में महाश्रेष्ठ प्लक्ष नामके शुभ झरनेसे उतरकर ३६ और तीर्थ का फल सुनकर ब्राह्मणों से कहा, कि ३७ सरस्वतीपर निवास करने के सिवा कहीं कोई उत्तम गुण नहीं है । सब मनुष्य सरस्वती को पाकर स्वर्गको गये । वे सदैव सरस्वती नदीका स्मरण करेंगे ३८ सब नदियों में सरस्वती नदी बड़े धर्मका कारण है । सरस्वती सदैव लोकका भला करनेवाली है । मनुष्य सरस्वती को पाकर सदैव इस लोक और परलोक में पाप नहीं शोचते हैं ३९ फिर बलदेवजी प्रीतिसे बारम्बार सरस्वती को देखकर सुन्दर घोड़ों से जुते हुए उज्ज्वल रथपर सवार हुए ४० शिष्यों का युद्ध देखने की अभिलाषासे बलदेवजी उस शीघ्रगामी रथकी सवारी से उनके सम्मुख जा पहुँचे ४१ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि पञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ।

वैशम्पायन ने कहा, कि हे जनमेजय ! कह आये हैं, कि दुखी राजा धृतराष्ट्र ने पूछा, कि हे सञ्जय ! मेरा पुत्र गदायुद्ध होनेपर बलदेवजी को सम्मुख देख युद्धमें कैसे प्रवृत्त हुआ और किस प्रकारसे युद्ध हुआ । सञ्जय बोले, कि आपका युद्धाभिलाषी पुत्र दुर्योधन बलदेवजी को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ १–३ और हे भरतवंशिन् ! राजा युधिष्ठिरने बलदेवजी को देख कर बड़े सत्कार से ४ उनको उत्तम आसन दिया और उनका कुशल मङ्गल पूछा । तब बलदेवजी ने युधिष्ठिर से बड़ा मधुर धर्म युक्त और शूरोंका हितकारी वचन कहा, कि ५ हे राजश्रेष्ठ ! मैंने ऋषियों से सुना है, कि कुरुक्षेत्र धर्मकी वृद्धिका कारणरूप, अति पवित्र, स्वर्ग दाता और देवता, ऋषि तथा महात्मा ब्राह्मणों से सेवित है ६–७ वहां युद्ध करनेवाले जो मनुष्य अपना शरीर त्यागेंगे उनका निवास स्वर्ग में इन्द्रके साथ अवश्य होगा ८ हे राजन् ! इस से शीघ्र ही यहां से समन्तपञ्चक को चलें । वह देवलोक में ब्रह्माजी की उत्तरवेदी प्रसिद्ध है । उस अत्यन्त पवित्र, तीनों लोकोंके सनातन तीर्थ पर युद्ध में मृत्यु पाने से निश्चय स्वर्ग होगा ९–१० तब कुन्ती के पुत्र, प्रभु युधिष्ठिर 'बहुत अच्छा' कहकर समन्तपञ्चक के सम्मुख गये ११ इसके पीछे तेजस्वी राजा दुर्योधन क्रोधसे बड़ी गदा लिये हुए पाण्डवों के साथ पदाती ही

चला १२ अन्तरिक्षचारी देवताओं ने गदा और कवचधारी दुर्योधन को देख धन्य धन्य करके बड़ी प्रशंसा की १३ और वायुके साथ चलनेवाले सिद्ध, चारण भी उसको देखकर प्रसन्न हुए। आपका पुत्र कौरवराज दुर्योधन पाण्डवों से घिरा हुआ १४ मतवाले गजराजकीसी चालसे चला। फिर शङ्ख, भेरियोंके बड़े शब्द १५ और शूरोंके सिंहनादोंसे सब दिशाएं पूर्ण हुईं। थोड़े ही समय में वे नरोत्तम कुरुक्षेत्रमें पहुँचे १६ वहां जिसप्रकार आपके पुत्रने बतलाया; उसी प्रकार पश्चिम ओरका देश चारों ओर सब दिशाओं से युक्त परिधिरूप हुआ १७ वह सरस्वती के दक्षिणी ओरसे दूसरा उत्तम तीर्थ है। वहां हरी धरती में युद्ध करना स्वीकार किया गया १८ इसके पीछे कवचधारी भीमसेन ने बड़ी कोटिवाली गदा लेकर गरुड़के समान रूप धारण किया १६ युद्धमें शिरस्त्राण और सुवर्णके कवच को पहिने हुए आपका पुत्र सुमेरु पर्वत के समान शोभित हुआ २० कवचधारी भीमसेन और दुर्योधन—दोनों वीर युद्धमें क्रोधयुक्त हाथियोंके समान दिखाई पड़े २१ महाराज! युद्धमण्डल में दोनों नरोत्तम भाई उदयमान सूर्य और चन्द्रमाके समान शोभित हुए २२ हे राजन्! परस्पर मारने के अभिलाषी, नेत्रोंसे भस्म करनेवाले, बड़े हाथियों के समान, क्रोधमें पूर्ण होकर दोनों ने परस्पर देखा २३ तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त दुर्योधन गदा लेकर होठों को चबाता, क्रोधसे लाल नेत्र किये श्वास लेता हुआ गदा लेकर नियत हुआ २४ फिर पराक्रमी दुर्योधन ने भीमसेनको देखकर बुलाया जैसे कि हाथी को हाथी २५ बुलाता है। पराक्रमी भीमसेनने भी राजा को ऐसे बुलाया जैसे कि वनमें सिंह को सिंह बुलाता है २६ गदाधारी दुर्योधन और भीमसेन युद्ध में ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि दो शिखरधारी पर्वत होते हैं २७ वह दोनों अत्यन्त क्रोधयुक्त, भयानक पराक्रमी, गदायुद्धमें बड़े कुशल और बलदेवजी के शिष्य थे २८ यमराज और इन्द्रके समान कर्म करनेवाले दोनों महाबली वरुणके समान कर्मकर्त्ता थे २६ महाराज! वे दोनों वीर वासुदेवजी, परशुरामजी, कुबेर देवता, मधुकैटभ दैत्य ३० सुन्द, उपसुन्द, राम, रावण, बालि और सुग्रीवके समान कर्म करनेवाले थे ३१ वैसे ही वे शत्रुओं के तपानेवाले कालमृत्युके समान और मतवाले हाथियों के समान परस्पर सम्मुख दौड़नेवाले थे ३२ वे दोनों शरद् ऋतु में, हथिनीके मिलापसे मत्त, अहंकारी, विजयाभिलाषी हाथियोंके समान ३३ परस्पर क्रोधयुक्त और सर्पों के समान

क्रोधसे प्रकाशित विष उगलनेवाले थे ३४ पराक्रमों से भरे सिंहों के समान वे अजेय और गदायुद्ध में कुशल थे ३५ वे नख और दंष्ट्रा रूप शस्त्रों वाले व्याघ्रों के समान, दुःखदायी उत्सववाले, सृष्टिके नाश में क्रोधभरे दो समुद्रों के तुल्य थे ३६ पूर्व और पश्चिम की वायु की टक्कर से दो बादल जैसे दौड़ते हैं वैसेही वे दोनों महारथी भी क्रोधसंयुक्त होकर दौड़नेवाले थे ३७ वर्षाऋतु में घोर गर्जना करनेवाले, किरणों से युक्त बादलों के समान तेजस्वी और पराक्रमी वे महासाहसी थे ३८ उदय हुए कालरूपी सूर्यों के समान, अत्यन्त क्रोधी व्याघ्रों के समान, गर्जनेवाले दो बादलों के समान, केसरी सिंहों के समान, महाक्रोधी हाथियों के समान और ज्वलित अग्नि के समान दोनों महाबाहु आनन्दित हुए ३९–४० क्रोधसे चलायमान, दोनों होठ चाबनेवाले दोनों महात्मा, शिखरधारी पर्वतोंके समान दृष्टिगोचर हुए वह दोनों नरोत्तम गदाएं लेकर सम्मुख हुए ४१–४२ दुर्योधन और भीमसेन हींसनेवाले घोड़े, चिग्घाड़नेवाले हाथी और डकारनेवाले बैलोंके समान दिखाई दिये ४३ पराक्रम से मतवाले दोनों नरोत्तम दैत्यों के समान शोभित हुए हे राजन् ! फिर दुर्योधन ने महात्मा श्रीकृष्ण, बड़े पराक्रमी बलदेवजी और भाइयों समेत नियत युधिष्ठिर से बड़े अहङ्कारियों के समान कहा, कि ४४–४५ जो बड़े साहसी पाञ्चाल, सृञ्जय और कैकय देशियों से अपने को बड़ा अहंकारी मानता था, भीमसेन से मेरा युद्ध निश्चय हुआ ४६ हे युधिष्ठिर ! तुम इन उत्तम राजाओं समेत मेरे और भीमसेन के युद्ध को देखो; तब युधिष्ठिरने दुर्योधन का वचन सुनकर वैसा ही किया ४७ वह सब राजमण्डल वहां बैठा हुआ ऐसा शोभित हुआ, जैसे कि आकाशमें सूर्यमण्डल ४८ महाराज ! उन सबके बीच में महाबाहु बलदेवजी भी बैठ गये ४९ उज्ज्वल वर्ण, नीलाम्बरधारी बलदेवजी उन राजाओं में ऐसे शोभित हुए जैसे कि रात्रि में नक्षत्रों से संयुक्त पूर्ण चन्द्रमा ५० महाराज ! दोनों ने हाथमें गदा ले कठिनतासे सहने योग्य परस्पर उग्र वचनोंसे घायल किया ५१ वे वहां परस्पर अयोग्य और अप्रिय वचन कहकर युद्ध में इन्द्र और वृत्रासुर के समान नियत हुए ५२ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिगदायुद्धे षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन ने कहा, कि हे जनमेजय! पहले वार्त्तालाप का ही कठिन युद्ध हुआ। यहां दुःखित होकर राजा धृतराष्ट्र ने कहा, कि १ निश्चय ही इस मनुष्य शरीर को धिक्कार है, कि जिसकी ऐसी दशा है। हे निष्पाप! ग्यारह अक्षौहिणी का स्वामी मेरा पुत्र २ सब राजाओं पर शासन करके, इस पृथ्वीको भोगकर गदालिये हुए बड़ी तीव्रता से युद्ध में पैदल चला। देखो, जगत् का स्वामी मेरा पुत्र अनाथ के समान गदा उठाकर चला; इसमें प्रारब्ध के सिवा दूसरी बात क्या है ३-४ दुःखित और पीड़ित हो राजा धृतराष्ट्र यह कहकर चुप हो गये कि, हे सञ्जय! मेरे पुत्रने बड़े दुःख पाये ५ सञ्जय बोले, कि प्रसन्नचित्त बैल के समान गर्जकर दुर्योधन ने पार्थ भीमसेन को युद्ध के निमित्त बुलाया। हे महात्मन्! कौरवराज दुर्योधन की ओर से भीमसेन के बुलाये जाने पर नाना प्रकार के घोर उत्पात हुए ६-७ परस्पर आघातित शब्दों समेत वायु चली; धूलि की वर्षा हुई; सब दिशाएं अन्धकार से पूर्ण हुईं ८ शरीर में रोमाञ्च करनेवाली वायुओं के टकराने से बड़े शब्द हुए। पृथ्वी पर कड़ककर सैकड़ों उल्काएं आकाश से गिरीं ९ हे राजन्! पर्व के विनाही ग्रहण पड़ा और सब वृक्षों समेत पृथ्वी कँपी १० नीचे से कंकड़-पत्थर खींचनेवाली बड़ी घोर, प्रकाशित वायु चली और पर्वतों के शिखर टूटकर पृथ्वी पर गिरे ११ अनेक रूपों वाले मृग दशों दिशाओं को दौड़े और शृगालभी भयानक शब्द करने लगे १२ महाघोर निर्घात शरीर के रोमांच करनेवाले हुए। हे राजन्! ज्वलितरूप दिशाओं में अशुभ सूचक मृग महाघोर अशुभ प्रकट करने लगे १३ उस समय कूपों के जल अत्यन्त बढ़े और आकाशवाणी भी सुनीगई १४ भीमसेन ने इसप्रकार के उत्पात देखकर अपने बड़े भाई धर्मराज युधिष्ठिरसे कहा, कि १५ यह अभागा दुर्योधन युद्धमें मुझे जीतने को समर्थ नहींहै। अब मैं अपने बहुत कालके सञ्चित क्रोधको १६ दुर्योधनपर ऐसे छोड़ूंगा जैसे कि खाण्डव वनमें अग्निको छोड़ा था। हे पाण्डव! अब मैं तुम्हारे हृदयके बड़े शूल को उखाड़ूंगा १७ मैं गदासे कौरव कुलके महानीच इस पापीको मारकर कीर्तिरूप माला आपको पहनाऊंगा १८ अब मैं इस युद्धमें इसे मारकर इसके शरीरके गदासे टुकड़े टुकड़े करूंगा १९ यह अब दुबारा हस्तिनापुर में प्रवेश न करेगा। हे भरतर्षभ! अब

में इन सब दुःखोंका अन्त पाऊंगाः—शयनपर सर्पका छोड़ना, भोजनमें विष देना, प्रमाण कोटी में गिराना, लाक्षागृह में जलाना, सभा में हास्य करना, सर्वस्व हरण २०-२१ और एक वर्षका अज्ञातवास । मैं इन सब दुःखरूपी ऋणोंसे एक ही दिनमें इसको मारकर उऋण होजाऊंगा । हे भरतर्षभ ! अब दुर्बुद्धि, मलिन अन्तःकरणवाले दुर्योधन की आयु पूर्ण हुई २२-२३ माता-पिताका दर्शन भी समाप्त हुआ । अब इसका सुख २४ और स्त्रियोंका दर्शन भी सम्पूर्ण हुआ । शन्तनुके कुलको कलङ्कित करनेवाला दुर्योधन लक्ष्मी, राज्य और प्राणोंको त्यागकर पृथ्वीपर सोवेगा । अब राजा धृतराष्ट्र अपने पुत्रको मरा हुआ सुनकर २५-२६ अपने उस दुष्टकर्मकी याद करेगा जो शकुनीकी बुद्धिसे हुआ । हे राजाओंमें श्रेष्ठ ! पराक्रमी भीमसेन ऐसी बातें कहकर गदाको हाथमें ले २७ युद्धके निमित्त दुर्योधनको बुलाता हुआ ऐसे सम्मुख हुआ जैसे कि इन्द्रने वृत्रासुर को बुलाया था । शिखरधारी कैलासके समान गदा उठाने वाले दुर्योधन को देखकर २८ क्रोधयुक्त भीमसेनने कहा, कि हे दुर्योधन ! राजा धृतराष्ट्र समेत तुम अपने उन पापकर्मों का स्मरण करो जो वारणावत नगर में हुए और सभामें रजस्वला द्रौपदीको दुःख दिया २९-३० और तैंने तथा शकुनीने राजा युधिष्ठिरको द्यूतमें ठगा । हम सबने महावनोंमें तेरे कारण बड़े बड़े दुःख पाये ३१ और योन्यन्तरके समान होकर हम लोगोंने जो दुःख विराट नगरमें पाया, अब मैं उन सब दुःखों के कारणरूप तुझे मारता हूं । हे दुर्बुद्धे ! तुझे प्रारब्ध से देखा है और तेरे ही कारण शिखण्डी के हाथसे मारे हुए रथियोंमें श्रेष्ठ, श्रीगंगाजी के प्रतापी पुत्र, कौरवों के पितामह ये भीष्मजी शरशय्यापर सोते हैं ३२-३३ द्रोणाचार्य, कर्ण और प्रतापी शल्य मारा गया । शत्रुताकी अग्नि उपजानेवाला शकुनी मारा गया ३४ द्रौपदीको क्लेश देने वाला पापी प्रातिकामी मारा गया; सिंहके समान युद्ध करनेवाले तेरे सब शूर भाई मारे गये ३५ तेरे ही कारण से ये और अन्य बहुतसे राजा मारे गये । अब मैं निस्सन्देह तुझको गदासे मारूंगा ३६ हे राजेन्द्र ! सत्यपराक्रमी और निर्भय दुर्योधन इस प्रकार बड़े उच्च स्वरसे बातें करनेवाले भीमसेनसे बोला, कि ३७ हे कुलमें महानीच भीमसेन ! बहुत बातोंसे क्या प्रयोजन है, तुम युद्ध करो । अब मैं युद्धके तेरे उत्साहको भङ्ग करूंगा ३८ हे नीच ! मैं तुझ सरीखे किसी मनुष्यकी बातों से नहीं डरता । मैं बहुत कालसे चाहता था, कि तेरे

साथ मेरा गदायुद्ध हो, सो प्रारब्धसे ही देवताओं द्वारा प्राप्त हुआ है ३९-४० हे दुर्बुद्धे! बहुत बातें और अपनी प्रशंसा करने से क्या लाभ है? वचनको कर्म के द्वारा प्राप्त करना ही योग्य है। विलम्ब मत करो ४१ उसके वचनको सुन कर वहां एकत्रित राजा लोगों और सोमकों ने उसकी प्रशंसा की ४२ फिर रोम रोम से प्रसन्न, सबसे स्तूयमान दुर्योधन युद्धके लिये बुद्धिसे धैर्यमें प्रवृत्त हुआ ४३ राजाओंने क्रोधयुक्त, मतवाले हाथीके समान दुर्योधन को तलके शब्दों से प्रसन्न किया ४४ पाण्डव भीमसेन अपनी गदा लेकर फुर्तीसे साहसी दुर्योधन के सम्मुख गया ४५ वहां जाते ही हाथी चिग्घाड़े, बारम्बार घोड़े हींसे और विजयाभिलाषी पाण्डवों के शस्त्र प्रकाशित हुए ४६ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि सप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय।

संजय ने कहा, कि बड़ा साहसी दुर्योधन तीव्रता से गर्जते और उस प्रकार से आते हुए भीमसेन को देखकर सम्मुख गया १ तब सींगोंवाले बैलों के समान दोनों परस्पर दौड़े और गदाके प्रहारोंके बड़े शब्द हुए २ उन दोनों विजयाभिलाषियों का महाकठोर और रोमहर्षण करनेवाला ऐसा युद्ध हुआ जैसा कि विजयाभिलाषी इन्द्र और प्रह्लादका हुआ था ३ रुधिरसे लथपथ, हाथों में गदा लिये, बड़े साहसी, दोनों फूले हुए ढाकके समान दिखाई पड़े ४ इस प्रकार भयानक, घोर युद्ध होने पर आकाश ऐसा दर्शनीय हुआ, जैसे कि पटबीजनों के समूहों से होता है ५ उस कठिनतर संकुल युद्धमें शत्रुओं को जीतनेवाले वे दोनों शूर भी थक गये ६ उन दोनोंने एक मुहूर्त भर समाश्वासित हो, शुभ गदाएं पकड़ कर विश्राम किया ७ उन महापराक्रमी, विश्राम करने वाले नरोत्तमोंको, हथिनी के लिये मतवाले, हाथियोंके समान ८ अच्छी रीति से देखकर देवता, मनुष्य और गन्धर्वों को बड़ा आश्चर्य हुआ ९ गदाधारी दुर्योधन और भीमसेन को देखकर विजय होनेमें सब जीवोंको सन्देह हुआ १० फिर बलवानों में श्रेष्ठ, परस्पर अन्तर चाहनेवाले दोनों भाई भिड़कर प्रत्यन्तर के समान घूमने लगे ११ हे राजन्! देखनेवालों ने उस रौद्री भारी, इन्द्रवज्रके समान उठाई हुई गदाको यमराज के दण्डके समान देखा १२ युद्ध में भीमसेन के हाथकी गदाका एक मुहूर्त बड़ा कठिन और घोर शब्द हुआ १३

दुर्योधन उस कठिन, तीव्रता रखनेवाली गदा के मारनेवाले, अपने शत्रु, भीमसेन को देखकर आश्चर्ययुक्त हुआ १४ हे भरतवंशिन् ! उस समय भीमसेन नाना प्रकार के मार्ग और मण्डलों में घूमता हुआ शोभित हुआ १५ परस्पर अपनी अपनी रक्षा में सावधान उन दोनोंने अन्योन्य के सम्मुख होकर बारम्बार ऐसे प्रहार किये जैसे कि खाने की वस्तु के लिये दो बिलार करते हैं १६ भीमसेन ऐसे बहुतसे मार्गों को घूमा । फिर सम्मुख, तिर्यक्, विचित्रमण्डल १७ अपूर्व अस्त्रान्तर, बहुत प्रकारके दाहिने बायें प्रहारस्थलोंका छोड़ना, बचाना, दहिने-बायें करना १८ तीव्रता से सम्मुख जाना, गिराना, अचल होना, शत्रु के उठने पर फिर युद्ध करना, शत्रुके मारनेको चारों ओर जाना, शत्रु के हट जाने का स्थान रोकना, प्रहारसे बचनेके लिये झुककर हटजाना, मध्यगति१६ समीप जाकर शस्त्र मारना और चारों ओर को घूमकर पीछेकी ओर हो हाथसे शत्रुको घायल करना; इन मार्गों में घूमते हुए गदायुद्ध में कुशल दोनों ने अनेक प्रकार से परस्पर घायल किया २० फिर धोखा देकर वे दोनों भ्रमण करने लगे और क्रीड़ा सी करते हुए मण्डलों को घूमे २१ युद्ध में चारों ओरसे युद्धकी क्रीड़ा दिखलाकर उन दोनों शत्रुसन्तापियों ने गदाओं से अकस्मात ऐसे घायल किया २२ जैसे कि दांतों से दो हाथी परस्पर घायल करते हैं । महाराज ! वे दोनों रुधिर से लथपथ होकर शोभित हुए २३ दिवस के अन्त में वह घोर युद्ध सबके समक्ष ऐसा हुआ जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्रका हुआ था २४ फिर वे दोनों हाथोंमें गदा लेकर मण्डलों में प्रवृत्त हुए। उस समय दुर्योधन दहिने मण्डल में वर्तमान हुआ २५ और भीमसेन बायें मण्डल में। महाराज ! इस प्रकार से उस युद्ध के मुखपर भीमसेनको घूमने में २६ दुर्योधन ने कुक्षिमें घायल किया । हे भरतर्षभ ! फिर आपके पुत्रसे घायल २७ और उस प्रहारका कुछ विचार न कर भीमसेनने भारी गदाको घुमाया । महाराज ! तब लोगोंने इन्द्रवज्र के समान घोर, यमराज के दण्ड के समान उठाई हुई २८ भीमसेन की गदा को देखा । आपके पुत्र ने गदा उठानेवाले भीमसेनको देखकर २६ उठाई हुई घोर गदाको ताड़ित किया । हे शत्रुसन्तापी, भरतवंशिन् ! आपके पुत्रकी गदारूप वायुकी तीव्रता से ३० कठोर शब्द होकर अग्नि उत्पन्न हुई । फिर भीमसेनने भी अपनी गदासे दुर्योधनकी गदाको ताड़ित किया ३१ उस समय वे दोनों समान बलवाले नाना प्रकार के मार्ग और मण्डलों में घूमते हुए

अत्यन्त शोभित हुए फिर पूर्णवेगसे, भीमसेनसे ताड़ित बड़ी गदाने ३२ धूम समेत अग्नि प्रकट करके बड़ी ज्वाला प्रकाशित की। तब भीमसेन से कँपाई गई अपनी गदाको देखकर ३३ दुर्योधन लोहमयी बड़ी भारी गदाको घुमाता हुआ शोभित हुआ। उस महात्मा की गदारूपी वायु की तीव्रता को देखकर ३४ सोमकों समेत सब पाण्डवों को भय हुआ। युद्ध में चारों ओर से युद्धक्रीड़ा दिखलाते हुए ३५ वे शत्रुसन्तापी गदाओं से अकस्मात् परस्पर घात करने लगे। महाराज ! जैसे कि दो हाथी डाढ़ों से युद्ध करते हैं, वैसे ही वे दोनों परस्पर ३६ रुधिरसे लिप्त होकर शोभित हुए। इस प्रकार दिन डूबने पर वह घोररूप और महाकठिन युद्ध ३७ इन्द्र और वृत्रासुर की भांति हुआ। आपका पुत्र अपने सम्मुख भीमसेन को देखकर ३८ अपूर्वतर मार्गों को घूमता हुआ कुन्ती के पुत्रके सम्मुख गया; तब क्रोधयुक्त भीमसेनने दुर्योधनकी स्वर्णजटित और रत्नों से अलंकृत गदाको ताड़ित किया। उस समय उनके संघट्टन से उत्पन्न शब्द चिनगारियों समेत ३९-४० ऐसा प्रकट हुआ; जैसे कि छोड़े हुए दो वज्रों के संघट्टन से होता है। महाराज ! वहां भीमसेनकी गिरती हुई ४१ वेगवती गदासे पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान हुई। दुर्योधन ने भी युद्धमें ताड़ित उस गदाको ऐसे नहीं सहा ४२ जैसे कि क्रोधयुक्त मतवाला हाथी सम्मुख आने वाले हाथी को नहीं सहता है। निश्चय करनेवाले राजा ने बायें मण्डल में घूमकर ४३ भीमसेन को अपनी भयानक वेगवाली गदासे मस्तकपर घायल किया। महाराज ! आपके पुत्रकी गदासे घायल भीमसेन ४४ कम्पायमान न हुआ। वह आश्चर्यसा हुआ। हे राजन् ! सब सेना के लोगों ने उसके अपूर्व धैर्य की बड़ी प्रशंसा की ४५ जो गदासे मस्तक पर घायल होकर भी चरणोंसे एक पद भर भी कम्पायमान नहीं हुआ। भयानक पराक्रमी भीमसेनने बहुत प्रकाशित स्वर्णालंकृत गदा ४६ दुर्योधन के निमित्त छोड़ी। भय की व्याकुलतासे रहित बलवान् दुर्योधनने अपने हस्तलाघवसे उस प्रहार को निष्फल किया ४७ यह भी बड़ा आश्चर्यसा हुआ। हे राजन् ! फिर भीमसेन से चलाई हुई, मेघ के समान शब्दायमान गदा पृथ्वी को कंपित करके कौशिक मार्गों में नियत होकर बारम्बार उछली ४८-४९ गदाके गिरने और भीमसेनको ठगा हुआ जानकर अत्यन्त क्रोधयुक्त दुर्योधन ने उस प्रकार गदासे भीमसेन को छलकर छातीपर घायल किया। तब आपके पुत्रकी गदा से घायल और

अचेत भीमसेन ने ५०–५१ करने योग्य कर्म नहीं जाना। हे राजन् ! इस प्रकार युद्ध होनेपर सोमक और पाण्डव ५२ अत्यन्त हतसंकल्प होकर चित्तसे दुःखी हुए। फिर उस प्रहार से क्रोधयुक्त ५३ हाथी के समान भीमसेन, हाथी के ही समान आपके पुत्र के सम्मुख गया। भीमसेन बड़ी फुर्ती से आपके पुत्रके सम्मुख ऐसे गया, जैसे कि सिंह बड़ी तीव्रता से जंगली हाथीके सम्मुख जाताहै। गदा छोड़ने में सावधान भीमसेनने राजाके पास जाकर ५४–५५ उसे लक्ष्य बनाकर, गदा घुमाई और उस गदा से भीमसेन ने दुर्योधन को कुक्षिस्थान में घायल किया ५६ उस प्रहार से व्याकुल दुर्योधन जंघाके बल पृथ्वीपर गिर पड़ा। कौरव कुल में श्रेष्ठ दुर्योधन के जंघा के बल से पृथ्वीपर गिरनेपर ५७ सृञ्जयों के शब्द हुए। हे राजन् ! आपका जगत्पति पुत्र उन सृञ्जयों की गर्जनाओं को सुनकर ५८ अशान्तिसे क्रोधित बड़े सर्पके समान, श्वासाले, नेत्रों से भस्म करता हुआ उठा ५९ भीमसेनको देखकर गदा हाथमें ले वह उसके सम्मुख गया ६० युद्धमें भीमसेन के शिरको मर्दने की इच्छावाले, बड़े साहसी और भयानक पराक्रमी राजा दुर्योधनने महात्मा भीमसेनको शंख स्थान में घायल किया। परन्तु वह पर्वताकार कँपा भी नहीं। हे राजन् ! युद्धमें गदा से घायल और रुधिर से लिप्त भीमसेन मद बहानेवाले हाथीके समान फिर शोभित हुआ ६१–६२ फिर भीमसेनने वीरोंकी मारनेवाली, वज्र और बिजली के समान शब्दायमान लोहे की गदा पकड़कर बड़े बल और पराक्रमसे शत्रु को घायल किया ६३ भीमसेन के हाथसे घायल, अत्यन्त कम्पायमान, शरीर में जोड़वाला आपका पुत्र ऐसे गिर पड़ा जैसे कि वनमें अच्छा पुष्पित शाल का वृक्ष वायुसे ताड़ित हो घूमकर गिरताहै ६४ आपके पुत्रको पृथ्वी पर गिरा हुआ देखकर सब पाण्डव लोग गर्जे और प्रसन्न हुए। फिर आपका पुत्र सचेत होकर ऐसे उछला, जैसे कि तड़ागसे हाथी उछलता है ६५ तब सदैव क्रोधयुक्त, शिक्षा पाये हुए के समान चारों ओर को घूमकर महारथी राजाने आगे नियत पाण्डव को घायल किया। उस ने भी व्याकुल हो पृथ्वी को स्पर्श किया ६६ वह कौरव बलसे भीमसेन को पृथ्वी पर गिराकर सिंहनाद करके गर्जा और वज्र के समान बड़ी तेजस्वी गदा के प्रहारसे उसने उसके कवच को तोड़ा ६७ तब आकाश से गर्जनेवाले देवता और अप्सराओं के बड़े शब्द हुए और देवताओं ने उत्तम पुष्पों की वर्षा भी की ६८ फिर पृथ्वी पर पड़े हुए नरोत्तम

को देखकर प्रतिपक्षियों में बड़ा भय उत्पन्न हुआ । कौरव को बलसे पूर्ण और भीमसेन के अत्यन्त दृढ़ कवचको टूटा हुआ देखकर सब अत्यन्त भयभीत हुए ६९ इसके पीछे भीमसेन एक मुहूर्त में ही सचेत हो, रुधिर से भरे हुए अपने मुखको साफ़ करके धैर्य धरकर बड़े बलसे सम्हलकर नियत हुआ ७० ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिभीमसेनदुर्योधनसंग्रामे अष्टविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ।

संजय ने कहा, इसके पीछे भीमसेन और दुर्योधनके युद्ध को देखकर अर्जुन यशस्वी वासुदेवजी से बोले, कि १ हे जनार्दनजी ! इन दोनों वीरोंके युद्धमें आपके विचारसे कौन विशेष है अथवा किसमें कौनसा अधिक गुणहै २ वासुदेवजी ने कहा, कि दोनोंकी शिक्षा बराबर है और भीमसेन अधिक बलवान् है परन्तु यह दुर्योधन भीमसेनसे अधिक अभ्यासी और उपाय करनेवाला है ३ भीमसेन धर्मसे युद्ध करके इसको जीत नहीं सकता और जो अन्यायसे लड़ेगा तो अवश्य दुर्योधन को जीतेगा ४ और हमने यह भी सुना है, कि असुरों को देवताओं ने छलसे ही जीता था इन्द्रने अवश्य ही विरोचनको छल से ही जीता था ५ और छल से ही इन्द्रने वृत्रासुर को भी विजय किया । इस कारण भीमसेन मायारूप पराक्रममें नियत होकर लड़े ६ हे अर्जुन ! भीमसेन ने द्यूतके समय दुर्योधनसे प्रतिज्ञा भी की थी, कि युद्धमें तेरी जङ्घाओं को गदासे तोड़ूंगा ७ सो यह शत्रुसन्तापी भीमसेन उस प्रतिज्ञा को भी पूरा करे । छल से ही छली राजा को मारे ८ यदि यह बलमें नियत होकर न्यायपूर्वक प्रहार करेगा, तो राजा युधिष्ठिर अवश्य आपत्ति में फँसेंगे ९ हे पाण्डव ! धर्मराजके अपराधसे हमको फिर भय प्राप्त हुआ १० बहुत बड़े कर्म करके और भीष्मादिक बड़े बड़े कौरवों को मारकर विजयपूर्वक अत्यन्त उत्तम यश और शत्रुताका बदला पाया ११ इस प्रकार प्राप्त होनेवाली विजयको फिर सन्देहसे युक्त कर दिया । हे अर्जुन ! धर्मराजकी यह बड़ी निर्बुद्धिता है १२ जो विजय में इस प्रकार एकके ही साथ घोर युद्ध की प्रतिज्ञा की । दुर्योधन अभ्यासी वीर और एकसे चित्तवाला है १३ शुक्रजीका यह प्राचीन और मुख्य प्रयोजनसे युक्त वचन भी सुना जाता है, कि १४ लौटकर आनेवाले, पराजित, जीवनकी इच्छा करनेवाले और एकाकीपनेमें बँधे हुए मनुष्योंसे भय करना

चाहिये क्योंकि वे एकसे चित्तवाले हैं। हे अर्जुन! अकस्मात् चढ़ाई करनेवाले, जीवन से निराश शूरवीरों के आगे इन्द्रको भी नियत होना सम्भव नहीं है। इस पराजित, मृतक सेनावाले, ह्रदमें वर्तमान, वनके चाहनेवाले और राज्य पाने से निराश दुर्योधनको १५-१६ कौन बुद्धिमान् फिर द्वन्द्वयुद्धमें बुलावेगा? दुर्योधन हमारे जीतें हुए राज्यको हरण नहीं कर सकता १७-१८ क्योंकि निश्चय करनेवाला दुर्योधन भीमसेनको मारनेकी इच्छा रखकर तेरह वर्षसे गदाके द्वारा ऊंची, नीची और तिरछी गति करता है १९ यदि महाबाहु भीमसेन इस प्रकार इसको अन्यायसे न मारेगा, तो यह दुर्योधन तुम्हारा राजा होगा २० तब अर्जुनने केशवजीका वचन सुन, भीमसेन को दिखलाकर बाईं जङ्घा ठोंकी २१ भीमसेन भी उस संकेत को समझ कर युद्ध में गदाके द्वारा यमक आदि बहुतसे विचित्र मण्डलोंमें घूमा २२ हे राजन्! फिर भीमसेन शत्रुको अचेत और मोहित करता हुआ गोमूत्रक मण्डलों में घूमा २३ गदामार्ग में सावधान आपका पुत्र भी भीमसेनको मारनेकी इच्छासे तीव्रतापूर्वक मार्गों में घूमा २४ चन्दन और अगर से युक्त घोर गदाओं को चलानेवाला, शत्रुताका अन्त चाहते हुए, युद्धमें यमराजके समान क्रोधयुक्त २५ परस्पर मारनेके अभिलाषी, दोनों बड़े वीरोंका युद्ध सर्पोंका मांस चाहनेवाले दो गरुड़ों के समान हुआ २६ वहां विचित्र मण्डलोंमें घूमनेवाले राजा दुर्योधन और भीमसेन की गदाओं के प्रहारसे अग्नि की ज्वालाएं प्रकट हुईं २७ हे राजन्! वहां बराबर प्रहार करनेवाले उन पराक्रमी शूरों का ऐसा घोर शब्द हुआ जैसे कि वायुसे वेगयुक्त दो समुद्रों का घोर शब्द होता है २८ मतवाले हाथी के समान बारम्बार प्रहार करनेवाले उन दोनों के प्रहारों और परस्पर गदाओंके रगड़ने से बड़ा शब्द हुआ २९ उस भयानक और व्याकुल युद्ध में लड़नेवाले वे दोनों शत्रुसन्तापी थक गये ३० शत्रुओंको तपानेवाले, क्रोधित दोनों वीर एक मुहूर्त सुस्ताने के लिये गदाएं पकड़कर विश्राम करने लगे ३१ हे राजेन्द्र! गदाओं के प्रहारों से परस्पर प्रहार करनेवाले दोनोंका घोर युद्ध हुआ ३२ युद्ध में चलायमान दोनों श्रेष्ठ नेत्रवाले वीर हिमालय पर्वतपर फूले हुए दो किंशुकके वृक्षों के समान परस्पर घायल हुए ३३-३४ भीमसेन के कुछ छिद्र दिखलाने पर थोड़ासा प्रसन्नचित्त दुर्योधन अकस्मात् दौड़ा ३५ तब बलवान् भीमसेनने युद्धमें दुर्योधन को समीप देखकर बड़ी

तीव्रता से उसके ऊपर गदा मारी ३६ हे राजन् ! आपका पुत्र उसे गदा चलाते देखकर उस स्थान से हट गया। इससे वह गदा निष्फल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ३७ हे कौरवोत्तम ! तब आपके पुत्रने बड़ी व्याकुलता से उस प्रहारपर विचारकर भीमसेन को गदासे घायल किया ३८ रुधिर के चलने और बड़ा प्रहार होने से उस बड़े तेजस्वी को मूर्च्छा होगई ३९ पर दुर्योधन ने उस युद्ध में भीमसेन की पीड़ा का हाल नहीं जाना। भीमसेन ने अत्यन्त पीड़ित शरीर धारण किया ४० आपके पुत्रने उसको युद्धमें नियत और प्रहार करने का इच्छुक माना। इससे फिर उस पर प्रहार नहीं किया ४१ हे राजन् ! प्रतापी भीमसेन एक मुहूर्त विश्राम करके तीव्रतासे दुर्योधन के सम्मुख दौड़ा ४२ हे भरतर्षभ ! उस क्रोधित बड़े तेजस्वी को आते हुए देखकर, उसके प्रहारको निष्फल करनेकी इच्छासे ४३ और उसको छलने की नियत से आपके पुत्रने ठहरने का विश्वास देकर उछलना चाहा ४४ परन्तु भीमसेन ने उसके मर्म को ताड़ लिया। सम्मुख जाकर सिंहके समान गर्जना करके ४५ भीमसेन ने बड़ी तीव्रता से उस कालरूप के ठगनेवाले और फिर उछलने के अभिलाषी की जंघाओं पर गदा चलाई ४६ भयकारी कर्मकर्ता भीमसेन से चलाई हुई, वज्र के समान घिसावटवाली गदाने दुर्योधन की दर्शनीय जंघाओं को तोड़ डाला ४७ हे राजन् ! भीमसेनके हाथसे टूटी जंघावाला आपका नरोत्तम पुत्र पृथ्वीपर धड़ामसे गिरपड़ा ४८ उस समय परस्पर संघट्टन करती हुई वायु चली; धूलिकी वर्षा हुई और वृक्ष, वन तथा पर्वतोंसमेत पृथ्वी कँपने लगी ४९ सब राजाओंके स्वामी और समस्त पृथ्वीके अधिपति दुर्योधन के गिरने पर बड़ी शब्दायमान, प्रकाशित और परस्पर रगड़खानेवाली वायु समेत ५० उल्काएं गिरीं और रुधिर समेत धूलिकी भी वर्षा हुई ५१ हे भरतर्षभ ! वहां दुर्योधन के गिरनेपर इन्द्रने वर्षा की। इसी प्रकार यक्ष, राक्षस और पिशाचों के भी अन्तरिक्ष में बड़े शब्द सुनाई पड़े ५२-५३ उस घोर शब्द से बहुतसे पशु पक्षियों के भी घोर शब्द सब दिशाओं में हुए और साथ के मनुष्यों समेत घोड़े, हाथी आदिक ५४ ने भी दुर्योधनके गिरने पर बड़े शब्द किये। भेरी, शङ्ख और मृदङ्गों के बड़े शब्द हुए ५५ दुर्योधनके गिरने पर पृथ्वीके भीतर भी शब्द हुए। सब दिशाएं बहुतसे चरणों और भुजाओं से तथा घोरदर्शन ५६ नाचनेवाले भयङ्कर रुण्डोंसे पूर्ण होगईं ५७ ध्वजासमेत शस्त्रधारी वीर भी कम्पायमान हुए।

हे भरतर्षभ, राजा धृतराष्ट्र ! आपके पुत्र दुर्योधन के गिरने पर तड़ाग और कूपोंने भी ऊपरको रुधिर बहाया ५८ शीघ्रगामिनी नदियां उलटी बहीं । स्त्रियां पुरुषोंके समान और पुरुष स्त्रियोंके समान होगये ५९ तब पाञ्चालों समेत सब पाण्डव उन अपूर्व उत्पातोंको देखकर चित्तसे व्याकुल हुए ६०-६१ इसी प्रकार देवता, गन्धर्व और अप्सराएं आपके पुत्रों के अपूर्व युद्धका वर्णन कर इच्छानुसार चली गईं और हे राजेन्द्र ! इसी प्रकार शुद्धवायुके साथ चलनेवाले चारण लोग भी ६२ उन दोनों नरोत्तमोंकी प्रशंसा कर अपने अपने स्थानों को गये ६३ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिदुर्योधनवधे एकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय ।

संजय ने कहा, कि इसके अनन्तर शाल वृक्षके समान ऊंचे गिराये हुए दुर्योधनको अत्यन्त प्रसन्नचित्त पाण्डवोंने देखा १ और रोम रोम से प्रसन्न सब सोमकोंने भी सिंहके हाथसे गिराये हुए मतवाले हाथीके समान दुर्योधनको देखा २ इस रीतिसे प्रतापी भीमसेन ने दुर्योधन को मारकर, उस मृतप्राय कौरवेन्द्र के पास जाकर कहा, कि ३ हे दुर्मते, अभागे ! पूर्वकाल में तुमने सभा में हमारा हास्य करके एकवस्त्रा द्रौपदी से जो "हे गौ, हे गौ" कहाथा ४ उस हास्यके फलको अब पाया । यह कहकर उसने अपने वाम पादसे उसके मुकुटको स्पर्श किया ५ शत्रुकी सेनाको पीड़ित करनेवाले, क्रोधसे आरक्त भीमसेनने राजाओंमें श्रेष्ठ दुर्योधनके शिरको पैरोंसे ठुकराया ६ और कहा, कि जो अज्ञानी पूर्व कालमें "हे गौ, हे गौ" कहता हुआ हमारे सम्मुख नाचा था ७ उसके सम्मुख अब हम नाचते हैं कि और "हे गौ, हे गौ" कहो । हमारा छलना अग्नि लगाना, द्यूतका पांसा और ठगना नहीं है । हम अपने भुजबल से शत्रुओंको पीड़ा देते हैं ८ भीमसेन उस बड़ी शत्रुताका अन्त पा हँसकर बड़े धीरपनेसे युधिष्ठिर, केशवजी, अर्जुन, नकुल, सहदेव और सृञ्जयोंसे वचन बोले, कि ९ जो लोग रजस्वला द्रौपदी को लेआये और लाकर जिन्होंने सभामें उसे नङ्गी किया अथवा नङ्गी करना चाहा; उन धृतराष्ट्र के पुत्रों को युद्ध में द्रौपदीके तेज और पाण्डवोंके पराक्रम से मृतक हुआ देखो १० पूर्व समय में राजा धृतराष्ट्र के जिन निर्दय पुत्रोंने हमको नपुंसक कहा था, वे अपने सब

समूहों और सहायकों समेत हमारे हाथ से मारे गये। इससे हमको चाहे स्वर्ग हो चाहे नरक ११ फिर उसने पृथ्वीपर गिरे हुए राजाके कन्धेपर वर्तमान गदा को मसलकर बायें पैर से शिरको खूब रगड़ा १२ हे राजन् ! सोमकों समेत श्रेष्ठ महात्माओंने राजा दुर्योधन के मस्तकपर उस प्रसन्नचित्त, नीचात्मा भीमसेन को पैर रखे देखकर अच्छा न माना १३ उस प्रकार आपके पुत्रको मारकर वार्तालाप करनेवाले और बहुत रीतियों से नाचनेवाले भीमसेन से धर्मराजने कहा, कि तुम शत्रुता से उऋण होगये १४ तुम्हारी प्रतिज्ञा भी पूर्ण होगई। अब शुभाशुभ कर्मों से पृथक् होकर चरणसे इसके शिरको मर्दन मत करो। धर्म तुमको उल्लंघन न करे। हे निष्पाप ! यह राजा और अपना भाई मारा गया, यह तुम्हारी बात न्याय के योग्य नहीं है १५–१६ हे भीमसेन ! ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके स्वामी, कौरवोंके राजा, अपने भाईको चरणसे मत ठुकराओ १७ मृतक भाई, मन्त्री और विनष्ट सेनावाला यह राजा दुर्योधन युद्धमें मारा गया। यह सब प्रकार से शोचने के योग्य है; हास्यके योग्य नहीं १८ यह मृतक मन्त्री, भाई, सन्तान और पिण्डवाला और आपभी विनष्ट भाई है। तुमने यह न्याय के योग्य नहीं किया १९ पूर्व समय में लोगों ने कहा है, कि भीमसेन धर्मका अभ्यासी है। हे भीमसेन ! तुम धर्मज्ञ होकर इस राजाको चरणों से क्यों ठुकराते हो २० फिर अश्रुओं से पूर्ण, राजा युधिष्ठिर भीमसेन को समझाकर महादुःखी हो दुर्योधन के पास जाकर बोले, कि २१ हे तात ! तुम्हें क्रोध न करना चाहिये और अपना भी शोच न करना चाहिये। निश्चय ही पूर्वका किया हुआ घोर कर्म अपना फल अवश्य देता है २२ हे कौरव्य ! ईश्वर से विपरीत, अशुभ और अपवित्र फलवाला कर्म उपदेश किया गया है, तभी तो तुम हमको और हम तुमको मारते हैं २३ हे भरतवंशिन् ! निश्चय ही अपने अपराधसे उस प्रकार का बड़ा दुःख पाया है जो लोभ, अहङ्कार और अज्ञानता से प्राप्त हुआ है २४ हमारे भाई, समान वयवाले, पिता, पुत्र, पौत्र और अन्यान्य लोगों को मरवाकर आप भी नष्ट हुआ २५ तेरेही अपराधसे, तेरे सब भाई हमारे हाथसे मारे गये और जातिवाले भी मारे गये। इससे मैं प्रारब्ध को ही कठिनतासे पार होने के योग्य मानता हूं २६ हे निष्पाप ! तेरा आत्मा शोचके योग्य नहीं। तेरी मृत्यु प्रशंसा के योग्य है। परन्तु हे कौरव ! अब हम सब दशाओं में शोचके योग्य हैं २७ उन भाइयोंसे

रहित होकर हम दुःखसे अपना जीवन बितावें और भाई, पुत्रादिकों के शोक से व्याकुल होंगे २८ मैं शोक से पूर्ण, विधवा वधुओं को किस प्रकार देखूंगा? हे राजन्! तुम अकेले चले; निश्चय तुमको स्वर्ग होगा २६ हम लोग अवश्य नरकगामी हैं और बड़े कठिन दुःख पावेंगे। धृतराष्ट्र के पुत्र और पौत्रों की स्त्रियां शोकसे पीड़ित, व्याकुल और विधवा होकर हमारी निन्दा करेंगी ३० संजय बोले, कि दुःखसे पीड़ित धर्मका पुत्र राजा युधिष्ठिर इस प्रकार कहकर श्वासाएं लेकर अत्यन्त पीड़ित हुआ ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणि त्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, कि हे सूत! तब बलदेवजी ने अधर्म से मारे हुए राजा को देखकर क्या कहा १ गदायुद्ध में कुशल माधव बलदेवजी ने जो कुछ किय हो, वह मुझसे कहो २ संजय बोले, कि बलदेवजी भीमसेन के चरणोंसे घातित आपके पुत्रको देखकर बड़े क्रोधित हुए ३ राजाओंके मध्यमें ऊंची भुजा उठाकर बलदेवजी पीड़ित स्वर में बोले, कि हे भीमसेन! धिक्कार है, धिक्कार है, धिक्कार है ४ जो युद्धमें तूने नाभिके नीचे, धर्मके विरुद्ध प्रहार किया। गदायुद्ध में यह कभी नहीं देखा था जैसा कि तूने किया ५ नाभिके नीचे प्रहार करना अधर्म है। यह शास्त्रको न जाननेवाला, अज्ञान भीमसेन अपनी इच्छासे कर्म करता है ६ ऐसीही अनेक बातें कहकर बलदेवजी ने बड़ा क्रोध प्रकट किया। इसके पीछे वे अपना हल उठाकर भीमसेन के सम्मुख गये ७ उस समय ऊंची भुजा करनेवाले उन महात्माका रूप अनेक धातुयुक्त श्वेत पर्वत के समान हुआ ८ तब नम्रतासे युक्त केशवजी ने बड़े उपायोंसे हृष्ट पुष्ट, प्रलम्ब बाहु, उछलनेवाले बलदेवजीको बड़े बलसे पकड़ लिया ६ हे राजन्! तब मृदुस्वभाववालों में श्रेष्ठ, गौर और श्याम वर्णवाले वे दोनों महात्मा ऐसे अधिक शोभित हुए जैसे कि दिनके अन्त में चन्द्रमा और सूर्य शोभित होते हैं १० केशवजी उन क्रोधित बलदेवजी को शान्त करके बोले, कि अपनी वृद्धि, शत्रुका नाश, अपने मित्रकी वृद्धि, शत्रुके मित्रका नाश, अपने मित्रके मित्रकी वृद्धि और शत्रुके मित्रके मित्र का नाश ११ यह छः प्रकार की अपनी वृद्धि है। जब अपने में और मित्रों में अन्तर होगा १२ तब चित्त में ग्लानि होगी। उस समय कोई

अशुभ न होगा। पवित्र वीरतावाले पाण्डव हमारे भाई और मित्र हैं १३ अपनी फूफी के पुत्र हैं। उनका शत्रुओं ने अनादर किया था। हम इस लोक में प्रतिज्ञा को पूरी करने में क्षत्रिय का धर्म जानते हैं १४ भीमसेन पहले सभा में प्रतिज्ञा कर चुके थे, कि मैं बड़े युद्धमें दुर्योधन की जंघाको अपनी गदासे तोड़ूंगा १५ हे शत्रुसन्तापिन् ! पहले मैत्रेय महर्षिने इसको शाप दिया था, कि युद्ध में भीमसेन गदा से तेरी जङ्घाओं को तोड़ेगा १६ इस कारण मैं दोष नहीं देखता। हे बलदेवजी ! आप क्रोध न करें। पाण्डवों से हमारी नातेदारी है। एक तो हमारे बाबा और पाण्डवों के नाना एक हैं; दूसरे अपनी प्रीतिसे अर्जुन बहनोई और मित्रभी है १७ उन्हीं की वृद्धिसे हमारी वृद्धि है। हे पुरुषोत्तम ! क्रोध न करो। धर्मज्ञ बलदेवजीने वासुदेवजी को उत्तर दिया, कि १८ छः गुणों से अच्छी रीति करके अभ्यास किया हुआ धर्म कहा है और दो गुणोंसे हानि होती है। वे दो गुण हैं बड़े लोभी का अर्थ और अतिप्रसंगी का काम १६ जो पुरुष कामसे धर्म-अर्थ को, अर्थ से धर्म-कामको और धर्म से काम-अर्थको पीड़ित न कर धर्म, अर्थ और कामको प्राप्त होताहै; वह बड़े सुख पाता है २० सो धर्म को पीड़ित कर भीमसेन ने यह सब व्याकुलता से किया। हे गोविन्दजी ! तुमने मुझसे अपने इच्छानुसार कहा है, धर्म के अनुसार नहीं २१ श्रीकृष्ण जी बोले, कि आप इस लोक में क्रोध रहित, धर्मात्मा और सदैव धर्मवत्सल विख्यात हैं। इस से आप शान्त हों, क्रोध न करें। अब आप कलियुगको वर्तमान जानें और पाण्डवों की प्रतिज्ञा को समझें। पाण्डव लोग भी शत्रुता और प्रतिज्ञा से मुक्त हों २२-२३ संजय बोले, कि हे राजन् ! उन अप्रसन्न बलदेवजी ने केशव जी से इस छलसंयुक्त धर्म को सुनकर सबके समक्ष कहा, कि २४ पाण्डव भीमसेन धर्मात्मा राजा दुर्योधन को अधर्म से मारकर, इस लोकमें अधर्मयुद्ध करने वाला प्रसिद्ध होगा २५ धर्मात्मा दुर्योधन सनातन गति पावेगा; क्योंकि वह सत्ययुद्ध कर मारा गया है २६ युद्ध दीक्षा प्राप्त कर रणक्षेत्र में युद्धरूपी यज्ञकी रचना करके इसने अपने को शत्रुरूपी अग्नि में होमकर शुभकीर्तिरूपी यज्ञस्नान किया २७ श्वेतशिखर और स्वच्छ बादलरूप बलदेवजी यह कहकर रथ पर सवार हो द्वारका को चले गये २८ हे राजन् ! बलदेवजी के द्वारका जाने पर पाण्डवों समेत सब पाञ्चाल अत्यन्त प्रसन्न न हुए २६ वासुदेवजी उस दुःखी, शोचग्रस्त, नीचा शिर करनेवाले, शोकसे हतसंकल्प युधिष्ठिरसे बोले,

कि ३० हे धर्मराज ! तुम किस निमित्त अधर्म को स्वीकार करते हो । हे राजन् ! तुम धर्मज्ञ होकर जो इस मृतक भाईवाले, अचेत, गिरे हुए दुर्योधन के शिर को भीमसेन के पैरों से मर्दन किया जाता देखकर निषेध नहीं करते हो, इसका क्या हेतु है ३१-३२ युधिष्ठिर बोले, कि हे श्रीकृष्णजी ! यह मैं नहीं चाहता हूं जो भीमसेन ने क्रोधसे राजाके शिरको चरण से छुआ । इस कुलके नाश से मैं प्रसन्न नहीं होता हूं ३३ हम लोग धृतराष्ट्र के पुत्रों के छलों से छले गये। इन लोगों ने बड़े कठोर और असह्य वचन कहकर हम सबको वनमें भेजा था ३४ वह कठिन दुःख भीमसेन के हृदय में वर्तमान है । हे श्रीकृष्णजी ! मैंने यही विचार कर तरह दी है ३५ इससे भीमसेन उस निर्बुद्धि, लोभी और कामकी आधीनता में वर्तमान दुर्योधन को मारकर धर्म या अधर्म करके भी प्रयोजन सिद्ध करसकता है ३६ संजय बोले, कि धर्मराज से वासुदेवजी दुःख से बोले, कि यह इच्छाके अनुसार हो ३७ भीमसेन का प्रिय और हित चाहने वाले वासुदेवजी के वचन को सुनकर धर्मराज ने उस सब अपराधको क्षमा किया जो युद्ध में भीमसेन से हुआ था ३८ हे राजन् ! युद्धभूमि में आपके पुत्रको मारकर क्रोधसे रहित, अत्यन्त प्रसन्न, हाथ जोड़े हुए, प्रसन्नता से प्रकाशित नेत्र, विजयसे शोभित, महातेजस्वी भीमसेन ने दण्डवत् कर आगे खड़े हो युधिष्ठिर से कहा, कि ३९-४० हे राजन् ! अब निष्कण्टक और क्षेम-कारी यह सब पृथ्वी तुम्हारी है । महाराज ! इस पर राज्य करो और अपने धर्म को पालन करो ४१ हे राजन् ! जो छली छलसे ही इस शत्रुता का पालन करनेवाला था, वह मरा हुआ इस पृथ्वीपर पड़ा सोता है ४२ और आप से कठोर वचन कहनेवाले आपके शत्रु कर्ण, शकुनि और दुश्शासनआदिक सब भाई भी मारे गये ४३ महाराज ! यह रत्नोंसे पूर्ण, मृतक शत्रुवाली पृथ्वी वन, पर्वतों समेत अब आपको प्राप्त हुई ४४ युधिष्ठिर बोले, कि राजा दुर्यो-धनको मारने से अब शत्रुता का अन्त हुआ और श्रीकृष्णजी के विचार में नियत हो हम लोगोंने इस पृथ्वी को जीत लिया ४५ आपने प्रारब्ध से ही दोनों माताओं के क्रोधसे मुक्ति पाई । हे अजेय ! आप प्रारब्ध से ही विजय करते हैं और प्रारब्ध से ही ये सब शत्रु मारे गये ४६ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वण्येकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय।

धृतराष्ट्र ने कहा, कि हे संजय! युद्धमें भीमसेनके हाथसे दुर्योधनको मृतक देखकर पाण्डव और सृञ्जयों ने क्या किया १ संजय बोले, कि महाराज! सिंहके हाथसे मरे हुए मतवाले जङ्गली हाथी की नाईं युद्धमें भीमसेन के हाथ से दुर्योधनको मरा हुआ देखकर २ श्रीकृष्ण जी समेत प्रसन्नचित्त पाण्डव, पाञ्चाल और सृञ्जयों ने ३ दुपट्टे को घुमा घुमाकर सिंहनाद किये। परन्तु पृथ्वीने प्रसन्नतासे पूर्ण वीरोंको नहीं सहा ४ किसीने धनुषों को टङ्कारा, किसीने ज्याको बजाया; बहुतों ने बड़े शंख बजाये और कई एकोंने दुन्दुभियां बजाईं ५ इसी प्रकार क्रीड़ा करते हुए आपके बहुतसे शत्रु प्रसन्न हुए। ये सब वीर बारम्बार भीमसेन से बोले, कि ६ अब युद्ध में थके हुए तुमने कौरवराज को अपनी गदासे मारकर बड़ा कठिन काम किया ७ मनुष्यों ने इन्द्रके हाथसे वृत्रासुर की नाईं आपके हाथसे युद्धमें उस शत्रुका मरण माना ८ भीमसेन के सिवाय कौनसा मनुष्य सब प्रकार के मार्गों समेत घूमनेवाले शूरवीर दुर्योधनको मार सकता था ९ तुमने यहां शत्रुताका अन्त कर दिया। इस काम को और लोग बड़ी कठिनाई से भी न कर सकते थे १० हे वीर! तुमने युद्धभूमि में प्रारब्धसे मतवाले हाथी के समान दुर्योधनके शिरको अपने चरणोंसे मला। हे निष्पाप! तुमने उत्तम युद्ध करके प्रारब्धसे ही दुश्शासन के रुधिर को ऐसे पान किया जैसे कि भैंसेके रुधिरको सिंह पीताहै ११-१२ जिन्होंने धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर का अपमान किया था; उनके शिरपर तुमने अपने कर्मके द्वारा अपना चरण रक्खा १३ हे भीमसेन! प्रारब्धसे ही तुम शत्रुओं के ऊपर विराजमान हुए हो और दुर्योधनको मारने से पृथ्वीपर तुम्हारी बड़ी कीर्ति हुई १४ हे भरतवंशिन्! वृत्रासुरके मरनेपर वन्दीजनों ने जैसे इन्द्रको प्रसन्न किया था; वैसे ही हम सब भी निश्शत्रु होकर तुमको प्रसन्न करते हैं १५ दुर्योधनके मरनेसे हर्षित हमारे शरीर पर जो रोम खड़े हुए; वे अबतक नहीं बैठते हैं। इसे सर्वथा सत्य जानो १६ इस प्रकारसे भीमसेनकी प्रशंसा करते करते उस स्थान पर वार्तिकजन इकट्ठे हुए। पाण्डवों समेत एकसी बातें करनेवाले उन पुरुषोत्तम पाञ्चालों को देखकर १७ मधुसूदनजी बोले, कि हे राजाओ! मृतक शत्रुको फिर मारना नीतिके विपरीत है १८ निर्बुद्धि, कठोर वचनों से बारम्बार घायल यह पापी

इसी हेतुसे मारागया कि इसने निर्लज्ज १९ लोभी और पापियों के साथी होकर शुभचिन्तकोंकी आज्ञा के विना काम किये। इस दुष्टात्मा ने बहुधा विदुर, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, भीष्मपितामह, सृञ्जी २० और पाण्डवों के प्रार्थना करनेपर भी पिताका विभाग नहीं दिया। यद्यपि यह नीचपुरुष, मित्र अथवा शत्रु भी था तौ भी इसका हास्य करना योग्य नहीं है २१ वचनों से घायल, काष्ठके समान इस दुर्योधनसे हमारा क्या प्रयोजन है? हे राजाओ! शीघ्र रथपर सवार होजाओ। अब यहांसे चलेंगे २२ यह पापात्मा मन्त्री, भाई और ज्ञातिवालों समेत प्रारब्धसे ही मारा गया। राजा दुर्योधन श्रीकृष्णजीसे ऐसे निन्दाके वचन सुनकर २३ और क्रोधके आधीन हो दोनों हाथोंसे पृथ्वी को टेककर स्फिगनाम अंगके सहारे से बैठ गया २४ उसने अपनी दृष्टि तथा भृकुटीको टेढ़ीकरके वासुदेवजी के ऊपर फेंका। हे भरतवंशिन्! आधा शरीर ऊंचा करनेवाले राजाका रूप २५ दबे हुए, क्रोधित विषैले सर्प के समान था। प्राणों की नाशक घोर पीड़ाका कुछ ध्यान न कर २६ दुर्योधनने कठोर वचनों से वासुदेवजी को अत्यन्त पीड़ित किया। उसने यह कठोर वचन कहा, कि हे कंसके दासके पुत्र! तुझको निश्चय ही इससे लज्जा नहीं आती है २७ कि मैं गदायुद्ध में भीमसेन के हाथसे तुझ निरर्थक स्मरण करानेवाले के अधर्म से गिराया गया। तैंने ही स्मरण कराया, कि इसकी जंघाओं को तोड़ डालो २८ सत्ययुद्धसे हजारों राजाओंको मरवाकर, यह मुझको क्यों नहीं जतलाया जो अर्जुनको बता दिया २९ बहुतसे विपरीत कर्मोंसे तुझको न लज्जा है, न दया है। प्रतिदिन शूरोंका घोर विनाश करनेवाले ३० भीष्मपितामह को तुमने शिखण्डी को आगे करके मरवाया। हे दुर्बुद्धे! अश्वत्थामाके सनाम हाथीको मारकर ३१ आचार्यजी को शस्त्रों से रहित किया। क्या करूं, मैं न जानपाया। वे पराक्रमी तेरे ही कारण इस निर्दयी धृष्टद्युम्नके हाथसे ३२ गिराये गये। तुमने उसको देखकर निषेध नहीं किया। पाण्डव अर्जुनके मारनेवाली चाही हुई शक्तिको ३३ घटोत्कच के ऊपर फेंकवाकर निष्फल किया। तुझसे अधिक पाप करनेवाला कौन है? इसी प्रकार टूटे हाथवाला शरीर त्यागने के अर्थ नियम करनेवाला, पराक्रमी भूरिश्रवा ३४ तेरी ही आज्ञा पा महात्मा सात्यकी के हाथ से मारा गया। अर्जुन को जीतने की इच्छा से कर्ण ने उत्तम कर्म किये ३५ पर सर्पराज के पुत्र अश्वसेन के दुःख और फिर रथके पहिये के

पृथ्वी में धसजाने की आपत्तिमें फँसजाने पर उसका पराजय किया ३६ रथ-चक्रके घुस जानेसे व्याकुल, बेचारा कर्ण युद्धमें गिरायागया । यदि मिलेहुए द्रोणाचार्य, भीष्म, कर्ण और मुझसे भी ३७ सत्य युद्ध करते तो तुम्हारी विजय कभी न होसकती थी और तुझ निर्गुणी और कुमार्गी के कारणही ३८ अपने धर्मपर आरूढ़ राजा लोग और अन्यान्य लोग मारे गये । तब वासुदेवजी बोले, कि हे गान्धारी के पुत्र! पापमार्ग में चलनेवाले अपने भाई, पुत्र, बान्धव और मित्रोंके समूहों समेत तुम मारे गये हो। तेरे ही दुष्टकर्मों से शूरवीर भीष्म और द्रोणाचार्य गिराये गये ३९-४० और तेरा साथी कर्मकर्ता कर्ण भी युद्धमें मारा गया । हे मूर्ख ! तुमने लोभ और शकुनीके निश्चयसे, मेरे बहुत कहनेपर भी पाण्डवों के बाप दादों के राज्यका भाग नहीं दिया । तुमने भीमसेन को विष दिया; माता समेत सब पाण्डवों को ४१-४२ लाक्षागृह में भस्म किया और सभामें द्यूतके समय रजस्वला द्रौपदीको दुःखी किया ४३ हे कठोरचित्त! उसी समय तुम मार डालने योग्य थे, जब कि तुमने द्यूतविद्याका छल जाननें वाले शकुनी की सहायता से द्यूतकर्म में अकुशल धर्मज्ञ युधिष्ठिर को छल से जीता था ४४ इन्हीं सब कारणों से तू युद्धमें मारा गया है । आखेटमें पाण्डवके जानेपर, तृणबिन्दुके आश्रमके समीप वनमें द्रौपदी को पापी जयद्रथ ने दुःख दिया और अकेला अभिमन्यु तेरे दोषोंसे युद्धमें बहुतसे शूरवीरों के हाथ मारा गया ४५-४६ हे पापी ! तू इन्हीं कारणोंसे युद्धमें मारा गया है और जिन करनेके अयोग्य हमारे कर्मोंको तू कहता है ४७ वे सब तेरे ही दुराचार से किये गये । तुमने बृहस्पतिजी और शुक्रजीकी शिक्षाको नहीं सुना ४८ वृद्धोंका सत्सङ्ग नहीं किया; तुमने क्षेमकारक वचनों को नहीं सुना । तुम ईर्षा और लोभके आधीन हुए ४९ इन सब दुष्ट कर्मोंको जो तुमने किया है, उसके फल को भोगो । दुर्योधन ने कहा, कि मैंने वेदोंको पढ़ा, विधिपूर्वक दान दिये, सागरों समेत सब पृथ्वीपर राज्य किया ५० और शत्रुओं के मस्तकोंपर रहा । मुझसे अधिक सफल शुभकर्मी कौन है ? अपने धर्मके देखनेवाले, क्षत्रियों का हितकारी और प्रिय ५१ मरण मैंने पाया है । मुझसे अधिक शुभकर्मी कौन है ? मैंने राजाओंसे दुष्प्राप्य, शरीरके योग्य, संसारी सुख-ऐश्वर्योंको पाया ५२ और उत्तम राज्य भोगा । मुझसे अधिक सुकृती कौन है ? मैं अपने मित्रों और छोटे भाइयों समेत स्वर्गको जाऊंगा ५३ तुम नष्टसंकल्प होकर अपना जीवन

चिताओगे । संजय बोले, कि बुद्धिमान् कौरवराजके वचन समाप्त होनेपर ५४ पवित्र, सुगन्धित पुष्पोंकी बड़ी वर्षा हुई और गन्धर्वोंने चित्तरोचक बाजे बजाये ५५ अप्सराओं ने राजाकी शुभकीर्तिसम्बन्धी गीत गाये और सिद्धोंने धन्य धन्य शब्द किया । शीतल, मन्द, सुगन्धित वायु चली; सब आकाश दिशाओं समेत वैडूर्य मणिके रंगके समान शोभित हुआ ५६-५७ वासुदेवजी प्रमुख सब पाण्डवादिक उस अपूर्वता और दुर्योधनकी पूजाको देखकर लज्जित हुए ५८ भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण और भूरिश्रवा को अधर्म से मारा हुआ सुन कर शोक से पीड़ित हो उन वीरों ने शोच किया ५९ बादल और दुन्दुभि के समान शब्दवाले श्रीकृष्णजी पाण्डवों को चिन्तित और दुखी देखकर बोले, कि ६० बहुत शीघ्र अस्त्र चलानेवाला दुर्योधन और वे सब पराक्रमी महारथी युद्धमें सत्ययुद्धके द्वारा तुम्हारे हाथसे मारने योग्य न थे ६१ यह राजा दुर्योधन अथवा भीष्मादिक बड़े धनुषधारी वीर महारथी कभी धर्मसे किसीसे भी मारने योग्य न थे ६२ मैंने आपलोगों के भले के लिये बहुतसे उपाय और माया योगोंके द्वारा रणभूमिमें सबको बारम्बार मारा ६३ यदि मैं ऐसी माया न करता तो तुम्हें विजय, राज्य और धन प्राप्त न होता ६४ वे चारों महात्मा अतिरथी इस पृथ्वीपर प्रत्यक्ष लोकपालोंसे भी धर्मके द्वारा मारने के योग्य न थे ६५ इसी प्रकार यह गदाधारी अश्रमित दुर्योधन दण्डधारी कालसे भी धर्मके द्वारा मारने के योग्य न था । तुमको इस शत्रुके मारनेका कोई विचार चित्तमें न करना चाहिये । उसी प्रकार बहुतसे शत्रु छलके द्वारा आपसे मारने के योग्य हैं ६६-६७ प्राचीन वृद्ध लोग और असुरोंके मारनेवाले देवता आदि सत्पुरुषों से चलाया हुआ यह मार्ग है । इसीसे यह सबसे चलाया जाता है ६८ अब हम सायंकाल के समय निवासस्थानों में विश्राम किया चाहते हैं । हे राजा लोगो ! हम सब घोड़े, हाथी और रथों समेत विश्राम करें ६९ तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त पाण्डवों सहित पाञ्चाल वासुदेवजी का वचन सुनकर सिंहों के समान गर्जे ७० हे पुरुषोत्तम ! फिर राजा लोग शङ्खों को और माधवजी पाञ्चजन्य शङ्खको बजाते हुए दुर्योधनको मृतक देखकर प्रसन्न हुए ७१ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिकृष्णपाण्डवसंवादे द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय।

संजय बोले, कि इसके पीछे परिघके समान भुजाओंवाले, प्रसन्नतापूर्वक शङ्ख बजाते हुए वे सब राजा लोग विश्राम करने के निमित्त चले १ हे राजन्! हमारे डेरेको जानेवाले पाण्डवों के पीछे बड़ा धनुषधारी युयुत्सु और सात्यकी चले २ धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और द्रौपदी के सब पुत्र तथा अन्यान्य धनुषधारी अपने अपने डेरों को गये ३ मनुष्योंके भाग जाने पर वे सब पाण्डव दुर्योधन के प्रकाशरहित डेरे में इस रीति से प्रविष्ट हुए जैसे कि युद्धभूमि में प्रवेश करते हैं। वह स्थान उत्सव से रहित पुरके समान और मारे गये नागवाले ह्रद के समान; उत्तम स्त्रियों के समूहों और बूढ़े मन्त्रियोंसे पूर्ण था४-५हे राजन्! वहां कषाय और मलिन वस्त्र धारण किये हुए दुर्योधनके लोग हाथ जोड़कर उनके पास आये ६ महाराज! रथियों में श्रेष्ठ पाण्डव लोग कौरवराज के डेरेके पास रथों से उतरे ७ हे भरतर्षभ! इसके पीछे पाण्डवों के सदैव शुभचिन्तक केशवजी गाण्डीव धनुषधारी से बोले, कि ८ हे भरतर्षभ! इस गाण्डीव धनुष और दोनों अक्षय तूणीरों को उतारो। पीछेसे मैं भी उतरूंगा ९ तुम स्वयं उतरो। हे निष्पाप! इसमें तुम्हारा कल्याण है। यह सुनकर वीर अर्जुन ने वैसा ही किया १० इसके अनन्तर पूर्ण बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी घोड़ों की बागडोरें छोड़कर अर्जुनके रथसे उतरे ११ फिर सब जीवों के ईश्वर परमात्मा के उतरने पर अर्जुन की दिव्य ध्वजा और हनुमान्जी अन्तर्द्धान हो गये १२ महाराज! कर्ण और द्रोणाचार्य के दिव्य अस्त्रों से भस्मीभूत वह महान् रथ भी शीघ्र ही विना अग्निके अग्निरूप होगया १३ अर्जुन का वह रथ उपासङ्ग, बागडोर, घोड़े और युगबन्धुर समेत भस्म होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा १४ हे राजा धृतराष्ट्र! पाण्डव लोग उस प्रकार से अर्जुन के भस्म होनेवाले रथको देखकर बड़े आश्चर्यित हुए १५ तब हाथ जोड़कर बड़ी नम्रता से अर्जुनने कहा, कि हे भगवन् गोविन्दजी! यह रथ अग्नि के द्वारा भस्म क्यों हो गया १६ हे यदुनन्दन! यह क्या बड़ा आश्चर्य हुआ? हे महाबाहो! जो सुनाने के योग्य मुझको जानते हो, तो सब वृत्तान्त मुझसे कहो १७ वासुदेवजी बोले, कि हे अर्जुन! यह रथ प्रथम ही अनेक प्रकार के अस्त्रोंसे भस्मरूप हो गया था। पर मेरे सवार होने से यह पृथ्वी पर नहीं गिरा १८ हे अर्जुन! अब मुझसे पृथक् होने और तेरे कृतकृत्य होने

पर यह भस्मीभूत होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। यह ब्रह्मास्त्र के तेज से भस्म हुआ है १९ शत्रुओंके मारनेवाले भगवान् केशवजी मुसकराकर राजा युधिष्ठिर से बोले, कि २० हे राजा युधिष्ठिर! तुम प्रारब्ध से शत्रुओंको विजय करते हो; प्रारब्ध से तुम्हारे सब शत्रु पराजित हुए और प्रारब्ध से ही गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन, भीमसेन २१ नकुल, सहदेव और आप कुशलतायुक्त हो। अब तुम इस युद्धसे निवृत्त हुए २२ हे भरतवंशिन्! अब करने योग्य आगे के कर्म करो। पूर्व समय में मधुपर्क निवेदन कर उपप्लवी स्थानमें पहुँच करके अर्जुन को साथ ले आपने कहा था, कि "हे महाबाहु श्रीकृष्ण! यह तुम्हारा भाई और मित्र अर्जुन २३ सब आपत्तियों में तुमसे रक्षा के योग्य हैं।" मैंने भी उस बात को स्वीकार कर लिया था २४-२५ हे राजन्! वह सत्यपराक्रमी तुम्हारा शूर भाई अर्जुन भाइयों समेत विजयी और रक्षित २६ इस वीरों के नाशकारी, रोमहर्षण करनेवाले महाघोर युद्ध से निवृत्त हुआ। महाराज! श्रीकृष्णजी के वचनको सुनकर रोम रोम से हर्षित युधिष्ठिर ने २७ जनार्दनजी को उत्तर दिया, कि हे शत्रुओं के विजय करनेवाले! द्रोणाचार्य और कर्ण के छोड़े हुए ब्रह्मास्त्र को २८ आपके सिवाय साक्षात् वज्रधारी इन्द्र भी सहने को योग्य नहीं है। आपकी ही कृपासे संसप्तकोंके समूह जीते गये २९ जो उस बड़े भारी युद्धमें अर्जुन कभी पराङ्मुख नहीं हुआ। इसी प्रकार मैंने अनेक प्रकार से ३० कर्मोंके विस्तार और तेजकी गतिको जाना। उपप्लवी स्थानपर महर्षि व्यास ने मुझसे कहा था, कि ३१ जिधर धर्म है, उधर ही श्रीकृष्णजी हैं और जिधर श्रीकृष्णजी हैं, उधर ही विजय है। हे भरतवंशिन्! इस प्रकार कहने पर उन वीरोंने आपके डेरे में ३२ प्रवेश करके रत्न और धनोंके समूह पाये। चांदी, सोना, मणि और मोतियोंके हार ३३ उत्तम भूषण, दुशाले, मृग-चर्म, असंख्य दास-दासी और राज्य के बहुत से सामान पाये ३४ हे भरतर्षभ! वे शत्रुओं के विजयी भाग्यवान् आपके असंख्य धनको पाकर बड़े उच्चस्वर से पुकारे ३५ वीर पाण्डव और सात्यकी सवारियां छोड़कर बारम्बार विश्वसित हो डेरों में नियत हुए ३६ महाराज! फिर यशस्वी वासुदेवजी बोले, कि हम लोगों को मङ्गलके निमित्त डेरों से बाहर निवास करना चाहिये ३७ तब पाण्डव और सात्यकी उनकी आज्ञा मानकर वासुदेवजी के साथ मङ्गलके लिये डेरे से बाहर गये ३८ हे राजन्! फिर वे सब पाण्डव और सात्यकी धर्मवृद्धिकी

हेतुरूप ओघवती नदीको पाकर रात्रिको वहीं बसे ३९ श्रीकृष्णजी हस्तिनापुर भेजे गये। तब वे शीघ्र ही दारुक के रथपर बैठकर राजा धृतराष्ट्र के यहां के लिये चले। उस समय पाण्डव लोग यात्रा करनेके लिये उत्सुक, शैव-सुग्रीव घोड़ोंवाले श्रीकृष्णजी से बोले, कि ४०-४१ तुम वहां जाकर यशस्विनी, मृतपुत्रा गान्धारी को आश्वासन करो। पाण्डवों से समझाये हुए श्रीकृष्णजी उस पुरको गये और शीघ्र ही मृतपुत्रा गान्धारी से मिले ४२-४३ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिवासुदेववाक्ये त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ।

जनमेजय ने कहा, कि हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ ! धर्मराज युधिष्ठिरने शत्रुविजयी वासुदेवजीको गान्धारीके पास क्यों भेजा १ पहले श्रीकृष्णजी सन्धिके लिये कौरवों के पासगये थे, पर मनोरथ सफल न होनेके २ कारण यह महायुद्ध हुआ। अब शूरवीरोंके मरने, राजा दुर्योधन के घायल होने और रणभूमि में पाण्डवों के निश्शत्रु होने ३ मनुष्यों के भागने, डेरे खाली होने और उत्तम शुभकीर्ति मिलनेपर ऐसा कौन कारण है, जिससे श्रीकृष्णजी हस्तिनापुरको गये ४ हे बड़े ज्ञानी, ब्राह्मण ! जब ज्ञानवान् श्रीकृष्णजी वहां स्वयं गये, तब इसमें कोई अल्प कारण नहीं है ५ हे अध्वर्युओं में श्रेष्ठ ! सब वृत्तान्त वर्णन कीजिये। वैशम्पायन बोले, कि हे भरतवंशिन् ! तुम्हारे सब प्रश्न पूछनेके ही योग्य हैं। हे भरतर्षभ ! मैं भी उसको यथार्थ ही कहता हूं ६-७ हे राजन् ! युद्धमें भीमसेन के हाथसे अमर्यादापूर्वक बड़े शूरवीर धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन को न्याय से विरुद्ध गदायुद्ध में मरा हुआ देखकर युधिष्ठिरको बड़ा भय हुआ ८-९ तपस्विनी भाग्यवती गान्धारी से भयभीत, चिन्तित युधिष्ठिर भय से उद्विग्न हुए, कि घोर तपवाली गान्धारी अपने कोप से तीनों लोकोंको भी भस्म करसकती है १० इससे चिन्ता करनेवाले युधिष्ठिरका विचार हुआ, कि पहले क्रोध से प्रज्वलित गान्धारी के क्रोधकी शान्ति करना योग्य है ११ क्योंकि वह हमारे हाथ से इस प्रकार अपने पुत्रका मरण सुनकर क्रोधपूर्ण, अग्निरूप अपनें मन से हमको भस्म करदेगी १२-१३ भय और क्रोधसे युक्त धर्मराजने इस प्रकारकी बहुतसी चिन्ता करके वासुदेवजी से कहा, कि १४ हे गोविन्दजी ! आपकी कृपासे, मनसे भी महादुष्प्राप्य यह अकण्टक राज्य हमको प्राप्त हुआ १५

हे यादवनन्दन ! युद्ध में मैंने देखा है, कि तुमने बड़ा युद्ध किया १६ तुमने पूर्वसमय के देवासुरसंग्राम में असुरोंको मारनेके लिये देवताओंकी जिस प्रकार सहायता की और देवताओंके शत्रु मारे गये १७ उसी प्रकार से आपने हमारी भी सहायता की है और स्वयं रथवानी कर हमारी रक्षा की १८ यदि तुम बड़े युद्धमें अर्जुन के स्वामी न होते, तो इस सेनारूपी समुद्रको पार होकर कैसे विजय करते १६ हे श्रीकृष्णजी ! तुमने हमारे कारण गदा, परिघ, शक्ति, भिन्दिपाल, तोमर और फरसों के कठिन प्रहार २० कठोर वचन और युद्ध में वज्रस्पर्श के समान शस्त्रों का गिरना भी सहा २१ हे अविनाशिन् ! दुर्योधन के मरने पर आपके वे कठिन दुःख सफल हुए । हे श्रीकृष्णजी ! अब जिस प्रकार आपके वे सब उपकार नष्ट न हों वही आपको करना उचित है २२ हे माधवजी ! विजयी होनेपर भी हमारा चित्त सन्देहों के हिंडोले में झूलता है । हे महाबाहो ! आप गान्धारी के क्रोध को जानिये २३ वह भाग्यवती यशस्विनी सदैव बड़े बड़े तापों से बड़ी पीड़ित है । वह अपने पुत्र-पौत्रादिकों का नाश सुनकर अवश्य हमलोगों को भस्म करेगी २४ हे वीर ! मेरे विचार से उसको प्रसन्न करना समय के अनुसार है । हे पुरुषोत्तम ! आपके सिवाय कौन पुरुष उस क्रोध से रक्त नेत्रोंवाली और पुत्रों के शोक से पीड़िता को देखने में समर्थ है ? हे माधवजी ! क्रोधसे ज्वलितरूप गान्धारी के क्रोध को दूर करने के लिये वहां आपका जाना मुझे स्वीकार है क्योंकि तुम्हीं सब सृष्टिके कर्ता, नाशक और उत्पत्ति के हेतुरूप, स्वयं अविनाशी हो २५–२७ हे महाबाहो ! तुम कार्य कारणसे युक्त समय के अनुसार वचनों से शीघ्र ही गान्धारी को शान्त करोगे २८ वहां हमारे पितामह भगवान् व्यासजी भी होंगे । हे यादवेन्द्र, पाण्डवों के हितकारिन् ! तुमको सब रीति से भाग्यवती गान्धारी का क्रोध शान्त करना योग्य है । उन्होंने धर्मराज के वचन सुनकर २६–३० दारुक से कहा, कि रथ तैयार करो । केशवजी की आज्ञा पाकर फुर्तीले दारुक ने ३१ रथ तैयार करके महात्मा केशवजी के पास लाकर खड़ा किया । फिर यादवेन्द्र केशवजी उस पर सवार होकर ३२ शीघ्र ही हस्तिनापुर को गये । रथ की घड़घड़ाहटसे शब्द उत्पन्न कर वीर श्रीकृष्णजी नगर में प्रवेश करके ३३–३४ धृतराष्ट्र के जाने हुए, उत्तम रथसे उतरकर उन के महलमें पहुँचे ३५ केशवजी ने वहां पूर्व से जाकर बैठे हुए ऋषिश्रेष्ठ व्यास

महर्षिजी को देखा। व्यासजी के और राजाके चरणों को स्पर्श करके ३६ सावधान केशवजी ने गान्धारी को भी दण्डवत् की। हे राजन्! फिर यादवेन्द्र श्रीकृष्णजी ३७ धृतराष्ट्र को हाथसे पकड़कर बड़े शब्दसे रोने लगे और एक मुहूर्त तक शोकसे आंसू गिराकर ३८ जलसे नेत्रों को धो विधिपूर्वक आचमन करके समय के अनुसार धृतराष्ट्र से बोले, कि ३९ हे भरतवंशिन्! तीनों काल के वृत्तान्त आप अच्छी रीतिसे जानते हैं। समय का जैसा, जो कुछ वृत्तान्त है, वह सब आपको विदित ही है ४० तुम्हारे चित्तके समान कर्मकर्ता सब पाण्डवों से जो यह कुलका और क्षत्रियों का नाश हुआ वह कैसे न हो, अवश्य ही होना उचित था क्योंकि धर्मवत्सल युधिष्ठिरने प्रतिज्ञापूर्वक क्षमा कर दिया और छलद्यूत से पराजित पवित्रात्मा पाण्डवों को वनवास हुआ ४१-४२ उन लोगों ने नाना वेष धारण कर अज्ञातवास आदिक अनेक प्रकार के क्लेश सहे। असमर्थों के समान होकर पाण्डवों ने अन्याम्य अनेक कठिन दुःख पाये ४३ युद्ध प्रवृत्त होने के समय मैंने आपके पास आकर सब लोगों के समक्ष पांच गांव मांगे ४४ परन्तु काल से प्रेरित होकर तुमने लोभ से अपने पुत्रों को न रोका। हे राजन्! आपके अपराध से सब क्षत्रियों के समूहों का नाश हुआ ४५ भीष्म, सोमदत्त, बाह्लीक, कृपाचार्य, पुत्र समेत द्रोणाचार्य और बुद्धिमान् विदुर जी ने ४६ सन्धिके निमित्त आपसे बारम्बार प्रार्थना की परन्तु तुमने उनमें से किसीकी भी बात न मानी। हे भरतवंशिन्! काल से घायलचित्त सब मनुष्य ऐसे अचेत होजाते हैं ४७ जैसे कि पूर्व समय में यह प्रयोजन होनेपर आप अज्ञान हुए थे। कालयोग से दूसरी क्या बात है? प्रारब्ध ही सबसे प्रबलहै ४८ आप पाण्डवों को दोष न दें। महात्मा पाण्डवों में थोड़ी सी भी अमर्यादा नहीं है ४९ हे शत्रुसन्तापिन्! आप अपने ही अपराधसे होनेवाली इन सब बातों को जानकर धर्म, न्याय और प्रीति से ५० पाण्डवोंके गुणोंमें दोष लगाने योग्य नहीं हैं। कुल, वंश, पिण्ड और पुत्र होनेका जो धर्मफल है, वह सब आप का और गान्धारी का पाण्डवों में नियत है। हे कौरव्य, नरोत्तम! आप और यशस्विनी गान्धारी ५१-५२ पाण्डवों के अपराधों को मत विचारो। अपनी ही सब अमर्यादाओं का ध्यानकर ५३ अपने कल्याणप्रद वचनोंसे पाण्डवोंकी रक्षा करो। हे भरतर्षभ! आपको नमस्कार है। हे महाबाहो! प्रीति और स्वभावसे धर्मराजकी आपमें जो भक्ति है, उसे आप स्वयं जानते हैं। वह युधिष्ठिर अवज्ञा

करनेवाले क्षत्रियों का नाश करके ५४-५५ अहर्निश जलता है और कल्याण नहीं पाता है। हे नरोत्तम! वह पुरुषोत्तम तुम्हारा और यशस्विनी गान्धारी का ५६ शोच कर शान्ति नहीं पाता है। इसीसे वह लज्जित युधिष्ठिर तुम्हारे पास भी नहीं आसकता है ५७ क्योंकि तुम पुत्रशोक से दुखी, व्याकुल बुद्धि और इन्द्रियवाले हो। महाराज! इसप्रकार श्रीकृष्ण जी राजा धृतराष्ट्र से कहकर ५८ शोक से महापीड़ित गान्धारी से बोले, कि हे सौबल की पुत्रि! जो अब मैं तुम से कहूं, उसको सुनकर चित्तसे समझो ५९ हे शुभे! इस लोक में तुम्हारे समान कोई स्त्री नहीं है। हे रानी! मैं जानता हूं कि सभामें मेरे समक्ष ६० तुमने धर्म, अर्थ से युक्त दोनों ओरके हितकारी वचन कहे थे। पर हे कल्याणिनि! तुम्हारे पुत्रोंने कुछ भी न माना ६१ और तुमने दुर्योधनसे भी ये कठोर वचन कहे, कि हे अज्ञानिन्! मेरे वचनको सुन; जिधर धर्महै, उधर ही विजय है ६२ सो हे राजपुत्रि! तुम्हारा कहा हुआ वचन सत्य हुआ। हे कल्याणिनि! इस प्रकार समझकर शोकमें चित्त मत करो ६३ पाण्डवोंके नाशके लिये तुम्हारी बुद्धि कभी न हो। तुम क्रोधसे ज्वलित नेत्रोंकी अग्नि और तपके बलसे सब जड़ चैतन्य समेत पृथ्वी को भस्म करनेमें समर्थ हो। गान्धारी वासुदेवजी के वचन सुनकर बोली, कि ६४-६५ हे केशवजी! यह ऐसा ही है जैसा कि आप कहते हैं परन्तु चित्तके अनेक दुःखोंसे जलने के कारण मेरी बुद्धि चलायमान हुई है ६६ हे केशवजी! आपके वचन सुनकर अब मेरी बुद्धि स्थिर हुई। हे द्विपादों में श्रेष्ठ! तुम वीर पाण्डवों के साथ इस अन्धे वृद्ध और सन्तानहीन राजा की गति हो। इतना कह, वस्त्रसे मुख ढककर ६७-६८ पुत्रशोक से दुखी गान्धारी बहुत रोने लगी। तब श्रीकृष्णजीने शोकपीड़ित गान्धारी को ६९ हेतुकारणसंयुक्त वचनों से विश्वास कराया। माधवजी ने धृतराष्ट्र और गान्धारी को विश्वास देकर ७० अश्वत्थामाके हृदयका विचार जाना। तब तो केशवजी शीघ्र ही मस्तकसे व्यासजी के चरणोंको दण्डवत् कर कौरवराज धृतराष्ट्र से बोले, कि हे कौरवों में श्रेष्ठ! मैं आपको नमस्कार करता हूं। आप शोकमें चित्त न करें ७१-७२ अश्वत्थामा का पापरूप चित्त हुआ है। इससे मैं शीघ्र उठा हूं। उसने रात्रिके समय पाण्डवों के मारने का पक्का विचार प्रकट किया है ७३ गान्धारी समेत इस बात को सुनकर महाबाहु धृतराष्ट्र केशवजी से बोले, कि ७४ हे महाबाहो! आप शीघ्र जाकर पाण्डवों की रक्षा करें। हे जनार्दनजी! मैं

फिर आपसे शीघ्र मिलूंगा ७५ अविनाशी केशवजी शीघ्र ही दारुक समेत चले। हे राजन् ! वासुदेवजी के जानेपर ७६ बड़े बुद्धिमान् और लोकमान्य व्यासजी ने भी राजा धृतराष्ट्र को विश्वास कराया। धर्मात्मा वासुदेवजी सफल मनोरथ होकर ७७ पाण्डवों को देखने के लिये हस्तिनापुर से डेरेको गये। वे रात्रि को डेरे में पहुँचकर पाण्डवों के पास गये और सब वृत्तान्त उनसे कहकर उन समेत सावधान हुए ७८ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिधृतराष्ट्रगान्धारीप्रबोधने चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय।

धृतराष्ट्र बोले, कि हे संजय ! पैर से मस्तक पर दबाये गये, टूटी जंघावाले, पृथ्वी पर पड़े हुए मेरे अहङ्कारी पुत्रने क्या कहा १ अत्यन्त क्रोधयुक्त, पाण्डवों से शत्रुता करनेवाले और बड़े संकट में फँसे हुए राजाने बड़े युद्ध में क्या किया २ संजय ने कहा, कि हे राजन् ! मैं सब वृत्तान्त आपसे कहता हूं। उस दुःखमें, टूटे अंगवाले राजाने जो कहा है, उसे आप सुनिये ३ हे राजन् ! टूटी जंघा, धूलि से लिप्त और शिर के केश बांधनेवाले राजाने वहां दशों दिशाओं को देख ४ सर्प के समान श्वास ले उपाय से बालों को बांध क्रोध और आंसू भरी नजरसे मुझको देखकर ५ मतवाले हाथी के समान अपनी भुजाओं को बारम्बार मलकर, बिखरे हुए बालों को कँपाते, दांतों से दांतोंको दबाते ६ और युधिष्ठिरकी निन्दा करते हुए दुर्योधनने कहा, कि शन्तनुके पुत्र भीष्मजी, शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ कर्ण, कृपाचार्य, शकुनि, महाअस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य और शूर कृतवर्मा के नाश होने पर ७-८ मेरी यह दशा हुई। निश्चय ही काल बड़े दुःखसे उल्लंघन करनेके योग्यहै, तभी तो ग्यारह अक्षौहिणी सेना के स्वामी होने पर भी मेरी यह दशा हुई ९ हे महाबाहो ! कोई मनुष्य काल को उल्लंघन नहीं करसकता। अब तुम उन मेरे शूरवीरों का वर्णन करो जो इस युद्धमें जीवित हैं १० जिस प्रकार मैं नियम को उल्लंघनकर भीमसेनके हाथसे मारा गया हूं, इससे विदित होता है, कि पाण्डवों की ओर से बहुत निर्दय कर्म किये गये हैं ११ निर्दय पाण्डवों की ओर से यह अपकीर्तिजनित कर्म भूरिश्रवा, कर्ण, भीष्म और श्रीमान् द्रोणाचार्य के साथमें भी किया गया १२ इस से मेरी समझ में वे सब पाण्डव सत्पुरुषों में अपमान पावेंगे। छल से विजय

पाकर पराक्रमी पुरुषकी कौनसी प्रसन्नता है १३ कौन बुद्धिमान् समय के स्वामीका अपराध करने योग्य है और कौनसा पण्डित अधर्म से विजय पाकर ऐसे प्रसन्न होगा १४ जैसे कि पापी भीमसेन प्रसन्न होता है। अब इससे अपूर्व क्या है जो जांघ टूटजाने पर मेरे शिरको १५ क्रोधयुक्त भीमसेनने पैरों से रगड़ा। हे संजय ! सन्तप्तकर्ता, लक्ष्मी से सेवित बान्धवों में वर्तमान पुरुष की १६ जो मनुष्य ऐसी दशा करे, वही पूजित है। मेरे माता पिता भी धर्मयुद्ध को अच्छी रीति से जानते हैं १७ हे संजय ! वे दोनों मेरे वचनों से जतलाने योग्य हैं। अच्छे प्रकार यज्ञ आदिक किये, प्रजापालन किया और समुद्रों समेत पृथ्वी पर राज्य किया १८ हे संजय ! जीवित शत्रुओंके मस्तकपर बना रहा। सामर्थ्य के अनुसार दान किये, मित्रोंका हित किया १९ सब शत्रुओंको पीड़ित किया। भला मुझसे अधिक सुकर्मी कौन है ? सब बान्धवों की प्रतिष्ठा की। और अपने आश्रित कार्यकर्ताओं को प्रसन्न किया २० धर्म, अर्थ, काम आदिक सब का सेवन किया। मुझसे अधिक सुकर्मी, कौनहै ? उत्तम उत्तम राजाओंपर हुकूमत की और बड़े दुःखसे प्राप्य प्रतिष्ठा पाई २१ आजानेय घोड़ों पर सवारी की। मुझ से अधिक सुफलवाला कौन है ? वेद पढ़कर विधिपूर्वक दान किया, नीरोग आयु पाई २२ अपने धर्म से लोक प्राप्त किये। मुझसे अधिक सुकर्मी कौन है ? मैं प्रारब्ध से युद्ध में विजयी न हुआ २३ और हे प्रभो ! प्रारब्धसेही मेरी बड़ी लक्ष्मी मेरे मरने पर दूसरे को प्राप्त हुई। अपने धर्मपर चलनेवाले क्षत्रियों का हित और प्रिय २४ मरण मैंने पाया। मुझसे विशेष शुभकर्मी कौन है ? मैं प्रारब्धसेही साधारण मनुष्यकी शत्रुता से नहीं हटा २५ और प्रारब्धसेही किसी अपमानसे पराजित नहीं हुआ। जिस प्रकार सोते हुए को, नशेसे अचेत को अथवा विष पीनेवाले को कोई मारता है २६ इसी प्रकार धर्मत्यागीने अनियम से मुझे मारा। अश्वत्थामा, कृतवर्मा २७ और कृपाचार्य मेरे वचनसे कहने योग्य हैं कि अनेक प्रकार के अधर्मकर्त्ता, नियमों के त्यागनेवाले २८ पाण्डवों का विश्वास करना आपको उचित नहीं है। आपका पुत्र राजा दुर्योधन सिद्धों से बोला, कि मैं अधर्मकी रीतिसे भीमसेन के हाथ से मारा गया। मैं स्वर्गवासी द्रोणाचार्य, कर्ण, शल्य २९-३० वृषसेन, शकुनि, जलसिन्धु, राजा भगदत्त ३१ बड़े धनुर्धारी सोमदत्त, सिन्धु के राजा जयद्रथ और आत्मा के समान दुश्शासनआदिक भाई ३२ पराक्रमी दुश्शासनके पुत्र

और लक्ष्मण—इन दोनों पुत्रोंके और अन्यान्य हजारों अपने शूरवीरोंके पीछे ऐसे जाऊंगा ३३ जैसे कि अपने साथियों से पृथक् विदेशी जाता है। मेरी बहिन दुश्शला भाइयों समेत अपने पतिको मरा हुआ सुनकर रोती हुई कैसी महा-दुःखी होगी! मेरे वृद्धपिता राजा धृतराष्ट्रकी पुत्र-पौत्रों की ३४–३५ स्त्रियों और गान्धारी समेत क्या गति होगी! मृतक पुत्र और पतिवाली कल्याणी तथा बड़े नेत्रोंवाली लक्ष्मण की माता भी शीघ्रही नष्ट होगी। यदि ब्राह्मणरूपधारी, संन्यासी, वार्तालाप में सावधान, चार्वाक राक्षस इस बातको जानेगा तो वह अवश्य मेरा बदला पाण्डवों से लेगा। मैं इस पपित्र और तीनों लोकों में विख्यात स्यमन्तपञ्चक में ३६–३८ मृत्यु पाकर प्राचीन लोकों को पाऊंगा। हे श्रेष्ठ! फिर अश्रुओंसे पूर्ण नेत्र हजारों मनुष्य ३९ राजाके उस विलाप को सुन कर दशों दिशाओं को भागे। समुद्र, वन और जड़-चैतन्य जीवों समेत घोररूप पृथ्वी ४० शब्दायमान होकर काँपने लगी। दिशाएं सब प्रभासे रहित होगईं। उन्होंने अश्वत्थामा से सब वृत्तान्त कहा ४१ हे भरतवंशिन्! वे लोग गदायुद्ध का व्यवहार और दुर्योधन का गिराना अश्वत्थामा से वर्णन कर ४२ बड़ी देर तक ध्यान करके पीड़ित हो अपने अपने स्थानों को चले गये ४३॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वणिदुर्योधनविलापे पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५॥

छत्तीसवां अध्याय।

संजय ने कहा, कि हे राजन्! कौरवोंके शेष तीनों महारथी १ अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा दूतों के मुखसे राजा दुर्योधन को मरा हुआ सुन कर तेज घोड़ोंकी सवारी से शीघ्रही रणभूमिमें आये। वहां आकर उन्होंने गदा, तोमर, शक्ति और तेज बाणों से अत्यन्त घायल महात्मा दुर्योधन को ऐसा देखा मानों बड़े वनमें वायु के वेग से गिरा हुआ शालका बड़ा वृक्ष हो। उसको पृथ्वीपर तड़फता रुधिर से लिप्त २–४ वनमें व्याध के हाथसे गिराये हुए बड़े हाथी की भांति देखा। बहुत प्रकार से रूपान्तरित, रुधिर से लथपथ ५ दैव की इच्छा से गिरे हुए, सूर्य की किरणों में घूमनेवाले चक्रके समान, बड़े वायुके वेगसे उठे हुए घोर समुद्रके तुल्य ६ आकाश में शीतयुक्त मण्डलवाले पूर्ण चन्द्रमा के सदृश, धूलिसे लिप्त, लम्बी भुजावाले, हाथी के तुल्य पराक्रमी ७ चारों ओर भूत-प्रेतों से व्याप्त और मांसभक्षी जीवसमूहोंसे ऐसे संयुक्त देखा जैसे

कि धनाभिलाषी सेवकों से घिरे हुए उत्तम राजाको देखते हैं ८ टेढ़ी भृकुटि और क्रोधसे फैले नेत्रोंवाले नरोत्तमको गिरे हुए व्याघ्र की नाईं देखा ९ बड़े धनुर्धारी राजाको पृथ्वीपर गिरा हुआ देखकर कृपाचार्य प्रभृति को बड़ा मोह हुआ १० वे रथों से उतरकर राजाके सम्मुख गये और उसे देखकर पृथ्वीपर बैठगये ११ महाराज! फिर अश्रुओंसे पूर्ण नेत्रहो, श्वासाएं लेते हुए अश्वत्थामा दुर्योधन से बोले, कि १२ हे पुरुषोत्तम! निश्चय ही इस लोक में कोई सत्य बात नहीं है, जहां आप जैसे लोग धूलि में लिप्त होकर सोतेहैं १३ हे राजेन्द्र! तुम पूर्वकाल में राजा की हैसियत से पृथ्वीपर शासन करके अब कैसे निर्जन वनमें पड़े हो १४ दुश्शासन, महारथी कर्ण और सब सुहृदों को भी मैं नहीं देखताहूं। हे भरतर्षभ! यह क्या बातहै १५ किसी दशामें भी काल और लोकों की गतिको जानना बड़ा कठिन है, जहां कि धूलि से लिप्त आप सोते हैं १६ यह शत्रुओं का तपानेवाला, राजाओं के आगे चलकर धूलि को कठिनता से स्पर्श करता है, इस विपरीत समय को देखो १७ हे राजन्! तुम्हारा निर्मल छत्र, वचन और बड़ी भारी सेना कहां गई १८ गुप्तरूप होने पर परिणाम दुःख से जानने के योग्यहै जो लोकगुरु होकर आपने यह दशा पाई १९ इन्द्रसे ईर्षा करनेवाले आपके कठिनदुःखको देखकर सबमनुष्योंमें लक्ष्मी का विनाशीरूप दिखाई देताहै २० संजयने कहा, कि हे राजन्! महाखेद भरे अश्वत्थामा के वचन सुनकर हाथों से अपने नेत्रों को साफ़ करके शोक से आंसू बहाता हुआ कृपाचार्यआदिक वीरों से बोला, कि २१-२२ यह ऐसा लोक ईश्वर से उपदेश किया हुआ धर्म कहा जाता है। सब जीवोंके नाशने विपरीतही विपरीत समय पाया २३ वही अब मुझको भी प्राप्त हुआहै, जो आप लोगों के समक्ष वर्तमान है। मैंने पृथ्वी का पोषण कर यह दशा पाई है २४ मैं प्रारब्ध से किसी आपत्ति में भी रण से विमुख नहीं हुआ। हे श्रेष्ठो! मैं प्रारब्धसे विशेषतः पापियों के छलसे मारा गया हूं २५ युद्धके अभिलाषी होकर मैंने प्रारब्ध से ही उत्साह किया और ज्ञाति बान्धवों समेत मैं युद्ध में मारा गया २६ मैं प्रारब्धसे ही कल्याणयुक्त आप लोगों को देखता हूं। यह मेरा मरण बड़ा प्रियतम और अभीष्ट है २७ यदि आपको वेद प्रमाण है, तो यहां पर आप लोग मित्रता से मेरे मरने में दुःखी मत हों। क्योंकि मैंने अविनाशी लोक विजय किये २८ मैं बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णजी के प्रभावको मानने वाला हुआ।

इससे मैं अच्छी रीति से किये हुए क्षत्रियधर्म से नहीं गिराया गया हूं २९ उसे मैंने अच्छी रीतिसे प्राप्त किया। मैं कभी शोच के योग्य नहीं हूं। आप लोगों ने भी अपने योग्य कर्म किये ३० और सदैव विजय के उपाय किये परन्तु दैव दुःख से उल्लंघन के योग्य है। हे राजेन्द्र! इतना कहकर, आंसुओं से व्याकुल नेत्र ३१ अत्यन्त खेदयुक्त राजा दुर्योधन मौन होगया। फिर अश्वत्थामा राजा को शोक और अश्रुओं से संयुक्त देखकर ३२ क्रोधसे ऐसे प्रज्वलित हुए जैसे कि प्रलयकालमें सृष्टिके नाश करने को अग्नि प्रज्वलित होती है। उसने हाथों को मींजकर ३३ आंखों में आंसू भर बड़े आकुलित वचनों में राजा से कहा, कि नीचों के निर्दय कर्म से मेरा पिता मारा गया। उससे भी मुझे ऐसा दुःख नहीं हुआ जैसा कि अब तुम्हारी दशा देखकर क्लेश होता है। हे प्रभो! मैं कूप, वापी, तड़ाग, यज्ञ, दान, धर्म और अपने पुण्यकी शपथ खाकर सत्य सत्य कहताहूं; कि अब मैं सब उपायोंसे सब पाञ्चालों को वासुदेवजी के देखते हुए ३४-३६ यमलोक में पहुँचाऊंगा। महाराज! आप मुझे आज्ञा दीजिये ३७ राजा दुर्योधन मनके हर्ष को बढ़ानेवाले अश्वत्थामाके वचन को सुनकर कृपाचार्य से बोला, कि ३८ हे आचार्यजी! शीघ्रही जलपूर्ण कलश लाइये। ब्राह्मणों में श्रेष्ठ आचार्य जी राजाके वचन को जानकर ३९ उसके पास कलश ले आये। हे राजा धृतराष्ट्र! तब वह आचार्यजी से बोला, कि ४० हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! आपका कल्याण हो। यदि आप मेरा हित चाहते हैं, तो मेरी आज्ञा से अश्वत्थामा को सेनापति के अधिकारपर अभिषेक कराइये ४१ मुख्यकर क्षत्रियधर्म पर कर्म करनेवाले ब्राह्मण को राजा की आज्ञा से लड़ना चाहिये; यह धर्मज्ञ लोगों का कहा हुआ और जाना हुआ है ४२ कृपाचार्यजी ने उसकी आज्ञा से अश्वत्थामा का सेनापति के अधिकारपर अभिषेक कराया ४३ महाराज! अभिषिक्त अश्वत्थामा श्रेष्ठ राजा से मिलकर सब दिशाओं को सिंहनाद से शब्दायमान करता हुआ चला ४४ फिर रुधिरसे लिप्त दुर्योधनने भी सब जीवों की भयकारिणी रात्रि पाई ४५ वे तीनों महारथी रणभूमि से हटकर शोक से व्याकुल, चिन्तायुक्त होकर ध्यान में डूब गये ४६ ॥

इति श्रीमहाभारतेगदापर्वण्यश्वत्थामासेनापत्याभिषेके षट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

गदापर्व समाप्त ॥



महाभारत भाषा

सौप्तिक व स्त्री पर्व

जिसमें अश्वत्थामा आदि से सोती हुई पाण्डवी सेना और पांचों द्रौपदीपुत्रों का मारा जाना और धृतराष्ट्र का कौरवी सेना की दशा पर विलाप करना वर्णित है।

भार्गवश्रेष्ठ मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., की आज्ञा से पण्डित कालीचरण गौड़ ने संस्कृत से अनुवाद किया।

तीसरी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा।

सन् १९१५ ई०।



महाभारत भाषा सौप्तिकपर्व का सूचीपत्र ॥

इति ॥

महाभारत भाषा स्त्रीपर्व का सूचीपत्र ॥

इति ॥



श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ॥

महाभारतभाषा सौप्तिकपर्व ॥

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतं प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकं स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ या भाति वीणामिव वादयन्ती महाकवीनां वदनारविन्दे ॥ सा शारदा शारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभा नः प्रतिभां व्यनक्तु २ पाण्डवानां यशोवर्ष्म सकृष्णमपि निर्मलम् ॥ व्यधायि भारतं येन तं वन्दे बादरायणम् ३ विद्याविदग्रे सरभूपणेन विभूष्यते भूतलमद्य येन ॥ तं शारदालब्धवरप्रसादं वन्दे गुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगं सौप्तिकरम्यपर्वभाषानुवादं विदधाति सम्यक् ५ ॥

अथ सौप्तिकपर्व प्रारम्भः ॥

श्रीनारायण नरोंमें उत्तम नरको और सरस्वती अर्थात् जीव ईश्वरको प्रकट करनेवाली देवीको नमस्कार करके जयनाम महाभारत इतिहासको वर्णन करता हूं सञ्जय बोले इसके पीछे वह वीर एकसाथही दक्षिण ओरको चले और सूर्यास्त के समय डेरोंके पास आये १ तब वह शीघ्रही रथोंको छोड़कर भयभीत हुये और घनदेशको पाकर गुप्त निवासी हुये २ अपनी सेनाके निवासस्थानसे कुछ थोड़ेही अन्तरपर नियत हुये तेजशस्त्रोंसे टूटे अङ्ग चारों ओरसे घायल उन वीरोंने ३।४ लम्बी और उष्णश्वास लेकर पाण्डवोंकी चिन्ता करी फिर विजयाभिलाषी पाण्डवों के घोरशब्द को सुनकर ५ पीछा करने के भयसे भयभीत होकर पूर्वकी ओरको चलदिये वह सब एक मुहूर्त चलकर तृषार्त और थकी सवारी वाले सह न सके ६ वह बड़े धनुषधारी क्रोध और अशान्तताके आधीन और राजा के मारेजानेसे दुःखी चित्त होकर एक मुहूर्ततक नियत हुये ७ धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय ! भीमसेनने यह कर्म श्रद्धाके अयोग्य किया जो उस दशहज़ार

हाथीके समान मेरे पुत्रको मारा ८ हे सञ्जय ! वह मेरा पुत्र जो कि सब जीवोंसे अवध्य वज्रके समान दृढ़ शरीरवाला था युद्धमें पाण्डवों के हाथसे मारागया ९ हे गोलकनके पुत्र, सञ्जय ! मनुष्यों से प्रारब्ध उल्लंघन करने के योग्य नहीं है जो मेरा पुत्र पाण्डवों के सम्मुख होकर मारागया १० हे सञ्जय ! निश्चय करके मेरा हृदय पत्थर है जो सौपुत्रों को मृतक सुनकर भी विदीर्ण नहीं होता ११ मृतकपुत्रवाला वृद्धों का मिथुन किसप्रकार से रहैगा मैं पाण्डवों के देश में निवास करनेको विचार नहीं करताहूं १२ हे सञ्जय ! मैं राजाका पिता आप राजा होकर पाण्डवों का आज्ञावर्ती होकर सेवक के समान कैसे कर्म करूंगा १३ हे सञ्जय ! पृथ्वी पर राज्यशासन करके और सब राजाओं के मस्तकपर नियत होकर कैसे उसकी आज्ञाका पालन करूंगा जिसने कि मेरे पुत्रोंका एक पूरा सैकड़ा मारडाला १४ हे सञ्जय ! वचन को न करनेवाले उस मेरे पुत्रने महात्मा विदुरजीके वचनको सत्य किया १५ हे सञ्जय ! कठिन नाश करनेवालेका मैं कैसे आज्ञावर्तीहूंगा और किसप्रकारसे भीमसेनके वचन सुननेको समर्थहूंगा १६ हे सञ्जय ! अधर्म से मेरे पुत्र दुर्योधनके मरनेपर कृतवर्मा कृपाचार्य और अश्वत्थामाने क्या किया १७ सञ्जय बोले हे राजन् ! आपके वीर थोड़ी दूर जाकर नियत हुये और नानाप्रकारके वृक्ष लताओं से संयुक्त घोरवनको देखा १८ उन्होंने जल पीनेवाले उत्तम घोड़ों समेत एक मुहूर्त विश्राम करके सूर्यास्त के समय एक ऐसे वनको पाया १९ जो कि नानाप्रकारके मृगसमूहोंसे सेवित भांतिभांतिके पक्षीगणोंसे व्याप्त और बहुतप्रकारके वृक्ष लतादिकोंसे भरा हुआ बहुत भांतिके सर्पोंसे सेवित २० नानाप्रकारके जलोंसे युक्त बहुत भेदके पुष्पों से शोभित सैकड़ों कमलनियों से पूर्ण और नीले कमलोंसे संयुक्त था २१ इसके पीछे चारोंओरको देखते उन वीरोंने उस घोर वनमें प्रवेश करके हज़ारों शाखाओं से युक्त वटके वृक्षको देखा २२ हे राजन् ! तब उन नरोत्तम महारथियों ने वटवृक्षको पाकर उस उत्तम वृक्ष के नीचे जाके अपने २ रथोंसे उतरकर घोड़ोंको छोड़ा और न्यायके अनुसार स्नानादिक करके वह सब अपनी २ संध्यावंदन में प्रवृत्त हुये २३ । २४ इसके पीछे पर्वतों में उत्तम अस्ताचल में सूर्य के पहुँचने पर सब जगत् की धात्री रात्रि वर्तमान हुई पूर्ण ग्रह नक्षत्र और ताराओं से अलंकृत चारोंओर से दर्शनीय आकाश स्वर्णबिन्दुओंसे जटित वस्त्रके समान शोभायमान हुआ २५ । २६ जो रात्रिमें घूमने वाले जीव हैं वह सब नींदके स्वाधीन वर्तमानहुये फिर रात्रिमें घूमनेवाले जीवोंके

शब्द भयानक हुये मांसभक्षी राक्षस अत्यन्त प्रसन्न हुये और घोररात्रि वर्तमान हुई २७। २८ रात्रिके उस घोरमुखमें दुःख शोकसे संयुक्त कृतवर्मा कृपाचार्य और अश्वत्थामा बराबर समीप बैठे २६ उस वटके सम्मुख कौरव और पाण्डवोंके होनेवाले नाशको शोचते ३० नींदसे पूर्णशरीर और परिश्रमसे अत्यन्त संयुक्त नानाप्रकारके बाणों से घायल पृथ्वीपर बैठगये ३१ इसके पीछे दुःखके अयोग्य और सुखके योग्य पृथ्वीपर बैठेहुये महारथी कृतवर्मा और कृपाचार्य नींदके वशीभूत हुये ३२ हे महाराज! थकावट और शोकसे युक्त पूर्वसमयमें बहुमूल्य शयनोंपर सोनेवाले वह दोनों अनाथोंकेसमान पृथ्वीपर सोगये ३३ हे भरतवंशिन्! क्रोध और अशान्ति में वर्तमान और सर्पोंके समान श्वास लेते अश्वत्थामाजी ने निद्राको नहीं पाया ३४ शोकसे ज्वलितरूप उस वीरने निद्राको नहीं पाया तब उस महाबाहुने उस घोरदर्शन वनको देखा ३५ कि नानाप्रकार के जीवोंसे सेवित वनके कोणको देखते महाबाहुने वटके वृक्षको काकों से संयुक्त देखा ३६ हे कौरव! उसवृक्षपर हजारों काकोंने रात्रिमें निवास किया और पृथक् २ निवासी होकर सुख से निद्रायुक्त हुये ३७ चारोंओर से उन विश्रब्ध काकों के सोजानेपर उन अश्वत्थामाजी ने अकस्मात् आनेवाले घोरदर्शन उलूकको देखा ३८ जो कि बड़ा शब्द बड़ा शरीर पीतनेत्र पिङ्गलवर्ण बहुत लम्बे नख और ऊंची नाक रखनेवाला गरुड़के समान तीव्रगामी था ३६ हे भरतवंशिन्! उस गुप्त आनेवाले के समान पक्षी ने मृदुशब्द करके वटकी शाखाको चाहा ४० काकोंके कालरूप उस पक्षीने वटवृक्षकी शाखापर गिरकर मिलनेवाले बहुत से काकोंको मारा ४१ चरणरूपी शस्त्रधारी ने कितनोंही के पक्षसमेत शिरोंको काटा और कितनोंहीके चरणोंको काटा ४२ उस बलवान्ने अपने सम्मुख दीखनेवाले अनेक काकों को एक क्षणमात्र में काटा हे राजन्! उनके शरीरों के अङ्ग और शरीरों से वटके वृक्ष का मण्डल सबओरसे ढकगया इसके पीछे वह उलूक उन काकोंको मारकर प्रसन्न हुआ ४३।४४ अर्थात् वह शत्रुओंका मारनेवाला इच्छाके समान शत्रुओं को मारकर प्रसन्न हुआ रात्रिमें उलूकके किये हुये उस छलयुक्त कर्मको देखकर ४५ उस छलमें संकल्प करनेवाले अकेले अश्वत्थामाजीने विचार किया कि इस पक्षी ने युद्ध में मुझको उपदेश किया है ४६ मेरे मतसे शत्रुओंका नाशकारी समय वर्तमान हुआ अब विजय से शोभा पानेवाले पराक्रमी कृतोत्साह लक्ष्यके प्राप्त करने वाले और प्रहार करनेवाले पाण्डव मेरे हाथ से मारनेके योग्य नहीं हैं और

मैंने राजाके सम्मुख उन सबके मारनेकी प्रतिज्ञा करी है ४७।४८ पतंग और अग्निके समान अपने नाश करनेवाली वृत्ति में प्रवृत्त होकर मुफ न्याय से लड़ने वालेका निश्चय प्राणत्याग होगा ४६ और छल करके बड़ी सिद्धिसमेत शत्रुओं का बड़ा नाश होगा इस हेतुसे जो संशयात्मक अर्थसे निस्संशयात्मक अर्थ होना योग्य है ५० जो विद्यावान् मनुष्य हैं वह इसको बहुत मानते हैं ऐसे स्थानपर जो वचन चाहै गर्हित और लोकनिन्दित भी होय ५१ वह क्षत्रियधर्म में प्रवृत्त होनेवाले मनुष्यको अवश्य करना योग्यहै अशुद्ध अन्तःकरणवाले पाण्डवोंने ऐसे छलसे भरेहुये कर्म किये जोकि गर्हित और पदपदपर निन्दित हैं इस विषय में पूर्वसमय में न्यायके देखनेवाले धर्मका विचार करनेवाले मुख्यताके ज्ञाता लोगोंके कहेहुये मुख्य प्रयोजन रखनेवाले श्लोक सुनेजाते हैं शत्रुओं के थकजाने, पृथक् होने और भोजन करने ५२।५३।५४ चलेजाने और प्रवेशहोनेपर शत्रुकी सेनाको मारना चाहिये जो सेना आधीरात्रिकी निद्राके समय निद्रासे पीड़ित और नाश-युक्त प्रधान ५५ पृथक् २ शूरोंवाली और दो भाग होनेवाली होय उसपर प्रहार करना चाहिये प्रतापवान् अश्वत्थामाने इस प्रकार पाञ्चालों समेत रात्रिके समय सोतेहुये पाण्डवों के मारने का निश्चय किया उसने निर्दयी बुद्धिमें नियत होकर बारम्बार निश्चय करके ५६।५७ अपने मामा और भोजवंशी कृतवर्मा इन दोनों सोनेवालों को जगाया तब उन जगनेवाले महात्मा महाबली लज्जायुक्त कृपा-चार्य और कृतवर्माने एक मुहूर्तभर ध्यान करके आंशुओंसे व्याकुलनेत्र होकर यह वचन कहा ५८।५६ कि वह बड़ा बलवान् एक वीर राजा दुर्योधन मारागया जिसके हेतुसे हमारी शत्रुता पाण्डवों के साथ हुई ६० युद्धमें बहुत नीचोंसमेत ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी बड़े पवित्र पराक्रमवाला अकेला दुर्योधन भीमसेनके हाथ मारागया ६१ महाराजाधिराजका शिर जो पैरों से मर्दन किया यह नीच भीमसेनने बड़ा निर्दय कर्म किया ६२ पाञ्चालदेशी गर्जते हैं क्रीड़ा करते में हँसते हैं सैकड़ों शङ्खों को बजाते हैं और प्रसन्नचित्त दुन्दुभियों को भी बजाते हैं ६३ शङ्खोंके शब्दोंसे युक्त वायुसे चलायमान बाजों के घोरशब्द दि-शाओंको पूर्ण करते हैं ६४ हींसते घोड़े और चिंहाड़ते हाथियोंके बड़े शब्द और शूरवीरोंके भी यह सिंहनाद सुनेजाते हैं ६५ पूर्वदिशामें नियत होकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त जानेवालों के रथनेमियोंके शब्द जो कि रोमांचके खड़े करनेवाले हैं वहभी सुनेजाते हैं ६६ पाण्डवलोगोंने धृतराष्ट्रके पुत्रोंका जो यह नाश किया

है इस बड़ेभारी नाशमें हम तीन शेष हैं ६७ कितनेही सौहार्थीके समान पराक्रमी और कितनेही सब शस्त्रविद्याओं में कुशल थे वह पाण्डवों के हाथसे मारेगये में समयकी विपरीतता को मानताहूं ६८ निश्चय करके इस प्रकारके इतनेही कर्म मूलसमेत विचार करनेके योग्य हैं जैसे कि कठिन कर्म करनेपर भी ऐसी दशा है ६९ आपकी जो बुद्धि है वह मोहसे दूर नहीं कीजाती है इस बड़े प्रयोजन के वर्तमान होनेपर जो हमारा हितकारी और भला है उसको कहो ७० ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिद्रौणिमंत्रेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

कृपाचार्य बोले हे समर्थ ! जो तुमने कहा वह तुम्हारा सब वचन सुना हे महाबाहो ! अब मेरे कुछ वचनको भी सुन १ कि प्रारब्ध और उद्योग इन दोनोंके कर्मों में सब बँधेहुये हैं अर्थात् प्रारब्धमें सब ओरसे बँधेहुये हैं और उपायमें कम बँधेहुये हैं इस हेतुसे प्रारब्ध मुख्य है और उद्योग असुख्य है इन दो बातों से कुछ अधिक वर्तमान नहीं है २ हे श्रेष्ठ ! अकेले दैव अर्थात् प्रारब्धसेही संसारके कार्य पूरे नहीं होते हैं और न केवल उद्योगही से सिद्ध होते हैं इस दशामें दोनों के मिलनेसेही कार्यकी पूर्णता होती है ३ सब छोटे बड़े प्रयोजन इन्हीं दोनों बातोंसे बँधेहुये हैं और सब कार्य जारी होकर पूर्ण होते दिखाई पड़ते हैं ४ अब उन दोनोंमें प्रारब्ध की मुख्यता वर्णन करतेहैं कि पर्वतपर वर्षा करनेवाला पर्जन्य किस फलको सिद्ध नहीं करता है अर्थात विना उद्योग और उपाय के पर्वतपर अपने आप सब वस्तुओं की उत्पत्ति होती है उसी प्रकार जोतेहुये खेतमें भी किस फलको प्राप्त नहीं करता है अर्थात् उद्योग प्रारब्धके आधीन है ५ प्रारब्ध को श्रेष्ठ माननेवाले उद्योग और उद्योगसे रहित प्रारब्ध भी निष्फल होता है इन दोनोंको सर्वत्र निश्चय करते हैं इसमें प्रथम बड़ा निश्चय है ६ जैसे कि अच्छेप्रकार दैवके वर्षने और खेतके जोतनेपर बीज बड़े गुणवाला होता है उसीप्रकार मनुष्यों का भी अभीष्ट सिद्ध करना है अर्थात् दोनोंही से काम पूरा होता है ७ इन दोनोंमें दैव बलवान् है कि वह आपही विना उपायके फल देनेको प्रवृत्त होताहै इसी प्रकार सावधान और ज्ञानी मनुष्य अच्छा निश्चय करके उपायमें प्रवृत्त होते हैं ८ हे नरोत्तम ! मनुष्योंके सब कर्म उन दोनोंसेही जारी और पूरे होते देखनेमें आते हैं ९ जो उपाय किया है वह भी दैवसे ही सिद्ध होता है इसी प्रकार इन कर्मवालोंका कर्म सफल होता

है १० सावधान चतुर मनुष्योंका अच्छेप्रकार से कियाहुआ भी उद्योग जो दैवसे रहित है वह लोकमें निष्फल दिखाई देता है ११ मनुष्यों में जो लोग आलसी और असाहसी होते हैं वह उद्योगको बुरा कहते हैं उसको बुद्धिमान्लोग अच्छा नहीं मानते हैं १२ बहुधा कियाहुआ कर्म इस पृथ्वीपर निष्फल दिखाई देता है फिर दुःख होता है और कर्मको न करके बड़े फलको देखता है यह दोनों बातें बहुधा देखनेमें आती हैं १३ कर्मको न करके दैवयोगसे जो कुछ पाता है और जो कर्म करके भी फलको नहीं पाता है वह दोनों दुर्लभ हैं १४ सावधान और निरालस्य मनुष्य जीवता रहनेको समर्थ होता है और आलस्ययुक्त मनुष्य सुख से वृद्धि नहीं पाता है इस जीवलोक में कर्म करनेमें सावधानलोग बहुधा वृद्धिके चाहने वाले दिखाई देते हैं १५ जो कर्ममें सावधान मनुष्य प्रारब्ध कर्मसे कर्मफलको नहीं भोगता है उसकी कुछ निन्दा नहीं होती हैं जो प्राप्त होनेके योग्य अभीष्ट को नहीं पाता है १६ और जो अकर्मी कर्म को न करके लोक में फलको पाता है वह निन्दित होता है और बहुधा शत्रु होता है १७ जो मनुष्य इस प्रकारसे इसको निरादर करके इसके विपरीत कर्म करता है वह अपने अनर्थोंको उत्पन्न करता है यह बुद्धिमानों की नीति है १८ फिर जब उद्योग अथवा दैवसे रहित होय तब इन दोनों हेतुओंसे उपाय निष्फल होता है १९ इस लोकमें उपायसे रहित किया हुआ कर्म सिद्ध नहीं होता है जो मनुष्य देवताओं को नमस्कार करके अच्छीरीतिसे प्रयोजनों को चाहता है २० वह आलस्यसे रहित और सावधानीसे संयुक्त है कर्म की निष्फलतासे नाशको नहीं पाता है फिर अच्छे कर्मकी इच्छा यह है जो वृद्धों का सेवन करता है २१ जो अपने कल्याणको पूछता है और उनके हितकारी वचनों को करता है सदैव उठ २ कर वृद्धोंके अङ्गीकृत पुरुष पूछने के योग्य हैं २२ वह पुरुष अभीष्ट सिद्ध करनेमें बड़े तेज हैं और मूल रखनेवाली सिद्धि कहे जाते हैं जो मनुष्य वृद्धोंके वचनों को सुनकर उपायमें प्रवृत्त होता है २३ वह थोड़ेही समयमें उपायके फलको अच्छीरीतिसे पाता है जो मनुष्य राग क्रोध भय और लोभ से अभीष्टों को चाहता है २४ वह अजितेन्द्रिय और अपमान करनेवाला शीघ्रही लक्ष्मी से रहित होकर नाश होता है सो इस लोभी और अदूरदर्शी दुर्योधन ने अज्ञानतासे यह विना विचारा हुआ असमर्थ कर्म प्रारम्भ किया और निषेध करने वाले शुभचिन्तकों का अनादर करके नीचोंकी सलाह से २५ । २६ बड़े गुणवान् पाण्डवोंसे शत्रुता करी बड़ा दुःस्वभाव मनुष्य प्रथमही धैर्य करनेके योग्य

नहीं है २७ और अभीष्टके पूरे न होनेपर दुःखी होता है कि मैंने अपने मित्रोंका वचन नहीं किया हमलोग उस पापी पुरुषके पीछे चलते हैं २८ इस हेतुसे हमको भी यह भयकारी अनीति प्राप्त हुई अबतक इस दुःखसे तपाये हुये २९ मुक्त चिन्ता करनेवालेकी बुद्धि अपने कुछ कल्याणको नहीं जानती है और अचेत मनुष्य से सुहृज्जन पूछनेके योग्य हैं ३० उसमें उसकी बुद्धि और नम्रताहै और उसीमें कल्याणको देखता है इस स्थानपर पूछेहुये वह ज्ञानिलोग इसके कार्योंके मूलों को बुद्धिसे निश्चय करके ३१ जैसे कहें वैसा करना चाहिये और वह उसीप्रकार से होगा हम सबलोग जाकर धृतराष्ट्र गान्धारी और बड़े ज्ञानी विदुरजीसे मिल करके पूछें वह हमारे पूछने पर जो कहें वह निस्सन्देह हमारा कल्याण है ३२।३३ वही हमको फिर करना चाहिये यह मेरा दृढ़ मत है कार्यों के प्रारम्भ किये विना कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है ३४ फिर उपाय करने पर भी जिनका कार्य पूरा नहीं होता है वह निस्सन्देह दैवके मारे हुये हैं ३५ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिकृपसंवादेद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय॥

सञ्जय बोले हे महाराज ! तब अश्वत्थामाजी कृपाचार्यके उस वचनको जो कि अत्यन्त शुभ और धर्म अर्थसे संयुक्त था सुनकर दुःख शोकसे संयुक्त १ ज्वलित अग्निरूप के समान शोक से प्रज्वलित होकर चित्तको निर्दय करके उन दोनोंसे बोले २ कि पुरुष पुरुषमें जो २ बुद्धि होती है वही श्रेष्ठ है वह सब पृथक् पृथक् अपनी २ बुद्धिसे प्रसन्न रहते हैं ३ और सब लोकके मनुष्य अपने २ को बड़ा बुद्धिमान् मानते हैं सबकी बुद्धि बहुत अङ्गीकृत है और सब अपनी २ प्रशंसा करते हैं ४ सबकी निजबुद्धि अपनी उत्तमताके वर्णनमें नियत है दूसरेकी बुद्धिकी निन्दा करते हैं और अपनी बुद्धिकी बारम्बार प्रशंसा करते हैं ५ सभा में अन्य २ कारणों के वर्तमान होने से जिनलोगों की बुद्धि एकसी है वह परस्पर प्रसन्न होते हैं और बारम्बार अपनेको बहुत मानते हैं ६ उसी उसी मनुष्यकी वह वह बुद्धि जबतक समयके योगसे विपरीतता को पाकर परस्पर विनाशको पाती है ७ मुख्यकर मनुष्यों के चित्तकी विचित्रता से चित्त की व्याकुलता को पाकर वह वह बुद्धि उत्पन्न होती है ८ हे प्रभो ! इसीप्रकार बड़ा सावधान वैद्य बुद्धिके अनुसार रोगको जानकर औषधी देनेके द्वारा रोग की निवृत्ति के लिये

चिकित्सा करता है ९ इसीप्रकार मनुष्यभी अपने काम पूरे करने के लिये बुद्धि को करते हैं और अपनी बुद्धिसे युक्त मनुष्य उसकी निन्दा करते हैं १० मनुष्य तरुणाई में एक अन्य बुद्धिसे और सम्पूर्ण अवस्थाके मध्यमें अन्यबुद्धिसे मोहित होता है वह वृद्धावस्थामेंभी अन्यही बुद्धिको स्वीकार करता है ११ हे कृतवर्मन्! मनुष्य बड़े घोर दुःखको अथवा उसीप्रकारके ऐश्वर्यकोभी पाकर बुद्धिको विपरीत करता है १२ एकही मनुष्य में वह बुद्धि समय पर उत्पन्न होती है और समय न होनेपर उसको नहीं अच्छी लगती है और बुद्धिके अनुसार निश्चय करके जिस विचारको अच्छीरीति से देखता है उसीप्रकार का उत्साह करता है वह बुद्धि उसके उपायकी करनेवाली है हे भोजवंशिन्; कृतवर्मन्! प्रत्येक मनुष्य यह निश्चय करनेवाला है कि मेरा विचार अच्छा है और प्रसन्नचित्त होकर मारने आदिक में कर्म करना प्रारम्भ करता है १३।१४।१५ सब मनुष्य अपनी बुद्धि और चतुरताकोही जानकर नानाप्रकारके कर्म करते हैं और यही जानते हैं कि यह मेरा हितकारी कर्म है १६ अब मेरे दुःखसे उत्पन्न होनेवाला जो यह विचार पैदा हुआ है उस अपने शोक दूर करनेवाले विचार को मैं तुम दोनों से कहता हूं १७ ब्रह्माजी ने सृष्टिको उत्पन्न करके और उनमें कर्मको नियत करके हरएक वर्ण में विशेषण रखनेवाला एक २ गुण धारण किया १८ ब्राह्मणमें श्रेष्ठ वेद क्षत्रियमें श्रेष्ठ पराक्रम वैश्यमें श्रेष्ठ सावधानी कर्म और शूद्रमें श्रेष्ठ सब वर्णों का आज्ञाकारी होना कहा है १९ अजितेन्द्रिय ब्राह्मण निकृष्ट पराक्रमसे रहित क्षत्रिय निकृष्ट कार्य में असावधान वैश्य निकृष्ट और सब वर्णों की आज्ञाका न करनेवाला शूद्र निकृष्ट होकर निन्दा किया जाता है २० सो मैं ब्राह्मणों के बड़े पूजित उत्तम कुलमें उत्पन्न हुआहूं और अभाग्यतासे क्षत्रियधर्मका कर्मकर्त्ता हुआहूं २१ जो मैं क्षत्रियधर्म को जानकर और ब्राह्मणोंके शमदमादि गुणों में नियत होकर बड़े कर्मको करूं वह मेरा कर्म साधुओं से अङ्गीकृत नहीं मैं युद्ध में दिव्य धनुष और अस्त्रों को धारण करता पिताको मृतक देखकर सभामें क्या कहूंगा २२।२३ अब मैं अपनी इच्छा के अनुसार उस क्षत्रिय धर्म की उपासना करके राजा दुर्योधन और महात्मा पिता के भी मार्ग को पाऊंगा २४ अब पाञ्चालदेशी विजय से शोभित बड़े विश्वस्त सवारी और कवचों से जुदे होकर प्रसन्नतायुक्त सोते हैं २५ वह थकेहुये परिश्रम से पीड़ावान् अपनी विजयको मानकर शयन करेंगे अपने डेरों में सुखसे नियत और सोनेवाले उन पाञ्चालदेशियों के डेरों

के उस नाश को करूंगा जोकि कठिनता से करनेके योग्य है अब उन अचेत मृतकरूप पाञ्चालदेशियों को डेरेमें पराजय करके २६।२७ और पराक्रम करके ऐसे मारूंगा जैसे दानवों को इन्द्र मारता है अब उन धृष्टद्युम्न आदिक सब पाञ्चालों को एक साथही ऐसे मारूंगा २८ जैसे कि ज्वलित अग्नि सूखे वनको हे श्रेष्ठ! मैं युद्धमें पाञ्चालों को मारकर शान्तिको पाऊंगा २९ अब मैं युद्धमें पाञ्चालों को मारता पाञ्चालों के बीचमें ऐसा हूंगा जैसे कि पशुओंको मारते पशुओं के मध्य में क्रोधयुक्त पिनाक धनुषधारी आप रुद्रजी होते हैं ३० अब अत्यन्त प्रसन्न सब पाञ्चालोंको मारकाटकर उसीप्रकारसे युद्धमें पाण्डवोंको भी पीड़ावान् करूंगा ३१ अब मैं पृथ्वीको सब पाञ्चालोंके शरीरों से पूर्णकरके प्रत्येकको मारकर पिताके ऋणसे अऋणहूंगा ३२ अब मैं पाञ्चालोंको दुर्योधन कर्ण भीष्म और जयद्रथ के कठिन मार्ग में पहुँचाऊंगा ३३ अब मैं रात्रिके समय थोड़ीही देरमें पाञ्चालों के राजा धृष्टद्युम्नके शिरको ऐसे मथूंगा जैसे कि पशुके शिरको मर्दन करते हैं ३४ हे कृपाचार्यजी! अब मैं पाञ्चालदेशियों के और पाण्डवों के सोतेहुये पुत्रोंको रात्रिके समय युद्धभूमिमें तेजखड्गसे मथूंगा ३५ हे बड़े बुद्धिमन्! अब मैं रात्रि के युद्धमें उस पाञ्चालकी सेनाको मारकर कृतकृत्य होकर सुखी हूंगा ३६ ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वणि तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

कृपाचार्य बोले कि प्रारब्धसे बदला लेने में तेरी अविनाशी बुद्धि उत्पन्न हुई है आप इन्द्रभी तेरे रोकने को समर्थ नहीं है १ हम दोनों एकसाथही प्रातःकाल के समय तेरे पीछे चलेंगे अब रात्रि में कवच और ध्वजासे पृथक् होकर विश्राम करो २ मैं और यादव कृतवर्मा अलंकृत रथों पर सवार होकर तुझ शत्रुओं के सम्मुख जानेवाले के पीछे चलेंगे ३ हे रथियों में श्रेष्ठ! प्रातःकाल के समय तुम हम दोनोंके साथ सम्मुखता में पराक्रम करके शत्रु पाञ्चालों को उनके साथियों समेत मारोगे ४ तुम पराक्रम करके मारने को समर्थ हो इस रात्रिमें विश्राम करो हे तात! तुझको जागतेहुये बहुत विलम्ब हुई तब तक इस रात्रि में शयन करो ५ विश्रामयुक्त शयन से सावधानचित्त तुम युद्ध में शत्रुओं को पाकर मारोगे हे बड़ाई देनेवाले! इसमें संशय नहीं है ६ देवताओं के मध्यमें इन्द्र भी तुझ रथियों में श्रेष्ठ उत्तम शस्त्रधारी के विजय करने को उत्साह नहीं करता है ७ कृतवर्मा

से रक्षित और कृपाचार्य के साथ जानेवाले युद्धमें क्रोधयुक्त अश्वत्थामा से इन्द्र भी युद्ध नहीं करसक्ता ८ हम रात्रिमें विश्रामयुक्त शयन करनेवाले तापसे रहित प्रातःकाल शत्रुओं के लोगोंको मारेंगे ९ तेरे और मेरे दिव्य अस्त्रहैं और बड़ा धनुषधारी यादव कृतवर्मा भी युद्धों में निस्सन्देह सावधान है १० हे तात! हम तीनों एकसाथ मिलेहुये सब शत्रुओं को हठसे युद्ध में मारकर उत्तम आनन्द को पावेंगे ११ तुम सावधान होकर विश्राम करो और इस रात्रि में सुखपूर्वक शयन करो मैं और कृतवर्मा धनुषधारी शत्रुओं के तपानेवाले कवचधारी दोनों एकसाथ रथपर सवार होकर तुझ शीघ्र चलनेवाले नरोत्तम रथीके पीछे चलेंगे १२।१३इसके पीछे तुम उन्होंके डेरोंमें जाकर युद्धमें नामको सुनाकर युद्ध करनेवाले शत्रुओंका बड़ा भारी नाश करोगे १४प्रातःकालके समय उनका नाश करके ऐसे विहार करो जैसे कि महाअसुरों को मारकर इन्द्र विहार करता है १५ तुम युद्धमें पाञ्चालोंकी सेनाके विजय करने को ऐसे समर्थ हो जैसे कि सब दानवों का मारनेवाला क्रोधयुक्त इन्द्र दैत्योंकी सेनाको मारकर विहार करताहै १६ वज्रधारी समर्थ साक्षात् इन्द्र भी तुझ मेरे साथी कृतवर्मा से रक्षित को युद्धमें नहीं सहसक्ताहै १७ हे तात! मैं और कृतवर्मा युद्धमें पाण्डवों को विजय किये विना कभी लौटकर नहीं आवेंगे १८ हम सब युद्धमें क्रोधयुक्त पाञ्चालों समेत पाण्डवों को मारकर लौटेंगे अथवा मरकर स्वर्गको जायँगे १९ हे निष्पाप! हम प्रातःकाल युद्धमें सब उपायों से तेरे सहायकहैं हे महाबाहो! मैं यह तुझसे सत्य २ ही कहता हूं २० हे राजन्! मामाजी के ऐसे हितकारी वचनोंको सुनकर क्रोधसे रक्तनेत्र अश्वत्थामा ने मामाजी को उत्तर दिया २१ कि रोगी क्रोधयुक्त धनादिक के शोच करनेवाले और कामी इन लोगोंको निद्रा कहांसे होसक्ती है २२ अब यह मेरा क्रोध चौथाई उत्पन्न हुआहै वह चौथाई क्रोध दिनके अर्थ शयन का नाश करताहै २३ इस लोक में क्या दुःख है कि पिता के मरण को स्मरण करता और जलताहुआ मेरा हृदय अब दिन रात्रि शान्तिको नहीं पाताहै २४ मुख्य करके जैसे प्रकारसे मेरा पिता पापियों के हाथसे मारागया वह सब आपके नेत्रगोचर है वह मेरे मर्मों को काटताहै २५ लोक में मुझसा मनुष्य एक मुहूर्त भी कैसे जीसक्ता है जो मैं पाञ्चालों का वचन सुनता हूं कि द्रोणाचार्य मारेगये २६ मैं धृष्टद्युम्नको न मारकर जीवते रहनेको उत्साह नहीं कर सक्ताहूं वह मेरे पिताके मारनेसे काटने के योग्यहै और जो पाञ्चालदेशी इकट्ठे हैं वह सब भी वध्य हैं २७

इसके विशेष जो मैंने टूटी जंघावाले राजाका जो विलाप सुना वह किस निर्दयी के भी चित्तको नहीं भस्म करेगा २८ फिर टूटी जंघावाले राजाके उस प्रकार के वचनों को सुनकर कौनसे निर्दयी मनुष्य के अश्रुपात नहीं होंगे २९ मेरे जीवतेहुये जो यह मेरा मित्रपक्ष विजयकिया यह मेरे शोकको ऐसे बढ़ाताहै जैसे जलका वेग समुद्रको बढ़ाताहै ३० अब मेरा चित्त एकाग्रहै निद्रा और सुख कहां है हे श्रेष्ठ! मैं वासुदेवजी और अर्जुनसे रक्षित उन लोगोंको ३१ महाइन्द्रसे भी सहनेके योग्य नहीं जानताहूं और इस उठेहुये क्रोधकेभी रोकनेको समर्थ नहीं हूं ३२ मैं इस लोक में ऐसा किसीको भी नहीं देखताहूं जो मुझको मेरे क्रोध से रहित करसके इसीप्रकार साधुओं की अङ्गीकृत इस मेरी बुद्धिको भी कोई नहीं लौटासक्ता ३३ मेरे मित्रोंकी पराजय और पाण्डवों की विजय जो दूतोंने वर्णन करी वह मेरे हृदयको भस्म कररही है ३४ अब मैं रात्रि के युद्ध में शत्रुओंका नाश करके फिर ताप से रहित होकर विश्राम करके शयन करूंगा ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वणि मन्त्रणायां चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

कृपाचार्य बोले कि दुर्बुद्धि और अजितेन्द्रिय मनुष्य सुननेका अभिलाषीभी सम्पूर्ण धर्म अर्थके जाननेको समर्थ नहीं है यह मेरा मतहै १ इसी प्रकार शास्त्रों के स्मरण रखनेवाली बुद्धिका स्वामी पुरुष जबतक नीति को नहीं सीखताहै तबतक वहभी धर्म अर्थके निश्चयको नहीं जानताहै २ अत्यन्त अज्ञान शूरवीर मनुष्य बहुत कालतक भी पण्डितके पास वर्तमान सेवा करके धर्मोंको ऐसे नहीं जानताहै जैसे कि व्यञ्जनके स्वादुको चमचा नहीं जानताहै ३ ज्ञानी पुरुष एक मुहूर्तभी उस पण्डितके पास बैठकर शीघ्रही ऐसे धर्मोंको जानताहै जैसे कि दाल आदिके स्वादुको जिह्वा जानलेती है ४ बुद्धिमान् जितेन्द्रिय और सेवा करनेवाला पुरुष सब शास्त्रोंको जानताहै और ग्राह्य वस्तुओंसे विरोध नहीं करताहै ५ जो दुर्बुद्धि और पापी पुरुष है वह सच्चे मार्ग में पहुँचाने के योग्य नहीं है वह उपदेश कियेहुये कल्याणको त्याग करके बहुतसे पापोंको करताहै ६ फिर शुभचिन्तक लोग सनाथ पुरुषको पापसे निषेध करते हैं और धनका स्वामी उस पाप से लौटताहै परन्तु धनरहित पुरुष नहीं लौटताहै ७ जैसे कि विषयोंमें प्रवृत्तचित्त पुरुष नानाप्रकारके वचनोंसे आधीन कियाजाताहै उसीप्रकार शुभचिन्तक मित्र

से समझाने के योग्यहै और जो योग्य नहीं है वह पीड़ा पाताहै ८ इसी प्रकार ज्ञानीलोग पापकर्म करनेवाले बुद्धिमान् मित्रको सामर्थ्य के अनुसार बारम्बार निषेध करते हैं ९ वह कल्याण में चित्त करके और मनसे बुद्धिको आधीनता में करके उस वचनको करताहै जिसके कारणसे पीछे दुःखी नहीं होताहै १० इस लोक में सोनेवाले मनुष्यों का मारना और इसी प्रकार अशस्त्र रथ और घोड़ोंसे रहित मनुष्योंका मारना धर्मसे प्रशंसा नहीं किया जाताहै ११ जो कहे कि मैं तेराहूं जो शरणागत होय जो खुलेहुये केशहोय और जो मृतक सवारीवालाहै १२ हे समर्थ! इन सबका मारना भी निषेध है कवचसे रहित मृतकके समान अचेत विश्वासयुक्त सब पाञ्चाल लोग सोते हैं १३ जो कुटिल पुरुष उस दशावाले उन पाञ्चालदेशियों से शत्रुता करेगा वह अथाह विना नौकावाले नरकरूपी समुद्र में डूबेगा १४ तुम लोकके सब अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ विख्यात हो इस लोकमें कभी तुझ से छोटासा भी पाप नहीं हुआ १५ फिर सूर्यके समान तेजस्वी तुम प्रातःकालके समय सूर्योदय होने और सब जीवोंके प्रकट होनेपर युद्धमें शत्रुओंके लोगोंको विजय करोगे १६ मेरे मतसे तुझमें ऐसा निकृष्ट और निषिद्ध कर्म ऐसा असम्भव है जैसे कि श्वेतरङ्गवाला पक्ष रक्तवर्ण होना असम्भवहै १७ अश्वत्थामा बोले हे मामाजी! जैसा आप कहते हैं वह निस्सन्देह वैसाही है परन्तु प्रथम उन पाण्डवोंने ही इस धर्मरूपी पुलको तोड़ाहै १८ शस्त्र त्यागनेवाला मेरा पिता राजाओंके समक्षमें आपलोगोंकेभी देखतेहुये धृष्टद्युम्नके हाथसे गिरायागया १९ रथियों में श्रेष्ठ कर्ण रथचक्र के पृथ्वीमें घुसजाने पर बड़े दुःख में डूबाहुआ उस अर्जुनके हाथसे मारागया २० इसी प्रकार शस्त्र त्यागनेवाले धनुष आदिकसे रहित शन्तनुके पुत्र भीष्मजी भी शिखण्डीको आगे करके अर्जुनके हाथसे मारे गये २१ इसी प्रकार युद्धमें शरीर त्यागनेके निमित्त बैठाहुआ भूरिश्रवा राजाओं के पुकारतेहुये सात्यकीके हाथसे मारागया २२ दुर्योधन गदासमेत भीमसेन के सम्मुख होकर राजाओं के देखते अधर्म से मारागया २३ वहां अकेला नरोत्तम बहुत रथियोंसे घिरकर अधर्मयुक्त भीमसेनके हाथसे गिरायागया २४ मैंने दूतोंके मुखसे टूटी जंघावाले राजाका जो विलाप सुना वह मेरे मर्मस्थलों को काटताहै २५ इस प्रकारसे पाञ्चालदेशी लोग अधर्मी और पापी हैं जिनका कि धर्मका पुल टूट गयाहै आप इस प्रकारसे उन बे मर्यादवालोंकी निन्दा नहीं करतेहो २६ मैं रात्रिके समय निशायुद्ध में अपने पिताके मारनेवाले पाञ्चालों

को मारकर जन्म पाकर चाहै कीट पतङ्गभी होजाऊं २७ और मैं इसी हेतुसे शीघ्रता करताहूं कि जो यह मेरे कर्मकरने की इच्छाहै उस मुझ शीघ्रता करनेवाले को कहां निद्रा और सुखहै २८ वह पुरुष लोकमें न पैदा हुआहै न होगा जो कि उन पाञ्चालदेशियोंके मारने में यह मति देकर मुझको लौटावे २६ सञ्जय बोले हे महाराज, प्रतापवान्, अश्वत्थामाजी! इसप्रकार कहकर और एकान्तमें घोड़ों को जोड़कर शत्रुओं के सम्मुख गये ३० बड़े साहसी कृतवर्मा और कृपाचार्यजी दोनों उससे कहनेलगे कि किस निमित्त रथको जोड़ाहै और क्या कर्म करना चाहते हो ३१ हे नरोत्तम! तेरे साथ हम दोनों चलेंगे एकसा सुख दुःखवाले हम दोनोंपर तुमको सन्देह करना उचित नहीं है ३२ पिताके मरणको स्मरण करते अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाजी ने अपने मनका वह सत्य सत्य विचार उनसे वर्णन किया जो उसके चित्तमें करनेकी इच्छाथी ३३ तेजबाणोंसे लाखों शूरवीरोंको मारकर शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरा पिता युद्धमें धृष्टद्युम्न के हाथसे मारागया ३४ निश्चय करके अब मैं इसी प्रकार इस पापी धर्मके त्यागनेवाले राजा पाञ्चालके पुत्र धृष्टद्युम्नको पापकर्म से मारूंगा ३५ मेरे हाथसे पशुके समान माराहुआ धृष्टद्युम्न किसी प्रकारसे भी शस्त्रोंसे विजय कियेहुये लोकों को नहीं पावेगा यह मेरा मत है ३६ कवचधारी खड्ग और धनुषके उठानेवाले शत्रुविजयी उत्तम रथ रखनेवाले तुम दोनों सवार होकर मेरी प्रत्याशा करो अर्थात् मार्ग देखो ३७ हे राजन्! वह अश्वत्थामा यह कहकर रथपर सवार होकर शत्रुओं के सम्मुख गये कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा उसके पीछे चले ३८ शत्रुओं के सम्मुख जानेवाले वह तीनों ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि यज्ञमें आवाहन की हुई वृद्धियुक्त अग्नि होती है ३६ हे समर्थ! फिर वह उनके उन डेरों में गये जिसमें उनके मनुष्य अच्छी रीतिसे सो रहेथे और महारथी अश्वत्थामा द्वारस्थान को पाकर नियत हुये ४० ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वणि पञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

छठा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय! इसके पीछे उन दोनों कृतवर्मा और कृपाचार्यने द्वारस्थानपर अश्वत्थामाको नियत देखकर क्या किया उसको मुझसे वर्णन करो १ सञ्जय बोले कि वह महारथी अश्वत्थामा कृतवर्मा और कृपाचार्य को पूछकर

क्रोध से पूर्णशरीर डेरे के द्वारपर गया २ उसने वहां जाकर एक जीवको देखा जो कि बड़े शरीरवाला चन्द्रमा और सूर्य के समान प्रकाशमान द्वारपर नियत रोमहर्षण करनेवाला ३ व्याघ्र चर्मधारी बड़े रुधिरको गेरनेवाले कृष्ण मृगचर्म का ओढ़नेवाला नागोंका यज्ञोपवीत रखनेवाला ४ बहुत लम्बी स्थूल और नाना प्रकार के शस्त्रों के धारण करनेवाले भुजाओं से बड़े सर्पका बाजूबन्द बांधनेवाला ज्वालसमूहों से व्याप्तमुख ५ दंष्ट्राओं से भयानक महाभयकारी फैले हुये हज़ारों विचित्रमुखोंसे शोभायमान था ६ उसका शरीर और पोशाक वर्णन के योग्य नहीं जिसको कि देखकर सब दशामें पर्वतभी फट जायँ ७ उसके मुख, नाक, कान और हज़ारों नेत्रों से बड़ी २ ज्वाला निकलती थीं ८ उन ज्वालाओं के प्रकाश से शङ्ख चक्र गदाधारी हज़ारों श्रीकृष्ण प्रकट थे ९ उस बड़े अपूर्व सब सृष्टिके भयकारीको देखकर पीड़ासे रहित अश्वत्थामा ने उसको दिव्य अस्त्रोंकी वर्षासे ढकदिया १० उस बड़े तेजरूपने अश्वत्थामाके छोड़ेहुये बाणोंको निगला जैसे कि बड़वामुखनाम अग्नि समुद्रके जलसमूहों को निगलताहै ११ उसी प्रकार उस तेजरूप ने अश्वत्थामा के चलायेहुये बाणों को निगला फिर अश्वत्थामा ने उन अपने बाणसमूहों को निष्फल देखकर १२ ज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित शक्ति को छोड़ा वह प्रकाशमान रथ शक्ति उसको घायल करके ऐसे फटगई १३ जैसे कि प्रलय के समय आकाश से गिरी हुई बड़ी उल्का सूर्यको घायल करके फटजाती है इसके पीछे सुवर्णकी मूठ आकाशवर्ण दिव्य खड्गको १४ ऐसे शीघ्रतापूर्वक मियान से निकाला जैसे कि बिलसे प्रकाशित सर्पको निकालते हैं इसके पीछे बुद्धिमान् ने उत्तम खड्गको उस तेजरूपके ऊपर चलाया १५ वह उस तेजरूपको पाकर उसके शरीरमें ऐसे चलागया जैसे कि नौला बिवरमें घुसजाताहै इसके पीछे उस क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने इन्द्रध्वजा के समान १६ उस ज्वलितरूप गदाको उसके ऊपर चलाया उस तेजरूप ने उसको भी निगला इसके पीछे सब शस्त्रों के नाशवान् होने पर जहां तहां देखनेवाले अश्वत्थामा ने १७ आकाश को श्रीकृष्णसे पूर्ण देखा शस्त्रोंसे रहित अश्वत्थामा उस बड़े चमत्कार को देखकर १८ अत्यन्त दुःखी और कृपाचार्य के वचन को स्मरण करते बोले कि जो पुरुष अप्रिय और परिणाम में शुभदायक मित्रों के वचनोंको नहीं सुनता है वह आपत्तिको पाकर ऐसे शोचता है १९ जैसे कि मैं दोनोंको उल्लङ्घनकर अर्थात् उनके विरुद्ध कर्म करके जो अज्ञानी

शास्त्रज्ञों को उल्लङ्घन करके मारना चाहता है २० वह धर्मसे च्युत होनेवाला है इस हेतुसे कुमार्गमें माराजाता है गौ, ब्राह्मण, राजा, स्त्री, मित्र, माता, गुरु २१ निर्बल, विक्षिप्त, अन्धे, सोनेवाले, भयभीत, उठेहुये, मदमें उन्मत्त, रोगादिकों से अचेत और भूतादिकके आवेशसे मतवाले मनुष्यपर शस्त्र नहीं चलावे २२ इस प्रकार पूर्वमें बड़े बड़े लोगोंके उपदेश होतेथे सो मैंने शास्त्रके बतायेहुये सनातन मार्गको उल्लङ्घन करके २३ कुमार्ग से कर्मका प्रारम्भ करके घोर आपत्तिको पाया बुद्धिमान् लोग उस आपत्तिको घोर कहते हैं २४ जो बड़े कर्मको प्रारम्भ करके भयसे मुख को फेरताहै यहां वह कर्म सामर्थ्य और बलसे करने के योग्य नहीं २५ मनुष्य का कर्म दैवसे बड़ा नहीं कहा जाताहै कर्म करनेवाले का जो मनुष्य कर्म दैवसे सिद्ध नहीं होताहै २६ वह धर्ममार्ग से च्युत होकर आपत्ति को प्राप्त होता है ज्ञानी पुरुष प्रतिज्ञानको अविज्ञान कहते हैं २७ जो इस लोकमें किसी कार्य को प्रारम्भ करके फिर भयसे छोड़ देताहै सो अन्यायसे यह भय मेरे समक्षमें नियत हुआ २८ द्रोणाचार्यका पुत्र युद्धमें किसी दशामें भी मुख फेरने-वाला नहीं हुआ और यह बड़ा तेजरूप उत्पन्न दैवदण्डके समान सन्नद्ध है २९ मैं सब प्रकार से विचारता हुआ भी इसको नहीं जानता हूं निश्चय करके जो मेरी यह पापबुद्धि अधर्म में प्रवृत्तहै ३० उसका यह महाभयकारी फल मरणके लिये प्रकट है वह मेरा युद्ध में मुखका फेरना दैवका रचाहुआ है ३१ यहां किसी दशामें भी कोई बात उपाय करनेके योग्य नहीं सो मैं अब समर्थ और शरणके योग्य महादेवजी की शरणागत होताहूं ३२ वही मेरे इस घोर दैवदण्डका नाश करैंगा जो कि कपर्दी, देवताओंके भी देवता, उमापति, उपाधि से रहित ३३ कपालों की माला रखनेवाले रुद्र, भगनेत्र के मारनेवाले हर, उस देवताने तप और पराक्रमसे देवताओं का उल्लङ्घन किया ३४ इस हेतुसे मैं उस गिरीश और शूलधारीकी शरणागत होता हूं ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वणि षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले हे राजन्! वह अश्वत्थामा इसप्रकार अच्छे प्रकार विचार करके रथ के बैठनेके स्थानसे उतरकर नम्रतापूर्वक देवेशके सम्मुख नियत हुआ १ अश्वत्थामा बोले कि मैं अत्यन्त शुद्धचित्त से अज्ञानियों के कठिनकर्मी भेंटसे

शिवजीको पूजन करता हूं जोकि उग्र, स्थाणु, शिव, रुद्र, शर्व, ईशान, ईश्वर, गिरीश, वरद, देवभवभावन्, ईश्वर २ शितिकण्ठ, अज, शुक्र, दक्षक्रतुहर, हर, विश्वरूप, विरूपाक्ष, बहुरूप, उमापति ३ श्मशानवासी, दृप्त, महागणपति, विभु, खट्वाङ्गधारी, रुद्र, जटिल, ब्रह्मचारी ४ स्तुत, स्तुत्य, स्तूयमान, अमोघ, कृत्तिवासस, विलोहित, नीलकण्ठ, असह्य, दुर्निवारण ५ इन्द्र, ब्रह्मसृजब्रह्म, ब्रह्मचारी, व्रतवन्त, तपोनिष्ठ, अनन्त, तपतांगति अर्थात् तपस्वियों की गति ६ बहुरूप, गणाध्यक्ष, त्रिनेत्र, परिषदप्रिय, धनाध्यक्ष, क्षितिमुख, गौरीहृदयवल्लभ ७ । ८ कुमारपितर, पिंग, नन्दीवाहन, तनुवासस, अत्युग्र, उमाभूषणतत्पर ९ परसे परे जिससे कि उत्तम श्रेष्ठ नहीं है उत्तमबाण अस्त्रोंके स्वामी दिगन्त देशरक्षिण १० हिरण्यकवच, सृष्टिरक्षक, देव, चन्द्रमौलि, विभूषण ऐसे देवताके उत्तम समाधि से शरणागत होता हूं ११ अब जो इस घोर कठिन आपत्तिसे उत्तीर्ण होजाऊं उस दशामें उन शिवजी का में सर्वभूत बलि से पूजन करूंगा १२ उस शुभकर्मी महात्मा के निश्चयको योगसे जानकर आगे से स्वर्णमयी वेदी प्रकट हुई १३ हे राजन् ! तब उस वेदी में अग्नि देवता प्रकट हुये उसने दशों दिशाओं को और आकाशको अपनी ज्वालाओंसे पूर्ण किया उस स्थानपर प्रकाशितमुख और नेत्र रखनेवाले बहुतसे चरण शिर और भुजावाले रत्नजटित बाजूबंदधारी ऊंचा हाथ करनेवाले १४ । १५ द्वीप और पर्वतके स्वरूप बड़े गुण प्रकट हुये जोकि कुत्ता, वाराह और ऊंटकी सूरत, घोड़े, बैल और शृगाल के समान मुख रखनेवाले १६ रीछ, बिलार, व्याघ्र, हाथी, काग, प्लव और तोतेके समान मुख रखनेवाले १७ बड़े अजगर, हंस, दार्वाघाट और चाषके समान मुख रखनेवाले श्वेत प्रभाधारी १८ इसीप्रकार कूर्म, नक्र, शिशुमार, बड़ा मगर तिमिनाम मत्स्यके समान मुख रखनेवाले १९ वानर, क्रौंच, कपोत, हाथी, कबूतर और मद्गुके समान मुख रखनेवाले २० इसीप्रकार हाथमें कान रखनेवाले, हजार नेत्रधारी, दीर्घोदर, मांसरहित शरीर काग और बाज पक्षीके समान मुख रखनेवाले २१ हे भरतवंशिन् ! इसीप्रकार शिररहित रीछमुख प्रकाशितचक्षु जिह्वा और ज्वलितरूप कानवाले २२ ज्वालाकेश प्रकाशित देहरोम, चतुर्भुज, बहुतसे मेष और छागके समान मुख रखनेवाले २३ शङ्खवर्ण, शङ्खमुखी, इसी प्रकार शङ्खके समान कान रखनेवाले, शङ्ख मालाधारी, शङ्खध्वनिके समान शब्द रखनेवाले २४ जटाधारी, पांच शिखा रखनेवाले, मुण्ड, कृशोदर, चार दंष्ट्रा और चार जिह्वा रखनेवाले, शङ्खों के

समान कान और किरीटधारी २५ हे राजेन्द्र! उसी प्रकार मेखलाधारी, घूंघरवाले बाल, पगड़ीवाले, मुकुटधारी, सुन्दर पोशाक से अलंकृत २६ पद्म, उत्पल के मालाधारी इसीप्रकार कुमुदमालाधारी माहात्म्यसे संयुक्त सैकड़ों गुण २७ शतघ्नी, वज्र, मुसल, भुशुण्डी, पाश और दण्ड हाथमें रखनेवाले २८ पृष्ठपर कवच बांधनेवाले, विचित्र बाणसमूह रखनेवाले, ध्वजा, पताका, घण्टा और फरसा रखनेवाले २९ महापाशों से उद्यत करलकुट स्थूण और खड्गधारी, ऊंचे सर्पोंसे युक्त किरीट रखनेवाले ३० इसीप्रकार नीलवर्ण, पिङ्गलवर्ण, मुण्डमुखी अत्यन्त प्रसन्न सुवर्ण के समान प्रकाशित पार्षदोंने ३१ भेरी, शङ्ख, मृदङ्ग, झर्झर, आनक और गोमुखोंको बजाया इसीप्रकार बहुतसे गाते नाचते ३२। ३३ फांदते उछलते महारथी शीघ्रगामी मुण्ड और वायुसे चलायमान केशधारी दौड़ते ३४ और मतवाले बड़े हाथियोंके समान बारम्बार गर्जते बड़े भयानक घोररूप शूल और पट्टिश हाथ में रखनेवाले ३५ उसी प्रकार बहुत वर्ण के वस्त्र अपूर्वमाला और चन्दनसे अलंकृत रत्नजटित बाजूबन्द रखनेवाले, ऊंचा हाथ रखनेवाले ३६ ऊंधा करके शत्रुओं के मारनेवाले, असह्य पराक्रमवाले, रुधिर मज्जाओं के पान करनेवाले, मांस अँतड़ियोंके खानेवाले ३७ कर्णिकारपुष्प के समान शिखाधारी अत्यन्त प्रसन्न पिठरोदर अर्थात् थालीके समान मुख रखनेवाले, अतिह्रस्व, अतिदीर्घ, प्रलम्ब, भयानक ३८ विकट काले और लम्बे ओष्ठधारी बड़े शिश्नेन्द्रिय और वृषण रखनेवाले बहुतसे बहुमूल्य मुकुट रखनेवाले, मुण्ड जटिल ३९ उन पार्षदोंने पृथ्वीपर सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह और नक्षत्रों समेत आकाशको वर्तमान किया जो कि चारोंखानके जीवसमूहों के मारने को उत्साह करें ४० और जो तीनों लोकोंके ईश्वरों के ईश्वर निर्भय, सदैव शिवजीकी भ्रुकुटीको सहनेवाले और सदैव स्वेच्छाचारी कर्म करनेवाले ४१ अविनाशी आनन्द में अत्यन्त प्रसन्न, वचन के स्वामी, ईर्षा से रहित अष्टगुणवाले ऐश्वर्य को पाकर आश्चर्ययुक्त नहीं होते हैं ४२ भगवान् शिवजी जिन्हों के कर्मोंसे सदैव आश्चर्य करते हैं और जिन्होंने मन, वचन, कर्मसे प्रवृत्त होकर सदैव आराधन किया ४३ वह शिवजी भक्तोंको उनके मन, वचन और कर्मों के द्वारा उनकी ऐसे रक्षा करते हैं जैसे माता अपने पुत्रों की करती है बहुत से पार्षद सदैव ब्राह्मणों के शत्रुओं के रुधिर मज्जा आदिके पान करनेवाले थे ४४ और जो शास्त्र अथवा ज्ञान, ब्रह्मचर्य, तप और चित्तकी शान्ति के द्वारा सदैव चारप्रकार के अमृतका पान

करते हैं उनका ब्यौरा अन्नरूप, रसरूप, अमृतरूप, चन्द्रमण्डलरूप ४५ और जिन्होंने शिवजीकी आराधना करके उनकी सायुज्यता को पाया अर्थात् शिव रूप को पाया भगवान् महेश्वर भूत, वर्त्तमान और भविष्य के स्वामी शिवजी जिन आत्मारूप महाभूतों के समूहों को और पार्वतीजी समेत यज्ञोंको भोगते हैं वह पार्षद अनेक प्रकार के बाजे हिंस सिंहनाद घोरशब्द और गर्ज से ४६।४७ सब सृष्टिको भयभीत करते बड़े प्रकाश को उत्पन्न करते महादेवजीकी स्तुति करते बड़े तेजस्वी उस अश्वत्थामा के सम्मुख गये ४८ महात्मा अश्वत्थामा की महिमाके बढ़ानेके अभिलाषी और उसके तेजको जानना चाहते रात्रियुद्ध देखनेके उत्कण्ठित ४९ ऐसे भयानक और उग्र प्रभावाले शूल पट्टिश शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले घोररूप भूतगण चारोंओरसे आपहुँचे ५० जोकि अपने दर्शन से तीनों लोकोंके भयको उत्पन्न करें उनको देखकर महाबली अश्वत्थामाजी ने भी पीड़ा नहीं की ५१ इसके पीछे हाथ में धनुष युद्धके हस्तत्राणधारी अश्वत्थामाने आप अपनी आत्मासे आत्माको भेंट किया ५२ हे भरतवंशिन्! वहां उसकर्म में धनुषोंको समिध तेजबाणोंको पवित्रा और आत्मा समेत शरीरके दान को हव्य नियत किया ५३ इसके पीछे बड़े क्रोधयुक्त प्रतापवान् अश्वत्थामाने सोमदेवता से सम्बन्ध रखनेवाले मन्त्रके द्वारा शरीररूप भेंटको अर्पण किया ५४ हाथ जोड़ेहुये अश्वत्थामा उस रुद्र कर्मवाले अजेय महात्मा रुद्रजी को उनके रुद्रकर्मों से स्तुति करके यह वचन बोले ५५ हे भगवन्! अब मैं अंगिरावंश में उत्पन्न होनेवाले इस शरीरको आत्मारूपी अग्निमें हवन करताहूं मुझ बलिरूप को आप अङ्गीकार करिये ५६ हे विश्वात्मन्, महादेवजी! मैं इस आपत्तिमें आप की भक्ति और परमसमाधि से आपके आगे अर्पण करताहूं ५७ सब जीव आप में हैं और निश्चय करके सब जीवों में आपही हैं और आपमें प्रधानगुणों की ऐक्यता भी नियत है ५८ हे सब जीवोंके रक्षास्थान, समर्थ देवता! मुझ नियत हव्यरूपको स्वीकार करो जो शत्रु मुझसे अजेय हैं ५९ अश्वत्थामाजी यह कहकर औरशरीरकी प्रीतिको त्याग करके उस वेदीपर जिसपर अग्नि प्रकाशित थी चढ़कर अग्नि में प्रवेश करगये ६० साक्षात् भगवान् महादेवजी हँसतेहुये उस ऊंचे हाथ चेष्टारहित हव्यरूपको नियत देखकर बोले ६१ मैं जिसप्रकार सुगमकर्मा श्रीकृष्णजी की सत्यता, पवित्रता, सरलता, त्याग, तप, नियम, क्षान्ति, भक्ति, धैर्य, बुद्धि और वचन से आराधन कियागया और उस श्रीकृष्ण से अधिकतम मेरा

कोई प्रिय नहीं है ६२।६३ हे तात! तुझको जानने के अभिलाषी श्रीकृष्णजी का मान करनेवाले मैंने अकस्मात् पाञ्चालदेशियों की रक्षा करी और बहुतसी माया प्रकट कीं ६४ पाञ्चालदेशियों के रक्षाकरनेवाले मैंने उन श्रीकृष्णजी का मान किया परन्तु अब यह पाञ्चालदेशी काल से पराजय हुये हैं इससे अब इन का जीवन नहीं है ६५ भगवान्‌ने उस महात्मा से ऐसा कहकर अपने शरीरको उसमें प्रवेश किया और उसको बहुत निर्मल और उत्तम खड्ग दिया ६६ फिर भगवान्‌के प्रवेशित शरीरसे अश्वत्थामाजी तेजसे ज्वलित अग्निरूप हुये और देवताके दियेहुये तेजसे युद्धमें वेगवान् हुये ६७ साक्षात् ईश्वरके समान शत्रु के डेरे में जानेवाले उन अश्वत्थामाजी के पीछे दृष्टिसे गुप्तजीव और राक्षस चारों ओर से चले ६८ ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वणि सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले डेरे में महारथी अश्वत्थामा के जानेपर भयसे पीड़ावान् कृपाचार्य और कृतवर्मा तो लौटकर नहीं चले आये १ कहीं नीच रक्षकों से तो नहीं रोकेगये और क्या उन लोगों ने उनको नहीं देखा दोनों महारथी रात्रि के युद्ध को असह्य जानकर तो नहीं लौटे २ डेरे को मथकर और युद्धमें सोमक पाण्डवों को मारकर दुर्योधन की उत्तम पदवी को प्राप्त किया ३ क्या वह दोनों वीर पाञ्चालदेशियों के हाथ से मृतक होकर पृथ्वीपर शयन करनेवाले तो नहीं हुये? अथवा कोई उन दोनों ने कर्म भी किया? हे सञ्जय! वह सब मुझसे कहो ४ सञ्जय बोले कि डेरे में उस महात्मा अश्वत्थामा के जानेपर कृपाचार्य और कृतवर्मा डेरे के द्वारपर नियतरहे ५ हे राजन्! फिर अश्वत्थामाजी उन दोनों महारथियोंको उपाय करनेवाला देखकर बड़े प्रसन्न होकर यह वचन बोले ६ उपाय करनेवाले आप सब क्षत्रियों के नाश करने को समर्थ हैं मुख्यकर शेष बचे और सोतेहुये शूरवीरों के मारनेको फिर क्यों नहीं समर्थ होंगे ७ मैं डेरे में प्रवेश करूंगा और कालके समान घूमूंगा इस द्वारपर आनेवाला कोई मनुष्य भी जैसे प्रकार जीवता न जानेपावे ८ वैसाही आपको करना योग्य है यह मेरा दृढ़ विचार है अश्वत्थामाजी शरीरके भयको त्यागकर अन्य द्वारमें घुसकर पाण्डवोंके बड़े डेरे में पहुँचे ९ उसके स्थानोंके जाननेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त तेजसे ज्वलितरूप उन महाबाहु अश्वत्थामाजी ने प्रवेशकरके रात्रि में निद्रा में अचेत सोनेवाले सब मनुष्यों के

ओर पास भ्रमण किया १० । ११ और सुगमता से धृष्टद्युम्नके डेरेको पाया वह लौट सन्मुख होकर युद्धमें चारों ओर दौड़नेवाले युद्ध में महाकठिन कर्मों को करके बहुत श्रमित होकर सोगये थे हे भरतवंशिन्! इसके पीछे अश्वत्थामाजीने उस धृष्टद्युम्न के उस स्थान में प्रवेश करके १२।१३ शयनपर सोते हुये धृष्टद्युम्न को समीपसे देखा हे राजन्! स्वच्छ अत्यन्त अलसी से तैयार बहुमूल्य बिस्तरोंसे युक्त, बड़ी उत्तम मालाओं से अलंकृत, धूप चन्दन चूरेआदि से सुगन्धित बड़े शयनपर सोनेवाले विश्वासी और निर्भय उस महात्मा धृष्टद्युम्न को १४ । १५ चरणघात से जगाया युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न ने चरणके घातसे जगकर १६ बड़े बुद्धिमान्ने महारथी अश्वत्थामा को पहचाना बड़े पराक्रमी अश्वत्थामाने उस शयनसे उछलनेवाले धृष्टद्युम्नको १७ हाथोंसे बालों के द्वारा पकड़कर पृथ्वीपर रगड़ा हे भरतवंशिन्! तब बलसे उस अश्वत्थामाका रगड़ाहुआ वह धृष्टद्युम्न १८ भय और निद्रासे चेष्टा करने को समर्थ नहीं हुआ हे राजन्! पैरोंसे उसको कण्ठ और छातीपर दबाकर १९ पुकारते और चेष्टा करतेको पशुकी भांति मारा फिर नखों से पीड़ावान् करते उस धृष्टद्युम्नने धीरे २ अश्वत्थामासे कहा २० हे आचार्य के पुत्र! मुझको शस्त्रसे मारो विलम्ब मत करो हे द्विपादों में श्रेष्ठ! मैं आपके कारण से पवित्र लोकों को पाऊं २१ शत्रुओं का तपानेवाला बलवान् से कठिन दबाया हुआ राजा पाञ्चालका पुत्र इसप्रकार के वचनको कहकर मौन होगया २२ इसके पीछे अश्वत्थामा उसके उस धीरे से कहे हुये वचन को सुनकर बोले हे कुलकलंकिन्! गुरु के मारनेवाले के लोक नहीं हैं २३ इस हेतु से तुम शस्त्रसे मरने के योग्य नहीं हो हे दुर्बुद्धे! तुझ निर्दयी और गुरुभक्तिसे रहित के हाथसे मेरा पिता मारागया २४ इस कारण से मुझ निर्दय के हाथ से निर्दयी के समान मारने के योग्य हो जैसे कि सिंह मतवाले हाथी की ओरको गर्जता है उसी प्रकार उस वीर से इस प्रकार कहते हुये २५ क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने कठिन एँड़ियोंसे मर्मस्थलोंपर घायल किया उस मरनेवाले वीरके शब्दों से महल में २६ वह स्त्रियां उस बुद्धिसे बाहर पराक्रमवाले और डरानेवाले अश्वत्थामा को देखकर २७ भूतको निश्चय करनेवाली होकर भयसे नहीं बोलीं वह तेजस्वी उस उपायसे उस वीरको यमलोकमें पहुँचाकर २८ और सुन्दरदर्शन रथको पाकर नियत हुआ हे राजन्! वह समर्थ और बलवान् अश्वत्थामा उसके डेरे से निकलकर दिशाओं को शब्दायमान करते २९

शत्रुओं के मारने के अभिलाषी रथ की सवारी के द्वारा डेरेको गये इसके पीछे उस महारथी अश्वत्थामाके हटजाने पर ३० सब स्त्रियां अपने रक्षकों समेत पुकारीं हे भरतवंशिन्! राजा को मराहुआ देखकर अत्यन्तदुःखी ३१ सब क्षत्रिय जोकि धृष्टद्युम्नके नौकरथे पुकारे फिर उन्होंके शब्दों से सम्मुखही उत्तम २ क्षत्रिय तैयार हुये ३२ और बोले कि यह क्या बात है हे राजन्! वह भयभीत स्त्रियां अश्वत्थामा को देखकर ३३ दुःखीकण्ठ से बोलीं कि शीघ्र जावो यह राक्षस होय अथवा मनुष्य होय हम इसको नहीं जानती हैं ३४ वह राजा पाञ्चाल को मारकर रथपर नियत है उसके पीछे उन उत्तम शूरोंने अकस्मात् चारोंओरसे घेरलिया ३५ उसने उन सब चढ़ाई करनेवालों को रुद्रअस्त्र से मारा फिर उसने सब साथियों समेत धृष्टद्युम्न को मारकर ३६ समीपही शयन पर सोनेवाले उत्तमौजसको देखा उसको भी पराक्रमसे कण्ठ और छाती को दबाकर ३७ उस पुकारनेवाले शत्रुविजयी को उसी प्रकारसे मारा और युधामन्यु उसको राक्षसके हाथसे मृतक मानकर आया ३८ और वेगसे गदा को उठाकर अश्वत्थामा को हृदयपर घायल किया गदाके आघातसे घायल होकर भी अश्वत्थामा युद्धमें कम्पायमान नहीं हुआ ३९ और उसके सम्मुख जाकर उसको भी पकड़कर पृथ्वी पर गिराया उसी प्रकार इस चेष्टा करनेवाले को भी पशु के समान मारा ४० वह वीर उसको उस प्रकार से मारकर जहां तहां सोनेवाले दूसरे महारथियों की ओर गया ४१ क्रोधयुक्तने समीपही पाञ्चालदेशी वीरों को दबाकर फड़कते और कांपतेहुओं को ऐसे मारा जैसे कि यज्ञमें मारनेवाला पशुओंको मारता है ४२ इसके पीछे भागक्रमसे मार्गों को घूमते खड्गयुद्धमें कुशल अश्वत्थामाने खड्गको लेकर पृथक् २ अन्य लोगों को मारा ४३ इस प्रकार गुल्मनाम सेनाके भागमें सोनेवाले अशस्त्र और थकेहुये उन सब गुल्ममें वर्तमान लोगोंको एक क्षणभरमें मारा ४४ रुधिर से लिप्त सब शरीर कालसृष्टि में अन्तकके समान अश्वत्थामा ने शूरवीर घोड़े और हाथियों को मारा ४५ वह अश्वत्थामा तीन प्रकारसे रुधिरमें लिप्तहुये उन चेष्टा करनेवालों से, खड्ग चलाने वालों से और खड्ग के कम्पायमान होने से ४६ उस रुधिर से रक्तवर्ण प्रकाशित खड्गधारी, युद्ध करनेवाले, बड़े भयके उत्पन्न करनेवाले अश्वत्थामाका रूप राक्षसादिक के समान दिखाईपड़ा ४७ हे कौरव! जो जाग उठे वह भी शब्द से अचेत हुये और एक दूसरेको देखकर पीड़ावान् हुये ४८ उस

शत्रुविजयी के उस रूपको देखकर उसको राक्षस मानते उन क्षत्रियों ने अपने २ नेत्रों को बन्द करलिया ४६ इसके पीछे डेरे में कालके समान घूमतेहुये उस घोररूपने शेष बचेहुये द्रौपदी के पुत्र और सोमकोंको देखा ५० हे राजन्! उस शब्दसे भयभीत धनुष हाथ में लिये द्रौपदी के पुत्रों ने धृष्टद्युम्नको मरा हुआ सुनकर ५१ निर्भय के समान बाणोंके समूहोंसे अश्वत्थामाको ढक दिया इसके पीछे उस शब्दसे प्रभद्रकनाम क्षत्रिय जागउठे ५२ शिखण्डीने शिलीमुख बाणों से अश्वत्थामाको पीड़ावान् किया वह अश्वत्थामा बाणों की वर्षा करनेवाले उन वीरों को देखकर उन महारथियों को मारनेका अभि-लाषी बड़ा बलवान् शब्दको गर्जा फिर पिताके मरणको स्मरण करता अत्यन्त क्रोधयुक्त ५३ । ५४ रथसे उतरकर शीघ्रही सम्मुख गया और युद्धमें हज़ार चन्द्रमाओं के चित्रोंसे चित्रित निर्मल ढालको लेकर ५५ सुवर्ण से निर्मित दिव्य खड्गको पकड़कर द्रौपदीके पुत्रों के सम्मुख जाकर बलवान्ने सबको खड्ग से घायल किया ५६ हे राजन्! इसके पीछे उस नरोत्तमने बड़े युद्ध में प्रतिविन्ध्य को कुक्षि स्थानपर घायल किया वह मरकर पृथ्वी पर गिरपड़ा ५७ प्रतापवान् सुतसोम प्राससे अश्वत्थामाको छेदकर खड्गको उठाके अश्वत्थामा के सम्मुख गया ५८ नरोत्तम अश्वत्थामाने सुतसोम की भुजा को खड्ग समेत काटकर कुक्षिपर घायल किया वह भी टूटा हृदय होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा ५९ फिर नकुलके पुत्र पराक्रमी शतानीकने रथचक्रको दोनों भुजाओंसे घुमाकर वेग से उसको छातीपर घायल किया ६० फिर उस ब्राह्मणने चक्र छोड़नेवाले शता-नीक को घायल किया वह व्याकुल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा इसके पीछे उसके शिर को काटा ६१ फिर श्रुतकर्मा परिघको लेकर और दौड़कर अश्वत्थामाके सम्मुख गया और ढालसे युक्त वामकुक्षिपर कठिन घायल किया ६२ फिर उस अश्वत्थामाने उत्तम खड्गसे उस श्रुतकर्मा को मुखपर घायल किया वह रूपान्तर और अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ६३ फिर उस शब्दसे महारथी श्रुतकीर्तिने अश्वत्थामा को पाकर बाणोंकी वर्षा से ढकदिया ६४ उस अश्वत्थामा ने उसकी बाणवृष्टि को ढालपर रोककर कुण्डलधारी प्रकाशित शिरको शरीर से जुदा किया ६५ उसके पीछे उस पराक्रमीने सब ओरसे नानाप्रकारके शस्त्रोंकेद्वारा वीर शिखण्डीको सब प्रभद्रकों समेत घायल किया ६६ उस शिखण्डीने दूसरे शिली-मुखसे दोनों भ्रुकुटियों के मध्यमें घायल किया फिर क्रोधसे पूर्ण उस बड़े बलवान्

अश्वत्थामाने ६७ शिखण्डी को पाकर खड्ग से दो खण्ड करदिया फिर क्रोधसे पूर्ण शत्रुओंका तपानेवाला उस बड़े वेगवान् शिखण्डी को मारकर प्रभद्रकोंके सब समूहों के सम्मुख गया और राजा विराटकी जो सेना शेष थी उसपर भी चढ़ाई करनेवाला हुआ ६८ । ६९ बड़े बलवान् ने देख देखकर द्रुपदके पुत्र पौत्र और मित्रों का भी घोर नाश किया ७० खड्ग मार्ग में कुशल अश्वत्थामा ने अन्य लोगों के भी सम्मुख जाजाकर उनको खड्ग से काटा ७१ उन लोगों ने रक्तनेत्र रक्तमाला चन्दनसे अलंकृत लाल पोशाकधारी पाश हाथमें लड़के आदिक रखनेवाली अकेली काली ७२ गातीहुई नियत कालरात्रिको देखा हे राजन्! मनुष्य घोड़े और हाथियोंको पाशोंसे बांधकर जानेके अभिलाषी घोररूप ७३ बालों से पृथक् पाशों में बँधेहुये बहुत प्रकारके मृतकों के लेजानेवाले और इसी प्रकार अन्य रात्रियों में ७४ स्वप्नावस्था में सदैव बेसलाह सोतेहुये महारथियोंको लेजानेवाली उस कालीको और उस मारनेवाले अश्वत्थामाको उत्तम शूरवीरों ने सदैव देखा ७५ जबसे कि कौरवीय और पाण्डवीय सेनाका युद्ध जारीहुआ तब से लेकर उस कन्याको और अश्वत्थामा को स्वप्नमें देखा ७६ युद्ध में सब जीवधारियों को डराते और भयानक शब्दोंको गर्जते अश्वत्थामाने प्रथम दैवसे हतेहुये उन लोगोंको पीछेसे गिराया ७७ दैवसे पीड़ित उन वीरोंने उस पूर्व समयके देखेहुये स्वप्नको स्मरण करके माना कि यह वही बातहै ७८ इसके पीछे पाण्डवोंके डेरे में वह सैकड़ों और हजारों धनुषधारी उस शब्दसे जागउठे ७९ कालसे प्रवृत्त मृत्युके समान उस अश्वत्थामाने किसीके पैरोंको काटा किसीके जंघन को और कितने ही को कुक्षिपर छेदा ८० हे प्रभो! कठिन मर्दन कियेहुये शब्द करनेवाले मतवाले हाथी और हाथी घोड़ोंसे मथेहुये अन्य मनुष्योंसे वह पृथ्वी आच्छादित होगई ८१ जो लोग कि इसप्रकारसे पुकारते थे कि यह क्या है कौन है कैसा शब्द होरहा है उन सब लोगोंको प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाने पाण्डवोंके नातेदार और सृञ्जीलोग जो कि शस्त्र और कवचोंसे रहित थे उनको भी यमलोकमें भेजा ८२ । ८३ इसके पीछे उस शस्त्रसे भयभीत उछलते और भयसे पीड़ावान् निद्रासे अंधे अचेत होकर वह लोग जहां तहां गुप्त होगये ८४ और ऊरुस्तम्भ नाम रोगमें फँसे मूर्च्छा से निर्बल भयभीत कठोर शब्द करते हम पीड़ावान् हुये ८५ इसके पीछे धनुष हाथमें लिये अश्वत्थामाने भयकारी रथपर सवार होकर बाणों से अन्य मनुष्योंकोभी यमलोकमें

पहुँचाया ८६ फिर दूर से उछलते नरोत्तम आतेहुये दूसरे शूरों को भी कालरात्रि के आधीन किया ८७ उसी प्रकार रथकी नोकसे मथताहुआ वह दौड़ताथा इस के पीछे बहुत प्रकारकी बाणवृष्टियों से शत्रुओं के मनुष्योंपर वर्षा करनेलगा ८८ फिर बड़ी विचित्र सूर्य चन्द्रमा रखनेवाली ढाल और उस आकाशवर्ण खड्गके द्वारा भ्रमण करनेलगा ८९ हे राजेन्द्र! उस युद्ध में दुर्मद अश्वत्थामाने उन्होंके डेरेकोभी ऐसे छिन्नभिन्न किया जैसे कि हाथी बड़े ह्रदको करदेता है ९० हे राजन्! उस शब्द से अचेत शूरवीर उठे और निद्रा और भयसे पीड़ावान् होकर इधर उधर को दौड़े ९१ इसी प्रकार असभ्य वचन कहतेहुये अन्य लोग बड़े शब्दसे पुकारे और शस्त्र और वस्त्रोंको नहीं पाया ९२ बहुत से खुलेहुये बालवाले मनुष्योंने परस्पर नहीं पहिंचाना तब वहां उछलतेहुये कितनेही मनुष्य थककर गिरपड़े और कितनेही भ्रमण करनेलगे ९३ कितनेही लोगोंने विष्ठाको छोड़ा कितनों ही ने मूत्रको करदिया हे राजेन्द्र! हाथी घोड़े और रथोंको तोड़कर ९४ चारों ओर को दौड़े और कोई महाव्याकुलता उत्पन्न करनेवाले हुये वहां कितनेही भयभीत आदमी पृथ्वीपर सोगये ९५ उसीप्रकार उन पड़ेहुओं को हाथी और घोड़ों ने मर्दन किया हे भरतर्षभ, पुरुषोत्तम ! इस प्रकार उस नाशके वर्तमान होनेपर राक्षस ९६ लोग प्रसन्न होकर बड़े शब्दसे गर्जे हे राजन्! प्रसन्नचित्त जीवों के समूहों से किया वह शब्द सर्वत्र व्याप्त होगया ९७ उस बड़े शब्दनें सब दिशा और आकाशको पूर्ण किया उन्होंके पीड़ित शब्दोंको सुनकर भय- भीत और बन्धनों से जुदे हाथी घोड़े ९८ डेरे में मनुष्यों को खूदते मर्दन करते चारों ओर को दौड़े वहां उन चारों ओर दौड़नेवालों के चरणों से उठीहुई धूल ने ९९ रात्रिके समय उन्होंके डेरों में दूने अन्धकारको उत्पन्न किया उस अन्ध- कारके उत्पन्न होनेपर मनुष्य सब ओरसे अज्ञान हुये १०० पिताओंने पुत्रोंको नहीं जाना भाइयोंने भाइयोंको नहीं जाना हाथियोंने हाथियोंको सवारोंसे रहित घोड़ोंने घोड़ोंको दबाकर १०१ घायल और टूटे अंग किया उसी प्रकार मर्दन करते परस्पर मारते हुये वह सब घायल गिरपड़े १०२ इसी प्रकार अन्योंको भी गिराकर मर्दन किया अचेत निद्रासे युक्त अन्धकार से घिरे १०३ और कालसे प्रेरित लोगोंने वहां उनको मारा इसी प्रकार द्वारपाल द्वारोंको और गुल्मलेनेवाले लोग गुल्मोंको त्याग करके १०४ भयभीत और अचेत होकर सामर्थ्य के अनुसार भागे और परस्पर नाश होगये इसीप्रकार एक ने दूसरेको नहीं पहिंचाना १०५

अपने बान्धवों को छोड़कर दिशाओं को भागते उन लोगों के मध्यमें से दैवसे व्यथित चित्त मनुष्य पुकारे हे पिता! हे पुत्र! १०६ इसके पीछे लोगोंने गोत्र और नामों से परस्पर पुकारा और कितनेही हाहाकार करके पृथ्वीपर गिर-पड़े १०७ इस अश्वत्थामा ने युद्ध में उनको जानकर रोका और बहुतसे क्षत्रिय वारंवार घायल और अचेत १०८ और भयसे पीड़ावान् होकर डेरे से बाहर गये उन भयभीत जीवन के इच्छावान् डेरेसे निकलनेवालों को १०९ कृतवर्मा और कृपाचार्य ने द्वारस्थान पर मारा जिनके यन्त्र और कवच गिरपड़े वह खुलेहुये बाल हाथ जोड़े ११० पृथ्वीपर कम्पायमान और भयभीत थे उनमें से किसी को भी नहीं छोड़ा डेरे से बाहर निकलनेवाला कोई भी मनुष्य उन दोनों के हाथसे बचकर नहीं गया १११ हे महाराज! अश्वत्थामा प्रिय करने के अभिलाषी उन कृपाचार्य और दुर्बुद्धि कृतवर्मा ने ११२ डेरों के तीनों ओर अग्नि लगादी फिर डेरों के प्रज्वलित और प्रकाशित होने पर पिता को प्रसन्न करनेवाला अश्वत्थामा हस्तलाघवी के समान खड्ग को लेकर घूमनेलगा कितनेही आने वाले और दौड़नेवाले वीरों को ११३। ११४ खड्ग के द्वारा प्राणों से रहित किया और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ पराक्रमी अश्वत्थामा ने कितने ही शूरवीरोंको खड्ग के द्वारा मध्य से काटकर ११५ क्रोधयुक्त ने तिलकाण्ड के समान गिराया हे भरतर्षभ! अत्यन्त घायल गर्जते गिरते मनुष्य घोड़े और हाथियों से ११६ पृथ्वी आच्छादित हुई हज़ारों मनुष्यों के मरने और गिरने पर ११७ बहुत रुण्ड उठे और उठकर गिरपड़े शस्त्र और बाजूबन्द रखनेवाली भुजाओं समेत शिरको काटा ११८ और हाथी की सूंड़के समान जंघाओं को और हाथ पैरों को काटा हे भरतवंशिन्! टूटी पीठ कुक्षि और शिरवाले अन्य लोगों को गिराया ११९ उस महात्मा अश्वत्थामाने कितनेही मनुष्यों को मुखफेरनेवाला किया किसीको कानके स्थानपर और किसीको कटि स्थानपर काटा १२० किसीको कन्धे के स्थान पर घायल करके शिरको शरीर में प्रवेश किया इस प्रकार उसके घूमते और बहुत आदमियों को मारते हुये १२१ अन्धकार से वह रात्रि घोररूप महाभयानक दर्शन देखने में आई कुछ कण्ठगत प्राणवाले कुछ मृतक हज़ारों १२२ मनुष्य हाथी और घोड़ों से पृथ्वी भयानकरूप देखनेमें आई यक्ष राक्षसोंसे संयुक्त रथ घोड़े और हाथियों से भयानकरूप पृथ्वी के होनेपर १२३ क्रोधयुक्त अश्वत्थामाके हाथ से घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े कोई भाइयोंको कोई पिताओं को और पुत्रोंको पुकारता

था १२४ और कितनेही बोले कि युद्ध में क्रोधयुक्त धृतराष्ट्र के पुत्रोंनेभी वह कर्म कियाथा जो कि निर्दयी राक्षसोंने हम सोनेवालों के साथ किया है १२५ पाण्डवों के वर्तमान न होने से यह हमारा नाश किया वह अर्जुन असुर गन्धर्व यक्ष और राक्षसों से १२६ भी विजय करने के योग्य नहीं है जिसके कि रक्षक श्रीकृष्णजी हैं वह अर्जुन वेद ब्राह्मणोंका रक्षक जितेन्द्रिय और सब जीवधारियों पर कृपा करनेवालाहै १२७ वह पाण्डव अर्जुन सोनेवाले मतवाले अशस्त्र हाथ जोड़नेवाले खुले केश और भागनेवाले मनुष्योंको नहीं मारताहै १२८ निर्दयी राक्षसों ने हमारा यह नाश किया इस प्रकार विलाप करतेहुये बहुतसे मनुष्य पृथ्वीपर सोगये १२९ इसके पीछे एक मुहूर्त में ही पुकारते और गर्जतेहुये अन्य मनुष्योंका वह बहुत बड़ा शब्द बन्द होगया १३० हे राजन्! रुधिर से पृथ्वीके अच्छे प्रकार तर होनेपर वह घोर और कठिन धूलि एक क्षणमेंही दूर होगई १३१ उस क्रोधयुक्तने चेष्टा करनेवाले व्याकुल और उत्साहसे रहित हजारों मनुष्यों को ऐसे गिराया जैसे कि पशुओंको रुद्रजी गिरातेहैं १३२ उस अश्वत्थामाने पृथ्वी पर गिरेहुये मनुष्योंको परस्पर मिलकर भागनेवालोंको और कितनेही गुप्तयुद्ध करनेवालों को अत्यन्त मारडाला १३३ तब अग्नि से जलनेवाले और उस अश्वत्थामाके हाथसे घायल उन शूरवीरों ने परस्पर यमलोक में पहुँचाया १३४ हे राजन्! अश्वत्थामाने उस रात्रिके अर्धभाग में पाण्डवों की बड़ी सेनाको यमलोक में पहुँचाया १३५ वह रात्रि राक्षसोंकी प्रसन्नता बढ़ानेवाली मनुष्य घोड़े और हाथियों का भय उत्पन्न करनेवाली होकर महाकठिन नाशकारी हुई १३६ वहांपर पृथक् २ प्रकारके पिशाच राक्षस मनुष्यों के मांसको खाते और रुधिरको पीतेहुये दिखाई पड़े १३७ जो कि कराल पिङ्गलवर्ण पर्वताकार दांत रखनेवाले धूलिसे लिप्त जटाधारी लम्बे शङ्ख पांच पैर और बड़ा उदर रखनेवाले पीछेकी ओर उँगलियां रखनेवाले रूखे कुरूप भयानक शब्दवाले घण्टाजालसे युक्त नीलकण्ठ भय उत्पन्न करनेवाले १३८ । १३९ पुत्र स्त्रियों को साथ रखनेवाले निर्दयी दुर्दर्शन और दया से रहित थे वह राक्षसों के रूप भी अनेक प्रकार के देखने में आये १४० कोई रुधिरसमूहको पानकरके प्रसन्नचित्त होकर नृत्य करनेलगे और कहतेथे कि यह उत्तमहै यह पवित्रहै यह स्वादिष्ठहै १४१ भेजा मज्जा अस्थि और रुधिरको अच्छी रीति से भक्षण करनेवाले रुधिर से अच्छे प्रकार तृप्त हुये मांस से जीवनेवाले वह राक्षस अन्य लोगोंके मांसखानेसे तृप्त हुये १४२ इसीप्रकार नाना

प्रकारके मुख रखनेवाले कोई रुद्ररूप मांसभक्षी बड़ा उदर रखनेवाले राक्षस मज्जा
को पान करके चारों ओर को दौड़े १४३ वहांपर निर्दयकर्मी भयानकरूप बड़े
राक्षसों की संख्या हज़ारों किरोड़ों और अर्बुदोंथीं १४४ हे राजन्! उस बड़े नाश
प्रसन्नचित्त अत्यन्त तृप्त राक्षसों की यह संख्याथी और बहुतसे भूतगण भी इकट्ठे
हुये उसने प्रातःकाल के समय उस डेरेसे निकलनाचाहा मनुष्यों के रुधिरों से
लिप्त अश्वत्थामा का खड्ग १४५ । १४६ हाथसे चिपटाहुआ एकरूप होगया हे
प्रभो! वह अश्वत्थामा दुःखसे मिलनेवाले मार्ग में जाकर मनुष्यों के नाश में
ऐसा शोभायमान हुआ १४७ जैसे कि प्रलयकाल में सब जीवों को भस्म करके
अग्नि शोभायमान होताहै हे प्रभो! वह अश्वत्थामा प्रतिज्ञा के अनुसार उस
कर्म को करके १४८ पिताके दुष्प्राप्य मार्गको प्राप्त करता तापसे रहित हुआ वह
नरोत्तम जैसे कि रात्रि में सोनेवाले लोगों के समान डेरे में पहुँचा १४९ उसी
प्रकार मारकर डेरेके निश्शब्द होने पर डेरेसे बाहर निकला उस डेरे से निकल
उन दोनों से मिलकर १५० प्रसन्न और प्रसन्न करते उस पराक्रमीने उस सब
कर्मको वर्णन किया हे समर्थ! तब उन विजय करनेवालों ने उस प्रिय वचन
को उससे वर्णन किया १५१ कि हमने डेरेसे निकलनेवाले हज़ारों पाञ्चाल और
सृञ्जियोंको मारा वह प्रसन्नता समेत बड़े उच्चस्वरसे पुकारे और हाथकी तालियों
को बजाया १५२ सोते और अचेत सोमकों के नाश में वह रात्रि इस प्रकारकी
कठिन और भयकारी हुई १५३ निस्सन्देह समयकी लौट पौट दुःख से उल्लंघन
करने के योग्यहै जहां कि उस प्रकारके वीर हमारे मनुष्यों का नाश करके मारे
गये १५४ धृतराष्ट्र बोले कि मेरे पुत्रकी विजयमें प्रवृत्तचित्त महारथी अश्वत्थामा
ने प्रथमही इस प्रकारके कठिन कर्मको कैसे नहीं किया १५५ उस नीच दुर्योधनके
मरनेपर उस महात्मा अश्वत्थामाने किस हेतुसे उस कर्मको किया वह सब मुझसे
कहनेको योग्यहो १५६ संजय बोले हे कुरुनन्दन! निस्सन्देह उस अश्वत्थामा
ने उन पाण्डवोंके भयसे इस कर्मको नहीं किया पाण्डव केशवजी और सात्यकी
के वर्तमान न होने पर १५७ अश्वत्थामाने इस कर्म का साधन किया उनके
समक्ष में कोई मनुष्य तो क्या इन्द्रभी नहीं मारसक्काथा १५८ हे राजन्! रात्रिके
समय मनुष्यों के सोने पर ऐसा वृत्तान्तहुआ फिर पाण्डवों के लोगों का कठिन
नाश करके १५९ वह महारथी परस्पर मिलकर बोले कि दिष्ट्या दिष्ट्या अर्थात्
मुबारक मुबारक होय इसके पीछे प्रसन्न कियाहुआ अश्वत्थामा उन दोनों से

स्नेहपूर्वक मिला १६० और प्रसन्नतासे इस उत्तम और बड़े वचनको बोला कि सब पाञ्चाल और द्रौपदीके पांचो पुत्र मारेगये १६१ शेष बचेहुये सब सोमक और मत्स्यदेशी भी मेरे हाथ से मारे गये अब हम कृत्यकृत्य हैं वहांहीं चलें विलम्ब मतकरो १६२ जो हमारा राजा जीवताहै हम उससे चलकर वर्णनकरें १६३ ॥

इति श्रीमहाभारते सौप्तिकपर्वण्यष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वह तीनों सब पाञ्चाल और पांचो द्रौपदी के पुत्रों को मारकर एकसाथ ही वहां गये जहांपर कि घायल दुर्योधन था १ और जाकर कुछ शेष प्राणवाले राजाको देखा इसके पीछे रथोंसे उतरकर आपके पुत्रको मध्यवर्ती किया २ हे राजेन्द्र ! उन्होंने उस टूटी जङ्घा और प्राणों से पीड़ावान् अचेत और मुखसे रुधिर डालनेवाले राजाको पृथ्वीपर देखा ३ भयानक दर्शनवाले बहुतसे हिंसजीवोंसे युक्त और समीपसे भक्षण करने के अभिलाषी शृगालादिक के समूहों से घिरेहुये ४ खाने के अभिलाषी भेड़िया आदिकको दुःख से रोकनेवाले पृथ्वीपर चेष्टा करनेवाले कठिन पीड़ावान् ५ रुधिर से लिप्त उस प्रकार पृथ्वीपर सोनेवाले राजा दुर्योधनको देखकर मरनेसे शेष बचे शोक से पीड़ावान् तीनों वीरों ने चारोंसे उसको व्याप्त किया ६ अर्थात् अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा, रुधिरसे लिप्त श्वासलेनेवाले तीनों महारथियों से ७ संयुक्त वह राजा ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि तीनों अग्नियोंसे वेदी शोभायमान होती है इसके पीछे वह तीनों उस दशाके अयोग्य पृथ्वीपर पड़ेहुये राजाको देखकर ८ असह्य दुःखसमेत रोदन करनेलगे फिर युद्धभूमि में सोनेवाले उस राजाके मुखसे रुधिर को अपने हाथोंसे सफा करके करुणापूर्वक विलाप किया ९ कृपाचार्य बोले कि दैव का बड़ाभार नहीं है जो यह ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी राजा दुर्योधन रुधिर से लिप्त घायल हुआ पृथ्वीपर सोताहै १० इस सुवर्ण के समान प्रकाशमान सुवर्णजटित राजाकी गदाको पृथ्वीपर सम्मुख पड़ीहुई देखो ११ यह गदा प्रत्येक युद्ध में इस शूरको त्याग नहीं करती अर्थात् स्वर्ग जानेवाले यशस्वी को नहीं त्याग करती १२ सुवर्ण से अलंकृत वीरके साथ सोनेवाली इस गदाको ऐसे देखो जैसे कि महल में सोनेवाली प्रीतिमान् भार्याको देखते हैं १३ जो यह शत्रुका तपानेवाला मूर्धाभिषिक्तों के आगे प्रधानहुआ वह घायल होकर पृथ्वीकी धूलिको स्पर्श करताहै समय की विपरीतता को देखो १४ जिसके

हाथसे युद्धभूमि में मारेहुये शत्रु पृथ्वीपर सोनेवाले हुये वह मृतकशत्रुवाला यह कौरवराज शत्रुओं के हाथसे माराहुआ सोताहै १५ हजारों राजाओं के समूह जिसके भय से झुकते थे वह मांसभक्षी जीवों से घिराहुआ वीर पृथ्वीपर सोता है १६ प्रथम ब्राह्मणोंने धनके निमित्त जिस ईश्वररूपकी वर्तमान होकर प्रशंसा करी अब उसको मांसभक्षी मांसखानेके लिये वर्तमानता करके प्रशंसा करते हैं १७ संजय बोले कि हे भरतर्षभ! उसके पीछे अश्वत्थामाने उस कौरवों में श्रेष्ठ सोते हुये दुर्योधन को देखकर दयासे करुणा विलाप किया १८ हे राजाओं में श्रेष्ठ! तुमको सब धनुर्धारियों में प्रथम बलदेवजी का शिष्य और युद्ध में कुबेर के समान वर्णन कियाहै १९ हे पापों से रहित! भीमसेनने कैसे तेरे छिद्रको देखा हे राजन्! उस पापात्माने तुझ बलवान् और सदैव कर्म करनेवालेको मारा २० हे महाराज! निश्चय करके इस लोक में काल बड़ा पराक्रमी है कि हम तुझको युद्धमें भीमसेनके हाथसे माराहुआ देखते हैं २१ क्रोधयुक्त अज्ञानी पापी भीमसेन ने किस प्रकार से तुझ सब धर्मों के ज्ञाताको छलसे मारा निश्चय काल दुःखसे उल्लङ्घनके योग्यहै २२ धर्मयुद्ध में बुलाकर फिर युद्धमें अधर्मके साथ भीमसेन की गदा और पराक्रमसे तेरी दोनों जङ्घा टूटीं २३ जिसने युद्धभूमि में अधर्मसे घायल शिर पांवसे मर्दनयुक्तको देखकर ध्यान नहीं किया उस क्रोधयुक्त श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरको धिक्कारहै २४ निश्चयकरके शूरवीरलोग युद्धों में जबतक पृथ्वी वर्तमानहै तबतक भीमसेन की निन्दा करेंगे क्योंकि तुम छलसे मारेगये हो २५ हे राजन्! निश्चय करके यदुनन्दन पराक्रमी बलदेवजीने सदैव तुमसे कहा कि गदायुद्धकी विद्यामें दुर्योधन के समान कोई नहीं है २६ हे प्रभु, भरतवंशी, राजादुर्योधन! वह बलदेवजी सभाओं में तुम्हारी प्रशंसा करते हैं कि वह कौरव गदायुद्धमें मेरा शिष्यहै २७ महर्षियोंने युद्धभूमिमें सम्मुख मरनेवाले क्षत्रियकी जिस गतिको उत्तम कहा तुम उसी गतिको प्राप्तहो २८ हे पुरुषोत्तम, दुर्योधन! मैं तुझको नहीं सोचताहूं तेरे पिताको और गान्धारी को सोचताहूं जिनके कि सब पुत्र मारे गये २९ हे वीर! जो कि तुझ मरनेवाले नाथसे वह अनाथ किये गये इस पृथ्वी को सोचते वह भिक्षुकरूप होकर इस पृथ्वीपर विचरेंगे ३० यादव श्रीकृष्णजीको और दुर्बुद्धि अर्जुनको भी धिक्कारहोय आपको धर्मज्ञ जानके जिन दोनोंने तुझ घायल होनेको ध्यान नहीं किया ३१ हे राजन्! वह लज्जारहित और सब पाण्डवभी कहेंगे कि हमारे हाथसे दुर्योधन किस प्रकारसे मारागया ३२

हे पुरुषोत्तम, दुर्योधन ! तुम धन्यवादके योग्यहो जो तुम बहुधा धर्मसे शत्रुओंके सम्मुखहोकर युद्धभूमि में मारेगये ३३ जिसके जाति बान्धव और पुत्र मारेगये वह गान्धारी और ज्ञानचक्षु रखनेवाला अजेय धृतराष्ट्र दोनों किस गतिको पावेंगे ३४ कृतवर्मा को मुझको और महारथी कृपाचार्य को धिक्कार होय जो हम तुझ राजा को आगे करके स्वर्गको नहीं गये ३५ जो हम तुझ सब अभीष्टके देनेवाले रक्षक और संसारके प्रियकर्ता के पीछे नहीं जाते हैं हम नीच मनुष्यों को धिक्कार है ३६ हे नरोत्तम ! नौकरों समेत कृपाचार्य के मेरे और मेरे पिता के रत्नजटित स्थान आपही के पराक्रमसे हुये हैं ३७ मित्र और बान्धवों समेत हम लोगोंने आपकी कृपासे बहुत दक्षिणावाले अतिउत्तम बहुत यज्ञ प्राप्तकिये ३८ हम पापी कहांसे ऐसे मार्गपर कर्मकर्ता होंगे जिस मार्ग से कि तुम सब जीवों को आगे करके गये ३९ हे राजन् ! जो हम तीनों तुझ परमगति पानेवालेके पीछे नहीं जाते हैं उस हेतुसे हम भस्म होते हैं ४० स्वर्ग और अभीष्टोंसे रहित हमलोग उन राजाओंको और तेरे शुभकर्म को स्मरण करते जिस हेतु से आप के पीछे नहीं जाते हैं वह हमारा कौन कर्म होगा ४१ हे कौरवों में श्रेष्ठ, राजा दुर्योधन ! निश्चय करके हम सब महादुःखी होकर इस पृथ्वीपर विचरेंगे तुझसे पृथक् होकर हमलोगों को कहां से शान्ति और सुख प्राप्त होसक्ताहै ४२ हे महाराज ! तुम जाकर और महारथियों से मिलकर मेरे वचनसे वृद्धता और उत्तमता के विचार से पूजन करना ४३ हे राजन् ! सब धनुषधारियों के ध्वजारूप आचार्यजी को पूजकर अब मेरे हाथ से मरेहुये धृष्टद्युम्न को वर्णन करना ४४ और बड़े महारथी राजा बाह्लीक, जयद्रथ, सोमदत्त और भूरिश्रवा से मिलना ४५ उसी प्रकार स्वर्ग में प्रथम जानेवाले अन्य २ उत्तम राजाओं को मेरे वचनसे मिलकर कुशल मङ्गल पूछना ४६ संजय बोले कि अश्वत्थामाजी उस अचेत और टूटी जंघावाले राजाको इस प्रकार कहकर और सम्मुख देखकर फिर वचन बोले ४७ हे दुर्योधन ! तुम जीते हो कानों के सुखदायी वचनोंको सुनो कि पाण्डवों के सात और दुर्योधनके हम तीन शेष बचे हैं ४८ वह पांचो भाई केशवजी और सात्यकी हैं उसी प्रकार मैं कृतवर्मा और तीसरे शारद्वत कृपाचार्यजी शेष हैं ४९ हे भरतवंशिन् ! द्रौपदी के सब पुत्र धृष्टद्युम्नके पुत्र सब पाञ्चाल और शेष बचेहुये सब मत्स्यदेशी मारेगये ५० बदलेके कर्मको देखो और पाण्डव असन्तान हैं रात्रि के युद्ध में मैंने उनका डेरा सब मनुष्यों समेत नाश

कर दिया ५१ हे राजन्! मैंने रात्रि में डेरे में प्रवेश करके यह पापकर्ता धृष्टद्युम्न पशु के समान मारा ५२ दुर्योधन उस चित्तके प्रियवचनको सुनकर और सचेत होकर यह वचन बोला ५३ कि मेरा वह कर्म न भीष्मजी ने न कर्णने और न आपके पिताने किया जो अब कृपाचार्य और कृतवर्मा समेत तुमने किया ५४ वह नीच सेनापति शिखण्डी समेत मारागया इस हेतु अब मैं आपको इन्द्रके समान मानताहूं ५५ कल्याणको पाओ तुम्हारा भला होय अब स्वर्ग में हमारा तुम्हारा फिर मिलाप होगा वह बड़ा साहसी कौरवराज इस प्रकार कहकर मौन हुआ ५६ और मित्रोंके दुःखको उत्पन्न करते उस वीरने अपने प्राणोंका त्याग कर पवित्र स्वर्गको गया और शरीर पृथ्वीपर रहा ५७ हे राजन्! इसप्रकार आप के पुत्र दुर्योधन ने मरणको पाया वह शूर युद्धमें प्रथम जाकर फिर शत्रुओं के हाथसे मारागया ५८ इसी प्रकार उससे मिलेहुये वहलोग फिर मिलकर राजा को वारंवार देखते अपने अपने रथोंपर सवारहुये ५९ इसप्रकार अश्वत्थामाके करुणा-रूप वचनों को सुनकर शोकसे पीड़ित वह तीनों प्रातःकाल के समय नगरकी ओर शीघ्रतासे चले ६० हे राजन्! आपके कुमन्त्र होनेपर इस प्रकार कौरव और पाण्डवों का यह घोर और भयकारी मारनेवाला नाश वर्तमान हुआ ६१ हे निष्पाप! शोक से पीड़ित आपके पुत्र के स्वर्ग जानेपर अब व्यासऋषिका दिया हुआ वह दिव्यदर्शन और दिव्यनेत्र विनाशमान हुये ६२ वैशम्पायन बोले कि तब वह राजा धृतराष्ट्र पुत्र के मरण को सुनकर लम्बी और उष्ण श्वासों को लेकर महाचिन्तायुक्त हुआ ६३ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिदुर्योधनप्राणत्यागेनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि उस रात्रिके व्यतीत होनेपर धृष्टद्युम्नके सारथी ने युद्धमें होनेवाले नाशको धर्मराज के सम्मुख वर्णन किया १ सारथी बोला हे राजन्! रात्रि के समय अपने डेरे में सोनेवाले विश्वासयुक्त अचेत सोतेहुये द्रौपदी के पुत्र द्रुपद के पुत्रों समेत मारे गये २ निर्दयी कृतवर्मा गौतम कृपाचार्य और पापी अश्वत्थामाके हाथसे रात्रिके समय आपका डेरा नाश हुआ ३ प्रास शक्ति और फरसों से हज़ारों मनुष्य घोड़े और हाथियोंको मारनेवाले इन तीनों से आपकी सेना मारीगई ४ हे भरतवंशिन्! फरसों से कटतेहुये बड़े वनकी समान आपकी सेनाके बड़े शब्द सुनेगये ५ हे बड़ेज्ञानिन्! केवल मैंही अकेला उस सेनामेंसे बचा

हूं हे धर्मात्मन् ! मैं उस दुष्ट कृतवर्मा से किसी प्रकार करके बचगया ६ कुन्ती का पुत्र अजेय युधिष्ठिर उस दुःख शोक के वचनको सुनकर पुत्रशोक से युक्त होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा सात्यकी भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव ने उस गिरते हुये राजाको पकड़लिया ७ । ८ फिर सचेत होकर शत्रुओंका विजय करनेवाला युधिष्ठिर शोकसे व्याकुल दुःखसे पीड़ावान् के समान विलाप करने लगा ६ अर्थों की गति दुःखसे जानने के योग्यहै जो दिव्यचक्षु रखनेवाले हैं उनको भी अन्य लोग पराजित होकर विजय करते हैं विजय करनेवाले हम लोग विजय किये गये १० भाई समान अवस्थावाले पिता पुत्र मित्रवर्ग बान्धव मन्त्री और पोतों समेत सबको मारकर भी हम दूसरों से विजय कियेगये ११ निश्चय करके अनर्थ अर्थरूप है उसी प्रकार अनर्थ अर्थको दिखलानेवाला है यह विजय पराजयरूपहै इस हेतुसे विजयही पराजय है १२ जो दुर्बुद्धि विजयकरके पीछे आपत्तिमें बँधेहुये के समान दुःखी होताहै वह किस प्रकार विजयको माने इस हेतु से शत्रुके हाथसे अत्यन्त पराजित है १३ मित्रों के नाशसे विजय का पाप जिनके निमित्त होय पराजितहुये चतुर सावधान मनुष्यों करके विजय से शोभायमान आदमी विजय कियेगये १४ युद्ध में कर्णिनालिक नाम बाण के समान डाढ़रखनेवाले खड्गकी समान जिह्वा धनुष के समान चौड़ामुख रुद्ररूप प्रत्यञ्चा और तलके समान शब्दवाले १५ क्रोधयुक्त युद्धों में मुख न फेरनेवाले नरोत्तम कर्ण के हाथ से जो बचे वह सब शूरवीर अचेततासे मारेगये १६ रथरूप ह्रद बाणवृष्टिरूप तरङ्गवाले वृक्षोंसे पूर्ण घोड़े और सवारियोंसे युक्त शक्ति वा दुधारे खड्गरूप मछली ध्वजारूप सर्प और नक्र धनुषरूप भँवर बड़े बाणरूपी फण रखने-वाले १७ युद्धरूप चन्द्रोदय तीव्रतारूप किनारेवाले ज्यातल और नेमियोंके शब्द-वाले द्रोणाचार्यरूपी समुद्रको जिन राजकुमारोंने नानाप्रकार के शस्त्ररूपी नौ-काओंके द्वारा तरा वह प्रमादसे मारेगये १८ इस जीवलोकमें मनुष्यों के मरणका कारण प्रमत्ततासे अधिक कोई नहीं है प्रमत्त अर्थात् अचेत मनुष्यको धनादिक अर्थ चारों ओर से त्याग करते हैं और निर्धनतारूप अनर्थ प्रवेश होते हैं १६ उत्तम ध्वजा की नोक सूरत उँचाई रखनेवाली बाणरूप ज्वालावाली क्रोधरूप वायुकी तीव्रता रखनेवाली बड़े धनुषकी ज्यातल और नेमी के शब्दसे युक्त कवच और नानाप्रकार के शस्त्ररूप हवन रखनेवाली बड़ी सेनारूप दावानलसे संयुक्त खड़ेहुये शस्त्ररूप कठिन तीव्रतावाली भीष्मरूप अग्नि की भस्म ताको जिन

राजकुमारोंने बड़े युद्धमें सहा वह सब अचेततासे मारेगये २०।२१ प्रमत्त मनुष्य को विद्या तप धन और उत्तम कीर्ति नहीं प्राप्त होसक्ती है सावधानी से सब शत्रुओं को मारकर सुखसे वृद्धि पानेवाले महाइन्द्रको देखो २२ इन्द्रके समान राजाओं के पुत्र पौत्रादिकों को अत्यन्त अचेततासे ऐसे मराहुआ देखो जैसे कि धनकी वृद्धिवाला व्यापारी समुद्रको तरकर छोटी नदी में डूबजाय २३ क्रोधयुक्त पुरुषों ने जो सोते वीरोंको मारा वह निस्सन्देह स्वर्ग को गये मैं द्रौपदी को सोचता हूं अब वह पतिव्रता निर्भय होकर किस प्रकारसे शोचरूपी समुद्रमें डूबगई २४ भाई बेटे और वृद्ध पिता राजा पाञ्चाल को मृतक सुनकर निश्चय करके विमोहित होकर पृथ्वीपर गिरेगी शोकसे कृशांग यष्टीशरीर वह द्रौपदी शुष्क होरही है २५ सुखोंके योग्य वह द्रौपदी पुत्र और भाइयों के मरने से व्याकुल अग्निसे जलती हुई के समान उस शोकजन्य दुःखसमुद्र से पार न होकर कैसी दशावाली होगी २६ इस प्रकार विलाप करता वह कौरवराज युधिष्ठिर नकुल से बोला जाओ उस मन्दभागिनी राजपुत्री को उसके मातृपक्षियों समेत यहां लाओ २७ नकुल धर्मरूप राजाके वचनको धर्म से अङ्गीकार करके रथकी सवारी से देवी द्रौपदी के उस स्थान को गया जहांपर राजा पाञ्चाल की भी स्त्रियां थीं २८ नकुलको भेजकर शोकसे पीड़ावान् रोदन करते युधिष्ठिर उन सुहृदों समेत पुत्रोंकी युद्धभूमिको गया जो कि भूतगणों से युक्त था २९ उसने उस कल्याणरूप और उग्ररूप युद्धभूमि में प्रवेश करके पुत्र सुहृद और मित्रों को पृथ्वीपर सोते रुधिर से लिप्त अंग टूटे शरीर और टूटे शिर देखा ३० वह धर्मधारियों में और कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर उनको देखकर अत्यन्त पीड़ावान् सूरत उच्चस्वर से पुकारा और साथियों समेत अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे राजन्, जनमेजय! वह युधिष्ठिर युद्धमें मरेहुये उन पुत्र पौत्र और मित्रों को देखकर बड़े दुःखसे पूर्णचित्त हुआ १ इसके पीछे बेटे पोते भाई और अपने मनुष्योंका स्मरण करतेहुये उस महात्माको बड़ाशोक उत्पन्न हुआ २ तब अत्यन्त व्याकुल सुहृदोंने उस अश्रुओंसे पूर्ण कम्पायमान और अचेत राजाको विश्वास कराया ३ उसके पीछे समर्थ नकुल बड़ी पीड़ित द्रौपदीसमेत

सूर्यके समान प्रकाशमान रथकी सवारीसे एक क्षणमें सम्मुख आया ४ तब उपप्लवी स्थानपर वर्तमान वह द्रौपदी सब पुत्रों के अप्रिय नाशको सुनकर बड़ी पीड़ित हुई ५ हवासे चलायमान केलेके समान कंपायमान वह द्रौपदी राजा को पाकर शोकसे शोकमें पीड़ित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ६ उस प्रफुल्लित पद्म-पलाश के समान नेत्रवाली द्रौपदीका मुख अकस्मात् शोक से ऐसे पीड़ित हुआ जैसे कि अँधेरे से ढकाहुआ सूर्य होताहै ७ इसके पीछे क्रोधयुक्त सत्यपरा-क्रमी भीमसेनने दौड़कर उस गिरीहुई द्रौपदीको पकड़लिया ८ भीमसेन से विश्वसित उस तेजस्विनी रानी द्रौपदीने भाइयोंसमेत युधिष्ठिरसे यह वचन कहा ९ कि हे राजन्! तुम निश्चय करके क्षत्रियधर्मसे अपने पुत्रोंको यमराजके लिये देकर प्रारब्धसे इस सम्पूर्ण पृथ्वीको भोगोगे १० हे राजन्! तुम प्रारब्धसे कुशलहो और सब पृथ्वी को पाकर मतवाले हाथीके समान चलनेवाले अभिमन्यु को स्मरण नहीं करोगे ११ तुम क्षत्रियधर्मसे गिरायेहुये शूरपुत्रों को सुनकर प्रारब्ध से मुझ समेत उनको उपप्लवी स्थान पर स्मरण नहीं करो गे १२ हे राजन्! पापकर्मी अश्वत्थामाके हाथसे सोनेवालों के मारने से शोक मुझको ऐसे त-पाताहै जैसे कि स्थानको अग्नि संतप्त करताहै १३ अब जो युद्धमें तेरे हाथ से उस पापकर्मी अश्वत्थामाका उसके साथियों समेत जीवनहरण नहीं किया जाताहै तो इसी स्थानपर शरीर त्यागने के निमित्त आसन बिछाकर बैठूंगी हे पाण्डव! जो अश्वत्थामा इस दुष्टकर्म के फलको नहीं पाताहै तो निश्चय इसी मेरी बातको जानो १४ । १५ इसके पीछे वह द्रुपदकी पुत्री यशवन्ती कृष्णा धर्मराज युधिष्ठिर से ऐसा कहकर आसनपर बैठगई १६ उस धर्मात्मा राजर्षि पाण्डव ने उस सुन्दर दर्शन प्यारी पटरानी द्रौपदी को शरीर त्यागने के नि-मित्त आसनपर बैठीहुई देखकर यह उत्तर दिया १७ कि धर्मोंकी जाननेवाली शुभ द्रौपदी वह तेरे पुत्र और भाई धर्मरूप मरणको प्राप्तहुये उनका शोच करना तुमको योग्य नहीं है १८ हे कल्याणि! वह अश्वत्थामा यहां से दुर्गम्य दूर वनको गया हे शोभने! तुम युद्ध में उसके मरने को कैसे जानोगी १९ द्रौपदी बोली कि मैंने शरीर के साथ उत्पन्न होनेवाला मणि अश्वत्थामाके शिरपर सुना है युद्ध में उस पापीको मारकर लायेहुये उस मणिको देखूंगी २० हे राजन्! उसको आपके शिरपर धारण करके जीऊंगी यह मेरा मत है वह सुन्दर दर्शन द्रौपदी राजासे इस प्रकार कहकर २१ फिर भीमसेनके पास आकर उत्तम वचन

बोली हे समर्थ ! तुम क्षत्रियधर्म को स्मरण करतेहुये मेरी रक्षा करनेके योग्य हो २२ उस पापकर्मी को ऐसे मारो जैसे कि इन्द्र ने शम्बर को मारा था यहां कोई दूसरा पुरुष आपके पराक्रम के समान नहीं है २३ सब लोकों में सुना गया है कि जिस प्रकार वारणावत नगरके मध्यमें महाआपत्ति में तुम पाण्डवों के रक्षकहुये २४ उसी प्रकार हिडम्ब राक्षसके देखने में तुम गतिहुये इसी प्रकार विराटनगरमें कीचक के भयसे पीड़ित मुझ को भी तुमने दुःखसे ऐसे छुड़ाया २५ जैसे कि पुलोमकी पुत्री इन्द्राणी को दुःख से छुड़ाया था हे पाण्डव ! जैसे कि पूर्व समयमें तुमने इन कर्मोंको किया है २६ उसी प्रकार उस मारनेवाले अपने शत्रु अश्वत्थामाको मारकर सुखी हो उसके विलाप कियेहुये बहुत प्रकारके दुःख को सुनकर २७ बड़े बलवान् पाण्डव भीमसेन ने नहीं सहा और स्वर्णमयी बड़े उत्तम रथपर सवार हुआ २८ बाण प्रत्यञ्चासमेत सुन्दर जड़ाऊ धनुषको लेकर नकुलको सारथी करके अश्वत्थामाके मारने में प्रवृत्त होनेवालेने २९ बाणसमेत धनुषको टंकारकर शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया हे पुरुषोत्तम ! वह सधेहुये वायुके समान वेगवान् ३० शीघ्रगामी हरिजात के घोड़े तीव्रता से जल्द चलदिये वह अजेय महापराक्रमी भीमसेन अपने डेरे से रथके चिह्न को लेकर तीव्रता से अश्वत्थामाके रथकी ओर शीघ्र चला ३१ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि उस अजेय भीमसेन के प्रस्थान करनेपर यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर से बोले १ हे पाण्डव ! पुत्रके शोकसे पूर्ण यह तेरा भाई युद्धमें अश्वत्थामा के मारने का अभिलाषी अकेलाही दौड़ता है २ हे भरतर्षभ ! यह भीमसेन सब भाइयों से अधिक तुमको प्यारा है अब तुम उस आपत्ति में फँसे हुयेकी क्यों नहीं रक्षा करते हो ३ मेरी बड़ी गुप्त बातको सुनो और सुनकर फिर कर्म को करो जब शत्रुओं के पुरके विजय करनेवाले द्रोणाचार्य ने जो उस ब्रह्मशिरनाम अस्त्रका पुत्रको उपदेश किया जो पृथ्वी को भी भस्म करसक्ता है ४ । ५ सब धनुषधारियों के ध्वजारूप महात्मा महाभाग प्रसन्नचित्त आचार्यजी ने वह अस्त्र अर्जुनको बतलाया क्रोधयुक्त अकेले पुत्रने भी इस अस्त्र को चाहा ६ जो कि उससे अत्यन्त प्रसन्नचित्त नहीं थे इस हेतु से उन्होंने उस दुर्बुद्धि पुत्रकी चपलता जानकर सिखला तो दिया ७ परन्तु

सर्वधर्मज्ञ आचार्यजी ने उस पुत्रको शिक्षापूर्वक आज्ञा दी कि हे पुत्र ! युद्ध में बड़ी आपत्ति में फँसनेपर भी तुझको भी ८ यह अस्त्र छोड़ने के योग्य नहीं है और विशेषकर मनुष्योंके ऊपर तो कभी न छोड़ना यह कहकर फिर पुत्रसे यह वचन कहा ९ कि तुम कभी सत्पुरुषों के मार्ग में नियत नहीं होगे हे पुरुषोत्तम, युधिष्ठिर ! तब दुष्ट अन्तःकरणवाला पिताके अप्रिय वचन को जानकर सब कल्याणों से निराश होकर शोक से पृथ्वीपर घूमा द्वारका में आकर यादवोंसे परमपूजित होकर बसा वह एक समय द्वारकाके सम्मुख समुद्र के पास निवास करता हुआ अकेला ही हँसकर मुझ से बोला १० । १२ कि हे श्रीकृष्णजी ! बड़े तपको करते भरतवंशियोंके आचार्य सत्यपराक्रमी मेरे पिताने जो उस ब्रह्मशरनाम अस्त्रको जो कि देवता और गन्धर्वोंसे पूजितहै अगस्त्यजी से पाया १३ । १४ हे श्रीकृष्णजी ! अब वह वैसेही मेरे भी पास है जैसे कि पिताके पास है हे यादवों में श्रेष्ठ ! तुम उस दिव्य अस्त्रको मुझसे लेकर १५ मुझको भी वह चक्र अस्त्र दो जो कि युद्धमें शत्रुओंका मारनेवाला है हे भरतर्षभ, राजा युधिष्ठिर ! वह हाथ जोड़कर बड़े उपायपूर्वक मुझसे अस्त्र मांगनेवाला हुआ तब मुझ प्रसन्नचित्त ने उससे कहा कि देवता, दानव, गन्धर्व, मनुष्य, पक्षी, सर्प १६ । १७ यह सब मिलकर भी मेरे पराक्रमके सोलहवें भाग के समान नहीं हैं यह धनुष है, यह शक्ति है, यह चक्र है, यह गदा है १८ इनमें से जिस अस्त्र को तुम मुझ से चाहते हो उसको मैं तुमको देता हूं जिसको तुम उठासक्ते हो और युद्ध में चला भी सक्ते हो १९ आप जिस अस्त्रको मुझे देना चाहते हो उसके दिये ही इनमें से जो चाहो सो लो तब मुझ से ईर्षा करनेवाले उस महाभाग ने सुन्दर नाभि और हजार आरा रखनेवाले वज्रनाम लोहमयी चक्र को मुझसे मांगा तब मैंने भी उसी समय कहदिया कि चक्रको लो २०।२१ तब उसने उठकर अकस्मात् बायें हाथ से चक्रको पकड़लिया परन्तु उसको स्थानपर से हटाने को समर्थ नहीं हुआ २२ फिर दक्षिण हाथ से भी उसको पकड़ना प्रारम्भ किया इसके पीछे अनेक उपायोंसे भी उसको उठा न सका २३ फिर बड़ा दुःखीचित्त अश्वत्थामा जब कि सब पराक्रम करने से भी उसके उठाने और हटाने को भी समर्थ नहीं हुआ २४ और वह उपायों को करके थककर अलग होगया तब मैंने उस अभिलाष से चित्त उठानेवाले विमन २५ और व्याकुल अश्वत्थामा से यह वचन कहा कि जिस गांडीव धनुष, श्वेत घोड़े

और हनुमान्‌जीकी ध्वजा रखनेवाले अर्जुनने देवता और मनुष्योंके मध्यमें बड़े प्रमाणको पाया और जिसने पूर्व समय में साक्षात् प्रधान देवताओं के ईश्वर शितिकण्ठ उमापति २६। २७ शंकरजी को द्वन्द्वनाम युद्ध में प्रसन्न किया उससे अधिक इस पृथ्वीपर मेरा दूसरा कोई प्रिय नहीं है २८ स्त्री और पुत्रादिक भी उसको देनेके अयोग्य नहीं हैं हे ब्राह्मण ! उस सुगमकर्मी मेरे मित्र अर्जुन ने भी २९ प्रथम मुझसे यह वचन नहीं कहा जो तुमने मुझसे कहा है मैंने हिमालय की कुक्षिमें नियत होकर बारह वर्ष बड़े घोर ब्रह्मचर्य को करके तपके द्वारा जिसको प्राप्तकिया और जो सदैव व्रत करनेवाली रुक्मिणी में उत्पन्न हुआ ३०।३१ तेजस्वी सनत्कुमार प्रद्युम्न नाम मेरा पुत्र है उसने भी इस बड़े दिव्य और युद्ध में अनुपम चक्र की इच्छा नहीं की ३२ हे अज्ञ ! जिसको तैंने मांगा है उसको कभी हमारे बड़े बलदेवजी ने भी नहीं मांगा था जो तैंने मांगा है वह गद और साम्बने भी नहीं मांगा और अन्य वृष्णी अन्धकवंशी द्वारकावासी महारथियोंने भी ३३ पूर्व में इसको कभी नहीं मांगा तुम भरतवंशियों के आचार्य के पुत्रहो और सब यादवों से प्रशंसनीय हो ३४ हे रथियों में श्रेष्ठ, तात ! तुम चक्रसे किसके साथ युद्ध करोगे मेरे इस वचनको सुनकर अश्वत्थामा ने मुझको यह उत्तर दिया ३५ कि हे श्रीकृष्ण ! मैं आपका पूजन करके आपही के साथ लड़ूंगा मैंने देवता और दानवों से पूजित आपके चक्रकी याचना करी है ३६ और हे समर्थ ! मैं आपसे सत्य २ कहता हूं कि मैं अजेय हूं हे केशवजी ! आपसे दुष्प्राप्य मनोरथको न पाकर चला जाऊंगा ३७। ३८ हे गोविन्दजी ! आप मुझको कल्याण के साथ नमस्कार करो तुझ उत्तम और अनुपम चक्रवाले ने यह भयानकरूपों का भी भयानक चक्र धारण किया है ३९ पृथ्वीपर दूसरा इसको नहीं पासक्ता है अश्वत्थामा इस प्रकार मुझ से कहकर और समयपर मुझ से घोड़े, धन ४० और अनेक प्रकार के रत्नों को लेकर हस्तिनापुर को चलागया वह क्रोधयुक्त दुर्बुद्धि चालाक और निर्दयी है और ब्रह्मशर अस्त्र को जानता है भीमसेन उससे रक्षा के योग्य है ४१ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणियुधिष्ठिरकृष्णसंवादेद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि युद्धकर्ताओं में श्रेष्ठ और सब यादवों के प्रसन्न करने

वाले श्रीकृष्णजी इस प्रकार कहकर उस उत्तम रथपर सवार हुये जो कि उत्तम अस्त्र शस्त्रों से युक्त स्वर्णमयी मालाधारी काम्बोजदेशी घोड़ों से जुड़ाहुआ था और जिसके उत्तम धुर उदयहुये सूर्यके स्वरूप थे १।२ शैब्यनाम घोड़ेने दक्षिण चक्र को उठाया और सुग्रीवनाम घोड़ा बाईं ओर हुआ और उस रथके पार्श्व-वाहक मेघपुष्प वलाहकनाम घोड़े हुये ३ विश्वकर्माकी बनाई हुई रत्न और धातु से अलंकृत दिव्य और उन्नत यष्टी रथकी ध्वजापर माया के समान दिखाई पड़ी ४ प्रकाश मण्डलरूप किरण रखनेवाले गरुड़जी उस ध्वजामें नियत हुये उस सत्यवक्ता की ध्वजा गरुड़रूप दिखाई पड़ी ५ उसके पीछे सब धनुषधारियों की ध्वजा केशवजी सत्यकर्मी अर्जुन और कौरवराज युधिष्ठिर रथपर सवार हुये ६ समीप वर्तमान दोनों महात्माओं ने रथपर सवार शार्ङ्गधनुषधारी श्रीकृष्णजी को ऐसे शोभायमान किया जैसे कि दोनों अश्विनीकुमारोंने इन्द्र को शोभित किया था ७ श्रीकृष्णजी ने उन दोनों को उस पूजित रथपर बैठा कर शीघ्रगामीपने से संयुक्त उत्तम घोड़ों को चाबुक से ताड़ित किया ८ पाण्डव और यादवोत्तम श्रीकृष्णजी से सवारी युक्त उत्तम रथको वह घोड़े लेकर अकस्मात् उड़े ९ श्रीकृष्णजी को लेचलनेवाले शीघ्रगामी घोड़ों के ऐसे बड़े शब्द हुये जैसे कि उड़तेहुये पक्षियों के शब्द होते हैं १० हे भरतर्षभ ! उन वेगवान् नरोत्तमोंने बड़े धनुषधारी भीमसेन की ओर चलकर क्षणभर में ही उसको पाया ११ वह महारथी मिलकर भी उस क्रोधसे प्रकाशित और शत्रुसे युद्ध करने को सन्नद्ध भीमसेन के रोकने को समर्थ नहीं हुये १२ वह भीमसेन उन दृढ़ धनुषधारी श्रीमान् भाइयों और श्रीकृष्णजी के देखतेहुये अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा श्रीगंगाजी के तटपर गये १३ जहांपर कि महात्माओं के पुत्रों के मारनेवाले अश्वत्थामा सुनेगये थे उस भीमसेनने जलके समीप महात्मा यशवान् १४ व्यासजीको ऋषियों समेत बैठाहुआ देखा और उस निर्दयकर्मी घृत से मर्दित शरीर बड़े चीरधारी १५ धूलसे लिप्त शरीर अश्वत्थामाको भी समीप बैठाहुआ देखा वह कुन्तीका पुत्र महाबाहु भीमसेन धनुषबाणको लेकर उसके सम्मुख दौड़ा १६ और तिष्ठ २ वचन कहा वह अश्वत्थामा धनुषधारी भीमसेन को देखकर १७ और पीछे श्रीकृष्णजी को रथपर नियत दोनों भाइयों को देखकर चित्त से पीड़ितहुये और मृत्युको वर्तमान जाना १८ उस महा-साहसीने उस दिव्य महाउत्तम अस्त्रको स्मरण किया और बायें हाथसे एक सींक

को पकड़ा १९ और उस आपत्ति को प्राप्त होकर दिव्य अस्त्रको पढ़ा और दिव्य शस्त्र धारण करनेवाले उन शूरों को न सहकर उन अश्वत्थामाजी ने २० क्रोध से भयकारी वचन को कहा कि यह अस्त्र मैं पाण्डवोंके नाशके निमित्त छोड़ता हूं हे राजेन्द्र! प्रतापवान् अश्वत्थामा ने यह कहकर २१ सब लोक के बड़े मोह के निमित्त उस अस्त्रको छोड़ा इसके पीछे उस सींकमें काल और यमराजके समान तीनों लोकों की भस्म करनेवाली अग्नि उत्पन्न हुई २२॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिऐपिकेब्रह्मशिरोस्त्रत्यागेत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

चौदहवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि महाबाहु श्रीकृष्णजीने प्रथमहीसे उस अश्वत्थामाके उस मनके विचारको जानकर अर्जुन से कहा १ कि हे पाण्डव! अर्जुन जो द्रोणाचार्य का उपदेश किया हुआ वह दिव्य अस्त्र वर्तमान है उसका यह समय वर्तमान हुआ है २ हे भरतवंशिन्! तुम भी इस युद्धभूमि में अपनी और अपने भाइयों की रक्षाके लिये अस्त्रके रोकनेवाले उस अस्त्रको छोड़ो ३ इसके पीछे शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला और केशवजी से इसप्रकार कहाहुआ पाण्डव अर्जुन धनुषबाण को लेकर शीघ्रही रथसे उतरा ४ वह शत्रुओंका तपानेवाला प्रथम गुरुपुत्र के लिये फिर अपने और सब भाइयों के अर्थ भलाहोय यह कह कर ५ देवता और सब गुरुओंके अर्थ नमस्कार करके शिवजीको ध्यान करतेहुये अर्जुनने उस अस्त्रको छोड़ा और कहा कि अस्त्र से अस्त्र शान्त होय ६ इसके पीछे अकस्मात् गाण्डीव धनुषधारी से छोड़ा हुआ और प्रलयकालकी अग्नि के समान वह प्रकाशित अस्त्र ज्वलितरूप हुआ ७ और उसी प्रकार बड़े तेजस्वी अश्वत्थामाका भी वह अस्त्र ज्वलितरूप हुआ जो कि तेजमण्डलसे युक्त बड़ी ज्वाला रखनेवाला था ८ परस्पर वायुके संघट्टनों के बड़े शब्दहुये हजारों उल्कापात हुये और सब जीवोंको बड़ाभय उत्पन्न हुआ ९ शब्दायमान आकाश ज्वालामालाओं से बहुत व्याप्त हुआ पर्वत, वन और वृक्षों समेत पृथ्वी कम्पायमान हुई १० इस प्रकार वह दोनों प्रकाश लोकों को तपातेहुये नियतहुये तब वहां उन दोनों महर्षियों ने एकसाथ दर्शन दिया ११ सब जीवों के आत्मारूप नारदजी और भरतवंशियों के पितामह व्यासजी यह दोनों महात्मा वीर अश्वत्थामा और अर्जुन के शान्त करनेको उपस्थितहुये १२ सब धर्मों के ज्ञाता और सब जीवों के हितकारी बड़े तेजस्वी वह दोनों मुनि बड़े प्रकाशित उन

दोनों अस्त्रोंके मध्यमें नियतहुये १३ उस समय वह अजेय यशवान् और अग्नि के समान प्रकाशित दोनों उत्तम ऋषि वहां जाकर नियतहुये १४ वह जीव-मात्रोंसे अजेय देवता और दानवों के अंगीकृत दोनों ऋषिलोकों की वृद्धिकी इच्छा से अस्त्रोंका तेज शान्त करतेहुये मध्य में नियतहुये १५ और बोले कि नानाप्रकार अस्त्रोंके ज्ञाता सब महारथी जो पूर्व समय में भी उत्पन्नहुये उन्होंने भी इस अस्त्र को कभी किसी मनुष्य पर नहीं छोड़ा हे वीरलोगो ! तुमने इस बड़े विनाशकारी साहसको क्यों किया १६ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिऐषिकेऽर्जुनास्त्रत्यागेचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे नरोत्तम ! शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने अग्निके समान प्रकाशित उन ऋषियों को देखकर दिव्य बाण को संहार करलिया अर्थात् लौटा लिया १ हे भरतर्षभ ! तब वह अर्जुन हाथ जोड़कर उन ऋषियों से बोला कि मैंने यह समझकर अस्त्रको प्रकट किया है कि यह अस्त्र इस अस्त्र से शांतहोय २ इस उत्तम अस्त्रके लौट आने पर निश्चय करके पापकर्मी अश्वत्थामा इस तेज अस्त्रसे हम सबको भस्म करेगा ३ यहांपर सदैव हमारा और लोकों का जो हित है उसको देवतारूप आपलोग उसी प्रकारसे अङ्गीकार करनेके योग्य हो ४ अर्जुनने इस प्रकार से फिर अस्त्रको लौटाया युद्ध में देवताओं से भी उसका फिर लौटाना कठिन है ५ पाण्डव अर्जुन के सिवाय युद्धमें साक्षात् इन्द्र भी उस छोड़ेहुये परम अस्त्र के लौटाने को समर्थ नहीं है ६ ब्रह्मचारीका व्रत रखनेवाले पुरुषके सिवाय ब्रह्मतेजसे उत्पन्न छोड़ाहुआ अस्त्र अजितेन्द्रिय से कभी लौटा-नेके योग्य नहीं है ७ ब्रह्मचर्य न करनेवाला जो पुरुष अस्त्र को छोड़कर फिर लौटाता है वह अस्त्र साथियों समेत उस छोड़नेवाले के मस्तकको काटताहै ८ ब्रह्मचारी व्रत करनेवाले और बड़े दुःखसे पीड़ावान् अर्जुन ने भी उस दुष्ट आचार को पाकर उस अस्त्रको नहीं छोड़ा ९ पाण्डव अर्जुन सच्चाव्रत करनेवाला, शूर, ब्रह्मचारी और गुरुभक्त था इस हेतुसे उसने उस अस्त्रको फिर लौटालिया १० इसके पीछे अश्वत्थामा भी अपने आगे नियतहुये दोनों ऋषियोंको देखकर अपने बलसे उस घोर अस्त्रके फिर लौटाने को समर्थ नहीं हुआ ११ युद्ध में उस परम अस्त्रके लौटाने में असमर्थ बड़े दुःखितचित्त अश्वत्थामाने व्यासजी से कहा १२ कि हे मुने ! बड़ी आपत्तिसे पीड़ावान् और प्राणोंकी रक्षाका

अभिलाषी होकर मैंने भीमसेनके भयसे उस अस्त्र को छोड़ा १३ हे भगवन्! दुर्योधन के मारनेके अभिलाषी और दुराचारी इस भीमसेनने युद्धमें अधर्म किया १४ हे ब्राह्मण! इस हेतुसे मुझ अज्ञानी ने इस अस्त्रको छोड़ा है अब फिर उसके लौटानेको उत्साह नहीं करता हूं १५ हे मुने! मैंने पाण्डवों के नाशके अर्थ ब्रह्मतेजको धारण करके इस कठिनता से सहनेके योग्य अस्त्रको छोड़ा १६ यह अस्त्र पाण्डवों के नाशके लिये बहुत है अब यह अस्त्र सब पाण्डवों को जीवनसे रहित करेगा १७ हे ब्राह्मण! क्रोधसे पूर्णचित्त और युद्धमें पाण्डवों के मारने के अभिलाषी मुझ अस्त्र छोड़नेवाले ने यह पाप किया १८ व्यासजी बोले हे तात! बुद्धिमान् पाण्डव अर्जुनने युद्धमें जो ब्रह्मशरनाम अस्त्र छोड़ा वह क्रोधसे छोड़ा तेरे नाशकेलिये नहीं छोड़ा १९ युद्धमें तेरे अस्त्रको अपने अस्त्र से शान्त करनेके अभिलाषी अर्जुनने यह अस्त्र छोड़कर भी फिर लौटालिया २० यह महाबाहु अर्जुन तेरे पिता के उपदेश से ब्रह्मअस्त्र को भी पाकर क्षत्रियधर्म से कम्पायमान नहीं हुआ २१ इस प्रकार धैर्यवान् साधु सब अस्त्रों के ज्ञाता सत्पुरुष इस अर्जुन का मारना भाई बंधुओं समेत किस लिये तुम करना चाहते हो २२ जिस देश में ब्रह्मशर अस्त्र परम अस्त्रके द्वारा दूर किया जाताहै उस देशमें बारह वर्षतक इन्द्र जलको नहीं बरसाताहै अर्थात् बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पड़ता है २३ महाबाहु समर्थ पाण्डव संसारके जीवमात्रों की वृद्धि की अभिलाषासे इसी निमित्त उस अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूर नहीं करता २४ पाण्डव देश और तुम भी सदैव रक्षाके योग्यहो हे महाबाहो! इस हेतुसे तुम इस दिव्य अस्त्रको लौटाओ २५ तेरा क्रोध दूर होय और पाण्डवोंकी कुशल होय यह राजऋषि पाण्डव अधर्मसे विजय करना नहीं चाहता है २६ अब तुम उस मणिको देदो जो तेरे शिरपर नियत है पाण्डव उसको लेकर तुझको प्राणदान देंगे २७ अश्वत्थामा बोले कि पाण्डवों ने जो रत्न और कौरवोंने जो अन्य धन इस लोक में प्राप्त किया उन्हों से यह मेरा मणि पृथक् है २८ जिसको बांधकर किसी दशा में भी शस्त्र रोग और क्षुधासम्बन्धी कोई भय नहीं होता है इसके बांधनेवाले को देवता, दानव और सर्पोंसे भी भय नहीं है २९ न राक्षसों के समूहों का और न चोरों का भय है इस प्रकार से यह उत्तम मणि है और किसी दशामें भी मुझसे त्याग करने के योग्य नहीं है ३० और जो भगवान् ने मुझको आज्ञा करी है वह शीघ्रही मुझको कर्तव्य है यह मणि है यह मैं हूं परन्तु

यह सींक ३१ पाण्डवों के गर्भोंपर गिरेगी क्योंकि यह उत्तम अस्त्र सफल है हे भगवन् ! इस प्रकट होनेवाले अस्त्रको मैं फिर नहीं लौटा सक्ता हूं ३२ मैं इस हेतु से इस अस्त्र को पाण्डवों के गर्भों पर छोड़ता हूं हे महामुने ! आपके वचनोंको अवश्य करूंगा ३३ व्यासजी बोले हे निष्पाप ! इसी प्रकार करो तुमको दूसरी बुद्धि न करना चाहिये इस अस्त्रको पाण्डवों के गर्भोंपर छोड़कर युद्धसे निवृत्त हो ३४ वैशम्पायन बोले इसके पीछे अश्वत्थामाजी ने व्यासजी के वचन सुनकर युद्धमें सन्नद्ध परम अस्त्रको गर्भोंपर छोड़ा ३५ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिऐषिकेअस्त्रशिरोस्त्रस्यपाण्डवेयगर्भप्रवेशनेपञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले तब श्रीकृष्णजी पापकर्म करनेवाले अश्वत्थामाके छोड़ेहुये उस अस्त्रको जानकर प्रसन्न होकर अश्वत्थामासे यह वचन बोले १ कि पूर्व समयमें नियमवान् ब्राह्मणने विराटकी पुत्री अर्जुनकी पुत्रबधू उत्तरा को जो कि उपप्लवी स्थानपर वर्तमानथी उससे यह कहा २ कि कौरवों के नाशवान् होनेपर तेरा पुत्र होगा इस गर्भस्थ बालकका इसी हेतुसे परीक्षितनाम होगा ३ उस साधु का यह वचन सत्य होगा परीक्षितपुत्र फिर उन्हों के वंशका चलाने वाला होगा ४ तब अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने यादवों में अत्यन्त श्रेष्ठ इस प्रकार कहनेवाले गोविन्दजीको यह उत्तर दिया ५ हे कमललोचन, केशवजी ! यह इस प्रकार नहीं है जैसे कि तुमने पक्षपाती होकर यह वचन कहा है मेरा वचन मिथ्या नहीं है ६ हे श्रीकृष्णजी ! मेरा चलाया हुआ वह अस्त्र उस उत्तरा के गर्भपर गिरेगा जिसको कि तुम रक्षा किया चाहते हो ७ श्रीभगवान् बोले कि उस परम अस्त्र का गिरना सफल होगा और मराहुआ गर्भ जीकर बड़ी अवस्थाको पावेगा सब ऋषिलोग तुझको नीचपुरुष पापी और वारंवार पाप-कर्मवाला और बालकके जीवन का नाश करनेवाला जानेंगे ८ । ९ उस कारणसे तुम इस पापकर्म के फलको पाकर तीन हजार दिव्य वर्षतक इस पृथ्वी पर घूमोगे १० तुम एकाकी कहीं कुछ न पाते और कभी किसीके साथ परस्पर वार्त्तालाप न करते निर्जन देशों में घूमोगे ११ हे नीच ! तेरा निवास मनुष्यों में नहीं होगा पीब और रुधिरकी गन्धि से युक्त दुर्गम्य महावनों में निवास करेगा १२ पापात्मा और सब बीमारियों से संयुक्त होकर घूमेगा शूर परीक्षित

अवस्था और वेदव्रतको पाकर १३ कृपाचार्य से सब अस्त्रों को पावेगा फिर परम अस्त्रोंको पाकर क्षत्रियव्रतमें नियत १४ धर्मात्मा साठ वर्षतक सृष्टिकी रक्षा करेगा इसके पीछे वह महाबाहु कौरवराज होगा १५ हे दुर्बुद्धे! तेरे देखते परीक्षितनाम राजा होगा मैं उस शस्त्रकी अग्नि से भस्म हुये को अपने तेजसे जिलाऊंगा हे नीच! मेरे सत्य और तपके बलको देखो १६ व्यासजी बोले जो तुमने हमको अनादर करके यह भयकारी कर्म किया और तुझ सत्पुरुष ब्राह्मण का ऐसा चलन हुआ इन दोनों कारणों से श्रीकृष्णजीने जो श्रेष्ठ वचन कहाहै निस्सन्देह वही दशा तेरी होनेवाली है तुम क्षत्रियधर्म में नियतहो १७। १८ अश्वत्थामा बोले हे ब्राह्मण! मैं इस लोकके मनुष्यों में आपके साथ नियत हूंगा यह भगवान् पुरुषोत्तम सत्यवक्ता हैं १९ वैशम्पायन बोले कि फिर उदास मन होकर अश्वत्थामा महात्मा पाण्डवों को मणि देकर उन सबके देखतेहुये वनको गये २० और जिनके शत्रु मारेगये वह पाण्डव गोविन्दजी और व्यास जी महामुनि नारदजी को आगे करके २१ और अश्वत्थामा के शरीर के साथ उत्पन्न होनेवाली मणिको लेकर शीघ्रही उस मनस्विनी और शरीर त्यागने के निमित्त नियम करनेवाली द्रौपदी की ओर दौड़े २२ वैशम्पायन बोले कि इसके अनन्तर वह पुरुषोत्तम पाण्डव श्रीकृष्णजी समेत वायुके समान शीघ्रगामी उत्तम घोड़ों के द्वारा फिर डेरे को गये २३ आप पीड़ावान् और शीघ्रता करने वाले महारथियों ने रथों से उतरकर प्रसन्नमनवाली द्रौपदी को पीड़ित देखा २४ वह पाण्डव केशवजी समेत उस अप्रसन्न और दुःखशोक से युक्त द्रौपदी के पास जाकर उसको घेरकर बैठगये २५ इसके पीछे राजा की आज्ञानुसार महाबली भीमसेन ने उस दिव्य मणिको दिया और मणि देकर यह वचन कहा २६ हे कल्याणिनि! यह तेरी मणि है और वह तेरे पुत्रों का मारनेवाला विजय किया गया शोकको छोड़कर उठो और क्षत्रियधर्म को स्मरणकर २७ हे श्यामलोचने! सन्धिके अर्थ वासुदेवजीके यात्रा करनेपर तुमने जो यह वचन उन श्रीकृष्णजी से कहे थे कि हे गोविन्दजी! राजाको सन्धिका अभिलाषी होनेपर मेरे पति पुत्र भाई और तुम चारोंमें से कोई नहीं हो २८। २९ तुमने क्षत्रियधर्म कें योग्य वीरताके वचन पुरुषोत्तमसे कहेथे उनके स्मरण करनेको योग्य हो ३० राज्यका शत्रु पापी दुर्योधन मारागया मैंने उस कटेहुये दुश्शासनका रुधिर पिया ३१ शत्रुताकी अनृणता को पाया हम वार्त्तालाप

करनेके अभिलाषी पुरुषोंकी निन्दाके योग्य नहीं हैं अश्वत्थामा पराजित होकर ब्राह्मणवर्ण की वृद्धतासे छोड़ागया ३२ हे देवि ! उसका जो पतितता प्राप्त हुआ शरीर शेष है उसको मणिसे जुदा किया और उसके सब शस्त्र भी पृथ्वीपर गिरपड़े ३३ द्रौपदी बोली हे निर्दोष ! मैंने अऋणता को पाया गुरुका पुत्र मेरा गुरु है हे भरतवंशिन्, राजा युधिष्ठिर ! इस मणि को शिरपर बांधो तब राजा युधिष्ठिरने यह समझकर कि गुरुपुत्रकी धारण कीहुई यह वस्तु है और द्रौपदी का वचनहै ऐसा जानकर उस मणिको लेकर शिरपर धारण किया ३४ । ३५ इसके पीछे दिव्यमणिको धारण करताहुआ प्रभु राजा युधिष्ठिर चन्द्रमा से युक्त पर्वतके समान शोभायमान हुआ ३६ फिर पुत्रोंके शोकसे पीड़ित मनस्विनी द्रौपदी उठ खड़ी हुई और महाराज धर्मराजने भी श्रीकृष्णजीसे पूछा ३७ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिषोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि जो रात्रि के युद्धमें उन तीनों रथियों के हाथसे सब सेना के लोगों के मरने पर शोच करतेहुये राजा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजी से यह वचन कहा १ कि हे श्रीकृष्णजी ! इस पापी नीच और निष्फल कर्मवाले अश्वत्थामा के हाथ से मेरे सब महारथी पुत्र कैसे मारेगये २ उसी प्रकार अस्त्रज्ञ महापराक्रमी लाखों से युद्ध करनेवाले द्रुपदके पुत्र अश्वत्थामाके हाथ से गिराये गये ३ बड़े धनुर्धारी द्रोणाचार्य ने जिसके युद्ध में मुख नहीं किया उस रथियों में श्रेष्ठ धृष्टद्युम्नको उसने कैसे मारा ४ हे नरोत्तम ! उसने इस प्रकारका कौनसा योग्य कर्म किया जो अकेले गुरुपुत्रने हमारे सब पुत्रादिकों को युद्ध में मारा ५ श्रीभगवान् बोले कि निश्चय करके अश्वत्थामा उस अविनाशी शिवजी के शरण में गया जो कि बड़े देवताओं के ईश्वरों का भी ईश्वर है इस हेतुसे अकेलेने बहुतोंको मारा ६ महादेवजी प्रसन्न होकर देवभाग को भी देसक्ते हैं और उस पराक्रमको भी वह गिरीश देसक्ताहै जिसके द्वारा इन्द्रको भी नाश करे ७ हे भरतर्षभ ! मैं महादेवजी को मूलसमेत जानताहूं और उनके जो नानाप्रकार के प्राचीन कर्म हैं उनको भी श्रेष्ठ रीतिसे जानताहूं ८ वेदमें लिखाहै कि योगी शोकसे रहित होताहै इस निमित्त युधिष्ठिर आदि के शोक के निवृत्त करनेको कहते हैं हे भरतवंशिन् ! यह शिव सब जीवमात्रोंका आदि मध्य और अन्त है

और सब संसार इसीके प्रताप से चेष्टा करता है ९ इस प्रकार सृष्टिकी उत्पत्ति करने के अभिलाषी समर्थ त्रिगुणात्मक ईश्वर ने सबके आदि तमोगुणरूप रुद्रजी को देखकर कहा कि जीवों की उत्पत्ति में विलम्ब न करो १० तब बड़े तपस्वी जीवों के दोष जाननेवाले शिवजीने अङ्गीकार करके जल में डूबकर बहुतकाल तक तप किया इसके पीछे ईश्वरने बहुतकाल पर्यन्त उनकी प्रतीक्षा करके सब जीवोंके स्वामी रजोगुणीरूप प्रजापतिको मनसे उत्पन्न किया ११।१२ वह जलमें डूबेहुये शिवजी को देखकर अपने पिता से बोला कि जो मुझसे प्रथम उत्पन्न होनेवाला दूसरा नहीं है इस हेतुसे मैं सृष्टिको उत्पन्न करताहूं १३ ब्रह्माजीने कहा तेरे सिवाय दूसरा पुरुष प्रथमसृष्टि नहीं है यह शिवजी जल में डूबेहुये हैं विश्वास करनेवाली सृष्टि को उत्पन्न करो १४ उसने दक्षादि सात प्रजापतियों को उत्पन्न किया और सब जीवोंको भी उत्पन्न किया जिनके द्वारा इस चार प्रकारकी खानिवाले जीवसमूहों को उत्पन्न किया १५ हे राजन्! तब वह सब सृष्टि उत्पन्न होतेही क्षुधासे महाआर्त होकर प्रजापतिके भक्षण करनेकी इच्छासे दौड़े १६ वह प्रजापति अपनी रक्षाके निमित्त पितामह के पास गया और कहा कि हे भगवन्! उन लोगों से मेरी रक्षा के लिये उनकी जीविका विचार करो १७ इसके पीछे पितामहने उनकी जीविका के लिये अन्न औषधी और स्थावर जीव दिये और बलवान् लोगोंके अर्थ चेष्टा करनेवाले और निर्बल जीव दिये १८ वह उत्पन्न होनेवाली सृष्टि जिनके अर्थ अन्न विचार किया गया था अपने स्थानों को गई हे राजन्! इसके पीछे अपने उत्पत्तिस्थान माता और पिता आदिक में प्रीति करनेवाले वह प्रजापति लोग वृद्धियुक्त हुये फिर जीवसमूहों के वृद्धिपाने और लोकगुरुके भी प्रसन्न होने पर वह महापुरुष जलसे उठे और उन सृष्टियोंको देखा १९।२० बहुतरूपवाली सृष्टि के लोग उत्पन्न होकर अपने तेजसे वृद्धियुक्त थे तब भगवान् रुद्रजी क्रोधयुक्त हुये और अपने लिङ्गको भी काटकर पृथ्वीपर इस निमित्त गिराया कि यह लिङ्ग आस्तिक्य बुद्धिवाले पुरुषोंको सब सिद्धियों का देनेवाला होगा २१ वह जैसे टूटा उसी प्रकार पृथ्वीपर नियत हुआ वचनोंसे शान्त करते अविनाशी ब्रह्माजी त्रिगुणात्मक ईश्वर करके उनसे बोले २२ हे रुद्रजी! बहुतकाल पर्यन्त आपने जल में निवास करके क्या किया और किस निमित्त इस लिङ्गको उखाड़कर पृथ्वी में नियत किया है २३ वह लोकगुरु महाक्रोधित होकर गुरु से बोले

कि यह सब सृष्टि उत्पन्न होगई है अब मैं इस लिङ्गसे क्या करूंगा २४ हे पितामह ! मेरे तप से प्रजाके निमित्त अन्न प्राप्त हुआ और औषधी सदैव अपने रूपान्तरको करतीरहैंगी जिससे कि सृष्टि सदैव होती रहै २५ वह विमन और क्रोधयुक्त बड़े तपस्वी रुद्रजी इस प्रकारसे कहकर मुंजवत् पहाड़के समीप तप करने को गये २६ ॥

इति श्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्वणिसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले कि सतयुगके अन्त होनेपरविधिके पूजन करने के अभिलाषी देवताओंने वेदके प्रमाणसे यज्ञको विचार किया १ फिर उन्होंने सब साधनोंको धनेशों को भागके योग्य देवताओं को और यज्ञकी द्रव्योंको कल्पना किया २ हे राजन् ! मूलसमेत रुद्रजी को न जाननेवाले उन देवताओं ने देवता रुद्रजी के भागको विचार नहीं किया ३ अब इस बातको कहते हैं कि विना ईश्वर के आराधन किये यज्ञ विनाशवान् है यज्ञमें देवताओं से भाग का विचार न करनेपर साधन अर्थात् यज्ञके नाशकर्ता को चाहनेवाले उन रुद्रजीने प्रथम धनुषको उत्पन्न किया ४ लोकयज्ञ, (अर्थात् सब लोक मुझको साधु जानो इस फलवाला) क्रियायज्ञ, (अर्थात् गर्भाधान संस्कार आदिक रूप) गृहयज्ञ, (अर्थात् स्त्रीके साथ होमनेवाली अग्निहोत्रादिक) पञ्चभूत नरयज्ञ, (अर्थात् विषयों से उत्पन्न होनेवाला सुख) इन चार प्रकार के यज्ञों में यह सब जगत् नियत है ५ रुद्रजी ने लोकयज्ञ और नरयज्ञों से धनुषको तैयार किया उनका उत्पन्न किया हुआ धनुष मार्ग में पांच हाथ हुआ और वही पांच हाथ पांच विषय हैं तात्पर्य यह है कि जो ज्ञानी लोक और शरीरके अभिमान का त्याग करनेवाला है उसको उस धनुष से भय नहीं है ६ हे भरतवंशिन् ! उस धनुष की प्रत्यञ्चा वषट्कार प्रत्येक वासनारूप हुआ यज्ञों के चारों अंग उसकी दृढ़तारूप हुये ७ उसके पीछे क्रोधयुक्त महादेवजी उस धनुष को लेकर वहां गये जहांपर कि देवतालोग यज्ञ कररहे थे ८ उस धनुष उठानेवाले अविनाशी ब्रह्मचारी को देखकर पृथ्वी देवी पीड़ित हुई और पर्वत कम्पायमान हुये ९ वायु नहीं चली और वृद्धियुक्त अग्नि ज्वलित नहीं हुई और स्वर्ग में व्याकुल नक्षत्रमण्डल भ्रमण करनेलगे १० सूर्य और शोभायमान चन्द्र-

मण्डल भी प्रकाशमान नहीं हुये सब आकाश अन्धकार से व्याप्त हुआ ११ इस के पीछे व्याकुल देवताओं ने विषयों को नहीं जाना तब वह यज्ञ गुप्त हुआ और देवता भयभीत हुये १२ इसके पीछे उन्होंने यज्ञको रुद्रबाणसे हृदय पर घायल किया इसके पीछे वह यज्ञ मृगरूप होकर अग्निसमेत भाग गया १३ (तात्पर्य) (रुद्रनाम अहङ्कार का है जिस यज्ञमें यजमानको यह विचार होय कि मैं यज्ञ करनेवाला और ज्ञाताहूं वह यज्ञ ब्रह्मज्ञानरूप फलसे रहित है) हे युधिष्ठिर! फिर वह उसी रूप से स्वर्ग को पाकर आकाश में शोभायमान हुआ फिर कालात्मा रुद्रजी से पीछा कियाहुआ वह यज्ञ फलके भोग के पीछे स्वर्ग से पतित हुआ १४ इसके पीछे यज्ञके भागने पर देवताओं का ज्ञान प्रकट नहीं हुआ और देवताओं के अचेत होनेपर कुछ नहीं जानागया १५ त्र्यम्बक अर्थात् श्रवण मनन निदिध्यासनसे प्राप्त होनेवाले क्रोधरूप परमेश्वर ने सविता अर्थात् यज्ञ करनेवाले के शरीर की भुजाओं को और भगके नेत्रों को पूषाके दांतों को पूर्वोक्त धनुषकी कोटिसे गिराया १६ इसके पीछे देवता और यज्ञों के सब अङ्ग भागे और कितनेही वहां घूमतेहुये निर्जीव के समान हुये १७ उन रुद्रजीने उस सब यज्ञको अङ्गोंसमेत भगाकरके हँसकर धनुषकी कोटिको निष्कर्म करके देवताओं को रोका अर्थात् लोक और शरीर की प्रीति से पृथक् किया १८ इसके पीछे देवताओं की कहीहुई वाणी ने उनके धनुषकी प्रत्यञ्चा को जुदा किया हे राजन्! फिर प्रत्यञ्चा से जुदा वह धनुष अकस्मात् कुछ चलायमान हुआ १९ इसके पीछे यज्ञसमेत सब देवता उस देवताओंमें श्रेष्ठ और धनुष से रहित ईश्वरकी शरण में गये अर्थात् चित्तशुद्धि के निमित्त आत्माके आधीन हुये और प्रभुने कृपा करी २० इसके पीछे भगवान् क्रोध त्रिगुणरूपको समुद्र अज्ञान चित्त में नियत करके प्रसन्न हुये हे समर्थ! वह क्रोध अकस्मात् अग्नि होकर जलको पान करता है २१ हे पाण्डव! फिर भगदेवताके मन्त्रों को और सविताकी भुजाओंको पूषा के दांतों को और यज्ञोंको दिया अर्थात् सात्त्विक यज्ञ जारी हुआ २२ उसके पीछे यह सब जगत् फिर स्थिरचित्त हुआ और देवताओं ने सब हव्यों को उसका भाग नियत किया अर्थात् सब कर्म ईश्वरार्पण कियेगये २३ हे प्रभो, युधिष्ठिर! उसके क्रोधयुक्त होनेपर सब संसार व्याकुल हुआ और प्रसन्न होनेपर फिर स्थिर हुआ वह पराक्रमी शिवजी उसके ऊपर प्रसन्न हुये २४ इस कारण से आपके वह सब महारथी पुत्र और धृष्टद्युम्न

के पीछे चलनेवाले बहुतसे अन्य २ शूरवीर मारेगये २५ वह चित्त में नहीं धारण करना चाहिये उसको अश्वत्थामाने नहीं किया अर्थात् सब ईश्वरके आधीन है शोक न करना चाहिये महादेवजीकी प्रसन्नतासे निस्सन्देह शीघ्रता-पूर्वक करने के योग्य कर्मों को करो २६ ॥

इति श्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांसौप्तिकपर्वणिऐषीकेयुधिष्ठिरार्जुन-संवादेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

शुभम्भूयात् ॥

इति सौप्तिकपर्व समाप्तम् ॥







महाभारतभाषा स्त्रीपर्व ॥

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतं प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकं स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ या भाति वीणामिव वादयन्ती महाकवीनां वदनारविन्दे ॥ सा शारदा शारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभा नः प्रतिभां व्यनक्तु २ पाण्डवानां यशोवर्ष्म सकृष्णमपि निर्मलम् ॥ व्यधायि भारतं येन तं वन्दे बादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यते भूतलमद्य येन ॥ तं शारदालब्धवरप्रसादं वन्दे गुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगं सुन्दरनारिपर्वभाषानुवादं विदधाति सम्यक् ५ ॥

अथ स्त्रीपर्वप्रारम्भः ॥

श्रीनारायण, नरोत्तम नर को और सरस्वती देवी को नमस्कार करके फिर जयनाम इतिहास को वर्णन करताहूं १ जनमेजय बोले कि हे मुने ! दुर्योधन के मरने और सब सेना के नाश होजाने पर महाराज धृतराष्ट्र ने सुनकर क्या किया २ उसी प्रकार धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने और उन कृपाचार्यादिक तीनों ने क्या किया ३ आपके कहने से अश्वत्थामाका कर्म सुना परस्पर शाप देनेसे पीछेका जो वृत्तान्त संजय ने कहा है उसको आप मुझसे वर्णन कीजिये ४ वैशम्पायन बोले कि सौ पुत्रों के मरने पर टूटी शाखाओं के वृक्षसमान दुःखी और पुत्रशोक से पीड़ावान् ५ ध्यान मौनतायुक्त चिन्तामें डूबे हुये पृथ्वी के स्वामी महाराज धृतराष्ट्र के पास जाकर संजय ने यह वचन कहा ६ हे महाराज ! क्या सोचते हो शोकमें सहायता नहीं होसक्ती है हे राजन् ! अठारह अक्षौहिणी सेना मारी गई ७ अब यह पृथ्वी सेना के लोगों से और राजाओं से रहित होकर मित्रों से विहीन है क्योंकि नानादेशोंके राजाओं ने बहुत दिशाओं से आकर ८ सबने आपके पुत्र के साथ नाशको पाया अब आप अपने पुत्र,

पौत्र, ज्ञाति, सुहृद् और सब कौरवों के क्रिया कर्मको कराइये ६ वैशम्पायन बोले कि पुत्र पौत्रादिकों के मरनेसे पीड़ावान् बड़ा अजेय धृतराष्ट्र उस शोककारी बचनको सुनकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वायुसे ताड़ित वृक्ष गिर पड़ता है १० धृतराष्ट्र बोले कि जिसके पुत्र, मंत्री और सब सुहृज्जन मारे गये ऐसा मैं होकर सम्पूर्ण पृथ्वी पर विचरूंगा ११ अब कटे पक्षवाले पक्षी के समान मुझ वृद्ध दशासे दुर्बल बान्धवों से रहित के जीवनसे क्या प्रयोजन है १२ हे महाभाग! राज्य, सुहृज्जन और नेत्रों से रहित मैं ऐसा शोभित नहीं हूंगा जैसे कि विना किरणवाला सूर्य अशोभित होता है १३ परशुरामजी, देवऋषि, नारदजी और व्यासजी इन शुभचिन्तकों के कहे हुये वचनों को नहीं किया १४ सभाके मध्यमें जो कृष्णजी ने मेरे कल्याणका करनेवाला यह वचन कहा था कि हे राजन्! शत्रुता को त्यागो और अपने पुत्रको बन्धनमें करो १५ उनके वचनों को भी न करके मैं दुर्बुद्धि अब कठिन दुःख को पाता हूं और धर्म से संयुक्त भीष्मजी के भी वचन को मुझ अभागे ने नहीं सुना राजाओं में दुर्योधन का नाश, दुश्शासनका मरण, कर्णका विपरीत मरण और द्रोणाचार्य रूप सूर्य के ग्रहण को सुनकर मेरा हृदय फटता है हे संजय! पूर्व समय के कियेहुये अपने कुछ पापों को नहीं जानता हूं १६। १८ जिसके कि फलको अब मैं दुर्भागी भोग रहाहूं निश्चय करके मैंने पूर्व जन्मों में बड़े २ पाप किये हैं १६ जिसके कारण से ईश्वर ने मुझको दुःख उत्पन्न करनेवाले कर्मों में प्रवृत्त किया मेरी अवस्था का अन्तिम भाग पुत्र पौत्रादिकों का नाश २० और सुहृद् बंधुओं का मरना दैवयोगसे है दूसरी रीतिसे नहीं है इस लोकमें मुझसे अधिक दुःखी दूसरा कौन पुरुष है २१ हे तेजव्रत! वह सब पाण्डवलोग मुझको उस ब्रह्मलोकके मिलने और बड़े मार्गमें नियत हुये को देखेंगे २२ वैशम्पायन बोले सञ्जयने उस विलाप करनेवाले और अनेक प्रकारसे शोकके विस्तार करनेवाले राजा धृतराष्ट्रके शोक का दूर करनेवाला वचन कहा कि २३ हे राजन्! शोकको दूर करो तुमने बहुत से धर्मके निश्चय सुने हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ! तुमने वृद्धों से भी अनेक प्रकार के शास्त्र सुने हैं २४ कि पूर्व समयमें पुत्रके शोकसे राजा सञ्जय के पीड़ावान् होनेपर मुनियोंने जो कहा और जिस प्रकार तरुणताके अहंकारमें आपके पुत्र दुर्योधन के नियत होने पर ऋषियोंने जो कहा उसको भी सुना २५ जो तुमने वार्तालाप करनेवाले अपने शुभचिन्तकों

के वचनों को नहीं अंगीकार किया रोगी और हतबुद्धि होकर तुमने कोई अपना प्रयोजन नहीं किया २६ आपने केवल एक धार रखनेवाली तलवार के समान अपनीही बुद्धिसे सब कर्म किये और बहुधा दुराचारी लोगों को सलाहकार करने के निमित्त समीप बैठाया २७ दुश्शासन, दुर्बुद्धि कर्ण, बड़ा दुष्टात्मा शकुनी, दुर्मति चित्रसेन और शल्य जिसके मन्त्री हैं २८ जिस शल्यने सब जगत्को शालरूप किया हे महाबाहो, महाराज, भरतवंशिन्, धृतराष्ट्र ! आपके उस पुत्र ने कौरवों के वृद्ध भीष्मपितामह, गान्धारी, विदुर २९ द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, श्रीकृष्णजी, बुद्धिमान् नारदजी ३० और बड़े तेजस्वी व्यासजी आदि अन्य २ ऋषियोंका भी वचन नहीं किया ३१ जो कि निर्बुद्धि अहंकारी सदैव युद्धको कहता निर्दयी अजेय पराक्रमी और सदैव अशान्तता से असंतुष्ट था ३२ तुम सदैव शास्त्रज्ञ और शास्त्र के स्मरण रखनेवाले बुद्धि के स्वामी और सत्यवक्ता हो ऐसे आप सरीखे बुद्धिमान् सन्तलोग मोहको नहीं पाते हैं ३३ सदैव युद्ध को कहनेवाले ने कोई उत्तम और शुभ कर्म नहीं किया सब क्षत्रियों का नाश किया और शत्रुओंका यश बढ़ाया ३४ तुम भी सबके मध्यस्थ हुये परन्तु कोई उचित बात नहीं कही हे अजेय ! तुमने स्नेह और प्रीतिकी तुला को समान नहीं रक्खा प्रारम्भमें ही मनुष्य को उचित कर्म करना इस निमित्त योग्य है जिससे कि भूतकाल का प्रयोजन पश्चात्तापसे युक्त न होय ३५ । ३६ हे राजन् ! तुमने पुत्रकी प्रीतिसे उसका हित और प्रिय करना चाहा था फिर पीछे से इस दुःखको पाया तुम सोचने के योग्य नहीं हो ३७ जो पुरुष केवल शहद को देखकर अपने गिरने को नहीं देखताहै वह शहदके लोभसे गिरा हुआ ऐसे सोचता है जैसे कि आप सोचते हैं ३८ सोचता हुआ पुरुष न मनोरथको पाता है न फल को पाता है न कल्याण को पाता है और न ब्रह्म को पाताहै ३९ जो पुरुष अपने आप अग्नि को उत्पन्न करके वस्त्रसे ढकता और जलता हुआ चित्त के दुःखको धारण करता है वह पण्डित नहीं है ४० पुत्रके साथ तुम्हारे वचनरूप वायु से प्रेरित लोभरूपी घृतसे सींचा हुआ यह पाण्डवरूप अग्नि प्रज्वलित हुआ है ४१ उस अत्यन्त वृद्धियुक्त अग्निमें आप के पुत्र शलभ नाम पक्षियों के समान गिरे तुम बाणों की अग्निसे भस्म होकर उन पुत्रों के शोच करनेको योग्य नहीं हो ४२ हे प्रभो ! जो तुम अश्रुपातों से लिप्त मुखको धारण करते हो यह शास्त्र के विपरीत है पण्डितलोग इसकी प्रशंसा

नहीं करते हैं ४३ निश्चय करके यह आंसू अग्नि के स्फुलिङ्गों के समान मनुष्योंको भस्म करते हैं यहां तुम बुद्धिसे शोक को त्याग करके अपने चित्त को स्वाधीन करो ४४ वैशम्पायन बोले कि उस महात्मा संजय से इस प्रकार विश्वास दिया गया इसके पीछे बुद्धिसे युक्त विदुरजी यह वचन बोले ४५ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि प्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले अमृतरूपी वचनों से पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र को प्रसन्न करते विदुरजी ने जो कहा उसको सुनो १ विदुरजी बोले हे राजन्! उठो क्यों सोते हो बुद्धिसे मनको आधीन करो सब जड़ चैतन्य जीवों का यही निश्चय है २ कि सब सृष्टिसमूह अन्त में नाश होनेवाले हैं सब उदय होनेवाले ऐश्वर्य अन्तमें पतन होनेवाले हैं मिलनेवाले अन्त में जुदे होनेवाले हैं और जीवन भी अन्त में मरण रखनेवाला है ३ हे भरतवंशिन्! जब यमराज शूरवीर और भयभीतों को आकर्षण करता है तो हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ! फिर वह क्षत्रिय क्या नहीं युद्ध करते हैं ४ युद्ध को न करता मरता है और लड़ता हुआ जीता रहता है हे महाराज! कालको पाकर कोई उसको उल्लंघन नहीं करता ५ हे भरतवंशिन्! सब जीव प्रारम्भमें ही अभावरूप हैं मध्य में भावरूप हैं और मरने पर अभावरूप हैं ऐसे स्थानपर कौन विलाप है ६ सोचता हुआ मृतक के पीछे नहीं जाता है सोचता हुआ मनुष्य नहीं मरता है इस प्रकार लोक में किस निमित्त शोच करते हो ७ हे कौरवों में श्रेष्ठ! यह काल नाना प्रकार के सब जीवोंको आकर्षण करता है कालका कोई प्यारा है न शत्रु है ८ हे भरतर्षभ! जैसे कि वायु सब तृणकी नोकों को उलट पलट करता है उसी प्रकार सब जीव काल के आधीन होते हैं ९ एक साथ आनेवाले और वहां जानेवाले सब जीवों के मध्य में जिसके आगे काल जाता है उसमें कौन विलाप करता है १० हे राजन्! युद्ध में मृतकहुये इन वीरों के शोच करनेको भी योग्य नहीं हो इसमें शास्त्रका प्रमाण है कि उन्होंने परम गति को पाया ११ सब वेद पढ़नेवाले और सब अच्छे प्रकार से व्रत करनेवाले यह सब सम्मुख होकर विनाशवान् हुये इसमें किस बातका विलाप करना है १२ दृष्टिमें न आनेवाले ब्रह्मसे उत्पन्न हुये और फिर उसी दृष्टि में न आनेवालेको पाया यह न आपके हैं न आप उनके हैं उसमें कैसा विलाप

है १३ मृतक भी स्वर्गको पाता है और मरकर भी जिसको पाता है हमलोगों को वह दोनों बहुत गुणवाले हैं युद्ध में निष्फलता नहीं है १४ इन्द्र देवता उनके मनोरथों के प्राप्त करनेवाले लोकोंको विचार करेंगे हे पुरुषोत्तम! यह सब शूरवीर लोग इन्द्र के अतिथि होते हैं १५ मनुष्य दक्षिणावाले यज्ञ, तप और विद्यासे उस प्रकार स्वर्गको नहीं पाते हैं जैसे कि युद्ध में मृतक उन शूरवीर तेजस्वियोंने पाया है जिन्होंने शरीररूपी अग्नियों में बाणरूप आहुतियों को होमा और परस्पर होमेहुये बाणों को सहा १६। १७ हे राजन्! इस प्रकार से स्वर्ग के उत्तम मार्गको तुमसे कहता हूं इस लोकमें क्षत्रियका कुछ कर्म युद्ध से अधिक नहीं वर्तमान है १८ युद्ध में शोभायमान उन महात्मा शूर क्षत्रियोंने बड़े अभीष्ट फलको पाया सबही शोच के अयोग्य हैं १९ हे पुरुषोत्तम! तुम ज्ञान से अपने को विश्वास देकर शोच मत करो शोकसे विजय किये हुये तुम करनेके योग्य कर्म के छोड़नेको योग्य नहीं हो २० हज़ारों माता पिता और सैकड़ों पुत्र स्त्री संसार में प्राप्त किये वह किसके और हम किसके २१ प्रतिदिन शोकके हज़ारों स्थान और आनन्द के सैकड़ों स्थान अज्ञान में प्रवेश करते हैं २२ हे कौरवोत्तम! कालका कोई प्यारा है न शत्रु है वह काल किसी स्थान पर भी मध्यस्थ नहीं है काल सबको खैंचता है २३ काल जीवमात्रों को पकाता है कालही सृष्टिको मारता है कालही सोनेवालों के मध्य में जागता है और कालही दुःखसे उल्लंघन के योग्य है २४ तरुणाई, रूप, वृद्धता, धनसमूह और नीरोगतापूर्वक निवास यह सब विनाशवान् हैं पण्डित इनमें प्रवृत्त नहीं होता है २५ अकेले तुम सब दुनिया भरे के दुःख के सोचने योग्य नहीं हो जो अभाव से मिलता है उसका वह फिर लौटकर नहीं आता है २६ जो पराक्रम से नाशको पावे उसको सोचताहुआ मनुष्य उसकी चिकित्सा को नहीं करता है दुःख का यह इलाज है जो उसको न विचार करे २७ चिन्ता किया हुआ दूर नहीं होता है और फिर २ अधिक बढ़ता है अप्रिय के मिलने और प्रियके वियोग से २८ वह आदमी बड़े २ चित्तके दुःख से संयुक्त होते हैं जोकि निर्बुद्धि हैं यह न अर्थ है न धर्म है न सुख है जो तुम शोच करते हो २९ वह करने के योग्य प्रयोजन से जुदा होता है और धर्म, अर्थ, काम इन तीनों वर्गों से च्युत होताहै मनुष्य अन्य २ मुख्य धनादिक दशाको पाकर ३० इनमें असन्तुष्ट लोग मोहको पाते हैं पण्डित सन्तोष को पाते हैं चित्तके दुःख

को ज्ञानसे और शरीरके दुःखको औषधोंसे दूर करना चाहिये ३१ यही ज्ञान की सामर्थ्य है और किसी प्रकार की कोई सामर्थ्य नहीं है पूर्वजन्म में किया हुआ कर्म सोते हुये मनुष्य के साथ सोता है और बैठनेवालेके पास नियत बैठा होता है ३२ और दौड़ते हुये के पीछे दौड़ताहै जिस जिस दशामें जिस जिस शुभाशुभ कर्मको करता है ३३ उसी उसी दशामें उस उस फलको पाता है जो जीव जिस जिस शरीर से जो जो कर्म करता है ३४ उसी उसी शरीर से उस उस कर्मके फलको भोगताहै आत्मा में आत्माही उसका बन्धु है और आत्माही आत्माका शत्रु है ३५ आत्माही आत्माके शुभाशुभ कर्मोंका साक्षी है शुभ कर्म से सुखको और अशुभ कर्म से दुःखको ३६ सर्वत्र पाताहै किसी स्थानमें भी विनाकिये हुयेको नहीं भोगता है आपके समान बुद्धिमान् मनुष्य उन कर्मों में प्रवृत्त नहीं होते हैं जोकि ज्ञान के विपरीत बहुत पाप रखनेवाले और मोक्षके नाश करनेवाले हैं ३७ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिके धृतराष्ट्रविशोके द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे बड़े ज्ञानिन् ! तुम्हारे इन उत्तम वचनों से मेरा शोक निवृत्त हुआ परन्तु हे निष्पाप ! मैं मूलसमेत इन वचनों को फिर सुना चाहता हूं १ पण्डितलोग अप्रियके योग और प्यारोंके वियोग से उत्पन्न होनेवाले चित्त के दुःखों से कैसे छूटते हैं २ विदुरजी बोले कि जिस जिस उपाय से दुःख अथवा सुखसे भी निवृत्त होता है बुद्धिमान् मनुष्य उसी उपायसे इस चित्तको स्वाधीन करके शान्ति को पावे ३ हे नरोत्तम ! यह सब जो ध्यानमें आता है विनाशवान् है यह संसार केलेके समान है इसका सार पदार्थ वर्तमान नहीं है ४ जब ज्ञानी और मूर्ख, धनी और निर्धनी कालसे मरणको पाकर ताप से रहित सोते हैं ५ उस स्थानपर दूसरे मनुष्य निर्मांस अथवा बहुत अस्थि रखनेवाले अंग, नाड़ी और बन्धनों से अधिक किस वस्तुको देखते हैं ६ जो उस समय कुल और रूप विशेषणको नहीं पावें वह छल करनेवाले मनुष्य किस हेतुसे परस्पर इच्छा करते हैं ७ पण्डितों ने शरीरधारियों के देहोंको गृहों के समान कहा है वह कालसे मिलते हैं अर्थात् नाशको पाते हैं केवल एक जीवात्मा ही अविनाशी है ८ जिस प्रकार मनुष्य पुराने कपड़ेको त्याग करके नवीन कपड़ेको

अङ्गीकार करता है इसी प्रकार शरीरधारियोंके शरीर हैं ९ हे धृतराष्ट्र ! सब मनुष्य अपने किये हुये कर्म से मिलने के योग्य दुःख अथवा सुखको पाते हैं १० हे भरतवंशिन् ! सब सुख और दुःख अपने कर्मसे प्राप्त होते हैं इस हेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्र भी उस भारको उठाता है ११ और जैसे मट्टी का पात्र रूपको पाकर टूटता है कोई बनता कोई बनाहुआ १२ अवेपर रक्खा हुआ वा अवेसे गिरकर टूटनेवाला आर्द्र व शुष्क वा पकताहुआ १३ आंवेंसे उतारा हुआ उठाया हुआ वा काम में लायाहुआ भी टूट जाता है इसी प्रकार शरीरधारियों के शरीर हैं १४ गर्भ में नियत जन्म लेनेवाला वा थोड़ी अवस्था वाला अर्धमास एकमास १५ एक वर्ष वा दो वर्षकी अवस्था रखनेवाला तरुण, मध्यस्थ और वृद्ध भी नाशको पाता है १६ सब जीव अपने पिछले जन्मों के कर्मोंसे उत्पन्न होते हैं और नाशको पाते हैं इस रीतिके स्वाभाविक धर्म रखने-वाले लोकमें किस हेतुसे दुःखी होते हो १७ हे राजन् ! जैसे कि कोई जीव क्रीड़ाके निमित्त जलमें घूमता हुआ डूबता और उछलता है १८ उसी प्रकार महर्षिलोग अपने बड़े ज्ञानके द्वारा उस प्रकार के दुर्गम संसारसे पारहुये जो कि डूबना उछलना इन दो गुणोंका रखनेवाला है १९ जो जीवोंकी उत्पत्ति के जाननेवाले संसार के अन्तके खोजनेवाले सब ज्ञानी नियत हैं वह परम गतिको पाते हैं २० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे वक्ताओं में श्रेष्ठ ! किस रीतिसे यह संसाररूपी वन जानने के योग्य है मैं इसको सुना चाहता हूं आप मुझसे वर्णन कीजिये १ विदुरजी बोले कि जन्मसे लेकर जीवधारियोंकी सब क्रिया दिखाई देती हैं इस लोकमें प्रथम कलल अर्थात् एक रात्रि निवास करनेवाले गर्भ में जीवात्मा निवास करता है परन्तु कुछ अन्तर है अर्थात् प्रतिदिन गर्भ की वृद्धि से उसकी सामर्थ्य अधिक बढ़ती है २ इसके पीछे पांचवां मास व्यतीत होनेपर उस चैतन्यका प्रादुर्भाव वि-चार किया अर्थात् एकरात्रि निवासमें चैतन्यकी सत्तामात्र होती हैं परन्तु पांचवें महीने में उसका पूर्ण प्रादुर्भाव होजाता है ३ मांस, रुधिरसे लिप्त अपवित्र स्थानमें निवास करताहै फिर वह अपानरूप वायुकी तीव्रतासे ऊंचे पैर नीचे शिरवाला ४ योनिके द्वारको पाकर बड़े कष्टों को पाता है योनिकी पीड़ा और पिछले कर्मों

से युक्त ५ उस द्वारसे छूटकर संसारके दूसरे उपद्रवों को देखता है और ग्रह उसके पास ऐसे आते हैं जैसे कि मांस के पास कुत्ते आते हैं ६ हे शत्रुसंतापिन्! इसके पीछे उसी समय रोग भी उसके पास आते हैं इसीसे जीता हुआ अपने कर्मों से पीड़ावान् होता है ७ हे राजन्! इन्द्रियों के पाशबंधनों में बँधेहुये सङ्ग और स्वादु से संयुक्त उस जीवधारी के पास नाना प्रकार के व्यसन अर्थात् आपत्तियां वर्तमान होती हैं ८ फिर उन सबसे पीड़ित होकर वह जीव तृप्ति को नहीं पाता है इसीसे शुभाशुभ कर्मों को करता है और उनका त्यागनेवाला नहीं होता है इसी प्रकार जो पुरुष ईश्वर के ध्यानमें प्रवृत्त हैं वह अपने को तब तक चारों ओर से रक्षा करते हैं जबतक यह जीव मिलनेवाले यमलोक को नहीं जानता है ९। १० यमदूतों से आकर्षित कालसे मृत्युको पाता है उस मौन का जो पाप पुण्य है वह दूसरे के द्वारा मुखमें किया हुआ होता है ११ फिर भी विषयों में आसक्त होकर अपने को पतन हुआ नहीं ध्यान करता है अर्थात् अपनी परिणामकुशलताको नहीं पाता है आश्चर्य है कि यह संसार नीच लोभकी आधीनता में वर्तमान १२ क्रोध, मोह और धनके मदसे अचेत होकर आत्माको नहीं जानता है दुष्ट कुलवालों की निन्दा करता अपने कुल की प्रशंसा करता हुआ रमता है दरिद्रियों की निन्दा करता धनके गर्वसे अहंकारी है दूसरों को मूर्ख कहता है और अपने को अच्छी रीति से नहीं देखता है १३।१४ दूसरों को शिक्षा करता है परन्तु अपनेको शिक्षा करना नहीं चाहता है जब ज्ञानी और मूर्ख, धनी और निर्धनी १५ कुलीन, अकुलीन, अहंकारी और निरहंकारी भी सब पितृवन अर्थात् यमलोक में वर्तमान विगतज्वर होकर सोते हैं १६ और वहांपर दूसरे मनुष्य उन्होंके निर्मांस बहुतसे अस्थिवाले अंग और नाड़ी बन्धनों से अधिक कुछ नहीं देखते हैं और जो कुल और रूपकी मुख्यताको नहीं पाते हैं १७ जब वह सब भी शरीर त्याग किये हुये पृथ्वी पर सोते हैं तब दुर्बुद्धि मनुष्य इस लोक में किस हेतु से परस्पर छल किया चाहते हैं १८ यह बात देखी और सुनी है जो इस श्रुतिको सुनकर इस विनाशवान् जीवलोकमें धर्मका पालन करता हुआ १९ जन्मसे लेकर मरणतक कर्म करता है वह परम गति को पाता है जो कि इस प्रकार सबको जानकर ब्रह्म की उपासना करता है २० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जो यह दुष्प्राप्य धर्म बुद्धिके द्वारा अच्छे प्रकार से प्राप्त होता है इस हेतुसे अब बुद्धिमार्ग को ब्यौरेसमेत मुझसे कहो १ विदुरजी बोले कि इस स्थानपर ब्रह्माजी के अर्थ नमस्कार करके वह विषय में तुमसे कहताहूं जैसे कि महर्षिलोग इस संसाररूपी घन वनको तरते हैं २ निश्चय करके इस बड़े संसार में कोई द्विज मांसभक्षी जीवों से पूर्ण उस दुर्गम्य वन में पहुँचा जो कि बड़े शब्दवाले भयानकरूप मांसभक्षी महाभयकारी सिंह व्याघ्र हाथी और रीछोंके समूहों से ३ । ४ चारों ओर को व्याप्त मृत्युका भी भयकारी था उसको देखकर इसका हृदय महाव्याकुल हुआ ५ कम्प और रोमांचों से शरीर व्याप्त हुआ वह उस वनमें अच्छे प्रकार घूमता हुआ इधर उधर को दौड़ा ६ और सब दिशाओं को देखता था कि मेरा रक्षास्थान कहां होगा इस प्रकार वह भय से पीड़ावान् सिंहादिक के छिद्रों को देखता भागा ७ वह न तो दूर जाता था न उनसे बचता था इसके पीछे उसने चारों ओरको पाश अर्थात् विषयादिक की वासना से युक्त घोर वनको देखा ८ वह पाश बड़ी घोररूप स्त्री की भुजाओं से पकड़ा हुआ था और वह वन पांच शिर रखनेवाले पर्वतोंके समान ऊंचे सर्पों से ९ और आकाश को स्पर्श करनेवाले बड़े वृक्षोंसे चारों ओरको संयुक्त था उस वनके मध्यमें एक कूप अन्धकार से पूर्ण १० तृणसे ढकी हुई दृढ़ वल्लियों से संयुक्त था वह द्विजनाम जीव उस गुप्त कूपमें गिरपड़ा ११ और लताओंके फैलावसे पूर्ण उस कूपमें छिपगया अर्थात् अभिमानी हुआ कि यह मेरा स्थान है जैसे कि वृक्षवंश में उत्पन्न होनेवाला बड़ा फल शाखा में लगाहुआ होता है १२ उसी प्रकार वह द्विज ऊंचे पैर नीचे शिरवाला होकर उसमें लटका फिर उसी प्रकार से उसका दूसरा उपद्रव भी उत्पन्न हुआ १३ कि कूपके मध्य में बड़े बलवान् सर्पको देखा और मुखबन्धन कूपके किनारे पर ऐसे बड़े हाथी को देखा १४ जो कि छः मुखवाला और बारह चरण से चलनेवाला श्वेत श्याम वर्ण क्रमपूर्वक चलनेवाला सैकड़ों वृक्ष और वल्लियों से ढका हुआ था (यहांपर गजको वर्षकी समाप्ति छः मुखको छःऋतु और श्वेत कृष्णवर्णों को दोनों पक्ष बारह चरण को बारह महीने वल्लीको जीवन और वृक्षको आयुर्दाय जानो १५) इसके पीछे बड़ी शाखाओंपर लटकनेवाले अर्थात् बाल्य तरुण

और वृद्धावस्था में लटकतेहुये द्विज को जानो नाना प्रकार का रूप रखनेवाले श्वेतवर्ण घोर और बड़े भयके उत्पन्न करनेवाले १६ और प्रथमही घर बनाकर सन्तान के द्वारा वृद्धि पानेवाले भौंरे शहद को इकट्ठा करके निवास करते हैं हे भरतर्षभ ! वह भौंरे १७ बारम्बार जीवधारियों के स्वादिष्ठरसों की इच्छा करते हैं जिन्होंसे बालक आकर्षण किये जाते हैं उन रसों की बड़ी धारा सदैव गिरती हैं १८ तब लटकता हुआ वह जीव सदैव धाराओं को पान करता है संकटमें भी इस पान करनेवाले की इच्छा पूर्ण नहीं हुई १९ वह अतृप्त होकर सदैव बारम्बार उसको चाहताहै हे राजन् ! जीवनमें उसकी अप्रीति नहीं उत्पन्न हुई २० उसीमें मनुष्यके जीवन की आशा नियत है श्वेत कृष्ण रंगवाले चूहे अथवा रात्रि दिन उस वृक्षरूपी आयुर्दाय को काटते हैं २१ दुर्गम्य वनके पास बहुतसे सर्प अर्थात् रोग और बड़ी उग्र स्त्री अर्थात् वृद्धावस्था और कूपके नीचे सर्प अर्थात् मृत्यु और कूपके मुखपर हाथी अर्थात् पूर्णवर्ष २२ और वृक्षके गिरनेसे भय है और चूहोंसे पांचवां भय है और शहदके लोभ से छठे भय को कहा है २३ इस प्रकार संसारसागरमें पड़ाहुआ यह जीव वर्तमान होता है और जीवनकी आशा में वैराग्य को नहीं पाता है २४ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि पंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि बड़ा आश्चर्य है कि निश्चय बड़ा दुःख है और उसकी स्थिति भी दुःखरूप है हे वक्ताओं में श्रेष्ठ ! उसमें उसकी प्रीति और तृप्ति किस प्रकारसे है १ वह देश कहां है जिसमें यह जीव धर्मसंकटमें निवास करता है और वह मनुष्य उस बड़े भयसे कैसे छूटेगा २ यह सब मुझसे कहो यह बहुत अच्छा है तब हम काममें लावेंगे निश्चय उसके छुड़ानेके लिये मेरे ऊपर बड़ी कृपा उत्पन्न हुई है ३ विदुरजी बोले हे राजन् ! मोक्ष चाहनेवाले पुरुषोंने यह दृष्टान्त वर्णन किया है जिससे कि मनुष्य परलोकमें सुन्दर गतिको पाता है ४ जो वह महावन कहा जाता है वही महासंसार है और जो यह दुर्गम्य वन है वही संसारघन है ५ जो सर्प तुमसे कहे वही रोग हैं वहां बड़े शरीरवाली जो स्त्री निवास करती है ६ उसको ज्ञानियों ने वर्णरूपकी नाश करनेवाली वृद्धावस्था कहा है हे राजन् ! वहां जो कूप है वह शरीरधारियों का शरीर है ७ और जो

बड़ा सर्प उस कूपके भीतर निवास करता है वही काल है यह सब भूतों का नाश करनेवाला और जीवात्माओं का हरनेवाला है ८ और कूपके मध्यमें जो वल्ली उत्पन्न हुई वह मनुष्य उसके विस्तार में लटकता है वही शरीरधारियों के जीवनकी आशा है ९ और कूपके मुखपर जो छः मुखवाला हाथी वृक्षकी शाखाओंके चारोंओर चेष्टा करताहै वही पूर्ण वर्ष है १० उसके छः मुख ऋतु और बारह चरण महीने कहे हैं इसी प्रकार जो चूहे और सर्प वृक्षको काटते हैं ११ उनको विचारवान् पुरुषों ने दिन रात्रि कहाहै उसमें जो वह भौंरे हैं वह नाना इच्छा कही हैं १२ और जो वह शहद की बहुतसी धारा गिरती हैं उनको कामरस जानो जिसमें मनुष्य डूबते हैं १३ जिन्होंने इस प्रकार संसार-चक्र की गतिको जाना है निश्चय करके वह मनुष्य संसारचक्र के पाश को काटते हैं १४ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे महात्मन्, तत्त्वदर्शिन् ! आश्चर्य है कि आपने मोक्ष देने-वाली कथा कही उसको आप फिर मुख्यता समेत कहो मैं सुनना चाहता हूं १ विदुरजी बोले सुनो मैं फिर उस मार्ग के क्रमको कहताहूं जिसको सुनकर ज्ञानीलोग संसारसे छूटते हैं २ हे राजन् ! जैसे कि बड़े मार्ग में नियत मनुष्य जहां तहां थक कर निवास करता है ३ हे भरतवंशिन् ! इसी प्रकार अज्ञानी मनुष्य संसार में सृष्टिरूप गर्भ में बारम्बार निवास को करता है और ज्ञानी लोग शीघ्र जाते हैं ४ इस हेतु से शास्त्रज्ञ लोगोंने इसको मार्ग कहा है और जिन ज्ञानियों ने जिस संसार को घन वन कहा है ५ हे पुरुषोत्तम ! वह इन स्थावर और जङ्गम जीवों का चलायमान चक्र है परिडत उसकी इच्छा नहीं करता है ६ शरीरधारियों के शरीर और चित्तसे सम्बन्ध रखनेवाले जो रोग हैं उनको ज्ञानी लोग गुप्त और प्रकटरूप सर्प कहते हैं ७ हे भरतवंशिन् ! निर्बुद्धि मनुष्य उन्हींसे दुःख पानेवाले और घायल होकर भी अपने कर्म-रूपी सर्पों से व्याकुलता को नहीं पाते हैं हे राजन् ! जब मनुष्य उन रोगों से भी छूटता है तब उस पुरुष को रूप की विनाश करनेवाली जरावस्था दबा लेती है ८ । ९ जो कि शब्द, रूप, रस, स्पर्श और नाना प्रकार की

गन्धियों से भी निराधार बड़ी कीच में चारों ओरसे डूबा हुआ है पूर्ण वर्ष ऋतु बारह महीने दोनों पक्ष दिनरात और उनकी सन्धियां यह सब क्रमपूर्वक उसके रूप और अवस्थाको क्षीण करते हैं १०।११ यह कालकी निधि है दुर्बुद्धि लोग उनको नहीं जानते हैं सब जीवोंको उनके कर्म से ईश्वरका लिखा हुआ कहा है १२ शरीरधारियों का देह रथ है चिन्ता सारथी है इन्द्रिय घोड़े हैं और कर्म बुद्धि उस रथकी बागडोर है १३ जो पुरुष उन दौड़नेवाले घोड़ोंके पीछे दौड़ता है वह इस संसारचक्रमें चक्रके समान घूमता है १४ जो जितेन्द्रिय उनको बुद्धि से आधीन करता है वह चक्रके समान घूमनेवाले इस संसारचक्र में लौटकर नहीं आता है १५ वह संसार में भी घूमते हैं परन्तु घूमतेहुये मोहको नहीं पाते हैं और पूर्व प्रकारसे घूमता हुआ पुरुष मोहसे राज्यपुत्र और सुहृज्जनों के विनाशको पाता है १६ हे राजन्! जिस दुःखको तुमने पाया है वही दुःख संसार के घूमनेवालों के लिये भी उत्पन्न होता है १७ इस हेतुसे ज्ञानीको उचित है कि इस संसार से छूटने का उपाय करे इसमें कभी भूल और देर न करनी चाहिये नहीं तो सैकड़ों शाखावाला वृक्ष वृद्धिको पाता है १८ हे राजन्! जो पुरुष जितेन्द्रिय क्रोध लोभसे रहित सन्तोषी और सत्यवक्ता है वह शान्ति को पाता है १९ हे भरतवंशिन्! यह भी कहा है कि पश्चात्ताप करनेसे दुःख होता है ज्ञानी बड़े दुःखों की औषधि ज्ञानकोही समझे २० इस लोक में जितेन्द्रिय मनुष्य बड़ी दुष्प्राप्य ज्ञानरूपी महाऔषधि को पाकर दुःखरूपी बड़े रोगको उससे काटे २१ घोर दुःखसे वैसे न तो पराक्रम छुड़ाता है न धन मित्र और सुहृद्गण छुड़ाते हैं जैसे कि जितेन्द्रियात्मा छुड़ाता है २२ हे भरतवंशिन्! इस कारण से सब जीवों की प्रीति में नियत होकर सुन्दर प्रकृतिको पाकर जितेन्द्रियपन त्याग और सावधानी को प्राप्त करे यह तीनों ब्रह्मके घोड़े हैं २३ हे राजन्! जो पुरुष मृत्युके भयको त्याग करके शीतल किरणों से युक्त चित्तरूपी रथपर नियत है वह ब्रह्मलोकको पाता है २४ और जो पुरुष सब जीवों को निर्भयता देता है वह सर्वव्यापी परमेश्वर के उस उत्तम स्थान को जाता है जो कि मायाकी उपाधियों से रहित है २५ मनुष्य जो निर्भयता देने से फल पाता है वह हजारों यज्ञ और सदैव व्रतोंके भी करनेसे नहीं पासक्ता है २६ जीवों में आत्मा से अधिक कोई प्यारा नहीं है हे भरतवंशिन्! सब जीवों का अप्रिय मरण नाम है इस हेतुसे ज्ञानीको सब जीवोंपर दया करना चाहिये नाना प्रकार

के मोहसे युक्त अज्ञानके जालसे ढकेहुये २७। २८ अल्पदृष्टि निर्बुद्धि मनुष्य जहां तहां घूमते हैं हे राजन्! सूक्ष्मदृष्टिवाले ज्ञानी सनातन ब्रह्मको पाते हैं २९॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि सप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि राजा धृतराष्ट्र विदुरजीके इस वचन को सुनकर पुत्रशोक से दुःखी और मूर्च्छावान् होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा १ सब बान्धव, व्यास जी, विदुरजी, सञ्जय अन्य सुहृद् द्वारपाल और जो २ उसके अङ्गीकृत थे उन सबने उस प्रकार पृथ्वीपर पड़े हुये अचेत उस धृतराष्ट्र को देखकर सुखदायी शीतल जलसे छिड़का और पंखोंसे हवा करी २। ३ और उपायों से चैतन्य करतेहुये उन लोगोंने हाथोंसे शरीरको स्पर्श किया इसके पीछे उस दशावाले धृतराष्ट्रको बहुत देरतक विश्वास कराया ४ फिर बहुत देरके पीछे सचेतताको पानेवाला वह पुत्रशोकसे युक्त राजा धृतराष्ट्र बहुत देरतक विलाप करनेवाला हुआ निश्चय करके मनुष्योंमें जन्मको और नरलोकों में परिग्रहको धिकार है जिससे कि दुःखका मूल बारम्बार उत्पन्न होता है ५। ६ हे समर्थ! पुत्र धन ज्ञानवाले और नातेदारों का भी नाश होताहै और विषाग्नि के समान बहुत बड़ा दुःख प्राप्त होता है ७ जिससे सब अंग भस्म होकर बुद्धिका भी नाश होता है और जिससे भयभीत मनुष्य मरणको बहुत मानता है ८ सो यह दुःख प्रारब्ध के विपरीततासे मैंने पाया है प्राणत्याग के सिवाय उसके अन्तको अन्य किसी प्रकारसे नहीं पाता हूं ९ मैं उसी प्रकार करूंगा हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ, व्यासजी! देखो उस धृतराष्ट्रने बड़े ब्रह्मज्ञानी महात्मा पिता से यह कहकर अचेतताको पाके बड़े शोकको पाया अर्थात् वह राजा धृतराष्ट्र ध्यान करता हुआ मौन होगया १०। ११ प्रभु व्यासजी उसके उस वचनको सुनकर पुत्रशोकसे दुःखी अपने पुत्रसे यह वचन बोले १२ हे महाबाहो, धृतराष्ट्र! जो मैं कहूं उसको सुनो तुम शास्त्रज्ञ और शास्त्रोंके स्मरण रखनेवाले बुद्धिके स्वामी और धर्म अर्थ में भी कुशलहो १३ हे शत्रुओं के तपानेवाले! तुझसे कोई बात अज्ञात नहीं है हे बड़े ज्ञानी! तुम जीवधारियों की अनित्यताको जानते हो हे भरतवंशिन्! इस विनाशवान् जीवलोकमें विनाशवान् निवासस्थानके होनेपर जीवन और मृत्यु में किस निमित्त सोचते हो १४। १५ हे राजेन्द्र! इस शत्रुता की प्रत्यक्षता आपके

दृष्टिगोचर है कालयोग से आपके पुत्रको कारण बनाकर सब मारे गये १६
हे राजन् ! कौरवोंको अवश्य भावी नाश होनेपर उन परम गति पानेवाले
वीरों को किस हेतुसे सोचते हो १७ हे महाबाहो, राजा धृतराष्ट्र ! मैंने और
बुद्धिमान् विदुरने भी सब प्रकार से सन्धि में उपाय किया १८ बहुत काल
तक उद्योग करनेवाले किसी जीवसे भी दैवका रचा हुआ मार्ग मेरे मत से
बन्द करने के योग्य नहीं है १९ मैंने अपने नेत्रों के समक्ष में देवताओं का
जो कार्य सुना मैं उसको उसी प्रकार से कहता हूं जिससे कि तेरी बुद्धि स्थिर
होय २० थकावट से रहित मैं एक समय बड़ी शीघ्रता से इन्द्रकी सभा में गया
और सब इकट्ठे हुये देवताओं को देखा २१ हे राजन् ! वहांपर मैंने नारदादिक
सब देवऋषियों को और पृथ्वीको भी देखा २२ यह सब मिलकर अपने कार्य के
निमित्त इन्द्रादिक देवताओं के सम्मुख वर्तमान हुये तब पृथ्वी ने समीप जाकर
उन इकट्ठे देवताओं से कहा २३ कि हे महाभाग, देवतालोगो ! आप लोगोंने
ब्रह्मलोक में जिस मेरे कार्य करने की प्रतिज्ञा की है उसको शीघ्र करो २४ लोक-
पूजित विष्णुजी देवसभामें उसके उस वचन को सुनकर हँसते हुये उस पृथ्वी से
यह वचन बोले २५ धृतराष्ट्रके सौ बेटों में बड़ा बेटा दुर्योधन नाम से प्रसिद्ध है
वह तेरा कार्य करेगा २६ उस राजाको पाकर तू अभीष्ट प्राप्त करेगी उसके
पीछे कुरुक्षेत्र में इकट्ठे होनेवाले और दृढ़ शस्त्रों से प्रहार करनेवाले राजालोग
परस्पर मारेंगे हे देवि ! इसके पीछे युद्धमें तेरे भारका नाश होगा २७। २८
हे शोभने ! शीघ्र अपने स्थान को जावो और सृष्टि को धारण करो हे
राजाओं में श्रेष्ठ, राजा धृतराष्ट्र ! संसारके नाशके कारण से वह तेरा पुत्र २९
कलियुग अंश गान्धारी में उत्पन्न हुआ था जोकि अशान्त चपल क्रोध का
अभ्यासी और दुःख से पराजय होनेवाला था ३० दैवयोग से उसके भाई भी
उसी प्रकार के उत्पन्न हुये और मामा शकुनी और बड़ा मित्र कर्ण ३१ और
बहुत से राजालोग संसार के नाश के निमित्त उत्पन्न हुये जैसा राजा उत्पन्न
होता है उसी प्रकार के उसके आदमी भी उत्पन्न होते हैं ३२ जो स्वामी धर्म का
अभ्यासी होता है उस दशामें अधर्म भी धर्मता को पाता है स्वामियों के गुण
दोषों से निस्सन्देह उसी प्रकार के नौकर चाकर होंगे ३३ हे राजन् ! तेरे पुत्र
दुष्ट राजाको पाकर इस संसारसे गये महाबाहु नारदजी इस प्रयोजनको मुख्यता
समेत जानते हैं ३४ । ३५ हे भरतवंशिन् ! तेरे पुत्र महात्मा पाण्डव हैं वह

थोड़ा भी अपराध नहीं करते जिन्होंके हाथ से यह सब संसार मारागया ३६ तेरा भला होय प्रथम ही राजसूय यज्ञ में नारदजी ने युधिष्ठिरकी सभा में वर्णन किया था ३७ कि हे कुन्ती के पुत्र, युधिष्ठिर ! कुछ काल पीछे कौरव और पाण्डव परस्पर सम्मुख होकर नाशको पावेंगे जो तेरे करने के योग्य है उसको कर ३८ तब पाण्डवोंने नारदजीके वचनको सुनकर सोच किया यह देवताओं की गुप्त और सनातन बातें मैंने तुझसे कहीं ३९ अब तू अपने प्राणोंपर दया और पाण्डवों पर प्रीति कर जिससे कि दैवके कर्मको जानकर तेरा शोक दूर होय ४० हे महाबाहो ! यह बात मैंने प्रथमही सुनी थी जो कि धर्मराजके उत्तम राजसूययज्ञ में कही गई थी ४१ मुझसे गुप्तबात के कहनेपर धर्मराज के पुत्रने कौरवोंके युद्ध न होनेमें उपाय किये परन्तु दैव बड़ा प्रबल है ४२ हे राजन् ! काल की रची हुई जो सनातन विधि है वह इस लोक में किसी जीवधारी से उल्लंघन करनेके योग्य नहीं है ४३ हे भरतवंशिन्, धर्मात्मन् ! आप प्राणियों की गति और अगतियों को भी जानकर इनमें अचेत होते हो धर्मात्मा और बुद्धिमान् ४४ राजा युधिष्ठिर तुमको शोक से दुःखी और बारबार अचेत होने-वाला जानकर अपने प्राणोंको भी त्याग करसक्ता है ४५ वह धैर्यवान् सदैव पशु पक्षियोंपर भी दयाका करनेवाला है हे राजेन्द्र ! वह तुझपर कैसे कृपा नहीं करेगा ४६ हे भरतवंशिन् ! मेरी आज्ञा से दैवके उल्लंघन न होनेसे और पाण्डवों की दया से प्राणों को धारण करो अर्थात् जीते रहो ४७ इस प्रकार लोकमें तुझ वर्तमान रहनेवाले की कीर्ति होगी और हे तात ! बड़ा धर्म और बहुत कालतक तपा हुआ तप प्राप्त होगा ४८ हे महाराज ! ज्वलित रूप अग्नि के समान उत्पन्न होनेवाले पुत्र शोक को ज्ञानरूपी जल से शान्त करने के योग्य हो ४९ वैशम्पायन बोले कि धृतराष्ट्र उन बड़े तेजस्वी व्यासजी के इस वचन को सुनकर एक मुहूर्त अच्छे प्रकार ध्यान करके ५० यह बोला कि हे पितः ! मैं बड़े शोकजाल से कठिन ढका हुआ बारम्बार अचेत होता सचेतता में नहीं आता हूं ५१ दैवकी आज्ञासे उत्पन्न होनेवाले आपके इस वचन को सुन कर मैं प्राणों को धारण करूंगा अर्थात् जीता रहूंगा और शोच करने में प्रवृत्त नहीं हूंगा ५२ हे राजेन्द्र ! सत्यवती के पुत्र व्यासजी धृतराष्ट्र के इस वचन को सुनकर उसी स्थान में अन्तर्धान होगये ५३ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वण्यष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

जनमेजय बोले हे ब्रह्मर्षे! भगवान् व्यासजी के जानेपर राजा धृतराष्ट्रने क्या किया वह मुझसे कहने को योग्य हो १ उसी प्रकार धर्मपुत्र बड़े साहसी राजा युधिष्ठिर और कृपाचार्यादिक तीनोंने क्या किया २ अश्वत्थामाका कर्म सुना और परस्पर दिया हुआ शाप सुना अब आप उस पूर्व वृत्तान्तको कहिये जिसको सञ्जयने कहा है ३ वैशम्पायन बोले कि दुर्योधनके और सब सेनाके मरनेपर अचेत सञ्जय धृतराष्ट्र के पास आये ४ हे राजन्! सब राजा नाना देशोंसे आकर आपके पुत्रों समेत पितृलोकोंको गये ५ हे भरतवंशिन्! सदैव प्रवृत्त अन्तमें शत्रुता करनेके अभिलाषी आपके पुत्रके कारणसे सब संसार मारा गया ६ हे राजन्! पुत्र पौत्र और पिता आदिक जो रणभूमिमें मरे हैं उन सबके कर्मोंको क्रमपूर्वक करावो ७ वैशम्पायन बोले कि राजा धृतराष्ट्र सञ्जय के उस घोर वचनको सुनकर निर्जीव के समान निश्चेष्ट होकर पृथ्वीपर गिर पड़ा ८ सब धर्मोंके ज्ञाता विदुरजी उस पृथ्वीपर सोनेवाले राजाके पास आकर इस वचनको बोले ९ हे भरतर्षभ, लोकेश्वर राजा धृतराष्ट्र! उठो शोच मत करो सब जीवधारियों की यही परम गति है १० हे भरतवंशिन्! जीव प्रारम्भ में अभावरूप है मध्य में भावरूप है उसमें क्या विलाप करना चाहिये ११ सोचता हुआ मृत्युको नहीं पाता है न सोचता हुआ मनुष्य मरता है ऐसे स्वभाववाले लोक में किसलिये शोच करते हो १२ युद्ध न करता मरता है और युद्ध करता नहीं मरता है हे महाराज! कोई जीव काल को पाकर उल्लङ्घनकर वर्तमान नहीं रहता १३ यह काल नानाप्रकारके सब जीवों को खैंचता है हे कौरवश्रेष्ठ! कालका कोई मित्र है न शत्रु है १४ जिस प्रकार वायु सब ओर तृणोंकी नोकोंको तिर्रे बिर्रे करता है उसी प्रकार जीव भी काल के आधीन होते हैं १५ एक साथ चलनेवाले और वहां जानेवाले सब जीवों के मध्य में जिसको काल प्राप्त होता है वहां कौन विलाप है १६ हे राजन्! तुम जिन मृतकों को सोचते हो वह महात्मा शोचके योग्य नहीं हैं वह सब स्वर्ग को गये १७ दक्षिणावाले यज्ञ तप और ब्रह्मज्ञानके द्वारा उस प्रकार स्वर्गको नहीं पाते हैं जैसे कि शरीर की प्रीति त्यागनेवाले शूरवीर पाते हैं १८ सब वेद के जाननेवाले अच्छे प्रकार व्रत करनेवाले और सब सम्मुख लड़नेवाले शूर मारे गये इसमें कौन विलाप है

उन उत्तम पुरुषों ने शूरों की शरीररूपी अग्नियों में बाणों को होमा और होमेहुये बाणोंको सहा १६।२० हे राजन् ! इस प्रकारके स्वर्ग के उत्तम मार्ग को तुझसे कहताहूं इस लोकमें युद्धसे विशेष क्षत्रियका कुछ कर्म वर्तमान नहीं है २१ उन महात्मा शूर और युद्धको शोभा देनेवाले क्षत्रियों ने परमगति को पाया वह सब शोचके योग्य नहीं हैं २२ हे पुरुषोत्तम ! बुद्धि से चित्त को विश्वास देकर शोच मत करो अब शोक में डूबेहुये तुम करने के योग्य जलदानादिक क्रियाके त्यागने के योग्य नहीं हो २३ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि धृतराष्ट्रविदुरवाक्यंनाम नवमोऽध्यायः ६ ॥

दशवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र विदुरजी के उस वचन को सुनकर सवारी तैयार करो यह कहकर फिर वचनको बोला १ वधू कुन्तीआदि अन्य सब स्त्रियों को लेकर गान्धारी समेत सब भरतवंशियों की स्त्रियों को शीघ्र लावो २ वह धर्मात्मा शोक से हतचित्त बुद्धिमान् धृतराष्ट्र बड़े धर्मवान् विदुरजी से इस प्रकार कहकर सवारीपर सवारहुये ३ पतिके वचन से चलायमान शोकसे पीड़ित गान्धारी कुन्ती और अन्य सब स्त्रियों समेत वहां गये जहांपर राजा धृतराष्ट्र थे ४ अत्यन्त शोकयुक्त वह स्त्रियां राजाको पाकर परस्पर वार्तालाप करके चलीं और बड़े उच्चस्वर से पुकारीं ५ उन स्त्रियोंसे अधिक पीड़ावान् उन विदुरजी ने आंसुओं से पूर्ण उन स्त्रियों को अच्छी रीति से विश्वास कराया और पालकियों में बैठाकर बाहर चले ६ इसके पीछे कौरवों के सब स्थानों में बड़ा शब्द उत्पन्न हुआ और सब नगर लड़कों से वृद्धोंतक शोक से पीड़ावान् हुआ पूर्व समयमें जो स्त्रियां देवसमूहों से भी नहीं देखीगईं थीं वह सब विधवा स्त्री अन्य अन्य मनुष्यों से भी देखीगईं ७।८ शिरके बालों को फैलाकर और सुन्दर भूषणों को उतारकर एक वस्त्र रखनेवाली स्त्रियां अनाथके समान बाहर निकलीं वह स्त्रियां श्वेत पर्वतों के समान गृहों से ऐसे निकलीं जैसे कि पहाड़ोंकी गुफाओंसे ऐसी हिरणी निकलें जिनके कि यूथप हिरण मारेगये हों ९।१० हे राजन् ! तब उन स्त्रियों के बड़े २ समूह शोकसे पीड़ावान् ऐसे चले जैसे कि घोड़ियोंके बच्चे मैदान में निकलते हैं ११ भुजाओं को पकड़कर पिता भाई और पुत्रों को भी पुकारती हुईं प्रलयकालीन संसार के नाश की

दिखलानेवाली हुईं १२ विलाप करते रोते जहां तहां दौड़ते शोकसे हतज्ञान उन स्त्रियोंने करने के योग्य कर्मको नहीं जाना १३ पूर्व समय में स्त्रियों ने सखियोंकी भी लज्जाको पाया वह एक वस्त्र रखनेवाली विना परदेवाली स्त्रियां सासों के आगे २ चलीं १४ हे राजन् ! जिन्होंने बहुत थोड़े शोकोंमें परस्पर विश्वास कराया तब उन शोक से व्याकुल स्त्रियों ने परस्पर देखा १५ उन रोनेवाली हजारों स्त्रियों से घिराहुआ महादुःखी धृतराष्ट्र नगर से चलकर शीघ्र ही मैदानमें गया १६ शिल्पी व्यापारी वैश्य और सब कर्मों से निर्वाह करने-वाले वह सब राजाको आगे करके नगरसे बाहर निकले १७ कौरवों के नाश में उन पीड़ावान् और पुकारनेवालों के बड़े शब्द सब भवनों को पीड़ावान् करते प्रकट हुये १८ जैसे कि प्रलयकाल वर्तमान होनेपर भस्म होनेवाले जीवों का नाश होता है उसी प्रकार इस नाशका भी होना जीवों ने माना १९ अर्थात् हे महाराज ! इस कौरवों के नाश होनेपर अत्यन्त व्याकुल चित्त बड़े प्रीतिमान् वह पुरवासी कठिनता से पुकारे २० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि धृतराष्ट्रनिर्गमने दशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि फिर एककोस जाकर उन कृपाचार्य अश्वत्थामा और कृतवर्मा महारथियोंको देखा १ वह शोकके अश्रुओंसे पूर्ण कण्ठसे रोदन करते ज्ञानरूप नेत्र रखनेवाले अपने स्वामी राजाको देखतेही बहुत श्वास लेकर यह वचन बोले २ हे महाराज, राजा धृतराष्ट्र! आपका पुत्र बड़े कठिन कर्म को करके साथियों समेत इन्द्रलोक को गया ३ हे भरतर्षभ ! दुर्योधन की सेनामें से हम तीन रथी बचे हैं शेष सब आपकी सेना नाश होगई ४ इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्य राजासे यह कहकर पुत्रशोकसे पीड़ावान् गान्धारी से यह वचन बोले कि निर्भय युद्ध करनेवाले शत्रुओं के बहुत समूहों को मारनेवाले वीरलोगों के कर्मों को करके उन तेरे पुत्रों ने मरणको पाया ५ । ६ निश्चय करके वह शस्त्रों से विजय कियेहुये निर्मल लोकोंको पाकर और प्रकाशमान शरीर में नियत होकर देवताओं के समान विहार करते हैं ७ उन शूरोंमें से कोई शूरवीर मुख फेरनेवाला नहीं हुआ किन्तु शस्त्रोंसे मरणको पाया और हाथ जोड़कर किसीने भी नाश को नहीं पाया ८ प्राचीन वृद्धों ने इस प्रकार युद्ध

में शस्त्रोंसे क्षत्रियके मरणको परमगति कहा है इस हेतुसे वह शोचकरनेके योग्य नहीं हैं ६ हे राजन् ! उन्होंके शत्रु पाण्डव भी वृद्धियुक्त नहीं हैं अश्वत्थामा आदिक हमलोगों ने जो किया उसको सुनो १० अधर्म के साथ भीमसेन के हाथ से तेरे पुत्रको मराहुआ सुनकर हमलोगोंने सोतेहुये लोगोंसे युक्त डेरे को पाकर पाण्डवीय शूरवीरों का नाश किया ११ सब पाञ्चाल जिनका अग्रवर्ती धृष्टद्युम्नथा उन सबको मारा राजा द्रुपद के और द्रौपदी के सब पुत्रोंको भी मारा १२ इस रीतिसे हम युद्ध में तेरे पुत्रके शत्रुसमूहों का नाश करके भागे हैं इस हेतु से हम तीनों यहां नियत होने को समर्थ नहीं हैं १३ वह शूरवीर पाण्डव महाधनुषधारी क्रोधके आधीन शत्रुता का बदला लेने के अभिलाषी हमारी खोजमें शीघ्रता से आते हैं १४ हे यशस्विनि ! वह पुरुषोत्तम शूर अपने पुत्रोंको मराहुआ सुनकर मतवाले और खोज करने के अभिलाषी शीघ्र आते हैं १५ हे राजन् ! तुम आज्ञा दो और बड़े धैर्य में नियत हो प्रारब्धके अन्तपर होनेवाली मृत्युको और शुद्ध क्षत्रियधर्मको भी विचारो १६ हे भरतवंशिन् ! कृपाचार्य कृतवर्मा और अश्वत्थामा इन तीनों ने इस प्रकार राजा से कहकर और प्रदक्षिणा करके १७ बुद्धिमान् राजा धृतराष्ट्र को देखते अपने घोड़ों को गंगाजी की ओर चलायमान किया १८ हे राजन् ! तब वह महारथी दूर जाकर परस्पर बिदा होकर व्याकुलचित्त तीनों तीनों ओरको चलदिये १९ उनमें से शारद्वत कृपाचार्य हस्तिनापुर को, कृतवर्मा अपने देशको और अश्वत्थामा व्यासजीके आश्रमको गये २० इस रीतिसे वह वीर उन महात्मा पाण्डवों का अपराध करके भयसे पीड़ावान् परस्पर देखतेहुये चलदिये २१ अर्थात् वह शत्रुविजयी महात्मा वीर सूर्योदयसे पूर्वही इच्छानुसार चलदिये २२ हे राजन् ! कृतवर्मा और कृपाचार्य से अश्वत्थामाके जुदे होनेपर उन महारथी पाण्डवोंने द्रोणाचार्य के पुत्रको पाकर और पराक्रम करके युद्धमें विजय किया २३ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वण्येकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि सब सेनाओं के मरनेपर धर्मराज युधिष्ठिरने हस्तिनापुर से निकलेहुये अपने वृद्धपिताको सुना १ हे महाराज ! तब पुत्रशोकसे पीड़ावान् वह युधिष्ठिर भाइयों समेत उस पुत्रशोक से पूर्ण बड़ी चिन्तावाले

धृतराष्ट्र की ओर चला २ महात्मा वीर श्रीकृष्णजी सात्यकी और युयुत्सु इन तीनों समेत चला ३ और बड़े दुःखसे पीड़ित शोकमें डूबीहुई द्रौपदी पाञ्चालों की उन स्त्रियों समेत जो वहां आतीथीं उसके पीछे चलीं ४ हे भरतर्षभ! उसने गंगाजी के समीप कुररी पक्षी के समान पीड़ित होकर पुकारती हुई स्त्रियों के समूहों को देखा ५ उन पुकारनेवाली ऊपरको हाथ महापीड़ित इन प्रिय अप्रिय वचनों समेत रोनेवाली हजारों स्त्रियों से वह राजा धृतराष्ट्र घिरा हुआ था कि अब राजा युधिष्ठिरकी वह दया और धर्मज्ञता कहां है जो पिता भाई मित्र और गुरुओंके पुत्रोंको भी मारा ६। ७ हे महाबाहो! द्रोणाचार्य भीष्मपितामह और जयद्रथको भी मरवाकर तेरा चित्त कैसा हुआ ८ हे भरतवंशिन्! पिता भाई और द्रौपदीके पुत्र और अजेय अभिमन्यु को न देखनेवाले तुझको राज्यसे कौन प्रयोजन है ९ हे महाबाहो! धर्मराज युधिष्ठिरने कुररी पक्षी के समान पुकारनेवाली उन स्त्रियोंको उल्लंघन करके ताऊजी को दण्डवत् करी १० इसके पीछे शत्रुओं के विजय करनेवालेने ताऊजीको नमस्कार करके अपने नामको कहा और उन सब पाण्डवोंने भी अपना २ नाम वर्णन किया ११ पिता और पुत्रों के मरनेसे पीड़ावान् और अप्रसन्न शोकदुःखी धृतराष्ट्र अपने पुत्रोंके नाश करनेवाले उस युधिष्ठिरसे स्नेहपूर्वक मिला १२ हे भरतवंशिन्! धर्मराजसे मिलकर और विश्वास देकर फिर जलानेवाले अग्नि के समान दुष्टात्मा ने भीमसेनको चाहा १३ शोकरूप वायुसे चलायमान उसके क्रोधकी वह अग्नि भीमसेनरूपी वनको जलाने की अभिलाषिणी दिखाई पड़ी १४ हे राजन्! हरिने भीमसेन के विषय में उसके अशुभ संकल्पको जानकर प्रथमही सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी ने वह मूर्ति मँगाली थी १५ जो लोहेकी मूर्ति पूर्व समय में राजा दुर्योधनने बनवाई थी और चित्तसे भीमसेनको चिन्तन करके योगभूमिमें जिसका आवाहन किया था बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णजीने प्रथमही उसकी चेष्टासे प्रकट होनेवाले वृत्तान्त को जानकर और भीमसेन को हाथोंसे रोककर लोहेका भीमसेन धृतराष्ट्र के हाथमें देदिया १६। १७ वहां बड़े ज्ञानी श्रीकृष्णजीने यह कर्म किया उस लोहेके भीमसेनको हाथोंसे पकड़कर १८ उसको भीमसेन मानकर बलवान् राजा ने तोड़डाला साठ हज़ार हाथीके बलसमान उस बलवान् राजा ने लोहेके भीमसेनको तोड़कर १९ घायल छातीवाले ने मुख से रुधिरको गिराया इसके पीछे इसी प्रकार रुधिर से भराहुआ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा २०

जैसे कि प्रफुल्लित नोक शाखावाला पारिजात नाम वृक्ष गिरता है तब बुद्धिमान् सञ्जयने उसको पकड़लिया २१ और शान्तिपूर्वक विश्वास कराताहुआ उससे बोला कि इस प्रकार मत करो फिर वह बड़ा साहसी क्रोधसे पृथक् और रहित होकर २२ शोकसे युक्त राजा हाय भीमसेन यह शब्द कहके पुकारा उसको भीमसेन के मारने से पीड़ावान् और क्रोध से रहित जानकर २३ पुरुषोत्तम वासुदेवजी यह वचन बोले हे समर्थ, धृतराष्ट्र! शोच मत करो यह भीमसेन तुम्हारे हाथ से नहीं मारागया तुमने यह लोहेकी मूर्ति गिराई है २४ हे भरतर्षभ! तुमको क्रोध के वशीभूत देखकर मृत्युकी डाढ़ में गयाहुआ भीमसेन मैंने खैंचा २५ हे राजाओं में श्रेष्ठ! कोई तेरे समान बलवान् नहीं है हे महाबाहो! कौन मनुष्य तेरी भुजाओंके पकड़नेको सहसक्ता है २६ जैसे कि मृत्युको प्राप्त होकर कोई जीवता नहीं छूटता है इसी प्रकार तेरी भुजाओंके मध्यको पाकर कोई जीवता नहीं रहसक्ता है २७ हे कौरव! जिस हेतुसे आपके पुत्रने भीमसेनकी जो यह लोहेकी मूर्ति बनवाई वही मूर्ति मैंने तेरे पास वर्तमान करी २८ हे राजेन्द्र! पुत्रशोकसे दुःखी तेरा चित्त धर्म से पृथक् हुआ था इस हेतुसे तुम भीमसेन को मारना चाहते थे २९ हे राजन्! यह आपको योग्य नहीं है जो तुम भीमसेन को मारा चाहतेहो क्योंकि आपके पुत्र आयुर्दाय पूर्ण होजानेके कारण से किसी दशामें भी जीवते नहीं रहसक्ते थे ३० इस हेतुसे सन्धिको अंगीकार करनेवाले हम लोगों ने सन्धि के विषय में जो कर्म किया उस सबको ध्यान करो शोक में चित्त मत करो ३१ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि आयसपुरुषभंगोनाम द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि इसके अनन्तर नौकर लोग स्नान करानेके निमित्त इसके पास आकर वर्तमान हुये मधुसूदनजी इस स्नानसे निवृत्त होनेवाले राजा से बोले कि हे राजन्! तुमने वेद और नानाप्रकारके शास्त्र पढ़े पुराणों समेत शुद्ध राजधर्मों को सुना १। २ इस प्रकार पण्डित और बड़े ज्ञानी बलाबलमें समर्थ होकर तुम अपने अपराधसे ऐसे क्रोधको किस निमित्त करतेहो हे भरतवंशिन्! तभी मैंने भीष्मने द्रोणाचार्य ने औरसञ्जयने भी तुमसे कहाथा परन्तु हे राजन्! तुमने उस वचनको नहीं किया ३। ४ हे कौरव! उस समय पाण्डवों

धृतराष्ट्र की ओर चला २ महात्मा वीर श्रीकृष्णजी सात्यकी और युयुत्सु इन तीनों समेत चला ३ और बड़े दुःखसे पीड़ित शोकमें डूबीहुई द्रौपदी पाञ्चालों की उन स्त्रियों समेत जो वहां आतीथीं उसके पीछे चलीं ४ हे भरतर्षभ! उसने गंगाजी के समीप कुररी पक्षी के समान पीड़ित होकर पुकारती हुई स्त्रियों के समूहों को देखा ५ उन पुकारनेवाली ऊपरको हाथ महापीड़ित इन प्रिय अप्रिय वचनों समेत रोनेवाली हज़ारों स्त्रियों से वह राजा धृतराष्ट्र घिरा हुआ था कि अब राजा युधिष्ठिरकी वह दया और धर्मज्ञता कहां है जो पिता भाई मित्र और गुरुओंके पुत्रोंको भी मारा ६। ७ हे महाबाहो! द्रोणाचार्य भीष्मपितामह और जयद्रथको भी मरवाकर तेरा चित्त कैसा हुआ ८ हे भरतवंशिन्! पिता भाई और द्रौपदीके पुत्र और अजेय अभिमन्यु को न देखनेवाले तुझको राज्यसे कौन प्रयोजन है ९ हे महाबाहो! धर्मराज युधिष्ठिरने कुररी पक्षी के समान पुकारनेवाली उन स्त्रियोंको उल्लंघन करके ताऊजी को दण्डवत् करी १० इसके पीछे शत्रुओं के विजय करनेवालेने ताऊजीको नमस्कार करके अपने नामको कहा और उन सब पाण्डवोंने भी अपना २ नाम वर्णन किया ११ पिता और पुत्रों के मरनेसे पीड़ावान् और अप्रसन्न शोकदुःखी धृतराष्ट्र अपने पुत्रोंके नाश करनेवाले उस युधिष्ठिरसे स्नेहपूर्वक मिला १२ हे भरतवंशिन्! धर्मराजसे मिलकर और विश्वास देकर फिर जलानेवाले अग्नि के समान दुष्टात्मा ने भीमसेनको चाहा १३ शोकरूप वायुसे चलायमान उसके क्रोधकी वह अग्नि भीमसेनरूपी वनको जलाने की अभिलाषिणी दिखाई पड़ी १४ हे राजन्! हरिने भीमसेन के विषय में उसके अशुभ संकल्पको जानकर प्रथमही सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी ने वह मूर्ति मँगाली थी १५ जो लोहेकी मूर्ति पूर्व समय में राजा दुर्योधनने बनवाई थी और चित्तसे भीमसेनको चिन्तन करके योगभूमिमें जिसका आवाहन किया था बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णजीने प्रथमही उसकी चेष्टासे प्रकट होनेवाले वृत्तान्त को जानकर और भीमसेन को हाथोंसे रोककर लोहेका भीमसेन धृतराष्ट्र के हाथमें देदिया १६। १७ वहां बड़े ज्ञानी श्रीकृष्णजीने यह कर्म किया उस लोहेके भीमसेनको हाथोंसे पकड़कर १८ उसको भीमसेन मानकर बलवान् राजा ने तोड़डाला साठ हज़ार हाथीके बलसमान उस बलवान् राजा ने लोहेके भीमसेनको तोड़कर १९ घायल छातीवाले ने मुख से रुधिरको गिराया इसके पीछे इसी प्रकार रुधिर से भराहुआ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा २०

जैसे कि प्रफुल्लित नोक शाखावाला पारिजात नाम वृक्ष गिरता है तब बुद्धिमान् सञ्जयने उसको पकड़लिया २१ और शान्तिपूर्वक विश्वास करताहुआ उससे बोला कि इस प्रकार मत करो फिर वह बड़ा साहसी क्रोधसे पृथक् और रहित होकर २२ शोकसे युक्त राजा हाय भीमसेन यह शब्द कहके पुकारा उसको भीमसेन के मारने से पीड़ावान् और क्रोध से रहित जानकर २३ पुरुषोत्तम वासुदेवजी यह वचन बोले हे समर्थ, धृतराष्ट्र! शोच मत करो यह भीमसेन तुम्हारे हाथ से नहीं मारागया तुमने यह लोहेकी मूर्ति गिराई है २४ हे भरतर्षभ! तुमको क्रोध के वशीभूत देखकर मृत्युकी डाढ़ में गयाहुआ भीमसेन मैंने खैंचा २५ हे राजाओं में श्रेष्ठ! कोई तेरे समान बलवान् नहीं है हे महाबाहो! कौन मनुष्य तेरी भुजाओंके पकड़नेको सहसक्ता है २६ जैसे कि मृत्युको प्राप्त होकर कोई जीवता नहीं छूटता है इसी प्रकार तेरी भुजाओंके मध्यको पाकर कोई जीवता नहीं रहसक्ता है २७ हे कौरव! जिस हेतुसे आपके पुत्रने भीमसेनकी जो यह लोहेकी मूर्ति बनवाई वही मूर्ति मैंने तेरे पास वर्तमान करी २८ हे राजेन्द्र! पुत्रशोकसे दुःखी तेरा चित्त धर्म से पृथक् हुआ था इस हेतुसे तुम भीमसेन को मारना चाहते थे २९ हे राजन्! यह आपको योग्य नहीं है जो तुम भीमसेन को मारा चाहतेहो क्योंकि आपके पुत्र आयुर्दाय पूर्ण होजानेके कारण से किसी दशामें भी जीवते नहीं रहसक्ते थे ३० इस हेतुसे सन्धिको अंगीकार करनेवाले हम लोगों ने सन्धि के विषय में जो कर्म किया उस सबको ध्यान करो शोक में चित्त मत करो ३१॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि आयसपुरुषभंगोनाम द्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि इसके अनन्तर नौकर लोग स्नान करानेके निमित्त इसके पास आकर वर्तमान हुये मधुसूदनजी इस स्नानसे निवृत्त होनेवाले राजा से बोले कि हे राजन्! तुमने वेद और नानाप्रकारके शास्त्र पढ़े पुराणों समेत शुद्ध राजधर्मों को सुना १। २ इस प्रकार पण्डित और बड़े ज्ञानी बलाबलमें समर्थ होकर तुम अपने अपराधसे ऐसे क्रोधको किस निमित्त करतेहो हे भरतवंशिन्! तभी मैंने भीष्मने द्रोणाचार्य ने और सञ्जयने भी तुमसे कहाथा परन्तु हे राजन्! तुमने उस वचनको नहीं किया ३। ४ हे कौरव! उस समय पाण्डवों

को बल और वीरतामें अधिक जानते और बारम्बार निषेध कियेहुये भी तुमने हमारे वचन को नहीं किया ५ जो नियतबुद्धि राजा आप दोषों समेत देश कालके विभाग को विचारता है वह परम कल्याण को पाता है ६ हित अनहित में समझाया हुआ जो पुरुष कल्याण वचनको अंगीकार नहीं करता है वह अनीति में नियत आपत्तिको पाकर शोचता है ७ हे राजन् ! इस हेतुसे विपरीत चलनेवाले अपने को देखो वृद्धों के वचनों से विपरीत चित्तवाले तुम दुर्योधनकी आधीनता में नियतहुये ८ और अपनेही अपराधसे आपत्ति में फँसे सो तुम भीमसेनको क्यों मारना चाहतेहो इस हेतुसे तुम अपने क्रोधको दूर करो और अपने दुष्ट कर्मों को स्मरण करो ९ जिस नीच ने ईर्षा से उस द्रौपदी को सभा में बुलाया वह शत्रुताको बदला लेने के अभिलाषी भीमसेनके हाथ से मारागया १० अपनी और अपने दुरात्मा पुत्रकी अमर्यादगी को देखो जो तुमने निरपराधी पाण्डवों को त्याग किया अर्थात् राज्यका भाग नहीं दिया ११ वैशम्पायन बोले हे जनमेजय ! श्रीकृष्णजी के इस प्रकारके सत्य २ वचनों को सुनकर उस राजा धृतराष्ट्रने देवकीनन्दन से कहा १२ कि हे महाबाहो, माधव जी ! जो आप कहते हैं वह सब यथार्थ है परन्तु पुत्रकी बड़ी बलवान् प्रीति ने मुझको धैर्य से पृथक् कर दिया १३ हे श्रीकृष्णजी ! प्रारब्धकी बात है कि तुमसे रक्षित बलवान् सत्य पराक्रमी भीमसेनने मेरी भुजाके मध्यको नहीं पाया १४ हे माधवजी ! अब सावधान क्रोध से रहित विगतज्वर में मझले वीर पाण्डवको देखा चाहता हूं महाराजाओं के और पुत्रों के मरनेपर मेरे सुख और प्रीति पाण्डवों में नियत होते हैं १५ । १६ इसके पीछे बहुत रोतेहुये उस राजाने उन सुन्दर अंगवाले भीमसेन अर्जुन और पुरुषों में बड़े वीर नकुल और सहदेव को भी अंगों से स्पर्श किया और उन्होंको विश्वास देकर कल्याण के वचन कहे अर्थात् आशीर्वाद दिये १७ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिके धृतराष्ट्रकोपविमोचने पाण्डवपरिष्वंगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि इसके पीछे धृतराष्ट्रसे आज्ञा लेकर वह कौरव पाण्डव भाई केशवजी समेत गान्धारीके पास गये १ इसके पीछे पुत्रोंके शोकसे पीड़ावान्

निर्दोष गान्धारी ने उस मृतक शत्रुवाले युधिष्ठिर को पास आया हुआ जानकर शाप देना चाहा २ व्यासऋषि प्रथमही पाण्डवों के विषय में उसके पापरूप चित्त के विचारको जानकर सावधान हुये ३ और चित्तके समान शीघ्रगामी होकर वह महर्षि श्रीगंगाजीके पवित्र और सुगन्धित जल में स्नान आचमन करके उस स्थानपर आ पहुँचे और दिव्य नेत्रयुक्त अपने चित्त से देखते उस ऋषिने वहां सब जीवों के चित्त के वृत्तान्त को जाना ४ । ५ शापके समयको निरादर करके कालकी शान्तिको वर्णन करते वह महातपस्वी कल्पवादी ऋषि पुत्रवधू से बोले ६ कि हे गान्धारि ! पाण्डव के ऊपर क्रोध न करना चाहिये अपने शाप वचन को रोककर इस मेरे वचनको सुनो ७ अठारह दिनतक विजय के अभिलाषी पुत्रने कहा है कि हे मातः ! शत्रुओंके साथ मुझ युद्ध करनेवाले को शुभाशीर्वाद दो ८ हे गान्धारि ! उस विजयाभिलाषी से समय २ पर प्रार्थना करी हुई तुमने कहा है कि जिधर धर्म है उधरही विजय है ९ हे गान्धारि ! मैं पूर्व समय में तुझ दुर्योधन के शुभाशीर्वाद से प्रसन्न करनेवाले के कहेहुये वचन को मिथ्या स्मरण नहीं करता हूं तुम उस प्रकारकी समाधि धारण करनेवाली हो १० इसी से राजाओं के कठिन युद्ध में पारको पाकर पाण्डवों ने युद्ध में निस्सन्देह विजय को पाया निश्चय करके उधरही धर्म अधिक है ११ पूर्वसमयमें ऐसी क्षमावती होकर अब किस हेतुसे तू क्षमा नहीं करती है हे धर्मकी जानने वाली ! अधर्म को त्यागो जिधर धर्म है उधरही विजय है १२ हे मनस्विनि, सत्यवादिनी, गान्धारि ! अपने धर्मको और कहेहुये वचनको स्मरण करके क्रोध को रोको और इस दशावाली मत हो १३ गान्धारीने कहा हे भगवन् ! मैं गुण में दोष नहीं लगाती हूं और उनका नाशवान् होना नहीं चाहती हूं १४ परन्तु पुत्रशोकसे मेरा चित्त अत्यन्त व्याकुल होता है जिस प्रकार पाण्डव कुन्ती से रक्षा के योग्य हैं उसी प्रकार मुझसे भी हैं १५ और जैसे मुझसे रक्षा के योग्य हैं उसी प्रकार धृतराष्ट्र से भी हैं दुर्योधन शकुनी १६ कर्ण और दुश्शासन के अपराधसे यह कौरवों का नाश हुआ इसमें अर्जुन भीमसेन १७ नकुल सहदेव और युधिष्ठिरका भी कुछ अपराध नहीं है यह परस्पर युद्ध करनेवाले अहंकारी कौरव १८ एकसाथ अन्य २ लोगों के हाथ से मारेगये वह मेरा अप्रिय नहीं है परन्तु वासुदेवजी के देखते हुये भीमसेन ने कैसा कर्म किया १९ कि बड़े साहसी ने गदायुद्ध में दुर्योधनको बुलाकरके और शिक्षा में अधिक जानकर

युद्धमें अनेक रीतिसे घूमनेवाले को २० नाभि के नीचे घायल किया इस बात को सुनकर मैंने क्रोधको बढ़ाया वह शूरवीर युद्ध में प्राणों के अर्थ किसी दशा में भी धर्मको नहीं त्यागता है जोकि धर्मज्ञ महात्मा लोगों से उपदेश किया गया है २१ । २२ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि जलप्रदानिकेगान्धारीसान्त्वनायां चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि तब भीमसेन उसके उस वचनको सुनकर भयभीत के समान नम्रता के साथ गान्धारी से यह वचन बोला १ हे मातः ! धर्म होय वा अधर्म होय अपने शरीर की रक्षाके अभिलाषी मैंने भयसे वहां ऐसा किया आप उस मेरे अपराधको क्षमा करनेके योग्यहो २ वह बड़ा बलवान् आपका पुत्र धर्मयुद्धके द्वारा किसीके साथ लड़ने के योग्य नहीं था इस हेतुसे मैंने विपरीत कर्म किया ३ पूर्वसमय में उस दुर्योधन ने अधर्म के द्वारा युधिष्ठिरको विजय किया और हम सदैव ठगेगये इस कारणसे मैंने विपरीत कर्म किया ४ सेना के मध्य में अकेला शेष बचाहुआ यह पराक्रमी कदाचित् गदायुद्ध से मुझको मारकर राज्यको न लेले इस हेतुसे मैंने यह कर्म किया ५ आपको सब विदित है कि आपके पुत्रने एकवस्त्रा रजस्वला राजपुत्री द्रौपदी से जो वचन कहाथा इससे दुर्योधन को विना मारेहुये सागरोंसमेत निष्कण्टक पृथ्वी हमसे भोगनेके योग्य नहींथी इन बातोंको विचारकर मैंने यह कर्म किया ६।७ उसी प्रकार आपके पुत्रने हमारे अप्रियको भी किया जो सभा के मध्य में द्रौपदीको वाम जंघा दिखलाई ८ तबहीं वह आपका दुराचारी पुत्र हमारे हाथ से मारडालनेके योग्य था परन्तु उस समय हमलोग धर्मराजकी आज्ञासे नियम में नियतहुये ९ हे राज्ञि ! आपके पुत्र ने वह बड़ी शत्रुता प्रकट की और सदैव वनमें दुःखी किये इस हेतुसे मैंने यह किया १० युद्धमें दुर्योधन को मारकर अब उस शत्रुता के अन्तको पाया युधिष्ठिर ने राज्य को पाया और क्रोध से रहित हुये ११ गान्धारी बोली हे तात ! जो मेरे पुत्रके विषय में कहता है यह केवल उसको ही नहीं मारा किन्तु इसकोभी किया जो यह सब मुझसे कहता है १२ हे भरतवंशिन्, भीमसेन ! वृषसेन के हाथ से नकुल के घोड़े मरनेपर युद्ध में तुमने दुश्शासन के शरीर से उत्पन्न होनेवाले रुधिर को पिया १३

वह तुमने सत्पुरुषोंसे निन्दित निर्दय कर्म किया वह अयोग्यथा १४ भीमसेन बोला कि जब दूसरेका भी रुधिर न पीना चाहिये फिर अपना कैसे पान कर सक्ता है जैसा अपना आत्मा है वैसाही भाई है कोई मुख्यता नहीं है १५ हे मातः ! रुधिर ओठोंसे नीचे नहीं गया यमराज उसको जानते हैं केवल रुधिर से भरे मेरे दोनों हाथ थे हे मातः ! शोच मत कर १६ युद्ध में वृषसेन के हाथ से मृतक घोड़ेवाले नकुल को देखकर मैंने प्रसन्नचित्त भाइयों का भय उत्पन्न किया १७ द्यूत के कारण द्रौपदी के शिरके बाल पकड़ेजाने पर मैंने क्रोधसे जो कहा वह मेरे हृदय में वर्तमान है १८ हे राज्ञि ! मैं उस प्रतिज्ञा को पूरा न करके बराबर वर्षोंतक क्षत्रियधर्म से च्युत होजाता इस हेतुसे मैंने उस कर्मको किया १९ हे गान्धारि ! पूर्वसमय में हमारे निरपराधी होनेपर पुत्रोंको शासन न करके अब मुझको दोषों से शंका करने के योग्य नहीं हो २० जो अब हमारे ऊपर दोषों की शंका करती हो २१ गान्धारी बोली कि इस वृद्धके सौ पुत्रों के मारनेवाले तुझ अजेय ने किस हेतुसे एकको भी बाकी नहीं छोड़ा जिसने कि थोड़ा अपराध किया था २२ हे पुत्र ! जोकि राज्य से हीन और वृद्ध हम दोनों की सन्तानरूप कहलाता इस अन्धे की एक लाठी भी तैंने कैसे नहीं छोड़ी २३ हे पुत्र ! पुत्रों में किसीके भी बाकी रहनेपर तुझ पुत्रोंके नाशकर्ता में मेरा यह दुःख नहीं होता जो तुम धर्मको करते २४ वैशम्पायन बोले क्रोधयुक्त और पुत्र पौत्रों के मरने से पीड़ित गान्धारी ने इस प्रकार कहकर युधिष्ठिर के विषयमें पूछा कि धर्मराज कहां है २५ कम्पायमान हाथ जोड़कर युधिष्ठिर उसके पास गये और वहां इस मधुर वचन को बोले २६ हे देवि ! मैं युधिष्ठिर तेरे पुत्रोंका मारनेवाला और संसार के नाशका मूल निर्दयी होकर शापके योग्य हूं मुझको शाप दे २७ उस प्रकारके सुहृज्जनों को मारकर मुझ अज्ञानी सुहृदों से शत्रुता करनेवाले को जीवन और राज्यसे कौन प्रयोजन है तब कठिन श्वासा लेनेवाली गान्धारी उस इस प्रकार बोलनेवाले भयभीत समीप पहुँचनेवाले से कुछ नहीं बोली २८ । २९ उस धर्मज्ञ दूरदर्शी देवी ने उस झुके शरीर चरणों में गिरने के अभिलाषी राजा युधिष्ठिर की ३० हाथकी उँगलियों की नोक को पट्टान्तर अर्थात् बुरके के भीतर से देखा उससे दर्शनके योग्य नखवाला वह राजा युधिष्ठिर कुनखी होगया ३१ अर्जुन उसको देखकर वासुदेवजी के पीछे चलागया हे भरतवंशिन् ! इस प्रकार इधर उधर से

चेष्टा करनेवाले उन पाण्डवों को ३२ क्रोधसे रहित गान्धारी ने माताके समान विश्वास कराया उस हेतुसे आज्ञा पायेहुये वह बड़े वक्षस्स्थलवाले पाण्डव एक साथही उस वीरोंको उत्पन्न करनेवाली कुन्ती माता के पास गये पुत्रोंके विषयमें चित्तसे खेदयुक्त उस देवीने बहुत कालके पीछे अपने पुत्रोंको देखकर ३३। ३४ वस्त्र से मुखको ढककर अश्रुपात किये इसके पीछे कुन्ती ने पुत्रों समेत अश्रु-पातों को करके ३५ उनको शस्त्रसमूहों से बहुत प्रकार करके घायल देखा उन पुत्रों को पृथक् २ स्पर्श करते दुःखसे पीड़ावान् उस कुन्ती ने ३६ मृतक पुत्र-वाली द्रौपदी को सोचा और पृथ्वीपर पड़ी रोवतीहुई द्रौपदी को देखा ३७ द्रौपदी बोली हे आर्ये ! अर्थात् सासू तेरे सब अभिमन्यु समेत पौत्र कहां गये अब वह बहुत कालसे तुझ तपस्विनी को देखकर तेरे पास नहीं आते हैं ३८ मुझ पुत्रोंसे रहितको राज्यसे कौनसा प्रयोजन है द्रौपदी के इस वचन को सुन-कर बड़े नेत्रवाली कुन्ती ने उसको विश्वास कराया ३९ अर्थात् उस शोक-पीड़ित रोदन करनेवाली द्रौपदी को उठाकर उसको और सब पुत्रों को साथ लेकर ४० बड़ी पीड़ित कुन्ती गान्धारी के पास गई वैशम्पायन बोले कि तब गान्धारी उस बहू समेत आनेवाली कुन्ती से बोली ४१ हे बेटी ! इस प्रकार न करना चाहिये तू मुझ दुःखीको भी देख मैं मानती हूं कि यह संसारका नाश समयकी विपरीततासे प्रकट हुआ है ४२ और रोमांच खड़ा करनेवाली अवश्य होनहार स्वभावसे वर्तमानहुई यह विदुरजीका वह बड़ा वचन सम्मुख आया ४३ जिसको कि उस बड़े बुद्धिमान्ने श्रीकृष्णकी शिक्षा के निष्फल होनेपर कहाथा इस अपरिहार्यार्थ में अर्थात् निरुपाय और व्यतीत होनेवाली बातमें शोच मत कर ४४ युद्ध में मरनेवाले वह वीर शोच के योग्य नहीं हैं जैसी मैंहूं वैसीही तूहै हम दोनोंको कौन विश्वास करावेगा मेरेही अपराध से इस उत्तम कुलका नाश हुआ ४५ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि पञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि इस प्रकार कहकर वहांपर बैठीहुई गान्धारी ने दिव्य-नेत्रों से कौरवों के सब बड़ेभारी नाशको देखा १ उस पतिव्रता महाभागा एकसा व्रत करनेवाली बड़े तपसे संयुक्त सदैव सत्यवक्ता २ पवित्रकर्मी व्यास

महर्षिके वरदान के द्वारा दिव्य ज्ञानबल से संयुक्त ने बहुत प्रकारका विलाप किया ३ उस बुद्धिमतीने दूरसेही समीप के समान नरवीरों की उस रणभूमि को जो कि शरीर के अपूर्व रोमहर्षण करनेवाली थी देखा ४ अर्थात् अस्थि केश मज्जासे युक्त रुधिरसमूह से पूर्ण हज़ारों शरीरों से चारों ओरको आच्छादित ५ हाथी घोड़े रथ और सवारोंके रुधिरसमूहसे युक्त शरीरों से पृथक् शिरोंके समूहों से पूर्ण ६ हाथी घोड़े मनुष्य और स्त्रियोंके शब्दोंसे व्याप्त शृगाल, बक, काकोल, कंक और कागोंसे सेवित ७ मनुष्य के खानेवाले राक्षसोंकी प्रसन्न करनेवाली कुररनाम पक्षियोंसे सेवित शृगालों के अशुभ शब्दों से शब्दायमान और गिद्धों से सेवित थी ८ इसके पीछे व्यासजी से आज्ञा पायाहुआ राजा धृतराष्ट्र और वह सब पाण्डव जिनका अग्रवर्ती युधिष्ठिर था ९ वासुदेवजी को और जिसके बन्धु मारेगये उस राजा को आगेकर सब कौरवीय स्त्रियों को साथलेकर युद्ध-भूमि में गये १० वहां विधवा स्त्रियोंने कुरुक्षेत्र को पाकर उन मृतक भाई पुत्र पिता और सुहृदोंको देखा ११ जो कि कच्चे मांस खानेवाले शृगाल, काक, भूत, पिशाच, राक्षस और नानाप्रकारके निशाचरों से खायेहुये थे १२ रुद्रजी के क्रीड़ास्थानके समान निवासस्थान को देखकर पुकारतीहुई स्त्रियां बहुमूल्य सवारियों से उतरीं १३ भरतवंशियों की स्त्रियां दुःखसे पीड़ित पूर्व में कभी न देखेहुये उस नाशको देखकर कोई शरीरों पर गिरीं और कोई पृथ्वीपर गिरने-वाली हुईं १४ पाञ्चाल और कौरवोंकी उन अनाथ और थकीहुई स्त्रियों को कुछ चेत नहीं रहा यह बड़ा दुःख हुआ १५ वह धर्मज्ञ गान्धारी दुःखितचित्त स्त्रियोंसे चारोंओर को शब्दायमान बड़ी भयानकरूप युद्धभूमि को देखकर १६ फिर पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी को समक्ष में करके इस वचनको बोलीं १७ हे कमल-लोचन, माधवजी ! इन विधवा शिरके बालोंको फैलानेवाली कुररी के समान पुकारनेवाली मेरी पुत्रबधुओं को देखो १८ यह स्त्रियां पृथक् २ पुत्र भाई पिता और सुहृदोंको मिलती पतियोंके गुणोंको याद करती पृथक् २ दौड़ने-वाली हैं १९ हे महाराज ! यह रणभूमि वीरोंके उत्पन्न करनेवाली और मृतक पुत्रवाली स्त्रियों से संयुक्त है कहीं उन वीरों की स्त्रियोंसे संयुक्त है जिनके कि वीर भर्ता मारेगये २० कहीं ज्वलित अग्नि के समान पुरुषोत्तम कर्ण, भीष्म, अभिमन्यु, द्रोणाचार्य, द्रुपद और शल्य से शोभायमान है २१ महात्माओं के स्वर्णमयी कवच निष्कमणि बाजूबन्द केयूर और मालाओं से

अलंकृत २२ वीरों की भुजाओं से छोड़ी हुई शक्ति परिघ और नाना प्रकारके तीक्ष्ण खड्ग बाणों समेत धनुषों से सुशोभित है २३ प्रसन्नचित्त कहीं साथ निवास करनेवाले कहीं क्रीड़ा करनेवाले कहीं सोनेवाले और कहीं मांसभक्षी राक्षसों से संयुक्त है २४ हे समर्थ वीर, श्रीकृष्णजी ! इस प्रकार की रणभूमि को देखो मैं इसको देखकर शोकसे भस्म हुई जाती हूं २५ हे मधुसूदनजी ! मैंने पाञ्चाल और कौरवोंके नाशमें पांचो तत्त्वोंके भी नाशको ध्यान किया है २६ रुधिर से भरे गरुड़ और गिद्ध उनको खैंचते हैं और हज़ारों गिद्ध चरणों से पकड़ कर उनको भक्षण करते हैं २७ कौन मनुष्य जयद्रथ, कर्ण, द्रोणाचार्य, भीष्म और अभिमन्युके नाश की चिन्ता करने के योग्य है २८ विना घायलके समान मृतक अचेत निर्जीव गिद्ध कङ्क वट श्येन बाज श्वान और शृगालोंके भक्ष्य रूप २९ इन पुरुषोत्तमों को शान्त अग्नि के समान देखो जो कि क्रोध के स्वाधीन होकर दुर्योधनकी आज्ञा में नियत थे ३० जो सब पूर्व समयमें कोमल शयनों पर सोतेथे अब वह मृतक होकर इस विस्तृत भूमिपर सोते हैं ३१ और जो सदैव प्रशंसा करनेवाले वन्दीजनोंसे समय समयपर प्रसन्न कियेजाते थे वह शृगालों के अशुभ और भयकारी नाना प्रकार के शब्दों को सुनते हैं ३२ जो यशवान् वीर पूर्व समय में चन्दन अगर से लिप्ताङ्ग शयनोंपर सोते थे वह वीर अब पृथ्वीकी धूलपर सोते हैं ३३ बारम्बार शब्द करनेवाले भयानकरूप यह गिद्ध, काक, शृगाल मुखके भूषणों को लेकर फेंकते हैं ३४ यह सब अहङ्कारी मृतक भी जीवतेहुये युद्ध करनेवालों के समान तीक्ष्णधार पीतवर्ण बाण खड्ग और निर्मल गदाओं को धारण करते हैं ३५ सुन्दर रूप और वर्णवाले बहुत वीर कच्चे मांसभक्षियों से खैंचेजाते हैं बैलके रूप हरित मालाधारी सोते हैं ३६ फिर परिघके समान भुजाधारी अन्य शूर गदाको प्यारी स्त्रीके समान अपने साथ लियेहुये सोते हैं ३७ हे श्रीकृष्णजी ! बहुत से मांसभक्षी स्वच्छ शस्त्र और कवचों के धारण करनेवाले वीरोंको जीवता हुआ जानकर नहीं खाते हैं ३८ बहुतेरे महात्माओं की स्वर्णमयी अपूर्व माला मांसभक्षियों से खैंचीहुई चारोंओर को फैली हैं ३९ यह भयानकरूप हज़ारों शृगाल इन यशवान् मृतक वीरोंके कण्ठमें पड़ेहुये हारों को खैंचते हैं ४० जिनको शिक्षायुक्त वन्दीजनों ने सब पिछली रात्रियों में प्रशंसा और बड़ी सेवाओंसे प्रसन्न किया था ४१ हे श्रीकृष्णजी ! बड़े दुःख का स्थान है कि यह दुःख से पीड़ित और

दुःख शोक से अत्यन्त दुःखी उत्तम स्त्रियां उनका विलाप करती हैं ४२ हे केशवजी ! उत्तम स्त्रियों के सुन्दरमुख लाल कमल के सूखे वनों के समान दृष्टि पड़ते हैं ४३ रोदन को भूलकर ध्यान में प्रवृत्त महादुःखी यह कौरवीय स्त्रियां अपने परिवारों समेत उस मार्ग से अपने पति पुत्रादि के समीप जाती हैं ४४ कौरवों की स्त्रियों के यह सूर्यवर्ण और सुवर्ण के समान प्रकाशमान मुख क्रोध और रुदन करने से शोभासे रहित हैं ४५ हे केशवजी ! दुर्योधन की उन उत्तम स्त्रियों के समूहों को जोकि श्यामा गौरी और उत्तम वर्ण से युक्त एक वस्त्र रखनेवाली हैं उनको देखो (शीतऋतु में उष्ण और ग्रीष्मऋतु में शीतल और सुखदायी होय और तपायेहुये सुवर्ण के समान वर्णवाली होय उस स्त्री को श्यामा कहते हैं और आठ वर्षवाली को गौरी कहते हैं) ४६ स्त्रियां उन्हींके विलाप और दुःखको सुनकर एक दूसरे के रोदन करने को नहीं जानती हैं ४७ यह वीरोंकी स्त्रियां लम्बी श्वासाओं से पुकारती और विलाप करके दुःख से चलायमान जीवन को त्याग करती हैं ४८ बहुतसी स्त्रियां शरीरों को देखकर पुकारती और विलाप करती हैं और बहुतसी कोमलहाथ रखनेवाली स्त्रियां हाथों से शिरों को पीटती हैं ४६ पड़ेहुये शिर हाथ और इकट्ठे होकर परस्पर मिलेहुये अङ्गों से पृथ्वी आच्छादित दिखाई पड़ती है ५० पास जानेवाली स्त्रियां इन निर्दोष शिर शरीर और शरीरों से जुदेहुये शिरों को देखकर व्याकुल और अचेत होती हैं ५१ शिर को शरीर पर रखकर देखनेवाली अचेत और दुःखी स्त्रियां वहां दूसरे शिरको देखती हैं यह समझकर कि यह इसका नहीं है ५२ विशिखनाम बाणों से मथेहुये भुज जंघा चरण और अन्य २ अङ्गोंको शरीरपर लगानेवाली दुःखसे व्याकुल यह स्त्रियां बारम्बार विमोह को पाती हैं ५३ शिरोंको काटकर पशु पक्षियों से खायेहुये अन्य वीरोंको देखकर भरतवंशियोंकी स्त्रियां अपने अपने पतियोंको नहीं जानती हैं ५४ हे मधुसूदनजी ! बहुतसी स्त्रियां शत्रुओं के हाथ से मरे हुये भाई पिता पुत्र और पतियों को देखकर हाथों से शिरोंको पीटती हैं ५५ यह पृथ्वी खड्ग रखनेवाली और कुण्डलधारी शिरोंसे दुर्गम्यरूप मांस रुधिरकी कीच रखनेवाली ५६ भरतवंशियों में श्रेष्ठ निर्जीव वीरों से दुर्गम्य के समान हुई पूर्वसमयमें जो दुःखों के योग्य कभी नहीं हुई वह निर्दोष स्त्रियां दुःखोंको पाती हैं ५७ यह पृथ्वी भाई पति और पुत्रोंसे आच्छादित है हे जनार्दनजी !

धृतराष्ट्र की पौत्रवधुओं के उन बहुत से समूहोंको जो कि किशोरी सुन्दर केश रखनेवाली और झुण्डों के रूप हैं देखो हे केशवजी ! इससे अधिक कौनसा दुःख मुझको दिखाई देता है ५८।५६ जो यह स्त्रियां नाना प्रकार के रूपों को करती हैं निश्चय करके विदित होता है कि मैंने पूर्व जन्ममें पाप कियाथा ६० हे माधवजी ! जो मैं पुत्र भाई और पिताओं को मृतक देखती हूं इस प्रकार पीड़ित विलाप करनेवाली और पुत्रशोकसे महादुःखी गान्धारीने श्रीकृष्णजी को यह कहकर अपने मृतक पुत्रको देखा ६१ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि षोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि शोकसे पीड़ित गान्धारी दुर्योधनको मराहुआ देखकर अकस्मात् ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ी जैसे कि वनमें टूटाहुआ केलेका वृक्ष होता है १ फिर उसने सचेतताको पाकर पुकारकर और विलाप करके उस पृथ्वीपर पड़ेहुये रुधिर से लिप्त दुर्योधनको देखकर २ हृदयसे लगाया और दुःखका विलाप किया शोकसे पीड़ित महाव्याकुल चित्त हायपुत्र! हायपुत्र! इस रीति से विलाप करनेलगी ३ गुप्त जत्रुस्थान रखनेवाली निष्कों के हारसे अलंकृत अपनी छातीको नेत्रों के जलसे सींचती महादुःखी उस गान्धारी ने ४ सम्मुख वर्तमान श्रीकृष्णजी से यह वचन कहा कि हे समर्थ! इस युद्ध के और जातिवालों के नाश के वर्तमान होनेपर ५ इस हाथ जोड़नेवाले महाराज दुर्योधन ने मुझसे यह कहा कि हे मातः! जातिवालों के युद्ध में मेरी विजयको कहो ६ हे पुरुषोत्तम! उसके ऐसा कहनेपर मैं अपने सब दुःखके आगमनको जानती हुई बोली कि जिधर धर्म है उधरही विजय है ७ हे प्रभो! पुत्र जैसे कि तू युद्ध को करता हुआ मोहित नहीं होता है इससे निश्चय करके देवताके समान शस्त्रों से विजय कियेहुये लोकोंको पावेगा ८ हे प्रभो! मैंने पूर्व समय में इस प्रकार कहा था मैं इसको नहीं सोचती हूं ९ हे माधवजी ! इस अशान्त और असन्न युद्धदुर्मद और शूरवीरों में श्रेष्ठ मेरे पुत्रको वीरों के शयनपर सोता देखो १० जो यह शत्रुसन्तापी महाराजाओंके भी अग्रवर्ती होकर चलता था अब वह इस पृथ्वी की रजमें सोता है समयकी विपरीतताको देखो ११ निश्चय करके वीर दुर्योधन ने दुष्प्राप्य गतिको पाया इस प्रकार सम्मुख वीरोंसे सेवित

शयनपर सोता है १२ पूर्वसमय में राजा लोग चारों ओर वर्तमान होकर जिसको प्रसन्न करते थे अब उस पृथ्वीपर मरेहुये पड़ेकी गिद्ध वर्तमानता करते हैं अर्थात् हाजिरी देते हैं पूर्व समय में सुन्दर व्यजनों से उत्तम स्त्रियां जिसकी वायु करती थीं अब उसकी वायु पक्षीलोग अपने पक्षों से करते हैं १३।१४ युद्ध में भीमसेन के हाथ से गिराया हुआ यह सत्य पराक्रमी बलवान् महाबाहु ऐसे सोता है जैसे कि सिंहके हाथ से माराहुआ हाथी सोता है १५ हे श्रीकृष्णजी! गदा को मारकर भीमसेन से मृतक रुधिर से लिप्त सोनेवाले दुर्योधन को देखो १६ हे केशवजी! जिस महाबाहु ने पूर्वसमय में ग्यारह अक्षौहिणी सेना को युद्धभूमि में इकट्ठा किया उसने युद्ध में अनीति से नाश को पाया १७ भीमसेन के हाथसे गिरायाहुआ बड़ा बलवान् यह दुर्योधन सोता है १८ यह अभागा अज्ञान निर्बुद्धि विदुरजी समेत पिताको भी अपमान करके वृद्धोंकी अवज्ञासे मृत्यु के अधीन हुआ १९ तेरह वर्षतक शत्रुओं से रहित पृथ्वी इसके आज्ञावर्ती रही वह मेरा पुत्र राजा दुर्योधन माराहुआ पृथ्वीपर सोता है २० हे श्रीकृष्णजी! मैंने सब पृथ्वी के लोगोंको दुर्योधन के आज्ञावर्ती हाथी घोड़े और गौओं से पूर्ण देखा हे माधवजी! वह बहुत कालतक नहीं है २१ हे महाबाहो! अब मैं उस पृथ्वी को दूसरे की आज्ञावर्ती हाथी घोड़े और बैलोंसे रहित देखती हूं हे माधवजी! मैं क्या जीवती हुई हूं २२ पुत्र के मरनेसे भी अधिक इस मेरे दुःखको देखो जो यह स्त्रियां युद्धभूमि में चारोंओर से मृतक शूरोंके पास नियत हैं २३ हे श्रीकृष्णजी! इस खुलेहुये केश सुन्दर श्रोणीवाली और दुर्योधन के शुभअंक में वर्तमान सुवर्ण की वेदी के रूप लक्ष्मणकी माता को देखो २४ निश्चय करके पूर्वसमय में राजा के जीवतेहुये यह उत्तम चित्तवाली स्त्री सुन्दर भुजवाले दुर्योधन की भुजाओं के आश्रित होकर रमती थी २५ युद्ध में पौत्र समेत मरेहुये अपने पुत्रको मुझ देखनेवालीका यह हृदय कैसे खण्ड खण्ड नहीं होता है २६ वह निर्दोष सुन्दरी रुधिर से लिप्त पुत्रको सूंघती है और दुर्योधन को हाथ से साफ करती है २७ यह साहसी स्त्री क्या पति और पुत्रको सोचती है वह उस प्रकार पुत्रको भी देखकर नियत दिखाई देती है २८ हे माधव! बड़े नेत्रवाली स्त्री अपने शिरको पञ्चांगुलीवाले अपने हाथ से घायल करके वीर दुर्योधन की छातीपर गिरती है २९ यह तपस्विनी पति और पुत्रके मुखको साफ करके कमलके अन्तर्गत भागके समान प्रकाशित

और कमलवर्ण दिखाई देती है २० जो शास्त्र और श्रुतियां सत्य हैं तो निश्चय करके इस राजाने अपने भुजबलों से प्राप्त लोकों को पाया २१ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी! युद्धमें परिश्रमसे रहित मेरे सौ पुत्रों को भीमसेन की गदा से कठिन घायलहुये देखो १ अब यह मेरा बड़ा दुःखहै जो खुले केश मृतक पुत्रवाली मेरी पुत्रवधू बाला युद्धभूमि में मेरे चारोंओर दौड़ती हैं २ भूषणों से अलंकृत चरणों से महलों में फिरनेवाली स्त्रियां अपनी आपत्ति में फँसकर इस रुधिर से आर्द्र पृथ्वीको स्पर्श करती हैं यह कठिनतासे उनके ऊपर बैठेहुये गिद्ध शृगाल और काकोंको उड़ाती हैं और दुःखसे पीड़ित मतवालों के समान घूमती हैं ३।४ यह दूसरी निर्दोष शरीर मुष्टिप्रमाण सूक्ष्म कटि रखनेवाली अत्यन्त दुःखी स्त्रियां अत्यन्त भयकारी युद्धभूमि को देखकर गिरती हैं ५ हे महाबाहो! इस राजपुत्री लक्ष्मण की माताको देखकर मेरा चित्त शान्ति को नहीं पाताहै ६ यह अन्य स्त्रियां मरेहुये पृथ्वीपर पड़े अपने भाई पिता और पुत्रों को देखकर और बहुत बड़ी बड़ी भुजाओं को पकड़कर चारों ओर को गिरती हैं ७ हे अजेय! जिनके बान्धव मारेगये उन तरुण षोड़श वर्षवाली स्त्रियों के शब्दों को इस कठिन विनाश में सुना ८ हे महाबाहो! थकावट और अचेततासे पीड़ित स्त्रियां रथकी नीड़ और मृतक हाथी घोड़े के शरीरों के आश्रित होकर नियत हैं ९ हे कृष्णजी! शरीर से जुदे सुन्दर कुण्डल और वेणी रखनेवाले अपने बान्धवके शिरको पकड़कर नियत होनेवाली अन्य स्त्रियों को देखो १० हे निष्पाप! इन निर्दोष स्त्रियोंसे और मुझ निर्बुद्धि से पिछले जन्म में किया हुआ पाप छोटा नहीं है मेरी बुद्धिसे बहुत बड़ा है ११ जो यह हमारा पाप धर्मराज ने दूर किया हे यादव, श्रीकृष्णजी! शुभाशुभ कर्मों का नाश नहीं है अर्थात् उसका फल अवश्य होताहै १२ हे श्रीकृष्णजी! इन नवीन अवस्था दर्शनीय स्तन और मुखवाली कुलवन्ती लज्जावती काले पलक नेत्र और बाल रखनेवाली स्त्रियों को देखो १३ हे माधवजी! हंसके समान गद्गद बोलनेवाली दुःख शोक से अचेत सारसीके समान पुकारनेवाली पृथ्वीपर पड़ी हुई स्त्रियोंको देखो १४ कमललोचनी स्त्रियों के मुख जो कि फूले कमल के

समान और निर्दोष हैं उनको दुःखरूप सूर्य सन्तप्त कररहा है १५ अब अन्य लोग मतवाले हाथी के समान अहङ्कारी मेरे पुत्रोंकी रानियों को देखते हैं १६ हे गोविन्दजी ! सौ चन्द्रमा रखनेवाली सूर्य के समान प्रकाशमान ढाल और सूर्यही के समान प्रकाशित ध्वजा रैवत प्रकार के कवच सुवर्ण के निष्क १७ पृथ्वीपर पड़े होमीहुई अग्नि के समान प्रकाशित मेरे पुत्रोंके उन मुकुटों को देखो १८ शत्रुओं के मारनेवाले शूर भीमसेन के हाथ से युद्ध में गिरायाहुआ रुधिर से लिप्त सर्वाङ्ग यह दुश्शासन सोता है १९ हे माधवजी ! द्यूतके दुःखको स्मरण करके द्रौपदी की प्रेरणापूर्वक भीमसेनकी गदासे मृतक हुये मेरे पुत्रको देखो २० हे जनार्दनजी ! कर्णका और भाई दुर्योधन के प्रिय करनेका अभिलाषी इस दुश्शासनने सभाके मध्य में द्यूत में पराजित द्रौपदी से यह वचन कहे २१ कि हे द्रौपदि ! तू सहदेव नकुल और अर्जुन समेत दासी हुई शीघ्र हमारे घरों में प्रवेश कर २२ हे श्रीकृष्णजी ! उस समय मैंने राजा दुर्योधन से कहा कि हे पुत्र ! मृत्युकी फांसी में बँधेहुये शकुनिको निषेध करो २३ इस अत्यन्त दुर्बुद्धि युद्ध को प्रिय जाननेवाले मामाको समझाओ हे पुत्र ! इस द्यूत को शीघ्र त्याग करके पाण्डवों के साथ शान्त हो २४ जैसे कि उल्काओं से हाथियों को पीड़ित करते हैं इसी प्रकार वचनरूप तीक्ष्ण नाराचों से क्रोधयुक्त भीमसेन को पीड़ित करता तू सचेत नहीं होता है अर्थात् हे दुर्बुद्धे ! तू भीमसेनके अमर्षको नहीं जानता है २५ इस प्रकार उन वचनरूपी भालों से घायल करते उस क्रोधयुक्त ने एकान्त में उन पाण्डवोंपर इस प्रकार विषको छोड़ा जैसे कि सर्प गौ और वृषभपर छोड़ते हैं २६ जैसे कि बड़ा हाथी सिंहसे माराजाता है उसी प्रकार भीमसेन के हाथ से मृतक यह दुश्शासन भुजाओं को फैलाकर सोता है २७ अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने बड़ा भयकारी कर्म किया जो क्रोधयुक्तने युद्धमें दुश्शासन के रुधिरको पान किया २८ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वण्यष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी ! यह ज्ञानियों का अङ्गीकृत भीमसेनके हाथ से सैकड़ों खण्ड किया हुआ मेरा पुत्र विकर्ण मृतक पृथ्वी पर सोताहै १ हे मधुसूदनजी! वह विकर्ण मरेहुये हाथियों के मध्य में ऐसे सोता है जैसे कि नीले

बादलों से घिराहुआ शरद् ऋतु का चन्द्रमा होता है २ धनुष पकड़ने से बड़े चिह्न रखनेवाला खड्ग से युक्त इसका हाथ खानेके अभिलाषी गिद्धोंसे कुछ काटा जाता है ३ हे माधवजी ! उसकी तपस्विनी बाला भार्या मांस के अभिलाषी गिद्ध और काकों को हटाती है परन्तु हटाने को समर्थ नहीं होती है ४ हे पुरुषोत्तम, माधवजी ! तरुण देवतारूप शूरवीर सुखपूर्वक निवास करनेवाला विकर्ण पृथ्वीकी धूलिपर सोता है ५ युद्ध में करणी, नालीक और नाराचनाम बाणोंसे टूटे मर्मस्थलोंवाले भरतर्षभ इस विकर्णको अब भी शोभा नहीं छोड़ती है ६ युद्ध में शत्रुओं के समूहों का मारनेवाला सम्मुख रहनेवाला यह दुर्मुख उस युद्धभूमि में वीरप्रतिज्ञा पूरी करने के अभिलाषी भीमसेन के हाथसे मृतक होकर सोता है ७ हे श्रीकृष्णजी ! उसका यह मुख श्वापदजीवों से आधा खायाहुआ ऐसे अधिक प्रकाशित है जैसे कि सप्तमी का चन्द्रमा होता है ८ हे कृष्णजी ! युद्धमें मेरे शूरपुत्र के ऐसे मुखको देखो वह मेरा पुत्र किस रीति से शत्रुओंके हाथसे मारागया और युद्धकी धूलिको निगलता है ९ हे स्वामिन् ! युद्धके मुखपर जिसकी सम्मुखता करनेवाला कोई नहीं वह देवलोक का विजय करनेवाला दुर्मुख किस प्रकार शत्रुओं के हाथ से मारागया १० हे मधुसूदनजी ! इस धृतराष्ट्र के पुत्र धनुर्धारी पृथ्वीपर सोनेवाले चित्रसेन की मृतक मूर्ति को देखो ११ शोक से पीड़ित रोनेवाली स्त्रियां मांसभक्षियों के समूहों समेत उस जड़ाऊ माला और भूषण रखनेवाले चित्रसेनके पास नियत हैं १२ हे श्रीकृष्णजी ! स्त्रियों के रुदनके शब्द और मांसाहारियों की गर्जना अपूर्वरूप और विचित्र मालूम होती है १३ हे माधवजी ! यह तरुण सदैव उत्तम स्त्रियों से सेवित देवतारूप विविंशति धूलि में पड़ा सोता है १४ हे श्रीकृष्णजी ! देखो कि गिद्धनाम पक्षी इस बाणों से टूटे कवच वीर विविंशति को बड़ी रणभूमि में घेरकर बैठे हैं १५ वह शूर युद्ध में पाण्डवों की सेना में प्रवेश करके सत्पुरुषों के योग्य वीरशय्या पर सोता है १६ हे श्रीकृष्णजी ! विविंशति के मुखको देखो जो कि मन्द मुसकान समेत सुन्दर नाक और चन्द्रमा के समान बहुत उज्ज्वल है १७ बहुधा उत्तम स्त्रियों ने चारोंओर उस की ऐसी वर्तमानता करी है जैसे कि हजारों देवकन्या क्रीड़ा करनेवाले गन्धर्व की वर्तमानता करती हैं १८ शत्रुओं की सेनाके मारनेवाले युद्ध को शोभा देनेवाले और शत्रुओं का नाश करनेवाले दुःख से सहने के योग्य शूर को

कौन सहसक्ता है १९ दुस्सह का यह शरीर बाणों से युक्त ऐसा शोभायमान है जैसे कि अपने ऊपर वर्तमान कर्णिकारके पुष्पोंसे व्याप्त पर्वत होता है २० यह मृतक भी दुःखसे सहनेके योग्य स्वर्णमाला और प्रकाशित कवचसमेत ऐसे प्रकाशमान है जैसे कि अग्निसे श्वेत पर्वत प्रकाशित होता है २१॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि गान्धारीवाक्ये एकोनविंशोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय॥

गान्धारी बोली हे यादव, केशवजी! जिस अहंकारी और सिंहके समान अभिमन्यु को बल पराक्रम में पिता अर्जुन और तुमसे भी ड्योढ़ा कहा है १ जिस अकेलेने मेरे पुत्रकी सेनाको जो कि कठिनतासे चीरनेके योग्य थी चीरा वह दूसरोंका कालरूप होकर आपही कालके आधीन हुआ २ हे श्रीकृष्णजी! मैं देखती हूं कि उस अर्जुन के पुत्र बड़े तेजस्वी मरेहुये अभिमन्यु का तेज नाशको नहीं पाता है ३ यह विराट की पुत्री और अर्जुन की पुत्रवधू निर्दोष और पीड़ावान् इस बालक और वीरपति को देखकर शोच करती है ४ हे श्रीकृष्ण! यह विराट की पुत्री भार्या समीप से उस पतिको मिलकर हाथों से साफ करती है ५ यह चित्तवाली मनोहररूप तेजस्विनी उस अभिमन्यु के मुखको जो प्रफुल्लित कमल के रूप और गोलगर्दनवाला है सूंघकर उससे मिलती है जो कि पूर्व समय में माध्वीक नाम मद्यके मदसे अचेत भी लज्जायुक्त थी ६। ७ हे श्रीकृष्णजी! उसके सुवर्णजटित रुधिर से लिप्त कवच को उघारकर शरीर को देखती है ८ हे मधुसूदनजी! यह बाला उसको देखकर तुमसे कहती है कि हे कमललोचन! यह आपके समान नेत्ररखनेवाला गिराया गया ९ हे पापों से रहित! यह बल पराक्रम और तेज और बड़े रूप में आपके समान पृथ्वीपर गिराया हुआ सोता है १० अब तुझ अत्यन्त कोमल शरीर और रांकनाम मृगचर्मपर सोनेवाले का शरीर पृथ्वीपर दुःख तो नहीं पाता है ११ तुम हाथी की सूंड़के समान प्रकाशमान प्रत्यञ्चाके खैंचनेसे कठिन चर्मवाले सुवर्णके बाजूबन्दोंसे अलंकृत बड़ी भुजाओं को फैलाकर सोतेहो १२ निश्चय करके बहुत प्रकार के परिश्रम करके थकावट से विश्रामयुक्त होकर सोगये हो जो इस प्रकार से विलाप करनेवाली मुझको उत्तर नहीं देतेहो १३ तुम्हारे विषय में मैं अपने अपराध को नहीं स्मरण करती हूं मुझको उत्तर क्यों

नहीं देतेहो निश्चय करके तुम पूर्वसमयमें मुझको देखकर बोलतेथे अब भी मेरा कोई अपराध नहीं है मुझसे क्यों नहीं वार्तालाप करते हो हे श्रेष्ठ! तुम मेरी सास सुभद्रा और देवताओं के समान १४। १५ इन पिताओं समेत दुःख से पीड़ित मुझको छोड़कर कहां जाओगे फिर उसके रुधिर से लिप्त मृतक शिर को हाथ से उठाकर १६ और बगल में मुखको रखकर ऐसे पोंछती है जैसे कि जीवतेको पोंछते हैं तुम वासुदेवजी के भानजे और अर्जुन के पुत्र १७ युद्ध में वर्तमानको इन महारथियोंने कैसे मारा उन निर्दयकर्मी कृपाचार्य, कर्ण, जयद्रथ १८ द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा को धिक्कार है जिनके कि हाथसे मैं विधवा करीगई उस समय उन उत्तम रथियोंका चित्त कैसा होगया १६ कि तुझ अकेले बालकको घेरकर मेरे दुःख देनेको मारा हे वीर! नाथवान् होते तुमने पाण्डवों और पाञ्चालों के देखते अनाथ के समान कैसे मरणको पाया २० तेरा पिता पुरुषोत्तम वीर पाण्डव युद्ध में बहुतों के हाथसे तुझको मराहुआ देखकर कैसे जीवता है २१ हे कमललोचन! तेरे विना सब राज्य की प्राप्ति और शत्रु की पराजय पाण्डवों की प्रसन्नता को उत्पन्न नहीं करेगी २२ तेरे धर्म और जितेन्द्रियपन और शस्त्रों से विजय कियेहुये लोकोंको २३ शीघ्र पीछेसे मैं भी प्राप्त करूंगी वहांपर मेरी प्रतीक्षा करो फिर समय के वर्तमान न होनेपर प्रत्येक को मरना कठिन होताहै २४ जो दुर्भागिनी मैं युद्ध में तुझको मृतक देखकर जीवतीहूं हे नरोत्तम! अब इच्छा के अनुसार पितृलोक में मिलनेवालों को मन्दमुसकान के साथ मधुर वचन से २५ ऐसे अपनी ओर लगाओगे जैसे कि मुझको और स्वर्ग में अप्सराओं के चित्तों को २६ उत्तम रूप और मन्द मुसकानसमेत मधुर वाणी से मथन करोगे पुण्य से प्राप्त होनेवाले लोकोंको पाकर अप्सराओं से मिलेहुये २७ हे स्वामिन्! तुम स्वर्ग में विहार करते मेरे कर्मों को स्मरण करना इस लोक में आपका मेरे साथ इतनेही कालके लिये सम्बन्ध नियत किया था २८ हे वीर! छः महीने साथ रहे सातवें महीने में मृत्यु को पाया राजा विराट के कुलकी स्त्रियां ऐसे कहनेवाली महादुःखी निष्फल संकल्पवाली २९ इस उत्तराको हटाती हैं आप भी महापीड़ित वह स्त्रियां इस अत्यन्त पीड़ित उत्तराको हटाकर मरेहुये विराटको ३० देखकर पुकारती हैं विलाप करती हैं द्रोणाचार्य के अस्त्र और बाणों से टूटे अङ्ग रुधिरसे लिप्त सोनेवाले ३१ विराट को यह गिद्ध शृगाल और काक काटते हैं श्यामचक्षु पीड़ित स्त्रियां पक्षियों से

घायल होते विराट को देखकर ३२ पक्षियों के हटाने को समर्थ नहीं होती हैं सूर्य के तापसे तपनेवाली इन स्त्रियों के मुखों का तेज जो कि ३३ परिश्रम और थकावट से अप्रकाशित है दूर होगया उत्तर, अभिमन्यु, काम्बोज, सुदक्षिण ३४ और सुन्दर दर्शन लक्ष्मण इन सब मृतक बालकोंको देखो हे माधवजी ! इन सब को युद्धभूमि में सोताहुआ देखो ३५ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि विंशतितमोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली यह बड़ा धनुर्धारी महारथी कर्ण सोता है यह अर्जुन के तेज से युद्ध में ज्वलित अग्नि के समान शान्त होगया १ बहुतसे रथियोंको मारकर पृथ्वीपर पड़ा सोता है और रुधिरसे लिप्त शरीर सूर्य के पुत्र कर्णको देखो २ यह अशान्तचित्त महाक्रोधी बड़ा धनुर्धारी पराक्रमी शूर युद्धमें अर्जुन के हाथ से माराहुआ सोता है ३ मेरे महारथी पुत्र पाण्डवों के भयसे जिसको अग्रवर्ती करके अच्छे प्रकार ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि हाथी अपने प्रधान हाथी को अग्रवर्ती करके उत्तम युद्ध करते हैं ४ वह युद्ध में अर्जुन के हाथ से ऐसे गिरायागया जैसे कि सिंह से शार्दूल और मतवाले हाथी से मतवाला हाथी गिराया जाता है ५ हे पुरुषोत्तम ! यह बिखरेहुये बाल रोदन करती इकट्ठी स्त्रियां इस युद्ध में मरेहुये शूर के चारोंओर नियत हैं ६ सदैव जिससे व्याकुल भयभीत और चिन्ता करके धर्मराज युधिष्ठिरने तेरह वर्ष तक निद्रा को नहीं पाया ७ युद्ध में इन्द्रके समान अन्य शत्रुओं से अजेय प्रलयकालकी अग्नि के समान तेजस्वी हिमाचल के समान युद्ध से न हटनेवाला ८ वह वीर दुर्योधन का रक्षाश्रय होकर ऐसे माराहुआ पृथ्वीपर सोता है हे माधव ! जैसे कि वायुसे टूटाहुआ वृक्ष होता है ९ तुम कर्णकी स्त्री वृषसेनकी माता पृथ्वीपर गिरी रोदन करती हुई और शोककी वार्त्ता करनेवाली को देखो १० निश्चय करके गुरु का शाप तुझको प्राप्तहुआ जो पृथ्वी ने इस तेरे रथचक्रको दबालिया इसके पीछे युद्धको शोभा देनेवाले अर्जुनके बाण से तेरा शिर काटा गया ११ हाय २ धिक्कार यह रोदन करती अत्यन्त पीड़ित शूरसेनकी माता इस सुवर्ण के बाजूबन्द से अलंकृत बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्णको देखकर अचेत पड़ी है १२ यह महात्मा श्वापदों के भक्षण करने से अभी थोड़ा शेष

रहाहै वह देखने में हमारी प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला ऐसे नहीं है जैसे कि कृष्णपक्ष की चौदसि में चन्द्रमा प्रसन्नता से रहित होता है १३ यह पृथ्वीपर पड़ी हुई महादुःखी और उठकर कर्ण के मुखको सूंघती पुत्र के मरणशोक से दुःखी रोती है १४ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वण्येकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली कि गिद्ध और शृगाल भीमसेन के गिरायेहुये राजा अवन्ती को जो कि शूरवीर और बहुत बान्धव रखनेवाला है भाइयों से रहितके समान खाते हैं १ हे श्रीकृष्णजी ! उस कर्णको भी जो कि शत्रुओं के समूहोंका मर्दन करनेवालाहै खेंचते हैं हे मधुसूदनजी ! शूरोंका नाश करके वीरशय्यापर सोने वाले रुधिर से भरेहुये उसको देखो शृगाल कंक और काकआदिक अनेक मांसभक्षी उसको २।३ कैसे २ मार्गोंसे खेंचते हैं समय की विपरीतताको देखो युद्ध करनेवाले शूर वीरशय्यापर सोनेवाले ४ राजा अवन्ती के पास रोनेवाली स्त्रियां नियत हैं हे श्रीकृष्णजी ! इस बड़े धनुर्धारी और भल्ल से मृतक प्रतीपवंशी बाह्लीक को ५ शार्दूल के समान सोवताहुआ देखो इस मरेहुये के भी मुखका वर्ण ऐसा शोभा देताहै ६ जैसे कि पूर्णमासी का पूर्ण चन्द्रमा होताहै पुत्रशोक से दुःखी और प्रतिज्ञाको पूरा करनेवाले ७ इन्द्रके पुत्र अर्जुन से युद्ध में जयद्रथ गिराया गया प्रतिज्ञा को सत्य करने के अभिलाषी अर्जुनने ग्यारह अक्षौहिणी सेना को हटाकर महात्मासे रक्षित ८ इस जयद्रथ को मारा हे जनार्दनजी ! देखो इस सिन्धु सौवीर देशके स्वामी अहंकारी साहसी ९ जयद्रथ को शृगाल और गिद्ध खाते हैं हे अविनाशिन् ! वह डरातेहुये पक्षी इन आज्ञाकारी स्त्रियों से रक्षित जयद्रथ को १० पासही से नीचे और घने स्थानपर खैंचते हैं यह काम्बोज और यवनदेशी स्त्रियां इस रक्षित महाबाहु ११ सिन्धु सौवीर देशके स्वामी जयद्रथ के चारोंओर नियतहैं हे जनार्दनजी ! जब यह जयद्रथ केकयदेशियों समेत द्रौपदी को पकड़ कर भागा १२ तभी पाण्डवों के हाथ से मारने के योग्य था उस समय दुश्शलाके माननेवाले पाण्डवों के हाथ से जयद्रथ बचाथा १३ हे श्रीकृष्ण ! अब उन पाण्डवों ने उस बहनोई को कैसे नहीं माना वह मेरी पुत्री बालक दुःखी विलाप करती १४ और पाण्डवोंको पुकारती आप अपने शरीर

को घायल करती हैं हे श्रीकृष्णजी ! इससे अधिक मेरा और कौनसा दुःख होगा १५ जो बालक पुत्री विधवा और पुत्रवधू मृतकपतिवाली हैं हाय २ धिक्कार शोक भयसे जुदेके समान दुश्शला को देखो १६ उस पतिके शिरको न पाकर इधर उधर दौड़नेवाली है जिसने कि पुत्रको चाहनेवाले सब पाण्डवों को रोका १७ वह बड़ी सेनाओं को मारकर आप कालके वशीभूत हुआ चन्द्रमुखी स्त्रियां उस हाथीके समान मतवाले बड़े दुःखसे विजय होनेवाले वीरको घेर करके रोदन करती हैं १८ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे तात ! युद्ध में धर्मज्ञ धर्मराज से माराहुआ साक्षात् नकुल का मामा यह शल्य सोता है १ हे पुरुषोत्तम ! जो कि सदैव सर्वत्र तेरे साथ ईर्षा करता था वह बड़ा बलवान् पराक्रमी मद्रका राजा सोता है २ युद्ध में कर्ण के रथको पकड़नेवाले जिस शल्यने पाण्डवोंकी विजय के निमित्त कर्णके तेजको क्षीण किया ३ दुःखका स्थान है और धिक्कार है कि शल्य के मुखको काकों से काटा हुआ देखो जो कि पूर्ण चन्द्रमा के समान सुन्दर दर्शन कमलपलाश के समान नेत्रधारी और स्वच्छ था ४ जिस सुवर्ण वर्णवाले की जिह्वा तपायेहुये सुवर्ण के समान प्रकाशमान और मुखसे निकलीहुई पक्षियोंसे भक्षण कीजाती है ५ राजा मद्रके कुलकी रोदन करनेवाली स्त्रियां इस युधिष्ठिर के हाथ से मरे हुये युद्ध के शोभादेनेवाले शल्य के चारोंओर नियत हैं ६ यह अत्यन्त सूक्ष्म-वस्त्रों की पोशाकवाली पुकारनेवाली क्षत्रियाणी नरोत्तम राजा मद्रको पाकर पुकार रही हैं ७ स्त्रियां पृथ्वीपर गिरेहुये शल्यको चारोंओरसे घेरकर ऐसे समीप नियत हैं कि जैसे बारम्बार बच्चा उत्पन्न करनेवाली हथिनियां कीच में डूबेहुये हाथी को घेरलेती हैं ८ हे वृष्णिनन्दन ! इस रक्षा देनेवाले शूर शल्य को बाणों से विदीर्ण शरीर और वीरोंकी शय्यापर सोनेवाला देखो ९ यह पहाड़ी श्रीमान् प्रतापवान् भगदत्त हाथी का अंकुश हाथ में रखनेवाला और पृथ्वीपर पड़ा हुआ सोता है १० जिस शृगालादिक के खायेहुये की यह स्वर्णमयी माला केशों को शोभा देतीहुई शिरपर विराजमान है ११ निश्चय करके इसके साथ पाण्डवों का युद्ध वह हुआ जो कि बड़ा भयकारी अत्यन्त कठिन रोमाञ्चों का

खड़ा करनेवाला था और इन्द्र और वृत्रासुर के युद्ध के समान था १२ यह महाबाहु पाण्डव अर्जुन से युद्ध करके और संशय को उत्पन्न करके कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरसे गिराया गया १३ लोक में जिसकी शूरता और बल पराक्रम के समान कोई नहीं है युद्धमें भयकारी कर्म करनेवाले यह भीष्मजी आसन्न-मृत्यु होकर सोते हैं १४ हे श्रीकृष्णजी! इस सूर्य के समान तेजस्वी सोनेवाले भीष्मजी को ऐसे देखो जैसे कि प्रलयकाल में कालसे प्रेरित आकाश से गिराहुआ सूर्य होता है १५ हे केशवजी! यह पराक्रमी नररूप सूर्य युद्ध में शस्त्रोंके तापसे शत्रुओंको सन्तप्त करके ऐसा अस्तंगत होता है जैसे कि अस्ताचलपर वर्तमान सूर्य होता है १६ इस वीर्यको च्युत न करनेवाले अजेय शरशय्यापर वर्तमान शूरवीरों से सेवित वीरशय्यापर सोनेवाले भीष्म को देखो १७ कर्णी नालीक और नाराचनाम बाणों से उत्तम शय्याको बिछवाकर उसपर चढ़ेहुये ऐसे सोते हैं जैसे कि भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी शरवण को पाकर सोते हैं १८ यह गंगाजी के पुत्र रुईसे रहित तीन बाणों से बने अर्जुन के दियेहुये तकिये को शिरके नीचे धरकर १९ पिता के आज्ञानुसारी ब्रह्मचारी महातपस्वी युद्ध में अनुपम भीष्मजी सोते हैं २० हे तात! सब बातों के जाननेवाले नररूप होकर इस धर्मात्माने ब्रह्मज्ञानके बल से देवताओं के समान प्राणों को धारण किया है २१ युद्धमें कोई कर्मकर्ता पण्डित और पराक्रमी नहीं है जब कि यह शन्तनुके पुत्र भीष्मजी सरीखे भी बाणों से घायल सोते हैं २२ पाण्डवों से पूछे हुये इस शूर धर्मवान् सत्यवक्ता ने आप अपनी मृत्यु को युद्धमें बतलादिया २३ जिसने विनाशवान् कौरववंश फिर सजीव किया उस बड़े बुद्धिमान् ने कौरवों समेत नाशको पाया २४ हे माधवजी! इस देवता के समान नरोत्तम देवव्रत भीष्म के स्वर्गवासी होने पर कौरवलोग धर्मों के विषय किससे पूछेंगे २५ जो कि अर्जुन का विनेता और और सात्यकी का गुरु है उस कौरवों के उत्तम गुरु द्रोणाचार्य को पृथ्वी पर पड़ाहुआ देखो २६ हे माधवजी! जैसे कि देवताओं के ईश्वर इन्द्र और बड़े पराक्रमी भार्गव परशुरामजी चारोंप्रकारके अस्त्रोंके ज्ञाताथे उसीप्रकार द्रोणाचार्य भी जानते थे २७ जिसके प्रभाव से पाण्डव अर्जुन ने कठिन कर्मको किया वह मृतक होकर सोता है उसको भी अस्त्रों ने रक्षित नहीं किया २८ कौरवोंने जिसको अग्रवर्ती करके पाण्डवों को बुलाया वह पृथ्वीपर मराहुआ ऐसे सोता

हैं जैसे कि निर्ज्वलित अग्नि होती है २९ हे माधवजी ! मृतक द्रोणाचार्य के धनुषकी मुष्टि और युद्ध के हस्तत्राण विना जुदेहुये रणभूमि में ऐसे दिखाई पड़ते हैं जैसे कि जीवतेहुये के होते हैं ३० हे केशवजी ! चारों वेद और सब अस्त्र जिस शूरसे ऐसे पृथक् नहीं हुये जैसे कि आदिमें प्रजापतिजीसे जुदे नहीं हुये थे ३१ उनके उन दोनों चरणोंको शृगाल खैंचते हैं जो कि दण्डवत्के योग्य और वन्दीजनों से स्तूयमान अतिशुभ होकर सैकड़ों शिष्यों से पूजित थे ३२ हे मधुसूदनजी ! यह दुःख से घातितबुद्धि कृपी इस धृष्टद्युम्न के हाथ से मृतक द्रोणाचार्य के पास महादुःखी नियत है ३३ उस रोदन करनेवाली पीड़ित खुले केश नीचा शिर किये शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ अपने पति द्रोणाचार्यके समीप नियत को देखो ३४ हे केशवजी ! यह जटिला ब्रह्मचारिणी रणभूमि में धृष्टद्युम्न के बाणों से टूटे कवचवाले द्रोणाचार्य के पास नियत है ३५ यह अत्यन्त कोमल शरीर यशवन्ती दुःखी कृपी युद्धमें मृतकपति के क्रियाकर्म में दुःख से उपाय करती है ३६ सामग ब्राह्मण विधिपूर्वक अग्नियों को धारण करके सब ओर से चिताको अग्निसे प्रज्वलित करके द्रोणाचार्य को उसमें रखकर सामवेदके तीन मन्त्रों को गाते हैं ३७ हे माधवजी ! यह जटिल ब्रह्मचारी धनुष शक्ति और रथोंकी नीड़ोंसे चिताको बनाते हैं ३८ नाना प्रकार के दूसरे बाणोंसे चिताको बनाकर बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य को अच्छे प्रकार से धरकर जलातेहुये मन्त्रों को गातेहुये रुदन को करते हैं ३९ दूसरे शिष्य अग्नि में अग्नि को धारण करके और द्रोणाचार्य को अग्नि में हवन करके अन्त में नियत होकर तीन साममन्त्रों को गाते हैं ४० द्रोणाचार्य के शिष्य वह ब्राह्मण चिताको दक्षिण करके और कृपीको आगे करके श्रीगंगाजी के सम्मुख जाते हैं ४१ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी ! सम्मुखही सात्यकी के हाथ से गिरायेहुये और बहुतसे पक्षियों से घिरे हुये सोमदत्त के पुत्रको देखो १ हे जनार्दनजी ! पुत्रशोकसे दुःखी सोमदत्त मानो बड़े धनुर्धारी सात्यकी की निन्दा करता हुआ देखता है २ यह भूरिश्रवा की माता निर्दोष दुःख से पूर्ण अपने पति सोमदत्त को मानो विश्वास कराती है ३ कि हे महाराज ! प्रारब्ध से इस भरतवंशियों

के भयानक नाशको और कौरवों के घोर प्रलयकाल के समान रोदन करने को तुम नहीं देखते हो ४ और प्रारब्ध से इस हजारों दक्षिणा देनेवाले बहुत यज्ञों से पूजन करनेवाले यूप ध्वजाधारी मृतक पुत्रको नहीं देखते हो ५ हे महाराज ! प्रारब्ध से रणभूमि में इन पुत्रवधुओं के घोर विलाप को ऐसे नहीं देखते हो जैसे कि समुद्रपर सारसियों के शब्द होते हैं ६ तेरी पुत्रवधू मृतक पति-वाली एकवस्त्रार्ध से गुप्त शरीर और शिरके खुले काले केशवाली चारों ओर को दौड़ती हैं ७ तुम प्रारब्ध से शृगाल आदिक से खाई हुई टूटी भुजा और अर्जुन से गिरायेहुये नरोत्तम पुत्र को नहीं देखते हो ८ अब यहां युद्ध में मृतक भूरि-श्रवा और शल्यको और नानाप्रकार के पुत्रवधुओं को नहीं देखतेहो ९ प्रारब्ध से यूपभुजाधारी महात्मा भूरिश्रवाके उस सुवर्ण के छत्रको रथके बैठने के स्थान पर गिराहुआ नहीं देखतेहो १० भूरिश्रवाकी यह श्यामचक्षु स्त्रियां सात्यकीके हाथ से मरेहुये पतिको घेरकर शोचती हैं ११ हे केशवजी ! दुःखकी बात है कि पति के शोक से पीड़ित यह स्त्रियां दुःखका विलाप करके सम्मुख पृथ्वीपर गिरती हैं १२ हे अर्जुन ! तुमने बीभत्सुनाम हो यह निन्दित कर्म कैसे किया जो यज्ञ करनेवाले अचेत शूरकी भुजा को काटा १३ सात्यकी ने भी उससे अधिक पापकर्म किया कि शरीर त्यागने के निमित्त नियम करनेवाले तीक्ष्ण-बुद्धिका शिर काटा १४ हे धर्म के अभ्यासिन् ! दो के हाथ से मारेहुये तुम अकेले सोते हो अर्जुन गोष्ठी और सभाओं में क्या कहेगा १५ और वह सात्यकी भी इस अपवित्र अपकीर्ति करनेवाले कर्म को करके क्या कहेगा हे माधवजी ! यह भूरिश्रवाकी स्त्रियां पुकारती हैं १६ भूरिश्रवा की यह स्त्री जिसकी कमर हाथकी मुट्ठी के समान है पतिकी भुजाको बगल में लेकर दुःखका विलाप करती है १७ कि यह वह हाथ है जो कि शूरोंका मारनेवाला मित्रों को निर्भ-यता देनेवाला हजारों गोदान करनेवाला और क्षत्रियों का नाश करनेवाला है १८ यह वह हाथ है जो कि रसनोत्कर्षी अर्थात् स्त्रियोंके वस्त्रों का उघा-ड़नेवाला पीनस्तनों का मर्दन करनेवाला नाभि छाती और जंघाओं का स्पर्श करनेवाला और नीवी अर्थात् आंगीनाम स्तनरक्षक वस्त्रका हटानेवाला है १९ वासुदेवजी के सम्मुख सुगमकर्मी अर्जुनने युद्ध में दूसरे के साथ लड़नेवाले तुझ अचेतका हाथ काटडाला २० हे जनार्दनजी ! सत्पुरुषों के मध्य में और कथाओं में अर्जुन के इस बड़े कर्मको क्या कहोगे अथवा आप अर्जुनही क्या

कहेगा २१ यह उत्तम स्त्री इस प्रकार निन्दा करके मौन हैं यह सपत्नी स्त्रियां इसको ऐसे शोचती हैं जैसे कि अपनी पुत्रवधू को शोचती होती हैं २२ यह बलवान् और सत्यपराक्रमी शकुनी गान्धारदेश का राजा नातेमें मामा अपने भानजे सहदेव के हाथ से मारागया २३ जो कि पूर्वसमय में सुवर्णदण्डीवाले पंखोंसे वायु किया जाताथा वह अब सोताहुआ पक्षियों के परोंसे वायु किया जाता है २४ जो कि अपने सैकड़ों और हजारों रूपोंको करलेता था उस मायावी की माया पाण्डवों के तेजसे नष्ट होगई २५ जिस छली ने सभा में माया से जीवते युधिष्ठिर को और बड़े राज्य को विजय किया अन्त में वह पराजित हुआ २६ हे श्रीकृष्णजी ! पक्षीगण चारोंओर से उस शकुनी की वर्तमानता करते हैं जो कि मेरे पुत्रों के लिये कुल्हाड़ा और संसार के नाशके अर्थ शिक्षा पानेवाला हुआ २७ इसने मेरे पुत्र और अपने समूह समेत अपने मरने के लिये पाण्डवों के साथ बड़ी शत्रुता करी २८ हे प्रभो ! जैसे कि मेरे पुत्रों के लोक शस्त्रों से विजयहुये उसी प्रकार इस दुर्बुद्धिके भी लोक शस्त्रों से विजय होगये २९ हे मधुसूदनजी ! यह कुटिलबुद्धि वहां भी मेरे सत्य बुद्धिवाले पुत्रों को कहीं भाइयों समेत विरोधी न करे ३० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी ! इस मृतक और पृथ्वी की धूलिपर सोनेवाले काम्बोज के राजा को देखो जो कि अजेय उत्तम स्कन्धयुक्त होकर काम्बोजदेशी उत्तम पुरुषों के योग्य है १ वह भार्या जिसकी रुधिर भरी चन्दनसे लिप्त भुजा को देखकर महादुःखी होकर दुःखका यह विलाप करती है २ कि यह वह शुभ उँगलियां और हथेली रखनेवाले परिघनाम शस्त्र के समान भुजा हैं पूर्व समय में जिनके मध्य को पाकर मुझको कभी प्रीतिने नहीं त्याग किया ३ हे राजन् ! मृतक बन्धुवाली अनाथ कम्पायमान मधुर शब्दवाली मैं तुमसे जुदी होकर किस दशाको पाऊंगी ४ धूपमें म्लान नाना प्रकार की मालाओं का रूपान्तर होजाता है परिश्रम से पीड़ित स्त्रियों के शरीरको शोभा त्याग नहीं करती है ५ हे मधुसूदनजी ! इस सोनेवाले शूरवीर राजा कलिङ्ग को चारों ओर से देखो जिसकी बड़ी भुजा प्रकाशित बाजूबन्दों के जोड़े से अलंकृत है ६ हे

जनार्दनजी! स्त्रियां सब ओरसे इस जयत्सेन राजा मगधको घेरकर अत्यन्त रोदन करती हुई व्याकुल हैं ७ हे मधुसूदनजी! इन बड़े नेत्रवाली और सुन्दर स्वरवाली स्त्रियों के शब्द जो कि चित्तरोचक और श्रवणोंको प्यारे हैं मेरे मनको व्यथित करते हैं ८ गिरेहुये वस्त्र और भूषणवाली शोकसे पीड़ित रोदन करनेवाली मगधदेशी स्त्रियां जो कि सुन्दर वस्त्रवाले शयनों से युक्त थीं पृथ्वी पर सोती हैं ९ यह स्त्रियां कौशलदेशों के राजा बृहद्बलनाम अपने पतिको घेर कर पृथक् पृथक् रोती हैं १० यह बारम्बार अचेत और दुःख से पूर्ण स्त्रियां अभिमन्यु के भुजबलसे मारे और उसके अंगों में लगेहुये बाणोंको निकालती हैं ११ हे माधवजी! इन सब निर्दोष स्त्रियों के मुख धूप और परिश्रम से ऐसे दिखाई पड़ते हैं जैसे कि कुम्हलाये हुये कमल होते हैं १२ धृष्टद्युम्नके सब पुत्र बालक सुवर्णकी माला और सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले शूरवीर द्रोणाचार्य के हाथ से मरेहुये सोते हैं १३ जिसका रथ अग्निकुण्ड है धनुष अग्नि है और बाण शक्ति गदा यह इन्धन हैं उस द्रोणाचार्य को पाकर ऐसे भस्म होगये जैसे शलभनाम पक्षी अग्निको पाकर भस्म होजाते हैं १४ उसी प्रकार सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले कैकयदेशी पांचों शूर भाई सम्मुखता में द्रोणाचार्य के हाथ से मरेहुये सोते हैं १५ तप्त सुवर्ण के समान कवच तालवृक्ष के समान ध्वजाधारी रथों के समूह अपने तेज से पृथ्वी को ऐसे प्रकाशित करते हैं जैसे कि ज्वलित अग्नि प्रकाश करती है १६ हे माधवजी! युद्ध में द्रोणाचार्य के हाथ से गिराये हुये द्रुपद को ऐसे देखो जैसे कि वन में बड़े सिंह से मारेहुये बड़े हाथी को देखते हैं १७ राजा द्रुपद का श्वेत निर्मल छत्र ऐसे प्रकाशमान है जैसे कि शरदृऋतु में चन्द्रमा होता है १८ यह दुःखी भार्या और पुत्रवधू पाञ्चाल के वृद्ध राजा द्रुपदको दाह देकर दाहिनी ओरसे जाती हैं १९ अचेत स्त्रियां द्रोणाचार्य के हाथ से मरेहुये इस महात्मा शूर चंदेरके राजा धृष्टद्युम्नको उठाती हैं २० हे मधुसूदनजी! यह बड़ा धनुर्धारी युद्ध में द्रोणाचार्य के अस्त्र को दूर करके मराहुआ ऐसे सोता है जैसे कि नदी से उखाड़ाहुआ वृक्ष होता है २१ यह महारथी शूर चंदेरी का राजा धृष्टकेतु युद्ध में हज़ारों शत्रुओं को मारकर मरा हुआ सोता है २२ हे हृषीकेशजी! स्त्रियां उन पक्षियों से घायल होती सेना और बान्धवों समेत मरेहुये राजा चंदेरी के पास नियत हैं २३ हे श्रीकृष्णजी! राजा चंदेरी की यह उत्तम स्त्रियां इस सत्यपराक्रमी वीर मैदान में सोनेवाले

अपने पौत्र को बगल में लेकर रोती हैं २४ हे श्रीकृष्णजी ! इसके पुत्र सुन्दर मुख और कुण्डलधारी को युद्ध में द्रोणाचार्य के बहुत प्रकार के बाणों से घायल देखो २५ निश्चय करके इसने अबतक भी रणभूमि में नियत शत्रुओं के साथ युद्ध करनेवाले वीर पिताको त्याग नहीं किया २६ हे माधवजी ! इस प्रकार मेरे पुत्र का भी पुत्र शत्रुओं के वीरों का मारनेवाला लक्ष्मण अपने पिता दुर्योधन के पीछे गया २७ हे श्रीकृष्णजी ! इन अवन्तिदेश के राजा विन्द अनुविन्द को ऐसे देखो जैसे कि हिमऋतु के अन्त पर वायु से गिरायेहुये दो पुष्पित शालवृक्षों को देखते हैं यह दोनों सुवर्ण के बाजूबन्द और कवच से अलंकृत बाण खड्ग धनुष धारण करनेवाले बैलके समान नेत्र रखनेवाले निर्मल माला-धारी सोते हैं २८ । २९ हे श्रीकृष्णजी ! सब पाण्डव आपके साथ मारने के अयोग्य हैं जो कि द्रोणाचार्य, भीष्म, कर्ण और कृपाचार्य से भी बचेहुये हैं दुर्यो-धन, अश्वत्थामा, सिन्धुका राजा जयद्रथ, विकर्ण, सोमदत्त और शूर कृतवर्मा से भी बचे ३० । ३१ जो नरोत्तम शस्त्रों की तीक्ष्णतासे देवताओं को भी मार-सक्ते थे वह सब इस युद्ध में मारेगये इस विपरीत समय को देखो ३२ हे माधव जी ! निश्चय करके दैवका कोई बड़ाभार नहीं है जो यह शूर क्षत्रिय क्षत्रियों के हाथ से मारेगये ३३ हे श्रीकृष्णजी ! मेरे वेगवान् पुत्र तभी मारेगये जब कि तुम अपने अभीष्ट प्राप्ति से रहित उपप्लवी स्थानको लौटकर गये ३४ उसी समय मुझको भीष्मपितामह और ज्ञानी विदुरजी ने समझायाथा कि अपने पुत्रोंपर प्रीति मत करो ३५ उन दोनों की वह दूरदर्शकता मिथ्या होने के योग्य नहीं थी इसीसे हे जनार्दनजी ! मेरे पुत्र थोड़ेही दिनोंमें नाश होगये ३६ वैशम्पा-यन बोले हे भरतवंशिन् ! वह गान्धारी यह सब कहकर शोकसे मूर्च्छित दुःख से घायलबुद्धि धैर्यको त्यागकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ३७ फिर क्रोधसे पूर्ण शरीर पुत्रशोकमें डूबी असावधान इन्द्रिय गान्धारीने श्रीकृष्णजी को दोष लगाया ३८ गान्धारी बोली हे श्रीकृष्ण ! पाण्डवों के और धृष्टद्युम्नके पुत्रादिक सब परस्पर भस्महुये हे जनार्दन ! तुम किस हेतुसे इन विनाश होनेवालों को त्याग किया ३९ समर्थ और बहुतसे नौकर चाकर रखनेवाले बड़े बल में नियत दोनों ओर के विषयों में समर्थ शस्त्ररूप वचन रखनेवाले ने किस कारण से उपद्रव को दूर नहीं किया ४० हे महाबाहो, मधुसूदनजी ! जिस कारण से तुझ इच्छावान् ने जान बूझकर कौरवों का नाश होनेदिया इस हेतुसे तुमभी उसके फलको

पावोगे ४१ पतिकी सेवा करनेवाली मैंने जो कुछ तप प्राप्त किया उस दुष्प्राप्य तप के द्वारा तुझ चक्रगदाधारी को शाप देती हूं ४२ हे गोविन्दजी ! जो कि तुमने परस्पर जातिवालों को मारनेवाले कौरव और पाण्डवों को नहीं रोका इस हेतु से तुम भी अपनी जातिवालोंको मारोगे ४३ हे मधुसूदनजी ! तुमभी छत्तीसवां वर्ष वर्तमान होनेपर मन्त्री पुत्र ज्ञातिवाले वनमें फिरनेवाले ४४ अज्ञातरूप लोकों में गुप्त अनाथ के समान निन्दित उपाय से मरणको पावोगे ४५ इसी प्रकार तेरी स्त्रियां भी जिनके पुत्र बान्धव और ज्ञातिवाले मारेगये ऐसे चारोंओर को दौड़ेंगी जैसे कि यह भरतवंशियों की स्त्रियां दौड़ती हैं ४६ वैशम्पायन बोले कि बड़े साहसी वासुदेवजी इस घोर वचनको सुनकर मन्द मुसकान करते हुये उस देवी गान्धारी से बोले हे क्षत्रियाणी ! मैं जानता हूं कि तू मेरे कर्म के समान कर्मको भी अपने तपके नाश के लिये करती है यादवलोग दैवसेही नाशको पावेंगे इसमें सन्देह नहीं है हे शुभस्त्री ! मेरे सिवाय कोई दूसरा पुरुष यादवों की सेनाको मारनेवाला नहीं है वह सब अन्य मनुष्य देवता और दानवों से भी अवध्य हैं ४७।४८ इस हेतु से यादव परस्पर विनाश को पावेंगे श्रीकृष्णजी के इस प्रकार कहने पर पाण्डव लोग भयभीत चित्त अत्यन्त व्याकुल और जीवन में निराशायुक्त हुये ५० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि पञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले हे गान्धारि ! उठो उठो शोक में चित्तको मत करो तेरे अपराध से कौरवों ने नाशको पाया १ जो उस दुर्बुद्धि अत्यन्त अहंकारी ईर्षा करनेवाले दुर्योधन को अग्रवर्ती करके अपने दुष्ट कर्मको अच्छा मानती है २ जो कि कठोर वचन शत्रुताको प्रिय जाननेवाला मनुष्य और वृद्धों की आज्ञा के विपरीत विरुद्धकर्म करनेवाला था यहां तू अपने कियेहुये दोषको कैसे मुझमें लगाना चाहती है ३ जो मृतक अथवा विनाशयुक्त व्यतीत समय को शोचती है और दुःख से दुःखको पाती है अर्थात् आदि अन्त के दोनों दुःखोंको पाती है ४ ब्राह्मणीने तपके निमित्त उत्पन्न होनेवाले गर्भको धारण किया गौ ने भार लेचलनेवाले को घोड़ीने दौड़नेवाले को शूद्राने दास को वैश्याने पशुपालको और राजपुत्री क्षत्रियाने युद्धके अभिलाषी गर्भको धारण किया ५ वैशम्पायन

बोले कि शोकसे व्याकुल नेत्र गान्धारी वासुदेवजीके उस अप्रिय और दुर्वारा कहे हुये वचनको सुनकर मौन होगई ६ फिर राजऋषि धृतराष्ट्र ने अज्ञान से उत्पन्न होनेवाले मोहको रोककर धर्मज्ञ राजा युधिष्ठिरसे पूछा ७ कि हे पाण्डव! तुम जीवतीहुई सेनाकी संख्या के जाननेवाले हो और जो मृतक शूरवीरों की संख्या को जानते हो तो मुझसे कहो ८ युधिष्ठिर बोले हे राजन्! इस युद्ध में एक अरब छियासठ किरोड़ बीस हज़ार शूरवीर मारेगये ९ (इस समय के लोग आश्चर्य न करें और दो बातों की ओर ध्यान करें प्रथम यह कि इस महाभारतके युद्ध में सब संसार भरेके राजा सेनासमेत इकट्ठे हुयेथे वह सब सेनासमेत मारेगये दूसरे आजकलकी अपेक्षा उन दिनों में मनुष्यों में संख्या भी अधिकथी इसी प्रकार पृथ्वी का परिमाण भी अधिकथा) हे राजेन्द्र! दृष्टि न आनेवाले वीरों की संख्या चौबीस हज़ार एकसौ पैंसठ है धृतराष्ट्र बोले हे पुरुषोत्तम, महाबाहो, युधिष्ठिर! उन्हों ने किस गतिको पाया वह मुझ से कहो मेरे विचार से तुम सब बातों के जाननेवालेहो १०। ११ युधिष्ठिर बोले जिन प्रसन्नचित्तों ने बड़े युद्ध में अपने शरीर को नाश किया वह सत्यपराक्रमी इन्द्रलोक के समान लोकों को गये १२ हे भरतवंशिन्! जो अप्रसन्नचित्तसे युद्ध में लड़तेहुये मारेगये वह गन्धर्वलोक को गये १३ और जो रणभूमि में नियत याचना करते पराङ्मुख होकर शस्त्रों से मारेगये वह गुह्यकों के लोकों को गये १४ जो पात्यमान अशस्त्र लज्जा से युक्त और बड़े साहसी युद्ध में शत्रुओं के सम्मुख शत्रुओं के हाथसे गिरते क्षत्रिय धर्मको उत्तम माननेवाले तेजशस्त्रोंसे मारेगये वह निस्सन्देह ब्रह्मलोकको गये १५। १६ हे राजन्! जो मनुष्य यहां रणभूमिके मध्य में जिस किसी प्रकार से मारे गये वह उत्तर कौरवदेश को गये १७ धृतराष्ट्र बोले हे पुत्र! तुम सिद्धों के समान किस ज्ञानबल से इस प्रकार देखतेहो हे महाबाहो! वह मुझ से कहो जो मेरे सुनने के योग्य है १८ युधिष्ठिर बोले कि पूर्व समयमें आपकी आज्ञानुसार वनमें घूमनेवाले मैंने तीर्थयात्रा के योगसे इस अनुग्रह को प्राप्त किया १९ देवऋषि लोमशऋषि देखे उनसे इस मनुस्मृतिको पाया और निश्चय करके पूर्व समय में ज्ञानयोग से दिव्य नेत्रों को पाया २० धृतराष्ट्र बोले हे भरतवंशिन्! क्या तुम अनाथ और सनाथ लोगों के शरीरों को विधि के अनुसार दाह करोगे २१ जिन्होंका संस्कार करनेके योग्य नहीं है और यहां जिनकी अग्नि नियत नहीं है हे तात! कर्मों की अधिकतासे हम

किसका क्रियाकर्म करें जिन्होंको सुपर्ण अर्थात् गरुड़ और गिद्ध इधर उधर से खैंचते हैं हे युधिष्ठिर ! क्रियाकर्म से उन्होंके लोक होंगे २२ । २३ वैशम्पायन बोले हे महाराज ! इस वचन को सुनकर कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिरने दुर्योधनका पुरोहित सुधर्मा, धौम्यऋषि, सूत, संजय, बड़े बुद्धिमान् विदुरजी, कौरव युयुत्सु, इन्द्रसेनादिक भृत्य और सब सूत २४ । २५ इन सबलोगोंको आज्ञा करी कि आप सबलोग इन्हों के सब प्रेतकार्यों को करो जिससे कि कोई शरीर अनाथ के समान नाशको न पावे २६ धर्मराजकी आज्ञा से विदुर, सूत, संजय, सुधर्मा और धौम्य पुरोहित समेत इन्द्रसेन और जयने २७ चन्दन, अगुरु, काष्ठ और कालीयक, घृत, तेल, सुगन्धियां, बहुमूल्य क्षौमवस्त्र २८ लकड़ियों के ढेर और वहां पर टूटेहुये रथ और नानाप्रकार के शस्त्रोंको इकट्ठा करके २९ सावधानों ने बड़े उपायों से चिताओंको बनाकर मुख्य मुख्य राजाओं को शास्त्रविहित कर्मों के द्वारा दाह किया ३० राजा दुर्योधन उसके सौ भाई शल्य राजा शल भूरिश्रवा ३१ राजा जयद्रथ, अभिमन्यु, दुश्शासन के पुत्र, राजा धृष्टकेतु ३२ बृहन्त, सोमदत्त, सैकड़ों सृंजयदेशी, राजा क्षेमधन्वा, विराट, द्रुपद, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, पराक्रमी युधामन्यु, उत्तमौजस ३३ । ३४ कौशल्य, द्रौपदी के पुत्र, सौबलका पुत्र शकुनी, अचल, वृषक, राजा भगदत्त ३५ क्रोधयुक्त सूर्यका पुत्र कर्ण, पुत्रों समेत बड़े धनुर्धारी केकयदेशी, महारथी त्रिगर्तदेशी ३६ राक्षसाधिप घटोत्कच, बक, राक्षसोंका राजा अलम्बुष राजा जलसिन्धु इनको और अन्य हजारों राजाओंको घृत की धाराओं से होमीहुई प्रकाशमान अग्नियों से अच्छे प्रकार दाह किया ३७।३८ कितनेही महात्माओं के पितृयज्ञ वर्तमान हुये और सामवेदके मन्त्रों से गान किया उन्होंने दूसरोंके साथ शोच किया रात्रिमें सामवेद की ऋचा और स्त्रियों के रोदनों के शब्दों से सब जीवों का मोह आदिक वर्तमान हुआ ३९ । ४० वह निर्धूम अत्यन्त प्रकाशित अग्नियां आकाश में दृष्टिपड़ीं और ग्रह छोटे बादलों से ढकगये ४१ वहांपर नाना प्रकार के देशोंसे आनेवाले जो अनाथ भी थे उन सबको इकट्ठा करके ४२ सीधे वृद्धियुक्त तेल से संयुक्त लकड़ियों की चिताओं से विदुरजी ने राजा की आज्ञानुसार उन सबको दाह किया कौरवराज युधिष्ठिर उन्होंकी क्रियाओं को कराके धृतराष्ट्र को आगे करके श्रीगङ्गाजी के सम्मुख गये ४३ । ४४ ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि कुरूणामौर्ध्वदैहिके षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि उन्होंने कल्याणरूप पवित्र जलोंसे पूर्ण श्रीगङ्गाजी को और बड़ी रूपवती स्वच्छ जल रखनेवाली ह्रदिनीको पाकर १ उत्तरीयवस्त्र और पगड़ी आदि को उतारकर पिता भाई पौत्र स्वजन पुत्र और नानाओंके जलदानों को किया अत्यन्त दुःखी रोनेवाली सब कौरवीय स्त्रियों ने अपने अपने पतियों को जलदान किया २।३ धर्मज्ञ लोगोंने सुहृदों की भी जल-क्रियाओं को किया वीरोंकी पत्नियों से वीरों का जलदान करनेपर ४ गङ्गाजी सूपतीर्था अर्थात् सुन्दर घाटवाली हुई और फिर शीघ्रगामी होगई वह गङ्गाजी का तट महासमुद्रके रूप प्रसन्नता और उत्सवसे रहित ५ वीरों की स्त्रियों से संयुक्त होकर महाशोभायमान हुआ हे महाराज! इसके पीछे शोकसे पीड़ित धीरे धीरे रोदन करती कुन्ती ६ अकस्मात् अपने पुत्रों से यह वचन बोली कि जो वह बड़ा धनुर्धारी महारथी ७ वीरों के चिह्नों से चिह्नित युद्ध में अर्जुन के हाथ से विजय हुआ हे पाण्डव! तुम जिसको सूतका और राधाका पुत्र मानतेहो ८ और जो समर्थ सूर्य के समान सेनाके मध्यमें विराजमान हुआ प्रथम जिसने तुम सब समेत तुम्हारे साथियोंसे युद्ध किया ९ और जो दुर्योधन की सब सेना को खैंचता शोभायमान हुआ जिसके बलके समान सम्पूर्ण पृथ्वीपर कोई राजा नहीं है १० और जिस शूरने सदैव इस पृथ्वीपर शुभ कीर्ति को प्राणों से भी अधिक चाहा उस सत्यप्रतिज्ञ युद्ध में पराङ्मुख न होनेवाले ११ सुगमकर्मी अपने भाई कर्ण का जलदान करो वह तुम्हारा बड़ा भाई सूर्यदेवता से मुझमें उत्पन्न हुआ था वह शूर कुण्डल कवचधारी और सूर्य के समान तेजस्वी था सब पाण्डव माता के उस अप्रिय वचनको सुनकर १२।१३ कर्णको शोचते हुये फिर पीड़ावान् हुये इसके पीछे सर्प के समान श्वास लेता वह कुन्ती का पुत्र पुरुषोत्तम वीर युधिष्ठिर अपनी मातासे बोला कि जो बाणरूप तरङ्ग ध्वजा रूप भँवर बड़ी भुजारूप बड़े ग्राह रखनेवाली १४।१५ ज्याशब्द से शब्दायमान बड़े ह्रदरूप उत्तम रथका रखनेवाला था और अर्जुन के सिवाय दूसरा मनुष्य जिसकी बाणवृष्टि को पाकर सम्मुख नियत नहीं हुआ वह देवकुमार पूर्वसमय कैसे आपका पुत्र हुआ जिसके भुजों के प्रताप से हम सब ओर से तपाये गये १६।१७ जैसे कि अग्नि को कपड़ों से ढके उसी प्रकार तुमने

इसको किस निमित्त गुप्त किया जिसकी कठिन भुजाओं का बल धृतराष्ट्र के पुत्रोंसे ऐसे उपासना कियागया १८ जैसे कि हम लोगोंसे अर्जुन के भुजबल की उपासना करीगई सब राजाओं के मध्य में कुन्ती के पुत्र कर्ण के सिवाय दूसरा रथी और महाबलवान् उत्तम रथी भी रथोंकी सेनाको नहीं रोकसक्ता था और सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ हमारा बड़ा भाई था १९ । २० आपने प्रथमही उस श्रेष्ठ पराक्रमीको कैसे उत्पन्न किया दुःखकी बात है कि आपके भेद गुप्त करनेसे हम मारेगये २१ हम बान्धवों समेत कर्ण के मरने से पीड़ावान् हुये अभिमन्यु द्रौपदी के पुत्र २२ पाञ्चालोंके नाश और कौरवोंके गिरनेसे भी हम पीड़ावान् हुये परन्तु उन सबसे भी सौगुने इस दुःखने अब मुझको दबाया है २३ मैं कर्णकोही शोचताहुआ मानो अग्नि में नियत होकर जलता हूं स्वर्ग में प्राप्त होकर भी मेरा कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं था २४ जो यह घोर युद्ध कौरवों का नाश करनेवाला न होता हे राजन् ! इस प्रकार धर्मराज युधिष्ठिरने बहुत विलाप करके २५ धीरे धीरे बहुत रोदन किया इसके पीछे उस प्रभुने उसका जलदान किया उस समय सब स्त्री पुरुष अकस्मात् पुकारे २६ वहां उस जलदानक्रिया में गङ्गाजी समीप जलरखनेवाली नियत हुईं इसके पीछे उस बुद्धिमान् कौरवपति युधिष्ठिर ने भाई के प्रेमसे कर्णकी सब स्त्रियों को परिवारसमेत बुला लिया उस धर्मात्मा बुद्धिमान् धर्मराज युधिष्ठिर ने उन्हों के साथ निस्सन्देह विधिपूर्वक प्रेतक्रिया को किया इस माताके गुप्तपाप से मुझसे बड़ाभाई जातिवाला गिरायागया २७ । २८ इस हेतुसे स्त्रियोंके चित्तमें जो गुप्त करनेके योग्य बात है वह गुप्त नहीं होगी वह महाव्याकुलचित्त ऐसा कहकर गङ्गाजी को उतरा और सब भाइयोंसमेत गङ्गाजी के तटको प्राप्त किया ३० ॥

इति श्रीमहाभारते स्त्रीपर्वणि कर्णगूढजन्मकथनन्नाम सप्तविंशतितमोऽध्यायः २७ ॥

शुभम्भूयात् ॥

इति स्त्रीपर्व समाप्तम् ॥



विक्रयार्थ पुस्तकें।

महाभारतवार्त्तिक कामिल,	२०)
आदिपर्व, ...	१।=)
सभापर्व, ...	॥)
वनपर्व, ...	२।=)
विराटपर्व, ...	॥)
उद्योगपर्व, ...	१॥)
भीष्मपर्व, ...	१।)
द्रोणपर्व, ...	१॥।)
कर्णपर्व, ...	१)
शल्यपर्व, गदापर्व, ...	॥।)
अनुशासनपर्व, ...	१॥)
शान्तिपर्व, मय राजधर्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म, ...	३।)
अश्वमेधपर्व, ...	॥≡)
आश्रमवासिकपर्व, मुशलपर्व, महाप्रस्थानपर्व, स्वर्गारोहणपर्व, ...	।≡)
हरिवंशपर्व, ...	३)
महाभारत काशीनरेश,	६)
महाभारत सबलसिंह चौहान	
काग़ज़ सफ़ेद गुन्दा मुजल्लद	१॥।)
तथा काग़ज़ रस्मी	१।-)॥।
आदिपर्व, ...	=)
सभापर्व, ...	=)
वनपर्व, ...	-)
विराटपर्व, ...	=)
उद्योगपर्व, ...	≡)॥
भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदापर्व, ...	।)॥
सौप्तिकपर्व, ऐषिकपर्व,	)।
स्त्रीपर्व, ...	)॥
शान्तिपर्व, ...	-)
अश्वमेधपर्व, ...	≡)॥
आश्रमवासिक, मुशलपर्व,	-)
स्वर्गारोहणपर्व, ...	)॥
तारीख़ रूसिया भाषा,	२)
तथा मुजल्लद, ...	२॥)
तारीख़ इंग्लिस्तान हिंदी,	॥।)

मिलने का पता:—

रायबहादुर मुंशी प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ.



